अर्हम् ॥

श्रुतकेवलिश्रीभद्रबाहुस्वामिविरचितं स्वोपज्ञनिर्युक्तिसमेतं
श्रीसङ्घदासगणिक्षमाश्रमणविरचितलघुभाष्यसहितं
अज्ञातकर्तृकचूर्णिसमन्वितं

# बृहत्कल्पसूत्रम् ॥

[ पीठिकाः भाग-१ ]

• सम्पादक •

विजयशीलचन्द्रसूरिः

रूपेन्द्रकुमार पगारिया

• प्रकाशिका •

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्

अहमदाबाद

ई० २००८, वि० सं० २०६४

अर्हम् ॥

श्रुतकेवलिश्रीभद्रबाहुस्वामिविरचितं स्वोपज्ञनिर्युक्तिसमेतं
श्रीसङ्घदासगणिक्षमाश्रमणविरचितलघुभाष्यसहितं
अज्ञातकर्तृकचूर्णिसमन्वितं

# बृहत्कल्पसूत्रम् ॥

[ पीठिका: भाग-१ ]


• सम्पादक •

विजयशीलचन्द्रसूरिः

रूपेन्द्रकुमार पगारिया



• प्रकाशिका •

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्

अहमदाबाद

ई० २००८, वि० सं० २०६४

# श्रीबृहत्कल्पसूत्रम् ( पीठिकात्मकः प्रथमो विभागः ) ।
( निर्युक्ति-भाष्य-चूर्णि समेतम् ) ॥

सम्पादकः— विजयशीलचन्द्रसूरिः, रूपेन्द्रकुमार पगारिया

प्रकाशकः— प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद
Prakrit Text Society.

ई० स० २००८,     वि. सं. २०६४          वीर नि० सं० २५३४

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रतयः     ५००

प्राप्तिस्थानः – १. आ० श्री विजयनेमिसूरीश्वरजी जैन स्वाध्यायमन्दिर
१२, भगतबाग, जैननगर,
नया शारदामन्दिर रोड, पालडी,
अहमदाबाद - ३८०००७
फोन : २६६२२४६५

२. सरस्वती पुस्तक भण्डार
११२, हाथीखाना, रतनपोल,
अहमदाबाद-३८०००१
फोन : २५३५६६९२

मूल्य : रु. २२५-००

अक्षरांकन :
विरति ग्राफिक्स, अहमदाबाद
फोन : ०७९-२२६८४०३२

मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टिंग प्रेस, अहमदाबाद
मो. ९८२५५९८८५५

# समर्पणम्

सुयसीलवारिहीं जो जिणागमाणं पहाकरो चावि ।
सुग्गहियनामधेओ आसी मुणिपुण्णविजयबुहो ॥१॥

जेणऽज्जत्ताए खलु जिणागमप्पमुहसत्थनिवहस्स ।
संसोहणप्पवित्ती पवत्तिया समणसंघम्मि ॥२॥

कप्पसुयं वित्तिजुयं जेणेव विसोहिऊण संघस्स ।
ठवियं करकमलेसुं पुत्थयसंपुडसरूवेण ॥३॥

तस्सेव पुण्णचरणे चुण्णिजुयस्सऽज्ज कप्पसुत्तस्स ।
पढमं पेढियभागं सहबहुमाणं समप्पेमो ॥४॥

— विजयशीलचन्द्रसूरिः
— रूपेन्द्रकुमार पगारिया

# PREFACE

The Prakrit Text Society has great pleasure in offering to the world of Prakrit scholars the hitherto unpublished cūrṇi-type commentary on Bṛhat-Kalpasūtra which is an important chedasūtra work dealing with rules and regulations governing the conduct of Jaina monks and nuns, restrictions pertaining to their food, apparatuses, halting places etc., atonements prescribed for their transgressions, austerities, exceptions to the general rules, and the like.

Cūrṇi is a type of commentary written in Prakrit prose. The present cūrṇi seems to follow the Laghubhāṣya on Bṛhat-Kalpasūtra. In it at places we find philosophical discussions also. It is rich in cultural data. Its main subject is Jain monasticism. It mentions the works like Tattvārthādhigama-sūtra, Viśeṣāvaśyakabhāṣya, Karmaprakṛti, Mahākalpa and Govindaniryukti. It does not give even the name of its author anywhere, neither in the beginning nor at the end.

The Difficult text of the present cūrṇi is edited by Rev. Ācārya Vijaya Shilachandrasuri in collaboration with Pt. Rupendrakumar Pagariya. They have accomplished a commendable and challenging task. They have spared no pains to make the text as flawless as possible. The Prakrit Text Society is grateful to them for editing this invaluable text. This work of theirs is indeed their notworthy contribution to the Prakrit learning and research.

It is hoped that the publication of this important work will be of great value and interest to the students and scholars of Prakrit and Jainism.

Prakrit Text Society
Shree Vijay-Nemisurishvarji Jain Swadhyaya Mandir
12, Bhagatbaug Society,
Sharada Mandir Road, Paldi, Ahmedabad-380007
15 August 2008

Nagin J. Shah
President
Prakrit Text Society

# प्रास्ताविक

## छेट-सूत्र-आगम एवं बृहत्कल्पसूत्र

भारतीय संस्कृति की दो मुख्य धाराएँ हैं—एक श्रमण संस्कृति और दूसरी ब्राह्मण संस्कृति। ब्राह्मण संस्कृति गृहस्थाश्रम को विशेष महत्त्व देती है। उसीको ज्येष्ठ श्रेष्ठ मानकर उसकी गुण गाथा के गीत गाती हैं। जबकी श्रमण संस्कृति ने श्रमण जीवन को ही अधिकतम महत्त्व दिया है। उसे ही सर्वश्रेष्ठ माना है। यद्यपि जैन धर्म में दो मार्गों का सूचन भी हुआ है। एक अगार धर्म=गृहस्थधर्म और दूसरा अणगार धर्म यानी श्रमणधर्म। अगारधर्म का सन्निष्ठ भाव से पालन करनेवाला गृहस्थ अधिक से अधिक देव की उच्च गति को ही प्राप्त कर सकता है, किन्तु सर्व कर्म विमुक्त होकर मोक्ष को नहीं। जबकि श्रमण अपनी उच्चतम साधना द्वारा सर्व कर्मविमुक्ति रूप मुक्ति को = मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। यद्यपि मुक्ति तक पहुँचानेवाला श्रमणाचार अत्यधिक कठोर है दुष्कर है। इस दुष्कर पथ के पथिक श्रमणों का आध्यात्मिक विकासक्रम में छठ्ठा स्थान है। इस छठ्ठे स्थान से यदि वह ऊर्ध्वमुखी विकास करता रहे तो अन्तमें चौदहवें गुणस्थान की भव्य भूमिका में पहुँच कर विमुक्त हो जाता है।

जैन धर्म आचार प्रधान धर्म है। आचार प्रधान जिन प्रवचन के प्रवक्ता आप्त=वीतराग पुरुष माने गये हैं। उनके द्वारा निरूपित आगम वर्तमान काल में ४५ विभागों में विभक्त हैं। आचारांगादि ग्यारह अंग, औपपातिक आदि बारह उपांग, आतुरप्रत्याख्यानादि दस प्रकीर्णक, आवश्यकादि छह मूल सूत्र, एवं निशीथ आदि छह छेद सूत्र। कुल ४५ आगम है। इन आगमों में संख्याविषयक मतभेद अवश्य है किन्तु ये सभी आगम ज्ञान के अक्षय कोष है। महासागर के समान गहन है। इनमें केवल अध्यात्म और वैराग्य का ही उपदेश नहीं है किन्तु धर्म, दर्शन, नीति, संस्कृति, सभ्यता, भूगोल, खगोल, गणित, आत्मा, कर्म, लेश्या, इतिहास, संगीत, आयुर्वेद, नाटक आदि आदि जीवन के हर पहलू को छूने वाले विचार यत्र तत्र बिखरे पड़े हैं।

इन आगमों में छेद सूत्र का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये जैन श्रमणाचार का विश्लेषण

करनेवाले प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं । इन छेद सूत्रों में श्रमण जीवन की विविध चर्याएँ, आचार संहिताएँ तथा समय समय पर उत्सर्ग और अपवाद मार्ग का विधान है । भाष्यकार ने छेद सूत्र को उत्तम श्रुत कहा है । क्योंकि इसमें दोषी श्रमण के लिए प्रायश्चित्त की विधि बताई है । प्रायश्चित्त ग्रहण करने से ही चारित्र की विशुद्धि होती है अत: यह सूत्र उत्तम श्रुत है । साथ ही छेद सूत्र रहस्य सूत्र भी है । बृहत्कल्प-चूर्णिकार कहते हैं छेद सूत्रों की वाचना केवल परिणामक शिष्यों को दी जाती थी, अतिपरिणामक एवं अपरिणामक को नहीं । अपरिणामक (अयोग्य-अपक्व) आदि शिष्यों को छेद सूत्र की वाचना देने से वे उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जैसे मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी या आम्लरसयुक्त घड़े में दूध नष्ट हो जाता है । अगीतार्थ-बहुल संघ में छेदसूत्र की वाचना एकान्त अभिशय्या या नैषेधिकी में ही दी जाती है । क्योंकि अगीतार्थ साधु उसे सुनकर कहीं विपरिणत होकर गच्छ से निकल न जाए । छेद सूत्रों के ज्ञाता श्रुतव्यवहारी कहलाते हैं । उनको ही आलोचना देने का अधिकार है । जो बृहत्कल्प एवं व्यवहार की निर्युक्ति को जानता है वह श्रुतव्यवहारी कहलाता है । इससे स्पष्ट है कि मुनि जीवन में छेद सूत्र का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है । क्योंकि ये छेदसूत्र पूर्वों से निर्यूढ़ हुए हैं। दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार एवं निशीथ इन चार छेद सूत्रों का निर्यूहण प्रत्याख्यान पूर्व की तृतीय आचार वस्तु से हुआ है ऐसा उल्लेख निर्युक्ति, भाष्य तथा चूर्णि में मिलता है । दशाश्रुत, कल्प एवं व्यवहार का निर्यूहण श्रुतकेवली श्री भद्रब्राहुस्वामी ने किया ऐसा कई स्थानों पर निर्दिष्ट है । इस दृष्टि से बृहत्कल्प सूत्र का छेद सूत्रों में गौरवपूर्ण स्थान रहा है ।

**बृहत्कल्पसूत्र :**

अन्य छेद सूत्रों की तरह इस सूत्र में भी श्रमणों के आचार विषयक विधि-निषेध-उत्सर्ग, अपवाद, तप, प्रायश्चित्त आदि विषयक विस्तृत विवेचना है । इसमें छ उद्देशक हैं, ८१ अधिकार है और २०६ सूत्र संख्या है । प्रथम उद्देशक में ५० सूत्र है । पहले के पाँच सूत्र तालप्रलम्ब विषयक है । निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों के लिए ताल-प्रलम्ब ग्रहण करने का निषेध है। इसमें अखण्ड एवं अपक्व ताल-फल व तालमूल ग्रहण नहीं करना चाहिए किन्तु विदारित पक्व ताल प्रलम्ब लेना कल्प्य है, ऐसा कथन किया गया है । ग्राम, नगर, खेट, कर्बटक, मडंब, पत्तन, आकर, द्रोणमुख, निगम, राजधानी, आश्रम, निवेश, संबाध, घोष, अंशिका, पुटभेदन और संकर आदि स्थानों का व्याख्या सहित वर्णन मिलता है । बड़े और एक दरवाजे वाले ग्राम नगर आदि में निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को एक साथ रहने का निषेध किया है । जिस स्थान के आसपास में दुकानें हो या बड़े भीडवाले मार्ग हो वहाँ श्रमणियों को रहना योग्य नहीं । द्वार रहित स्थान में चिलिमिलिका—चिलमन—पर्दा लगाकर रहने का विधान हैं । नदी के किनारे या चित्रयुक्त उपाश्रय में साधु साध्वी को रहने का निषेध है इत्यादि । दूसरे उद्देश में कहा गया है कि जिस स्थान में शालि ब्रीहि मूंग आदि धान्य बिखरे पड़े हो अथवा

मदिरा आदि के घड़े हो, अग्नि या जल युक्त स्थान हो दीपक का प्रकाश हो, पिण्ड खीर दही आदि बिखरे पड़े हो वहाँ श्रमण श्रमणियों को नहीं रहना चाहिए । सार्वजनिक स्थान=आगमनगृह, खुले घर वंशीमूल=घर के बाहर चौतरा, वृक्ष के नीचे साध्वी को रहना अकल्प्य है । पाँच प्रकार के वस्त्र तथा रजोहरण रखने का विधान है । तीसरे उद्देशक मे श्रमण श्रमणियों को एक दूसरे के उपाश्रय में रहने का निषेध है । रोग आदि विकट अवस्था में चर्मग्रहण करने का विधान है । कृत्स्न और अकृत्स्न वस्त्र ग्रहण करने की विधि बताई गई है इत्यादि ।

चौथे उद्देशक में प्रायश्चित्त और आचार विधि का उल्लेख है । ब्रह्मचर्य की रक्षा के विशिष्ट नियम बताए गये हैं । रात्रिभोजन सेवन करनेवाले को अनुद्घातिक अर्थात् गुरु प्रायश्चित्त का विधान है । पारंचिक और अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त के योग्य स्थान बताये गये हैं । एक गण से दूसरे गण में जाने की विधि और निषेध के प्रायश्चित्त बताये गये हैं । झगड़े को आपस में सुलझाने तथा कालगत साधु के विसर्जन की विधि तथा वर्षाकाल में किस प्रकार का उपाश्रय होना चाहिए आदि का वर्णन है ।

पाँचवें उद्देश में सूर्योदय के पूर्व और सूर्योदय के पश्चात् भोजन पान सम्बन्धी नियम, निर्ग्रन्थिनी को अकेले जाने का निषेध, रात्रि या विकाल में पशु पक्षियों के स्पर्श का निषेध, निर्ग्रन्थिनी को वस्त्र और पात्र रहित रहने का निषेध इत्यादि ।

छट्ठे उद्देश में साधु साध्वियों को दुर्वचन बोलने का निषेध, संकट ग्रस्त निर्ग्रन्थिनी को किस प्रकार की सहायता की जा सकती है उसकी विधि, तथा छह प्रकार के कल्प का विचार किया गया है । इन्हीं छह उद्देशों की स्पष्टता के लिए श्रुतकेवली श्री भद्रबाहुस्वामी ने कुछ निर्युक्ति गाथाओं की भी रचना की है । भाष्यकारों ने छहों उद्देशों में आनेवाले आचार विषयक उत्सर्ग और अपवाद विषयक विस्तृत चर्चा भी की है । इस प्रकार मूल सूत्र में संयमी जीवन का व उनके द्वारा पालन करने के नियमों का विस्तृत आलेखन किया । मूल सूत्र में उल्लखित नियमों की भाष्यकार ने विस्तृत चर्चा की है ।

**बृहत्कल्प लघुभाष्य :**

बृहत्कल्प लघुभाष्य के कर्ता आचार्य श्रीसंघदासगणी क्षमाश्रमण थे । आचार्य संघदास गणी कौन थे ? कब हुए ? इस विषयक जानकारी उपलब्ध नहीं है । किन्तु यह निश्चितरूप से कहा जा सकता है कि संघदास गणी क्षमाश्रमण जैन आगम साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान थे । छेद सूत्रों के अध्येता और अनुसंधाता थे । बृहत्कल्प-लघुभाष्य तथा पंचकल्पभाष्य संघदासगणी की बहुत ही महत्त्वपूर्ण कृति है । इसमें बृहत्कल्पसूत्र के पदों का विस्तार के साथ विवेचन किया है । लघुभाष्य होने पर भी इसकी गाथा संख्या ६४९० है ।

लघुभाष्य में कई निर्युक्ति गाथाएँ मिल गई है, अतः लघुभाष्य में कितनी गाथाएँ निर्युक्ति की है इसका पृथक्करण असम्भव है। वृत्तिकार, चूर्णिकार तथा विशेषचूर्णिकार ने कहीं कहीं 'एसा चिरंतनगाहा,' 'एसा पोराणिका गाहा,' सूत्रस्पर्शिकनिर्युक्तिगाथा' कहकर निर्युक्ति गाथा का उल्लेख किया है।

**बृहत्कल्पचूर्णि :**

जैन संस्कृति में साधना का स्थान सर्वोच्च है। श्रमण साधना के प्रतिपादक छेदसूत्र एवं उन पर के व्याख्यासाहित्य का प्रत्येक पृष्ठ साधना के उज्ज्वल-समुज्वल आलोक से आलोकित है। साधक अपने जीवन को त्याग, तप, स्वाध्याय और ध्यान रूप सरिता के निर्मल जल से आत्मा को विशुद्ध कर भव सागर को पार करता है। जैन साधना के दो पथ है। एक उत्सर्ग और दूसरा अपवाद। उत्सर्ग शब्द का अर्थ है मुख्य और अपवाद शब्द का अर्थ है गौण। उत्सर्ग मार्ग का अर्थ है आन्तरिक जीवन, चारित्र और सद्गुणों की रक्षा, शुद्धि और अभिवृद्धि के लिए प्रमुख नियमों का विधान और अपवाद का अर्थ है आन्तरिक जीवन की रक्षा के लिए उसकी शुद्धि-वृद्धि के लिए बाधक नियमों का विधान। उत्सर्ग और अपवाद दोनों का एक ही लक्ष्य है संयम की विशुद्धि। एकान्त उत्सर्ग मार्ग का विधान या अपवाद मार्ग का विधान कभी कभी संयमी के लिए घातक भी हो सकते हैं अतः ये सापेक्ष हैं। मानव की शारीरिक और मानसिक दुर्बलता को ध्यान में रखकर ही गीतार्थ आचार्यों ने उत्सर्ग और अपवाद मार्ग का निरूपण किया है। बृहत्कल्पचूर्णिकार कहते हैं[१]—'समर्थ साधक-सहिष्णु के लिए उत्सर्ग स्थिति में जिन द्रव्यों का निषेध किया है, असमर्थ-असहिष्णु साधक लिए अपवाद की परिस्थिति में विशेष कारण वश वह वस्तु ग्राह्य भी हो जाती है।' जो बातें उत्सर्ग मार्ग में निषिद्ध की गई है वे सभी बातें कारण के उपस्थित होने पर कल्पनीय व ग्राह्य भी हो जाती है। क्योंकि उत्सर्ग और अपवाद दोनों का लक्ष्य एक ही रहा है। वे एक दूसरे के पूरक हैं। जो साधक बिना कारण ही उत्सर्ग मार्ग को छोड़कर अपवाद मार्ग को अपनाता है वह आराधक नहीं अपितु विराधक माना जाता है।

बृहत्कल्प चूर्णि मूलसूत्र और उस पर लिखे हुए लघु भाष्य पर लिखी गई संक्षिप्त व्याख्या है। इस चूर्णि का प्रारम्भिक अंश दशाश्रुतस्कन्ध चूर्णी से बहुत कुछ मिलता है। सम्भवतः दशाश्रुतस्कन्धचूर्णी बृहत्कल्प चूर्णी के पूर्व लिखी गई है और दोनों एक ही आचार्य की रचना है ऐसा लगता है। इस चूर्णि के रचनाकार कौन थे इस विषयक जानकारी हमें प्राप्त नहीं। क्योंकि बृहत्कल्प चूर्णि में कही भी कर्ता ने अपने नाम का उल्लेख नहीं किया है। रचना समय भी नहीं मिलता।

---

१. **उस्सग्गेण णिसिद्धाइं जाइँ दव्वाइँ संथरे मुणिणो।**
**कारणजाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पंति॥** बृ०क०भा० ३३२७

बृहत्कल्पवृत्ति के कर्ता आचार्य मलयगिरि का समय १३वीं सदी माना गया है। उन्होंने बृहत्कल्प वृत्ति में अनेक स्थलों पर चूर्णि के पाठों का उपयोग किया है और कई जगह चूर्णि के अनुसार शब्द की व्याख्या भी की है। इसके अतिरिक्त पाटण नरेश कुमारपाल के समय संवत् १२१८ में लिखी हुई बृहत्कल्पचूर्णि की प्रत भाण्डारकर इन्स्टिट्यूट में है। अत: यह स्पष्ट है कि बारहवीं सदी से पूर्व किसी समय इसकी रचना हुई है।

**विशेषचूर्णि :**

इसके रचयिता भी अज्ञात है। विशेषचूर्णिकार शब्दश: चूर्णि का ही अनुसरण करते हैं। कहीं कहीं चूर्णि में जो अस्पष्ट है उसे उन्होंने स्पष्ट किया है। इससे स्पष्ट है कि चूर्णि के पश्चात् ही विशेष चूर्णि का निर्माण हुआ है। यह विशेषचूर्णि भी अपूर्ण है। विशेष चूर्णिकार बृहत्कल्पसूत्र के मासकल्प से एवं भाष्यगाथा १०८६ से-से गामंसि वा नगरंसि वा...(१-६) सूत्र से प्रारम्भ कर शेष मूल सूत्र के छहों उद्देश तक में अपनी विशेष व्याख्या पूर्ण करते है। इसके पूर्व का भाग अप्राप्य है।

चूर्णिकार द्वारा स्वीकृत भाष्यगाथाओं के अतिरिक्त कुछ नई गाथाएँ भी विशेष चूर्णिकार ने दी है।

चूर्णिकार तथा विशेषचूर्णिकार ने तत्त्वार्थाधिगम, विशेषावश्यकभाष्य, कर्मप्रकृति, महाकल्प, पंचकल्पभाष्य, निशीथचूर्णि, गोविन्दनिर्युक्ति आदि ग्रन्थों का उल्लेख किया है।

भाषा की दृष्टि से चूर्णिकार प्राय: प्राकृत तथा संस्कृत मिश्रित भाषा का प्रयोग करते हैं। अनेक ग्रामीण तथा देशी शब्दों का प्रयोग करते हैं। आगमों के गम्भीर रहस्यों को लौकिक कथाओं के माध्यम से बड़े ही सरल ढ़ंग से समझाते हैं। इस प्रकार प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता का अध्ययन करने के लिए बृहत्कल्पचूर्णि अत्यन्त उपयोगी है। जैन श्रमणों के आचार का हृदयग्राही, सूक्ष्म, तार्किक विवेचन इस चूर्णि की विशेषता है।

**बृहत्कल्पचूर्णिपीठिका :**

बृहत्कल्पसूत्र के सम्पूर्ण सार तत्त्व का इस पीठिका में सुन्दर रूप से निरूपण हुआ है। मंगलवाद, ज्ञानपंचक में श्रुतज्ञान के प्रसंग का वर्णन करते हुए सम्यक्त्व प्राप्ति का क्रम और औपशमिक, सास्वादन, क्षायोपशमिक, वेदक और क्षायिक सम्यक्त्व के स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है। अनुयोग का स्वरूप बताकर निक्षेप आदि बारह प्रकार के द्वारों का सुन्दर निरूपण किया है। कल्प-व्यवहार की विविध दृष्टि से विवक्षा करते हुए यत्र तत्र विषयों को स्पष्ट करने के लिए दृष्टान्तों का भी उपयोग किया है। उस युग की सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक स्थितियों सुन्दर दर्शन इस चूर्णि पीठिका में हुआ है।

बृहत्कल्प चूर्णिकार ने अनेक ग्रन्थों के अवतरण भी दिये हैं जिससे यह निश्चित होता है कि बृहत्कल्प चूर्णिकार बहुश्रुत थे । वे केवल जैनशास्त्रों के ही नहीं किन्तु अन्य शास्त्रों के भी ज्ञाता थे । वे अवतरण, ग्रन्थों के नाम के साथ और बिना नामके भी दिए गये हैं । इस प्रकार बहुश्रुत आचार्य की यह अनमोल रचना, प्राकृत साहित्य में उनका अनुपम योगदान है यह निर्विवाद है ।

● ● ●

## ऋण स्वीकार व आभार दर्शन

विद्वद्वर्य आचार्यश्री मुनिचन्द्रसूरि म.सा. जिन्होंने बृहत्कल्प चूर्णि की ताडपत्रीय प्रतियाँ, तीन विशेषचूर्णि की दो प्रतों की झेरोक्ष कापियाँ प्रदान कर अपनी महानता और उदारता का परिचय दिया ।

विद्वद्वर्य आचार्य श्री विजयशीलचन्द्रसूरि जो साहित्य निर्माण में सदैव दत्तचित्त रहते हुए भी आपने अपना बहुमूल्य समय इस ग्रन्थ के संशोधन में दिया और इस ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ अर्थ की व्यवस्था की । सूत्रार्थ सहयोग और प्रकाशन अर्थ सहयोग यदि आपसे नहीं मिलता तो यह कार्य अधूरा ही रह जाता ।

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति के निर्देशक डॉ० जितेन्द्रभाई का जिनकी सत्प्रेरणा एवं सहयोग से इस ग्रन्थ का ला०द०भा०सं० विद्यामन्दिर में रह कर सम्पादन संशोधन कर सका । प्राकृत ग्रन्थ परिषद् (P.T.S.)ने यह ग्रन्थ को अपनी श्रेणि में प्रकाशित करने की सम्मति दी, एतदर्थ उसके कार्यवाहकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अत्यन्त उदारता के साथ जिन महानुभावों ने अर्थ सहयोग प्रदान किया है उन्हें हम कभी भी विस्मृत नहीं कर सकते । उनके प्रति हार्दिक साधुवाद के साथ भविष्य में इसी तरह के सहयोग की अपेक्षा करते हैं । तथा इस ग्रन्थ के सम्पादन संशोधन में आगम प्रभाकर पू० मुनिवर्य श्री पुण्यविजयजी म० द्वारा सम्पादित बृहत्कल्पवृत्ति का पूर्णरूप से उपयोग किया है । तथा विरति ग्राफिक्स वाले अखिलेश मिश्राजी भी जिन्होंने सावधानी पूर्वक इस ग्रन्थ का अक्षरांकन किया है ।

हम इन सहयोगियों के प्रति जितना आभार अभिव्यक्त करें वह कम है ।

इन सब का पूर्ण सहयोग मिलने पर भी प्रेस दोष या प्रमादवश असावधानी के कारण भूलें रहना स्वाभाविक हैं कृपया वाचकगण क्षमा करेंगे और भूलों के लिए हमारा ध्यान आकर्षित करेंगे ऐसी अपेक्षा के साथ

**— रूपेन्द्रकुमार पगारिया**

# निवेदन

वि० सं० २०६२ का चातुर्मास हम अहमदाबाद के ओपेरा-उपाश्रय में थे । पर्युषणापर्व के प्रवचन में श्रुतपूजा-अधिकार आया तो श्रुतयात्रा की प्रेरणा दी । संघ ने उसे स्वीकार की। और बाद में एक रविवार को कोई ५०० लगभग लोगों को लेकर ला० द० विद्यामन्दिर को चल दिये । वहाँ श्रुततीर्थ की यात्रा की । उसी वक्त रूपेन्द्रकुमार पगारिया मिले, और बातबात में बात मिली कि कल्पचूर्णि का सम्पादन कार्य चल रहा है । उस कार्य में मुझे दिलचश्पी हुई। वहाँ ही संघ को प्रेरणा की, तो कोई दो लाख जितनी रकम के सहयोग का वचन मिल गया । प्रा० टे० सो० के नाम प्रकाशन हो तो अच्छा ऐसा भी सोचा गया । L.D. के डॉ० जे० बी० शाह से भी परामर्श किया गया, उन्होंने भी हाँ कही ।

बाद में, सं० २०६३ का चातुर्मास हुआ देवकीनन्दन-उपाश्रय में । उस चातुर्मास के दौरान मैं और पगारियाजीने साथ में बैठकर यह पीठिका-विभाग का पठन व संशोधन किया। फिर उन्होंने इस सम्पादन में मेरा नाम भी जोड़ दिया । मैंने कहा कि आपका ही नाम भले रहे, मेरा नाम मत लिखो । पर वे नहि माने । तब मुझे लगा कि अगर आगम-सम्पादन के साथ मेरा नाम जुड़ता है, तो मेरी जिम्मेदारी काफी बढ़ जाती है । मैंने कहा कि ऐसा ही करना हैं, तो मुझे एकबार यह पूरा विभाग, ताडपत्रों के साथ पुनः पढ़ना होगा । और मैंने ऐसा किया। तीन मुख्य ताडपत्र-प्रतियाँ—पू० १, पू० २ व पा० - लेकर मुद्रित प्रूफ साद्यन्त पढ़ा, मिलाया । दूसरी बार भी एक प्रति के साथ मिलाया । जब काम पूर्ण हुआ तब लगा कि अगर इस प्रकार पढ़ा न होता तो बहुत ही मुश्किलें होती । पढ़ने से काफी कुछ सम्मार्जन-संशोधन हो सका । और यही कारण है कि पुस्तक प्रकाशित होने में काफी विलम्ब हुआ ।

मेरा यह प्रथम अनुभव है । बोध भी आगम-परिपाटी का व आगमों के सम्पादन की पद्धति का ज्यादा नहीं है । अतः इस सम्पादन में अगर क्षतियाँ व गलतियाँ रह गई हो तो बिल्कुल शक्य है । वे नजर में आएँ, तो उनके लिए मैं क्षमाप्रार्थी तो हूँ ही, उनके प्रति मेरा ध्यान आकर्षित करने की विज्ञप्ति भी सुज्ञजनों को मैं करता हूँ, ता कि आगे के विभागों के कार्य में मुझे मार्गदर्शन मिले ।

जब मैं, आगमप्रभाकर मुनिश्री पुण्यविजयजी द्वारा सम्पादित बृहत्कल्पसूत्र-वृत्ति के

पुस्तक में दृष्टिक्षेप करता हूँ, तब उन्होंने जो विषयानुक्रम एवं अन्यान्य महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ अपने उस सम्पादन में दी है, उन्हें देखकर इस सम्पादन की अपूर्णताओं का मुझे बोध होता है । चूँकि मैं आकस्मिक ही इस प्रकल्प के साथ जुड़ गया हूँ, और मेरे मनमें 'वाचना का शोधन ही मुख्य है' ऐसी धारणा बन गई थी, अतः इन अपूर्णताओं के प्रति मेरा ध्यान ही नहि गया । आगे के विभागों में इन बातों के प्रति भी ध्यान देने का प्रयत्न किया जाएगा । इस ग्रन्थ के बारे में मेरी स्थिति, 'किसी की आधी रसोई किसी को पूरी करनी है' ऐसी है ।

परिशिष्ट में गाथाओं का अकारादिक्रम दिया गया है । विषयानुक्रम विस्तार से न देकर, बृहत्कल्प-वृत्ति के विषयक्रम के आधार पर, संक्षेप में ही दिया जाता है ।

मैंने जो वाचन किया, उसमें मेरे साथी साधु मुनि विमलकीर्तिविजयजी, मुनि कल्याणकीर्तिविजयजी एवं मुनि त्रैलोक्यमण्डनविजयजी ने मुझे पूरी सहायता दी है । उन तीनों को साधुवाद ।

यहाँ इस प्रथम विभाग में पीठिका-अंश ही समाविष्ट किया गया है । आगे दूसरे विभाग में उद्देशक, चूर्णि, विशेषचूर्णि - इन सबका संकलन होगा । यथावकाश वे विभाग जैसे जैसे तैयार होते जाएँगे, वैसे वैसे उनका प्रकाशन भी होता जाएगा ।

एक बात स्पष्ट होनी चाहिए :- चूर्णि एवं विशेष चूर्णि की पूरी की पूरी प्रेसकॉपी पं० पगारियाजी ने स्वयं लिखी है । इसका प्रथम प्रूफ भी उन्होंने देखा है । यह पूरा प्रकल्प उन्हीं की भावना व मेहनत का फल है । ८४ साल की आयु में भी आगमों के प्रति इतनी भक्ति, सम्पादन कार्य की ऐसी लगन, सब दुर्लभ व विरल है । ताडपत्र-प्रतियों की झेरोक्ष कॉपी प्राप्त करने के लिये भी उन्होंने काफी परिश्रम किया है । हम तो उनके बने-बनाये कार्यक्रम में अकस्मात् ही सामिल हो गये हैं । फिर भी अब पूरे चूर्णिग्रन्थ को पुनः संशोधित करने की जिम्मेवारी हमने उठा ली है, और उम्र के कारण वे अब हमें यह सौंप कर निश्चिन्त बने हैं । उनका परिश्रम निःशंक साधुवादार्ह है ।

इस ग्रन्थश्रेणि के प्रकाशनार्थ आर्थिक सहयोग देनेवाले जैन संघ एवं सद्गृहस्थों को धन्यवाद ।

पुनः- इस सम्पादन में ग्रन्थकार एवं श्रुतधर भगवन्तों के आशय से विरुद्ध या विपरीत कुछ भी, अनजान में ही, आ गया हो, तो एतदर्थ त्रिकरण योग से क्षमाप्रार्थना करता हूँ । छद्मस्थता एवं मन्दमति के वजह से ऐसा होना असम्भव नहीं । अगर किसी को ऐसी कोई त्रुटि दिखाई पड़े, तो कृपया हमें सूचित करें यही अभ्यर्थना ।

सं० २०६४, श्रावणी पूर्णिमा — **शीलचन्द्रविजय**

अहमदाबाद

हठीसिंह केसरीसिंहनी वाडी-उपाश्रय

# प्रति परिचय

बृहत्कल्पचूर्णि की एकाधिक प्रतियाँ जैनज्ञान भण्डारों में उपलब्ध हैं। उनमें से कुल पाँच प्रतों की झरोक्ष उपलब्ध हुई हैं। भाण्डारकर इन्स्टिट्यूट, पूना से दो, एक प्रत पाटण स्थित संघभण्डार, (वर्तमान में श्री हेमचन्द्राचार्यज्ञानभण्डार) की, एक प्रत शान्तिनाथ जैन ज्ञानभण्डार खंभात की तथा पाँचवी कागज की श्रीकैलाससागरसूरिज्ञानमन्दिर की। इस प्रकार कुल पाँच प्रतों के आधार से बृहत्कल्पचूर्णि का लेखन संशोधन सम्पादन किया गया है। इन प्रतियों को क्रमशः पूना की प्रतों के लिए पू० १, पू० २; पाटण प्रत के लिए पा०, एवं खंभात प्रत के लिए खं० ऐसे संकेत दिये गये हैं। प्रति नं० १ यह भाण्डारकर इन्स्टिट्यूट से उपलब्ध ताडपत्रीय प्रत सर्वाधिक प्राचीन है। ग्रन्थसूची में इसका नं० ५८० है। इसमें मूलसूत्र, लघुभाष्य एवं चूर्णि का सम्पूर्ण आलेखन हुआ है। इसके कुल झेरोक्ष पत्र २४१ हैं। अन्त में इस ग्रन्थ का श्लोक परिमाण १६००० दिया हैं। इस प्रति का प्रारम्भ "भलेमींडी, ॥ नमो वीतरागाय ॥ "मंगलादीणि सत्थाणि"—से होता है। अन्त में 'मोक्खं पावतीति' कल्पचूर्णी समाप्ता छ। ग्रन्थ १६००० अंकतोऽपि ॥ छ ॥ संवत् १२१८ में अणहिल पाटण में कुमारपाल राजा के शासन काल में चाहरपल्लि ग्राम के निवासी साउकउद्यव० शोभनदेवने श्रीमज्जिनभद्राचार्य के लिए लेखक सोहड से लिखवाई। ग्रन्थ के अन्त में इसकी प्रशस्ति इस प्रकार है—

Ends.-leaf 241 अप्पमादीणं गुणदीवेति। जो य एयाए कप्पाणुपालणाए दीवणाए य वट्टइ तस्स आराहणा भवति। णाणदंसणचरित्तमयी जहण्णिया। मज्झिमा उक्कोसिया वा तओ य आराहणाओ च्छि(छि)ण्णसंसारी भवति। संसारसंतइं छेत्तुं। मोक्खं पावतीति कल्पचूर्ण्णी समाप्ता [:] ॥ छ ग्रन्थ १६००० अंकतो(ऽ)पि ॥ छ ॥

संवत् १२१८ वर्षे द्वि० आषाढशुदि ५ गुरावद्येह श्रीमदणहिलपाटके समस्तराजावली-विराजितसमलंकृतमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारकउमापतिवरलब्धप्रसादमहाहवसंग्राम-निर्व्यूढप्रतिज्ञाप्रौढनिजभुजरणांगणविनिर्जित'शाकंभरी' भूपालश्रीमत्कुमारपालदेवकल्याणविजय-राज्ये तत्पादपद्मोपजीवि[त]महामात्यश्रीयशोधवले श्रीश्रीकरणादौ समस्तमुद्राव्यापारान् परिपंथयति

सतीत्येवं काले प्रवर्ध(र्त)माने ॥ गंभूता चतुश्चत्वारिंशच्छतपथके देवश्रीभोपलेश्वरशासनारूढ-भुज्यमानराजश्रीवैजलदेवेन पट्टित 'चाहरपल्लि' ग्रामे तद्वास्तव्ये० साउकउद्यव० शोभनदेवेन कल्पचूर्णिपुस्तकं पुस्तकसवलकद्रव्यं वृद्धिं नीत्वा तेनैव श्रीमज्जिनभद्राचार्याणामर्थे लेखकसोहडपार्श्वाल्लिखापितेति ॥ छ ॥

यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं....
शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥

सुरसरि सुरगिरि सुरतरु सुरनाहो जाव सुरालया संति ।
विउसेहि पढिज्जंतं ताव इमं पुत्थयं होउ ॥

छ ॥ मंगलं महाश्रीः ॥ शुभं:भवतु ॥ लेखकपा....

Reference.-There is a Ms. of Bṛhatkalpacūrṇi in the Līmdbī Bhaṇḍāra. See its Catalogue No. 1852

पू० नं २—पूना, भाण्डारकर ग्रन्थसूचि में इसका नं० ५८२ है । इसके कुल पेज ४६५ है । इस ग्रन्थ का लेखक "नमः प्रवचनाय" मंगलादीणि सत्थाणि....से प्रारम्भ कर "मोक्खं वा पावतीति" कल्पचूर्णी समाप्ता, से इसका लेखन पूर्ण करता है । इस प्रत का लेखन संवत् १३३४ मार्गशीर्षसुदि १३ गुरुवार का है । लेखक ने इसका ग्रन्थाग्र १४००० का दिया है । इसकी प्रशस्ति इस प्रकार है—

पू० नं २—Age.-Saṁvat 1334.

Begins.-fol. 159b नमः प्रवचनाय ॥

मंगलादीणि सत्थाणि । मंगलमज्झाणि मंगलावसणाणि ॥ मंगलपरिग्गहिया य सिस्सा । सुत्तत्थाणं अवग्गहेहावायधारणासमत्था भवंति । तानि चादिमध्यावसानमंगलात्मकानि सव्वाणि लोके विराजंति ॥ विस्तारं च गच्छंति ॥ etc.

Ends.-fol. 465b अप्पमादिणं गुणो etc., up to सो(मो)क्खं practically as in No. 582 followed by वा पावतीति कल्पचूर्ण्णी समाप्ता ॥ छ ॥

संवत् १३३४ वर्षे मार्ग्गशुदि १३ गुरौ ॥ कल्पचूर्ण्णी समाप्ता [:] ॥ शुभं भवतु सर्व्वजगतः अंकतो(ऽ)पि ग्रंथ (सहस्राणि)......१४००० प्रत्यक्षरगणनया निनीत ॥ छ ॥

Reference.-In Jaina Granthāvalī (p. 12), it is remarked that on p. 49 of Deccan College (?) Pralamba Sūri is mentioned as the author of Bṛhatkalpacūrṇi.

प्रत नं० ३, संघवी पाडा पाटण ज्ञान भण्डार (वर्तमान में श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञान भण्डार पाटण) की है । ग्रन्थ सूचि में इसका नं० पा० ता० हेम० सं० ९, पेटांक २ । इसके

कुल पत्र १-३९३ है। लेखन संवत् १२९१ वर्षे पोस सुदी ४ सोमे। ऐसा अन्त में लिखा है प्रत की स्थिति अच्छी है। प्रत अशुद्धप्राय है।

**प्रति नं० ४**

यह प्रति श्रीशान्तिनाथ खंभात ताडपत्रीय जैन ज्ञान भण्डार की है। खंभात ग्रन्थ सूचि में इसका नं० ८४६५ है। इसमें लेकन संवत् नहीं है। लेखन शैली से यह ज्ञात होता है कि यह १३वीं सदी के उत्तरार्द्ध में लिखी गई हो। इस प्रत के तीन पृष्ठ नहीं है।

**प्रत नं० ५**

यह कागज पर लिखी गई है। इसमें भी लेखन संवत् नहीं है। १५वीं सदी में इसका लेखन हुआ हो ऐसा अनुमान किया जा सकता है। लेखक ने पाटण की ताडपत्रीय प्रति के आधार से इस प्रति का लेखन किया हो ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि इसके प्राय: पाठ पाटण की ताडपत्रीय प्रति से मिलते हैं। पाटण की ताडपत्रीय प्रति के कई पाठ विशेषचूर्णि का अनुसरण करते हैं।

उदाहरणार्थ विशेष चूर्णि पृ० के १०-१२ पन्नों के पाठ अक्षरश: पाटण की चूर्णि में लिए है। ये पाठ विशेषचूर्णि पाटणस्थ प्रति, कै०ज्ञा० प्रति में ही है किन्तु पूणे की दो प्रतों में, लाद० भण्डारगत बीसवीं सदी की कागज की प्रत में, एवं खंभात भण्डारस्थ ताडपत्रीय प्रत में नहीं है, किन्तु पाटण की प्रत में तथा श्री कैलाश सागरसूरि ज्ञान भण्डार की प्रत में ही मिलते हैं। यह पाठ विशेषचूर्णि से लिए गए हो ऐसा पठन से प्रतीत होता है। साथ ही में व्यंजन परिवर्तन भी समान रूप से इन दो ही प्रतियों में मिलते हैं।

**प्रतों की विशेषता—**

इन पाँचों प्रतों के लेखक ने बड़े सुन्दर अक्षरों में इन प्रतियों को लिखा है। प्राय: प्रतियाँ शुद्धाशुद्ध हैं, कहीं कहीं लेखनदोष दृष्टिगोचर होते हैं। इन प्रतियों में व्यंजनपरिवर्तन अधिक मात्रा में होने से इनकी एकरूपता सुरक्षित नहीं रह सकी। पूना की ताडपत्रीय प्रति एवं पाटण की ताडपत्रीयों में व्यंजनपरिवर्तन इस प्रकार के मिलते हैं—

जैसे ह के स्थान में भ, भ के स्थान में ह का प्रयोग सर्वत्र मिलता है—जैसे होति, हवति, होइ, भवति।

ब के स्थान में प- बाल = पाल, बहु=पभु।

इसके अतिरिक्त व-ब, च-व, त्थ च्छ त्थ, प ए, ए प, ट्ट द्द, द्द, ट्ट, ट्ठ द्ध, द्ध ट्ठ, उ, ओ, ओ उ, य इ, इ य, अक्षरों के बीच के भेद को न समझने कारण लिपिक ने एक अक्षर के स्थान पर दूसरा अक्षर लिख दिया है।

क्ख, ण्ण, म्म ट्ठ, च्छ, त्थ जैसे संयुक्त अक्षरों के स्थान पर ख, ण, म, ठ, छ, थ भी

कई स्थान पर लिखे हुए उपलब्ध होते हैं। निरर्थक अनुस्वार भी कई जगह मिलते हैं और कई जगह अनुस्वार लिखना ही भूल गये है। धम्म कम्म तम्मि आदि की जगह धंम कंम तंमि आदि कई जगह लिखा हुआ मिलता है। य श्रुति के स्थान में प्राय त का प्रयोग अधिक मिलता है जैसे समय=समत, आयरिय=आतरित, राया=राता। ह के स्थान पर ध, जैसे कहा=कधा, गाहा=गाधा। कहीं कहीं य के स्थानमें इ और इ के स्थान में य, जैसे राइणा= रायणा, कइवय=कयवय इत्यादि। कहीं कहीं एक ही अक्षर या शब्द, दुबारा भी लिपिकार ने लिख दिया है, और कहीं कहीं सरीखे अक्षर दो बार आते हैं तो लिपिकार उन्हें लिखना ही भूल गया है। कहीं लम्बे पाठ भी लिपिकार ने छोड़ दिये है। कहीं दुबारा भी पाठ लिख हुए मिलते हैं।

पूना नं० २ की प्रति अधूरी है कई पन्ने नहीं है। इसकी पूर्ति हमने पूना नं० १ प्रति से की है। सभी प्रतियों की झेरोक्ष कोपी ही मिली है। कई जगह तो झेरोक्ष के पन्ने इतने अस्पष्ट और काले धब्बेवाले हैं कि उन्हें पढ़ना भी बड़ा कठिन था, अतः ऐसे अस्पष्ट अक्षर वाले पाठों को अन्यान्य प्रति की सहायता से जहाँ तक हो सके पाठ को शुद्ध करने का प्रयास किया है।

— रूपेन्द्रकुमार पगारिया

• • •

## आ० श्रीविजयशीलचन्द्रसूरिजी की प्रेरणा से बृहत्कल्पचूर्णि-ग्रन्थ-प्रकाशन में सहयोग दाताओं की नामावली

| | |
|---|---|
| श्रीमहावीर जैन श्वे०मू०पू० संघ, ओपेरा, | अहमदाबाद |
| श्री ज्योत्स्नाबहेन नरोत्तमभाई झवेरी | अहमदाबाद |
| श्री अशोकभाई शंकरलाल शाह | अहमदाबाद |
| श्री दीपकभाई रसिकलाल शाह | अहमदाबाद |
| श्री ज्योतिषभाई अमृतलाल शाह | अहमदाबाद |
| श्री नरेशभाई कल्याणभाई शाह | अहमदाबाद |
| श्री सुधीरभाई जयंतिलाल शाह | अहमदाबाद |
| श्री अतुलभाई चन्द्रकान्त शाह | अहमदाबाद |

### आ पुस्तक माटे विशेष सहयोग

शाह धरणेन्द्रभाई शिवलाल चाणस्मावाला, सूरत

पुत्री साध्वीओ - दीप्तिप्रज्ञाश्री तथा तरंगलेखाश्रीनी प्रेरणाथी

# विषयानुक्रमः ॥


| | | | |
|---|---|---|---|
| | Preface | Nagin J. Shah | 4 |
| | प्रास्ताविक | रूपेन्द्रकुमार पगारिया | 5 |
| | निवेदन | विजयशीलचन्द्रसूरि | 11 |
| | प्रतिपरिचय | रूपेन्द्रकुमार पगारिया | 13 |
| | बृहत्कल्पचूर्णिः | | १ |
| | मङ्गलविचार | | ५ |
| | नन्दी : ज्ञानपञ्चक | | १० |
| | सम्यक्त्व-निरूपण | | २६ |
| | अनुयोगद्वार-प्ररूपणा | | ३८ |
| १. | निक्षेपद्वार | | ३८ |
| | द्रव्यादिके अनुयोग-अननुयोग विषयक उदाहरण | | ४२ |
| २. | एकार्थिकद्वार | | ४९ |
| | सिद्धान्त के निक्षेप एवं 'सर्वतन्त्र' आदि प्रकार | | ५० |
| ३. | निरुक्तद्वार | | ५२ |
| ४. | विधिद्वार | | ५८ |
| ५. | प्रवृत्तिद्वार | | ६२ |
| ६. | 'केण वा' द्वार | | ६४ |
| ७. | 'कस्स' द्वार | | ६६ |
| ८. | अनुयोगद्वार-द्वार | | ६८ |

९. भेदद्वार ६९

उपक्रम ६९

निक्षेप ७३

१०. लक्षणद्वार ७४

'सूत्र' पद का निरुक्त, उसके प्रकार ८६

११. 'तदर्ह' द्वार ९२

१२. पर्षद् द्वार ९२

मुद्गशैल आदि दृष्टान्त ९३

प्रकारान्तरसे त्रिविध पर्षद् १०१

प्रकारान्तरसे दो प्रकार की पर्षद् १०४

छत्रान्तिक पर्षद् के गुण १०८

स्थण्डिलभूमि का निरूपण ११३

लेपकल्पिकद्वार १२५

पिण्डकल्पिकद्वार १३६

शय्याकल्पिकद्वार १३९

वस्त्रकल्पिकद्वार १५५

पात्रकल्पिकद्वार १६६

अवग्रहकल्पिकद्वार १७०

विहारकल्पिकद्वार १७५

उत्सारकल्पिकद्वार १८२

अचञ्चलद्वार १९०

अवस्थितद्वार १९२

मेधावी-द्वार १९२

अपरिस्त्रावीद्वार १९२

'जे विदु' द्वार १९३

अनुज्ञातद्वार २००

परिणामकद्वार २०१

१२. बृहत्कल्पसूत्र-चूर्णि-पीठिकाविभागसत्क-गाथानां अनुक्रमणिका २०५

निद्दोसं सारवंतं च, हेउजुत्तमलंकियं ।
उवणीयं सोवयारं च, मियं महुरमेव य ॥

अप्पक्खरमसंदिद्धं, सारवं विस्सओमुहं ।
अत्थोभमणवज्जं च, सुत्तं सव्वन्नुभासियं ॥

ॐ नमः सर्वज्ञाय

# बृहत्कल्पचूर्णिः ॥

मंगलादीणि सत्थाणि मंगलमज्झाणि मंगलावसाणाणि । मंगलपरिग्गहिया य सिस्सा सुत्तऽत्थाणं[1] अवग्गहेहावायधारणासमत्था भवंति । तानि चादि-मध्या-ऽवसान-मंगलात्मकानि सर्वाणि लोके विराजन्ति, विस्तारं च गच्छन्ति । अनेन कारणेनादौ मंगलं [2]मध्ये मंगलं अवसाने[3] मंगलमिति । आदिमंगलग्गहणेणं तस्स सत्थस्स अविग्घेणं लहुं पारं गच्छति । मज्झमंगलगहणेणं तं सत्थं थिरपरिजितं भवति । अवसाणमंगलग्गहणेणं तं सत्थं सिस्स-पसिस्सेसु अव्वोच्छित्तिकरं भवति । तत्रादौ मंगलं पापप्रतिषेधकत्वादिदं सूत्रम्—

"**णो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा आमे तालपलंबे अभिन्ने पडिगाहेत्तए**" [उ० १ सू० १] । मध्येऽपि "**कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा पुरत्थिमेणं जाव अंग-मगधाओ इत्तए**" [उ० १ सू० ५१] इत्येवमादि । अवसाणे वि "**छव्विधा कप्पठिती पण्णत्ता**" [उ० ६ सू० १४] इति । तं च मंगलं चउव्विधं-नाम-मंगलं, ठवणा-मंगलं, दव्व-मंगलं, भाव-मंगलमिति । एताणि आवस्सए पुव्वभणिताणि[4] । नवरं भावमंगले इमो विसेसो—जं तं नोआगमतो भावमंगलं तं दुविधं—सुत्तभणितं च, सुत्तफासियनिज्जुत्ति-भणितं च । भाष्यभणितमित्यर्थः । तत्थ सुत्तभणितं "**नो कप्पति निग्गंथाण वा (निग्गंथीण) वा आमे ताल-पलंबे अभिन्ने पडिगाहेत्तए**" [उद्दे० १. सू० १] इत्येव-मादि प्रागभिहितं, सुत्तफासितनिज्जुत्तीभणियं पुण इमाणं[5] दोण्हं अज्झयणाणं[6] अप्पग्गंथ-महत्थाणं[7] सुहुमनिउणत्तणेण य दुग्गहण-दुद्धराणं[8] 'दुस्समाणुभावेण य अप्पसत्तिणो पुरिस'त्ति

---

१. **०स्सा सत्थाणं अ०** पा० पू० २ । २. **मध्य** पू० १ । ३. **अवसान०** पू० १, पाता० । ४. **व्वं वण्णिता०** पा० पू० २, पू० १ । ५. **०माणि** पा० २ । ६. **०णाणि** पा० २, पू० २ । ७. **०त्थाणि** पा० २, पू० २ । ८. **०राणि** पा० २, पू० २ ।

काउं सुहगहण-धारण[१]-संति-मंगल-निमित्तं आयरियो भस्सं[२] काउकामो आदावेव[३] गाधासूत्रमाह—

**काऊण णमोक्कारं, तित्थयराणं तिलोगमहियाणं ।**
**कप्प-व्ववहाराणं, वक्खाणविहिं पवक्खामि ॥१॥**

"**काऊण णमोक्कारं०**" गाधा । 'डुकृञ् करणे' अस्य धातोः क्त्वाप्रत्ययान्तस्य कृत्वेति रूपं भवति । किं कृत्वेति तदुच्यते—नमस्कारं । नमः[४] प्रह्वत्वे शब्दे । नमस्करणं नमस्कारः । प्रणामोऽर्चनं वन्दनं पूजनमित्यनर्थान्तरं । इन्द्राणामिति चेत् ? नेत्युच्यते । **तित्थगराणं** 'तॄ प्लवनतरणयोः' तीर्थं तच्चतुर्विधं वर्णयित्वा भावतीर्थं कृतं यैस्ते तीर्थकराः, अतस्तेषां तीर्थकराणां । त्रय इति संख्या । 'लोकृ दर्शने' त्रीण्युत्पादादीनि दर्शनादीनि वा लोकयन्तीति त्रिलोकाः । मह पूजायाम् । महिताः पूजिताः, त्रिलोकाश्च ते महिताश्च त्रिलोकमहिताः । अथवा ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्संज्ञकस्त्रिलोकः, स्वपर्यायैर्लोक्यते इति लोको ज्ञायते दृश्यते चेत्यर्थः । त्रिलोकेन महिताः वन्दिताः पूजिता इत्यनर्थान्तरमतस्तेषां 'तिलोगमहिताणं णमोक्कारं काउं' । किं करोषि त्वं ? अत उच्यते—'**कप्पव्ववहाराणं वक्खाणविधिं पवक्खामि**' । कल्पश्च व्यवहारश्च कल्प-व्यवहारौ । अतः कल्प-व्यवहाराणाम् । आह— कल्पव्यवहारयोरिति वक्तव्ये कथं द्विवचने बहुवचनं क्रियते कल्प-व्यवहाराणामिति ? । एवं चोदकेनाक्षिप्ते आचार्यो ब्रवीति—

**सक्कतपागतवयणाण विभासा जत्थ जुज्जते जं तु ।**
**अज्झयणनिरुत्ताणि य, वक्खाणविधी य अणुयोगो ॥२॥**

"**सक्कतपायत०**" पुव्वद्धं । इह द्विविधं वचनं भवति । संस्कृतं प्राकृतं च । एतेसिं सक्कत-पायत-वयणाण विभासा करणीया । भाष्ये न कृता इत्यर्थः । चूर्ण्यां तु क्रियते ।

**ए-ओकारपराइं, अंकारपरं च पायए नत्थि ।**
**व-सगारमज्झिमाणि य, क-चवग्ग-तवग्ग निहणाइं ॥ [ नाट्यशास्त्र अ० १७ ]**

निर्णय इत्यर्थः । एतेहिं अक्खरेहिं जं वयणं तं पायत-वयणं । एभिः ऐ औ अः ङ ञ न श षैश्च यत् तत् सक्कत-वयणं । एसा सक्कत-पायत-वयणाण विभासा कया । एतेसिं सक्कत-पायत-वयणाणं वत्स ! "**जत्थ जुज्जए जं तु ।**" **जत्थ**त्ति सक्कते पायते वा जुज्जते घटते जं जुत्तिवयणं, तत्र संस्कृते एकवचन-द्विवचन-बहुवचनानि[५] युज्यन्ते । यथा—वृक्षः वृक्षौ वृक्षाः । प्राकृते त्वेकवचनं बहुवचनं च युज्यते । [६]यत् तत् द्विवचनं तद् बहुवचनेनाभिलप्यते

१. **०रणा सं०** पा० । २. **हस्सं** पा० २, पू० २ । **भासं** पा० । ३. **०वेदं** पा० २, पू० २ । ४. **णम्** पाता० । ५. **वचना यु०** पू० २ । ६. **यत्र द्वि०** पू० १ ।

इति कृत्वा कप्पव्ववहाराणमित्यदोषः । स्यान्मतिः, कल्प-व्यवहारावित्यनयोः कोऽर्थः ? को वा विशेषो द्वयोरप्यध्ययनयोः ? अत उच्यते । **अज्झयण-णिरुत्ताणि य,** तयोर्द्वयो-रप्यध्ययनयोरर्थनिरुक्तान्यभिहितान्यन्यार्थान्यतो[1] विशेषोऽनयोः । च शब्दादुद्देशकसूत्रे[2]निरुक्तानि च । तत्र निश्चितमुक्तं[3] निरुक्तं । अध्ययननामाक्षरार्थः[4] इत्यर्थः । तत्र 'कल्प' शब्दो ह्यनेकार्थाभिधायी ।

तद्यथा—क्वचित् सामर्थ्ये, क्वचित् वर्णनायां, क्वचित् च्छेदने, क्वचित् करणे, क्वचित् औपम्ये, क्वचिदधिवासे । एतेष्वर्थेषु कल्पशब्दो गीतः । उक्तञ्च—

**सामर्थ्ये वर्णनायां च, छेदने करणे तथा ।**
**औपम्ये चाऽधिवासे च, कल्पशब्दं विदुर्बुधाः ॥** [ ]

तत्र सामर्थ्ये तावत् 'कल्प'शब्दः, कल्पाध्ययनमधीत्यातिचारमलिनस्य साधोः समर्थः प्रायश्चित्तेन विशोधिं कर्तुम् । वर्णनेऽपि—यावन्तः प्रायश्चित्तप्रकारास्तान् वर्णयति विभाषतीत्यर्थः[5] । अथवा मूलोत्तरगुणान् कल्पयति वर्णयतीत्यर्थः । उक्तञ्च—

**कप्पम्मि कप्पिया खलु, मूलगुणा चेव उत्तरगुणा य ।**
**ववहारे ववहरिया, पायच्छित्ता-ऽऽभवंते य ॥** [ व्य० भा० पी० गा० १५४ ]

छेदनेऽपि—तपः शोधिमतिक्रान्तं पञ्चादिच्छेदेन पर्यायं छिनत्ति । करणेऽपि—यद् दत्तं प्रायश्चित्तं तत्र तथा प्रयत्नं करोति कल्पाध्ययनवेत्ता, यथा तत् पारं नयति; अथवा करोत्याचार्यत्वं कल्पाध्ययनवेत्ता । औपम्येऽपि—पूर्वधराचार्यवद्भवति कल्पाध्ययनवेत्ता । अधिवासेऽपि—मासकल्पं कदाचित् प्रतिपूर्णं वसति, कारणे ऊनातिरिक्तमपि, एवं वर्षावासकल्पमपि । अथवा अस्मिन्नेव गच्छाधिवासः । विधिवद् अवहरणाद् व्यवहारः । अथवा वपनात् हरणाच्च [6]व्यपहारः ।

**अत्थी-पच्चत्थीणं, हाउं एकस्स [7]ववति बीयस्स ।**
**एतेण उ ववहारो, अहिगारो एत्थ उ विहीए ॥** [ व्य० भा० पी० गा० ५ ]

जस्स णाऽऽभवति तस्स हाउं, जस्स आभवति तस्स ददातीत्येषोऽर्थः[8] । वक्ष्य-माणमपि च 'व्य(व)वहारे ववहरणं पायच्छित्ताभवंते य' । "**वक्खाणविहिं पवक्खामि**" त्ति। अस्य व्याख्या—**वक्खाणविही उ अणुओगो** त्ति । वक्खाणविहि त्ति वा, अणुओगो त्ति वा, एगट्ठं । तं प्रकर्षेण भृशं वा वक्ष्यामि ।

---

१. ०न्यन्वर्था० पू० १ । २. ०सूत्रे पू० १ । ३. निश्चय पू० १ । ४. अध्ययनाना० पाता० । ५. विभाषयती० पू० १ । विभाषत इत्यर्थः पा० । ६. व्यव० पा०, पू० १ । ७. वच्चइ पू० १ । ८. ०स्स देतीत्यर्थः पू० २ ।

"पुव्वभणितं तु पुणरवि जं भणणति तत्थ कारणं अत्थि ।
पडिसेहो य, अणुण्णा-कारणविसतोवलंभो वा[१] ॥"

इति वचनात् । संक्षेपोक्तमंगलस्य विस्तरेण ज्ञापनार्थं विशेषज्ञापनार्थमिदमुच्यते—

**णंदी य मंगलट्ठा, पंचग दुग तिग दुगे य चोद्दसए ।**
**अंगगयमणंगगए, कायव्व परूवणा पगतं ॥३॥**

"**णंदी य मंगलट्ठा०**" गाधा । अधवा नोआगमतो भावमंगलं नंदी । यस्मादुक्तम्— '**णंदी य मंगलट्ठा**' । च शब्दात् जावतिया थया थुतीओ य । आह—

**णंदी मंगलहेउं, न यावि सा मंगलाहि वइरित्ता ।**
**कज्जाभिलप्पणेया, अपुढो य पुढो य जह सिद्धा ॥४॥**

"**णंदी मंगलहेउं०**" गाधा । **णंदी मंगलहेउं । भणिता तुब्भेही**ति वाक्यशेषः । तो किं सा मंगलातो अण्णा ? अत उच्यते—**न यावि सा मंगलाहिं वतिरित्ता**, न य सा मंगलातो अन्ना । अपिग्रहणादन्याऽपि भवेत् । किमुक्तं भवति ? स्याद्व्यतिरिक्ता, स्यादव्यतिरिक्ता । कथमिति चेदुच्यते—'**कज्जाभिलप्पणेया अपुढो य पुढो य जह सिद्धा**' । यथेह कार्यं पटः कारणं तन्त्वादि । अनयोरेकत्वान्यत्वं[२] दृष्टं । यस्मान्न तंतुभिर्वेम-तुरि-शलाका[३]-नलकादि-पुरुषप्रयत्नानन्तरेण पटनिष्पत्तिर्भवत्यत एकत्वमनयोः । यस्माच्च तन्त्वादिकारणैः पटकार्यं न क्रियते अतोऽन्यत्वं । उक्तञ्च—

"**नत्थि पुढवीविसिट्ठो**" गाहा[४] । एवमभिलाप्याभिलापयोः । तत्राभिलाप्योऽर्थः । अभिलापो वचनं । यस्मात् क्षुरिकाग्नि-मोदकोच्चारणे तेष्वेव संप्रत्ययो भवति, नासन्नेष्वपि घटादिष्वतः एकत्वमनयोः । यस्माच्च तदुच्चारणे वदन-श्रवणयोः छेद-दाह-पूरणानि न भवन्त्यतोऽन्यत्वम् । उक्तञ्च—

"**जम्हा उ मोदगे०**" गाधा[५] । ज्ञेयज्ञानयोरपि । तत्र ज्ञेयं द्रव्याद्यनेकविधम् ।

---

१. **०कारणं विसेसोवलंभो** पू० १ । **०कारणविसेसत्थोवलंभो** पू० २ । **०करणविसेसो०** पा० ।
२. **०रेकत्वमन्यत्वं** पू० २ । ३. **यस्मात्तन्त्वांच्छतिवेम०** पू० १, पाता० ।

४. **नत्थि पुढवीविसिट्ठो घडो त्ति जं तेण जुज्जइ अणन्नो ।**
**जं पुण घडो त्ति पुव्वं, न आसि पुढवी तओ अन्नो ॥** [वि० आ० भा० २१०४]

५. **जम्हा उ मोदके अभिगयम्मि तत्थेव पच्चओ होइ ।**
**ण य होइ सो अणत्ते, तेण अभिण्णं तदत्थातो ॥५९॥**

ज्ञानमाभिनिबोधिकाद्यं पंचप्रकारम् । यदा ज्ञानेनात्मानं जानाति तदैकत्वम् । यदा घटादिद्रव्यं जानाति तदाऽन्यत्वम् । यथैषां कार्यादीनामेकत्वमन्यत्वं च सिद्धं तथा नंदी कारणं मंगलं कार्यम्। अनयोश्च नन्दी-मंगलयोरभिधानं प्रति नानात्वं न त्वर्थतः, शक्रेन्द्रवत् । मंगलस्यैव नन्दिरिति पर्यायनाम । अत्र तिष्ठतु तावत्कारणं नन्दी, कार्यं मंगलम्, तद् वक्ष्यामोऽल्पस्वरतरत्वात् (? अल्पतरस्वरत्वात् ?) ।

**णामं ठवणा दविए, भावम्मि य मंगलं भवे चउहा ।**
**एमेव होति णंदी, तेसिं तु परूवणा इणमो ॥५॥** दारगाधा ॥

**णामं ठवणा०** पुव्वद्धं । तत्थ नाममंगलं—

**एगम्मि अणेगेसु व, जीवद्दव्वे व तव्विवक्खे वा ।**
**मंगलसण्णा णियता, तं सण्णामंगलं होति ॥६॥**

''**एगम्मि अणेगे०**'' गाहा । **सण्णा** णामं **णियत** त्ति नियमिता विसेसिता वा । सेसं कंठं ।

ठवणामंगलं—

**जा मंगल त्ति ठवणा, विहिता सब्भावतो व असतो वा ।**
**तत्थ पुण असब्भावे, मंगलठवणागतो अक्खो ॥७॥**
**जे चित्तभित्तिविहिया, उ घडादी ते य हुंति सब्भावे ।**
**तत्थ पुण आवकहिया, हवंति जे देवलोगेसु ॥८॥**

''**जा मंगले०**'' त्ति गाहाद्वयम् । विहित त्ति कता । भित्ती-कुड्डं । घटादि, आदिग्रहणात् स्थालादिणो । सब्भावठवणा दुविहा—इत्तिरिया, आवकहिया य । तत्थाऽऽवकहिता देवलोगेसु । अर्थादापन्नं जे मणुयलोगे ते इत्तरिया । आवकहिता नाम शाश्वता, इत्तरिया अशाश्वता ।

दव्वमंगलं—

**उत्तरगुणणिप्फण्णा, सलक्खणा जे उ होंति कुंभाई ।**
**तं दव्वमंगलं खलु, जह लोए अट्ठ मंगलगा ॥९॥**

''**उत्तरगुणणि०**'' गाहा । मूलोत्ति पुढविजीवो, तद्गुणात् तत्प्रयोगात्, पुद्गलानां च मृद्द्रव्यत्वेनोपादानं मूलगुणनिष्पत्तिः । उत्तर इति परः । परप्रयोगाच्चक्र-दण्ड-सूत्रोदक-पुरुषप्रयत्नेनेत्यर्थः । एतस्मान्मृद्द्रव्याद् निष्पन्नाः । '**सलक्खण**'त्ति लक्षणसम्पन्नाः ।

अच्छिद्राः अखण्डा; वारिपडिपुण्णा, पद्मोत्पलप्रतिच्छन्नाः, आदिग्रहणात् स्थाल्यादि । तच्च दव्वमंगलं ।

**णेगंतियं अणच्चंतियं च दव्वे उ मंगलं होइ ।**

"**णेगंतियं०**" गाधा । जहा पुण्णकलसो न एगंतेण मंगलं सव्वेसिं । जेण चोरस्स करिसगस्स य रित्तं कुडयं पसंसंति । गिहपवेसे पुण पुण्णो पसत्थो ॥

एवमणेगंतियं । अणच्चंतियं पि । जहा कोइ सोभणेहिं दव्वमंगलेहिं निग्गओ, अण्णं किंचि असोभणं दिट्ठं, जेण ते सव्वे पडिहता । एवमणच्चंतियं ॥छ॥

अहुणा भावमंगलं–

**तव्विवरीयं भावे, तं पि य णंदी भगवती उ ॥१०॥**

"**तव्विवरीयं०**" पच्छद्धं । तं च भावमंगलं एगंतियं अच्चंतियं च । न अण्णेण पडिहम्मति । किं च तं ? **णंदी भगवती**ति । आह–जहा दव्वादीणि चत्तारि मंगले समोयारिताणि, तहा अण्णेसु वि होज्जा ? । ओमित्युच्यते । कथं ? भण्णति–

**जह इंदो त्ति य एत्थं, तु मग्गणा होति नाममादीणं ।**
**सव्वाणुवाति सण्णा, ठवणादिपया उ पत्तेयं ॥११॥**

"**जह इंदो०**" गाधा । सर्वस्यैवाभिधानस्यावसरप्राप्तस्य चतुःप्रकारो निक्षेपः । यथा 'इंद्र' इत्याकारिते नामेन्द्रः चिन्त्यते । **सव्वाणुवाति सण्णा** णामं सव्वेसु वि ठवण-दव्व-भावेसु [१]अणुवत्तति भण्णतीत्यर्थः । तेसु तेसु अत्थविसेसेसु बुद्धिं नामयतीति नाम संज्ञेत्यनर्थान्तरं, सा चेन्द्रं प्रति ।

**अत्ताभिप्पायकया, सण्णा चेयणमचेयणे वा वि ।**
**ठवणादीनिरविक्खा, केवलसण्णा उ णामिंदो ॥१२॥**

"**अत्ताभिप्पाय०**" गाहा । सेच्छाए त्ति भणियं होइ । कता णिदेसिता[२] । चेतणे पुरिसे, अचेतणे तम्मि चेव मृते । सा पुण इन्द्रसण्णा ठवण-दव्व-भाविंदे णावेक्खति । यदुक्तं भवति-ठवण-दव्व-भाविंदाणं तत्थेक्को वि णत्थि, केवलमेवेन्द्र इति नाम ।

अधुना ठवणिंदो–

**सब्भावमसब्भावे, ठवणा पुण इंदकेउमाईया ।**

"**सब्भाव०**" पुव्वद्धं । असब्भाव-ठवणिंदो अक्खणिक्खेवादिसु । सब्भाव-ठवणिंदो **इन्द्रकेतुः** केतुरुच्छ्रये इन्द्रोच्छ्रय इत्यर्थः । आदिग्रहणादिन्द्रप्रतिमा । आह, नाम-

१. **अणुपतती०** पू० २ । २. **निवेसिया** पू० २, पा० ।

स्थापनयोः कः प्रतिविशेषः ? उच्यते—

**इत्तरमणित्तरा वा, ठवणा णामं तु आवकहं ॥१३॥**

"**इत्तिरिय०**" पच्छद्धं । कंठं । दव्विंदो अधुना—

**दव्वे पुण तल्लद्धी, जस्सातीता भविस्सते वा वि ।**
**जो वा वि अणुवउत्तो, इंदस्स गुणे परिकहेइ ॥१४॥**

"**दव्वे पुण०**" गाहा । कण्ठ्या ।

**जो पुण जहत्थजुत्तो, सुद्धणयाणं तु एस भाविंदो ।**
**इंदस्स व अहिगारं, वियाणमाणो तदुवउत्तो ॥१५॥**

"**जो पुण ज०**" गाहा । "**जहत्थजुत्तो**"त्ति । "**इदि परमैश्वर्ये**" । परमैश्वर्यप्राप्तः । इन्द्रनाम-गोत्रे [१]कर्मणी वेदयमानः । सुद्धणया तिण्णि सद्दणया यथार्थग्राहकाः वर्तमान-विषयिणः । पच्छद्धं कंठं । आह—

**ण हि जो घडं वियाणइ, सो उ घडीभवइ णेय वा अग्गी ।**
**णाणं ति य भावो त्ति य, एगट्ठमतो अदोसो त्ति ॥१६॥**

"**ण हि जो घडं०**" गाधा । न हि घटज्ञाता अग्निज्ञाता वा घटीभवत्यग्निर्वा । तेण जं भणह[२]-'इन्द्राहिगारोवउत्तो भाविंदो भवति,' तं मिच्छा । उच्यते—"**नाणं**" ति वा, चशब्दात् **उवओगो** त्ति वा, **भावो** त्ति वा, चशब्दात् **अज्झवसाओ** त्ति वा एगट्ठं । जओ एए णाणादिणो पदा एगट्ठा अतो—

**जमिदं पगयं[३] इंदो, ण व्वतिरिच्चति ततो उ तण्णाणी ।**
**तम्हा खलु तब्भावं, वयंति जो जत्थ उवउत्तो ॥१७॥**

"**जमितं पगयं०**" गाहा । कंठा । **अतो अदोसो** त्ति । जइ य णाणादिणो पदा जीवातो अण्णे होज्जा ततो—

**चेयण्णस्स उ जीवा, जीवस्स उ चेयणाओ अण्णत्ते ।**
**दवियं अलक्खणं खलु, हविज्ज ण य बंधमोक्खा उ ॥१८॥**

"**चेतण्णस्स उ०**" गाधा । चेतणाभावस्स जीवातो[४] अण्णत्ते जीवस्स वा चेयणा-भावातो अण्णत्ते, "**दवियं**"ति जीवदवियं तमलक्खणं । कथं ? जेण चेयणालक्खणो जीवो निश्चेतनः संपद्यते[५] । ततश्च को दोषः ? लक्षणाभावात् लक्ष्याभावः खरशृङ्गवत् । यश्चासन् न स

१. ०गोत्राणि कम्माणि पू० २ । २. भन्नति पू० २ विना । ३. जमिदं नाणं इंदो मु० । ४. चेयण-भावस्स वा चेयणभावाओ अन्नत्ते पू० १ । ५. ०नः संवृत्तः तत० पा० ।

बध्यते अभावत्वात् । अबद्धस्य च न मोक्ष इति । अथाऽचेतनोऽपि बध्यते, अनवस्था । काऽनवस्था ? अचेतनानां धर्मास्तिकायादीनामपि बंधः स्याद्, न च भवति । तस्मात् साधूक्तं "**इंदस्स व अधिकारं वियाणमाणो तदुवउत्तो भाविंदो**" भवति । चोदक आह—नाम-स्थापनेन्द्रयोः कः प्रतिविशेषः ? उच्यते—

**जह ठवणिंदो थुव्वइ, अणुग्गहत्थीहिं तह न णामिंदो ।**
**एमेव दव्वभावे, पूया-थुति-लद्धिणाणत्तं ॥१९॥**

"**जह ठवणिंदो०**" पुव्वद्धं । अनुग्रहेणार्थो येषां ते अनुग्रहार्थिनः । अतस्तैरनु-ग्रहार्थिभिर्यथा स्थापनेन्द्रः वाग्भिः पुष्पादिभिश्च स्तूयते अर्च्यते च, न तथा नामेन्द्रो माणवकः । द्रव्य-भावेन्द्रयोर्विशेषोऽपदिश्यते अधुना । "**एमेव०**" पच्छद्धं । एवमवधारणे । किं अवधारयितव्वं ? जहा नामिंदो अणुग्गहत्थीहिं न पूइज्जइ न थुव्वति, तहा दव्विंदो वि । जहा ठवणिंदो पूइज्जइ थुव्वइ य, तहा भाविंदो वि । किं च दव्व-भाविंदाणं लद्धीतो **नाणत्तं** विशेष इत्यर्थः । यथा भावेन्द्रः शचीपतिः सामानिक-त्रायस्त्रिंशकादिभिः परिवृतः ऋद्धि-प्राप्तः, उपयोगश्च **ज्ञानिक**(ज्ञानत्रिक?)स्य । अनया परमैश्वर्यलब्ध्या उपयोगलब्ध्या च परित्यक्तो द्रव्येन्द्रः । एतेन पगारेण जत्थ जत्थावतारणं काउमिच्छति तत्थ तत्थ चउव्विहो निक्खेवो कायव्वो । उक्तञ्च—**जत्थ य जं जाणेज्जा०** गाधा[१] ।

आह—किमर्थं मंगलग्रहणं क्रियते ? । उच्यते—

**विग्घोवसमो सद्धा, आयर उवजोग णिज्जराऽधिगमो ।**
**भत्ती पभावणा वि य, णिवणिहिविज्जाति आहरणा ॥२०॥**

"**विग्घोवसमो०**" गाहा । रोगादिविग्घोवसमो भवति । अहो ! महता यत्नेन आचार्यो व्याख्यारंभं करोतीति श्रद्धा भवति शिष्यस्य शास्त्रग्रहणे । सद्धाओ य आयरो भवति । गेण्हियव्वे उत्साह इत्यर्थः । आदरेण य तदुवउत्तो भवति । तदुवउत्तस्स य महती निज्जरा भवति । अधिगमश्च भवति । शास्त्रस्योपयोगेन उपलब्धिरित्यर्थः । अधिगतशास्त्रस्य च तस्मिन् भक्तिर्भवति । सेवा इत्यर्थः । पभावणा—अण्णे वि एवं चेव सद्धादीणि काहिंति । जति पुण न कीरति मंगलं तो एएसिं विग्घोवसमादीणं पसिद्धी न भवति । **णिव-णिधि-विज्जादि आहरणा**, आहरणा दिट्ठंता इत्यर्थः । आदिग्गहणेणं जोग-मंता । जहा कोइ कज्जत्थी रायं अधिगंतुकामो सव्वमंगलाणि पुप्फाणि य घेत्तुं अल्लियति । उक्तञ्च—

---

१. **जत्थ य जं जाणिज्जा निक्खेवं निक्खिवे निरवसेसं ।**
**जत्थ वि य न जाणिज्जा चउक्कयं निक्खिवे तत्थ ॥** (आचारांग निर्यु० ४)

[1]गंधपुडिया पयंपइ गोरसघडओ करेइ कज्जाइं ।
मणिबंधम्मि [2]पयलिए गहाओ[3] साणुग्गहा हुंति ॥

ढुक्को य अंजलिं करेति । पाएसु य पडइ । जइ एयं उवयारं करेति तो राया तूसति । से तुट्ठे य णिवे जो तयधीणो अत्थो सो सिज्झइ । अह एवं न करेति तो ण तूसति । तोसाऽभावे य तयधीणस्स अत्थस्स असिद्धी भवति । एवं णिहिं पि उक्खणिउकामो विज्जं मंतं वा साहिउकामो जइ दव्व-खेत्त-काल-भावजुत्तं उवयारं करेति तो णिहिं विज्जं मंतं वा साहेति । तत्थ दव्वतो पुष्पादि, खेत्तओ सुस्साणादिसु, कालओ किण्हपक्खचउद्दसादिसु, भावओ अणुलोम-पडिलोमोवसग्गसहणं । दव्वादिसु पुण उवयारेसु अकतेसु णिहि-विज्ज-मंता ण सिज्झंति । जहा एतेसु तहा सत्थस्स वि । जो जत्थ उवयारो सो कायव्वो । किं च—दिट्ठमेतं लोगे—

**जो जेण विणा अत्थो, ण सिज्झइ तस्स तव्विहं करणं ।**
**विवरीय अभावेण य, ण सिज्झई सिज्झई इहरा ॥२१॥**

"**जो जेण विणा०**" गाहा । जहा घडं साहेउकामो न चक्र-दण्ड-मृत्पिण्डादि-भिर्विना साधयति । अह घडं साहेउकामो विपरीतानि पटोपकरणानि गृण्हाति, अभावेण य चक्र-दण्डसूत्रोदकादीनां न सिध्यति । "**सिज्झते इहरा**" इहरा णाम अविवरीएहिं भावेण य चक्कादीणं पुरिसकारेण य सिज्झति । तम्हा कायव्वं मंगलं । पुनरप्याह-यद्यादि-मध्यावसानेषु मंगलं, अर्थादापन्नं यदंतरालद्वयं तदमंगलम् ? उच्यते—

**जइ वि य तिट्ठाण कयं, तह वि हु दोसो न बाहए इयरो ।**
**तिसमुब्भवदिट्ठंता, सेसं पि हु मंगलं होइ ॥२२॥**

"**जइ वि य०**" गाहा । इयरो णाम अंतरालद्वयामंगलदोषः । कथमिति चेत् ? तदात्मकत्वात् । को दृष्टान्तः ? त्रिसमुद्भवः । कश्चासौ ? मोदकः । त्रिभिर्गुड-घृत-समितैरुद्भूतः, आदिमध्यावसानेषु सर्व एव मधुरः । तद्वदेतदपि । शेषमित्यन्तरालद्वयम् । आह-यदेतद् भवद्भिः शास्त्रमारब्धं एतदादिमध्याऽवसानेषु मंगलम् । यदपि विग्घोवसमादि-णिमित्तं तस्स मंगलस्स अन्नं मंगलं कृतं नंदी सा वि मंगलं । एवं च मंगलस्यापि मंगले क्रियमाणे अनवस्था भवति । कथं ? तस्यान्यत्, तस्याप्यन्यद्, एवं मंगलस्यानवस्थानमनंतता प्रसज्यते इत्यर्थः । अथाभिप्रेतं-नंदी मंगलम्, शास्त्रममंगलम्, तन्नन्द्या[3] मंगलीक्रियते । एवं किं प्राप्तं ? यदा नंदीव्याख्यानमकृत्वा शास्त्रव्याख्यानारंभः तदा तर्हि शास्त्रममंगलं, अमंगलत्वाच्च ज्ञानं न

---

१. **पुप्फपु०** पू० १ । **०पुडिया य जंपति** पा० । **पुडिया व जंपइ** पू० २ । २. **पयलिप्पा,** पू० २ ।
३. **साणुग्गह होंति सव्वगहा,** भा०वृ० । **सव्वे गहा साणु०** पा०, पू० १ । ३. **तत् तया मं०** पू० १ ।

भवति । ज्ञानाऽभावाच्च कुतो व्याख्यानं ?। अत उच्यते–

**ण वि य हु होयऽणवत्था, ण वि य हु मंगलममंगलं होइ ।**

"**ण वि य हु०**" पुव्वद्धं । कंठं । अणवत्था न भवति । जेण सा णंदी सत्थाओ अणत्थंतरभूता, सत्थं च मंगलं । तस्स य मंगलस्स अण्णं मंगलं ण कयं, अतो अणवत्था न भवति । जया वि णंदीए वक्खाणं अकाउं सत्थमारब्भइ तदा वि हु मंगलं शास्त्रम् । तदमंगलं न भवति, त्रिमंगलात्मकत्वात् शास्त्रस्येति । एवं ताव णंदीए अणत्थंतराए अणवत्थामंगलाणि ण भवंति । इदाणिं जति वि णंदी सत्थाओ अत्थंतरा भवति, तया वि अणवत्थामंगलाणि ण भवंति । अमंगलं ताव कहं ण भवति ? उच्यते–

**अप्पपराभिव्वत्ति( त्ती )य, लोणुण्हपदीवमादि व्व ॥२३॥**

'**अप्पपरा०**' पच्छद्धं । णंदी अप्पणा वि मंगलं, सत्थं पि मंगलीकरेइ । सत्थं पि अप्पणा वि मंगलं णंदीं पि मंगलीकरोति । एवं अप्पपराभिव्वत्तीतो दोण्हं मंगलाणं एक्कीभूयाणं सुट्ठुयरं मंगलभावो भवति । कथमिति चेदुच्यते-"**लोणुण्हपदीवमादि व्व**" । जहा दोण्हं लवणाणं एगीभूताणं सुट्ठुयरं लवणभावो भवति, दोण्हं वा उण्हाणं उण्हभावो। दोण्हं वा पदीवाणं एगीभूताणं पगासभावो । आदिग्रहणान्मधुर-शीतल-स्नेहादिद्रव्याणां । एवमिहापि । स्यान्मतिः, अनवस्था—तृतीयादिमंगलोत्पत्तेः सुतरां मंगलभावः[१] । उच्यते—न । प्रयोजनाभावात् लोकसंव्यवहारवत्[२] । यथा-लोके कस्यचिदातुरस्य शर्करापलद्वयमौषधम्। यद्यपि तृतीयादि-शर्क्करापलोपपत्तेः सुतरां मधुरभावो भवति, तथापि प्रयोजनाभावात् नोपादीयते । एवमिहापि । णामादीएहिं अणुओगदारेहिं मंगलं भणितं ।

[३]इदाणीं कारणं णंदी अपदिश्यते । "**एमेव होइ नंदी**" [गा० ५] पच्छद्धं ।

"**तेसिं च**"त्ति मंगलनंदीणं । एवमवधारणे । किमवधारयितव्वं ? जधा मंगलस्स चउव्विहो निक्खेवो भणिओ तधा णंदीए वि । तत्थ गाधा–

**णंदी चतुक्क दव्वे, संखब्बारसगतूरसंघातो ।**

"**णंदी चउक्क०**" गाहा । चउक्कं दव्वादि । नाम-स्थापने पूर्ववत् । दव्वणंदी-**संख-बारसग-तूरसंघातो** ।

इदाणीं जं तं मूलदारगाधाए (गा० ३) भणितं **पंचक** त्ति, अस्य व्याख्या–

**भावम्मि णाणपणगं, पच्चक्खियरं च तं दुविहं ॥२४॥**

"**भावम्मि णाणपणगं**" भावणंदी पंचविधं णाणं । "**दुग**" त्ति । अस्य व्याख्या-

१. **मंगलभावात्** पा० । २. **०हारात्** पू० २ । ३. **इयाणिं** पा० ।

**पच्चक्खितरं च तं दुविहं ।** "**इतरं**" ति परोक्खं । आह—प्रत्यक्ष-परोक्षयोः कः प्रतिविशेषः ? उच्यते—

**जीवो अक्खो तं पइ, जं वट्टति तं तु होति पच्चक्खं ।**
**परतो पुण अक्खस्सा, वट्टंतं होति पारुक्खं ॥२५॥**

"**जीवो अक्खो०**" गाधा । "**अक्ख**" इति जीवस्याख्या, तं प्रति वर्तत इति प्रत्यक्षं । ज्ञानेन जीवो तत्त्वान्युपलभत[1] इत्यर्थः । परतो निमित्तादित्यर्थः, अक्षस्य जीवस्य वर्तमानमर्थग्राहकत्वं परोक्षमुच्यते । एवं किं सव्वेसिं ? भण्णइ—

**केसिंचि इंदियाइं, अक्खाइं तदुवलद्धिपच्चक्खं ।**
**तं तु ण जुज्जइ जम्हा, अग्गाहगमिंदियं विसए ॥२६॥**

"**केसिंच इंदियाइं०**" गाधा । केषाञ्चित् **वैशेषिकादीनां** चक्षुरादीनि इन्द्रियाणि अक्षाणि, यत्तैरुपलभ्यते तत् प्रत्यक्षं । तच्च न युज्यते । कस्माद् ? यस्मादग्राहकमिन्द्रियं विषये । अस्य व्याख्या—

**ण वि इंदियाइँ उवलद्धिमंति विगतेसु विसयसंभरणा ।**
**जह गेहगवक्खाइं, जो अणुसरिया स उवलद्धा ॥२७॥**

"**ण वि इंदियाइं०**" गाधा । न त्विद्रियाण्युपलब्धिमंति, कस्माद् ? विगतेष्वपि इन्द्रियेषु तदुपलब्धानुस्मरणात् । यथा-गेह-गवाक्षाणि । योऽनुसरिता, आरोढा इत्यर्थः । स उपलब्धाऽर्थानां, न गेह-गवाक्षाणि । गवाक्षकविगमेऽपि च तदुपलब्धानर्थाननुस्मरत्येवासौ । एवं गृहवत् शरीरं, अनुसरितृवदात्मा, गवाक्षकानि चेन्द्रियाणि । किञ्च 'लैङ्गिकं च तद् ज्ञानं यदिन्द्रियैरुपलभ्यते' । कथमित्यत्रोच्यते—

**धूमनिमित्तं णाणं, अग्गिम्मि लिंगियं जहा होति ।**
**तह इंदियाइलिंगं, तं णाणं लिंगियं न कहं ? ॥२८॥**

"**धूमनिमित्तं०**" गाधा । इह हि यथा धूमं दृष्ट्वाऽग्निरुन्मीयते[2], तथा लिंग-भूतैरिंद्रियैः शब्दाद्यर्थज्ञानं जायते । यदीन्द्रियाणि न स्युः, ततो न विजानीयादर्थम् । यस्मादेवं तस्मात् तत् ज्ञानं कथं लैङ्गिकं न भवति ? । अन्यश्चायं विशेषः । परोक्षदृष्टोऽर्थः तथा वा स्यादन्यथा वा ? यत्तु त्रिप्रकारेणापि प्रत्यक्षेणाऽवधिज्ञानादिना दृश्यते तत् तथैव भवति, नान्यथा । किञ्च—

---

१. **०वो नान्येनोप०** पा० २, पू० २ । २. **०रनुमीयते** पू० २ ।

**अपरायत्तं णाणं, पच्चक्खं तिविहमोधिमातीयं ।**
**जं परतो आयत्तं, तं पारोक्खं हवइ सव्वं ॥२९॥**

"**अपरायत्तं०**" गाहा । यत् प्रत्यक्षं तदपरायत्तं नाम । यत एव प्रत्यक्षं अत एवाऽपरायत्तं । "**जं परतो**" त्ति । पराणीन्द्रियाण्यात्मव्यतिरिक्तानीत्यर्थः । तैरायत्तं तदधीनमित्यर्थः, तत् परोक्षं । आह-कतिप्रकारं पुनः तत् प्रत्यक्षं ? अत उच्यते-"**तिगं**"ति । अस्य व्याख्या-"**पच्चक्खं तिविहमोधिमादीयं**" आदिग्गहणात् मणपज्जव-केवलाणि । एषां [१]त्रयाणामपि संग्रहार्थम् ।

**ओहि मणपज्जवे या, केवलणाणं तु होति पच्चक्खं ।**
**आभिणिबोहियणाणं, सुयणाणं चेव पारोक्खं ॥३०॥**

"**ओहिमण०**" पुव्वद्धं । तत्थ पढमं ओधिणाणं । तं दुविहं-भवपच्चइयं देवणारयाणं । खओवसमियं तिरिय-मणुयाणं । तं छव्विहमणुगामियादि वण्णेउं सव्वं पेयं समासतो चउव्विहं पण्णत्तं । तं जहा-दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो ।

**अच्चंतमणुवलद्धा, वि ओहिणाणस्स होंति पच्चक्खा ।**
**ओहिण्णाणपरिगया दव्वा असमत्तपज्जाया ॥३१॥**

"**अच्चंतं०**" गाहा । अच्चंतं सव्वकालं, अनुपलंभनीयान्यनुपलभ्यानि, प्रत्यक्षत इत्यर्थः । अवधिज्ञानपरिगतानीति[२] ज्ञातानि द्रव्याण्यसमस्त[३]पर्यायाणि प्रत्यक्षाणि । जति सव्वपज्जवेहिं जाणेज्जा तो केवली होज्जा । किञ्च-

**विवरीयवेसधारी, विज्जंजणसिद्ध देवताए वा ।**
**छाइय सेवियसेवी, बीयादीओ वि पच्चक्खा ॥३२॥**

**पुढवीइ तरुगिरिया, सरीरादिगया य जे भवे दव्वा ।**
**परमाणू सुहदुक्खादयो य, ओहिस्स पच्चक्खा ॥३३॥**

"**विवरीयवेसधारी०**" गाहाद्वयम् । कण्ठ्यम् । एस दव्वओ विसओ । खेत्तओ पुण-

**खित्तम्मि उ जावतिए, पासइ दव्वाइँ तं ण पासइ या ।**
**काले णाणं भइयं, को सो दव्वं विणा जम्हा ॥३४॥**

'**खेत्तम्मि य**' पुव्वद्धं । "**जावतिए**"त्ति जहण्णेणं तिसमयाहारगसुहुमपणगजीवावगाहणामेत्ते, उक्कोसेणं सव्वबहुअगणिजीवपरिच्छिण्णे पासति दव्वादिं । आदिग्गहणेणं

१. त्रयाणां सं० पू० १-२ । २. परिमिताणि पा० । ३. ०ण्यसमाप्तपर्या० पू० १-२, पा० ।

वण्णादि । तमिति खेत्तं ण पेच्छति । यस्मादुक्तम्–"**रूपिष्ववधेः**" (तत्त्वार्थ० १-२८) तच्चारूवि खेत्तं अतो ण पेच्छति । "**काले णाणं भइयं**"ति । कालमरूवि त्ति काउं ण पेच्छति । जम्हा पुण को सो कालो दव्वं विणा ? जं भणियं-दव्वस्स चेव सो पज्जाओ। ओहिण्णाणीयो दव्वस्स पज्जवे असमत्ते जाणति । अओ कालं दव्वस्स पज्जवभूयं जाणति। अतश्च सफला कालज्ञाने भजना । भावओ अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं। एवं ओधी खेत्तपरिमाणे आदिं काउं सव्वगाहाओ वक्खाणेयव्वाओ । **भणियं ओहिनाणं** ॥ छ ॥

**मणपज्जवणाणं** केरिसं ? भण्णइ–

**तं मणपज्जवणाणं, जेण वियाणाइ सण्णिजीवाणं ।**
**दट्ठुं मणिज्जमाणे, मणदव्वे माणसं भावं ॥३५॥**

"**तं मणपज्जव०**" गाहा । ते दव्वे मणिज्जमाणे दट्ठुं तेहिं जे भावा मणिज्जंति ते जाणति । कहं ? भण्णति–

**जाणति य पिहुजणो वि हु, फुडमागारेहिँ माणसं भावं ।**
**एमेव य तस्सुवमा, मणदव्वपगासिए अत्थे ॥३६॥**

"**जाणति य पिहु०**" गाधा । पृथु विस्तारे बहुजण इत्यर्थः । एस एगदेसेण उवमा कता । तं पि दव्व-खेत्त-काल-भावेहिं विभासियव्वं । ॥छ॥

इयाणिं केवलणाणं । केवलं प्रतिपूर्णमित्यर्थः । तं कहमुप्पज्जइ ? भण्णइ–

**पंकसलिले पसाओ, जह होइ कमेण तह इमो जीवो ।**
**आवरणे झिज्जंते, विसुज्झए केवलं जाव ॥३७॥**

"**पंकसलिले०**" गाहा । "**कमेण**" नाम अपूर्वकरणादनिवृत्तिकरणमारभ्य जाव चरिमसमए पंचविहं णाणावरणं, चउव्विहं दंसणावरणं, पंचविहं अंतरायं, चोद्दसेताओ कम्मपगडीओ खवेऊण केवलमुप्पाडेति । तं पि दव्वादीहिं विभासियव्वं । तस्स य इमाणि एगट्ठियाणि ।

**दव्वादिकसिणविसयं, केवलमेगं तु केवलण्णाणं ।**
**अणिवारियवावारं, अणंतमविकप्पियं णियतं ॥३८॥**

"**दव्वादिकसिणविसयं०**" ति गाधा । '**दव्वादिकसिणविसयं**' ति वा, '**केवलं**' ति वा, '**एगं**' ति वा, '**केवलणाणं**' ति वा, '**अणिवारियवावारं**' ति वा, अविरहिओवओगमित्यर्थः । '**अणंतं**' ति वा ज्ञेयं प्रति, '**अविकल्पितं**' ति वा निर्भेदं हीनोत्कर्षत्वं

प्रति। कियंतं कालमविकल्पितमिति चेत् ? उच्यते–'**णियतं**' नित्यमित्यर्थः। **भणियं पच्चक्खं** ।।छ।।

'**पारोक्खमिदाणिं दुगे य**'त्ति। अस्य व्याख्या–"**आभिणिबोहियणाणं०**" [भा० ३०] पच्छद्धं। तत्थ आभिणिबोहियणाणं केरिसं ? भण्णइ–

**पच्चक्ख परोक्खं वा, जं अत्थं ऊहिऊण निद्दिसइ।**
**तं होइ अभिणिबोहं, अभिमुहमत्थं ण विवरीयं ॥३९॥**

'**पचक्ख०**' गाहा। पच्चक्ख इंदियाणं। जं घडं पासंतो च्चेव अवधारेति–एस घडो। एवं सेसेसु वि इंदिएसु जं पच्चक्खं। पारोक्खं जं अणुमाणोवमेहिं गेण्हति। अणुमाणेणं जहा णदीपूरेणं वासं। सद्देणं संखं। ओवम्मेणं गावीओ गवयं। एवं पच्चक्खाणुमाणोवम्मेहिं जं अत्थं ऊहिऊणं[१] ति अवधारेऊणं णिद्दिसति, तं होति आभिणिबोधं। '**अत्थाभिमुहं**' ति अर्थं प्रति लब्धाऽर्थलाभमित्यर्थः। जहा गाविं गाविं चेव मण्णति न विवरीतं ति। न भवत्याभिनिबोधिकं विपरीतमवधारयमानस्य। गौरश्वं सर्वदेवमयीं[२] वा, एवं मत्यज्ञानं भवतीत्यर्थः। '**दुगे य**'त्ति, चशब्दात् तं पुण आभिणिबोहियणाणं दुविहं–इंदियणिस्सियं च, अणिंदियणिस्सियं च। अणिंदियं चित्तं भण्णइ। आह–कोऽनयोर्विशेषः ? भण्णति।

**अत्थाणंतरचारिं, णियतं चित्तं तिकालविसयं तु।**
**अत्थे य पडुप्पण्णे, विणियोगं इंदियं लहइ ॥४०॥**

"**अत्थाणंतर०**" गाहा। अत्थे सद्दादिम्मि अणंतरा इंदियावग्गहातो चरति गच्छति अवधारयतीत्यनर्थान्तरं। किञ्च तत् ? चित्तं। अयं विशेषः–किञ्च नियतं-नित्यं चित्तं त्रिकालविषयं। '**अत्थे उ पडुप्पण्णे विणिओगं**' ति विसयं, '**लब्भति**' त्ति प्राप्नोति। अस्य द्रव्यादिभिः किं परिमाणं ? भण्णति–

**मतिविसयं मतिणाणं, मतिपुव्वं पुण भवे सुतं णाणं।**
**तं पुण समतिसमुत्थं, परोवदेसा व सव्वं पि ॥४१॥**

"**मतिविसयं मतिणाणं०**" जस्स जारिसा मति त्ति भणितं होति, दव्व-खित्त-काल-भावस्सिते विसए। सो य चउव्विधो विसओ जधा **णंदीए**। **भणितं आभिनि-बोहियणाणं** ।।छ।।

इदाणिं **सुतणाणं**। तं कतो उप्पज्जति ? भण्णति–मतिपुव्वं पुण उप्पज्जति[३] सुतणाणं। तं च समतिसमुत्थं परोवदेससमुत्थं च। तत्थ समतिसमुत्थं पत्तेयबुद्धाणं पदाणुसारीण य। परोपदेससमुत्थमस्मदादीनाम्। तं एगविहमेव ? भण्णति, न वि-नैव। तो

१. **०त्थ जाणिउं ति** पू० १। २. **सर्ववाचम०** पा० २। ३. **पुण भवे सु०** पू० २।

कतिविधं ? भण्णति—**चोद्दसए** त्ति (गा० ३) । अस्य व्याख्या—

**अक्खर सण्णी सम्मं, सातियं खलु सपज्जवसितं च ।**
**गमियं अंगपविट्ठं, सत्त वि एते सपडिवक्खा ॥४२॥**

**अक्खरतिगरूवणया,पढमणयादेसतो ण तं खरति ।**
**अभिलप्पा पुण भावा, होंति खरा अक्खरा चेव ॥४३॥**

"**अक्खरसण्णी०**" गाहा । "**तत्थक्खर**" त्ति, "**अक्खरतिगरूवण०**" गाहा, अक्खरतिगस्स परूवणा कायव्वा । अत्र बंधानुलोम्यात् प्रशब्दस्य लोपः कृतः । का य सा परूवणा ? इमा—अक्खरं तिविहं । सण्णक्खरं लद्धिअक्खरं वंजणक्खरं च । अक्खरमिति किं भणियं होति ? भण्णति—पढमनयादेसतो ण क्खरतीति अक्खरं । पढमो त्ति आदिणेगमो, आदेसओ त्ति मतं । तो पढमणयमतेन अणुप्पण्णं णाणं जीवाओ ण क्खरइ । जे पुण तेहिं अक्खरेहिं अभिलप्पंति अत्था ते क्खरा वा होज्जा अक्खरा वा । घटादी क्खरा । धम्मत्थिकायादि अक्खरा । अहवा अक्खरा क्खरा णिच्चाणिच्च त्ति भणियं होइ । क्षर संचरणे । आह—केरिसं **सण्णक्खरं** ? भण्णइ—

**संठाणमगाराई अप्पाभिप्पायतो व जं जस्स ।**

"**संठाणमगारादी०**" गाहापुव्वद्धं । जहा 'वज्जाकृती मगारे'[१] । आदिग्रहणेणं सव्वक्खराणं संठाणमभिधेयं[२] । जो वा '**अप्पणो अभिप्पाओ**' तेण अक्खरस्स संठाणं[३] करेज्जा । यथा **पुष्करसार्यां** लिप्यां वज्रमित्यादि ।

इदाणिं **लद्धिअक्खरं**—

**लद्धी पंचविगप्पा, जस्सुवलब्भो उ जो अत्थो ॥४४॥**

"**लद्धी पंचविय०**" पच्छद्धं । सोतिंदियलद्धी जाव फासिंदियलद्धी । ततो लद्धीतो अक्खरं लद्धिअक्खरं । "**जस्स**" त्ति । जस्स इंदियस्स '**जो अत्थो उवलब्भो**' त्ति उवलंभणीयो, जहा सोइंदियस्स सद्दो उवलब्भो[४] जाव फासिंदियस्स फासो त्ति । तातो उवलंभाओ अत्थाओ अक्खराणं लद्धी उप्पज्जइ । जहा संखसद्देण संखणादोवलंभो । दोण्ह वा अक्खराणं लंभो भवति । एवं सेसेंदिएसु वि भासियव्वं लद्धिअक्खरं ।

**सामण्ण विसेसेण य, दुविहुवलद्धी उ पढमिय अभेया ।**
**तिविहा य अणुवलद्धी, उवलद्धी पंचहा बिइया ॥४५॥**

---

१. **वज्राकृतिर्मकारो** पा० । **०मगारो** पू० १। २. **सन्नाणम०** पू० १ । ३. **सन्नाणं क०** पू० २ । ४. **उवलंभो** पू० २ विना ।

“**सामण्ण विसे०**” गाहा । अहवा लद्धिअक्खरं दुविहं—सामण्णलद्धिअक्खरं च विसेसलद्धिअक्खरं च । ‘**पढमिय**’त्ति सामण्णलद्धी, **अभेद** त्ति विशेषविमुखाऽऽदौ स्कंधावारोपलब्धिवत् । एसा य उवलद्धी अणुवलद्धिं[१] उवेक्खिऊण भवति त्ति। अओ अणुवलद्धी वत्तव्वा । सा तिविहा—

**अच्चंता सामण्णा, य विस्सुती होइ अणुवलद्धीओ ।**
**सारिक्ख विवक्खोभय, उवमाऽऽगमतो य उवलद्धी ॥४६॥**

“**अच्चंता साम०**” गाहापुव्वद्धं । **अच्चंताणुवलद्धि** त्ति । अस्य[२] व्याख्या—

**अत्थस्स दरिसणम्मि वि, लद्धी एगंततो ण संभवइ ।**
**दट्ठुं पि ण याणंते, बोहिय पंडा फणस सत्तू ॥४७॥**

“**अत्थस्स दरिसणम्मि वि०**” गाथा । ‘**बोधिकाः**’ नाम पेरंता म्लेच्छाः । तेषां फणसो अत्यन्तपरोक्षः । ‘**पंडा**’ इति **पाण्डुमधुरा** तेषामपि सक्तवोऽत्यन्तपरोक्षाः ।

सामान्यानुपलब्धिरिदानीम्—

**अत्थस्स उग्गहम्मि वि, लद्धी एगंततो ण संभवति ।**
**सामण्णा बहुमज्झे, मासं पडियं जहा दट्ठुं ॥४८॥**

“**अत्थस्स उग्गहं०**” गाहा । कण्ठ्या । ‘**सामण्णं**’ त्ति, सामान्यानुपलब्धिः । विस्मृत्यनुपलब्धिरिदानीम्—

**अत्थस्स वि उवलंभे, अक्खरलद्धी ण होइ सव्वस्स ।**
**पुव्वोवलब्धमत्थे, जस्स उ णामं ण संभरति ॥४९॥**

“**अत्थस्स वि उवलंभे०**” गाहा । कण्ठ्या । अनुपलब्धिरुक्ता । [३]उपलब्धिः पंचहा । “**बितिय**”त्ति [गा० ४५] विशेषोपलब्धिः । अस्या व्याख्या—

**सारिक्ख विवक्खेहि य, लभति परोक्खे वि अक्खरं कोइ ।**
**सबलेर-बाहुलेरा, जह अहि-नउला य अणुमाणे ॥५०॥**

“**सारिक्ख विव०**” पच्छद्धं (गा० ४६) । सारिक्खविवक्खोवलद्धीओ जुगवं वक्खाणेति । “**सारिक्ख विवक्खे०**” गाहा । कण्ठ्या । “**अणुमाणे**”त्ति । सर्पदर्शनान्नकुलो[४]न्मीयते नकुलदर्शनाच्च तद्विपक्षः सर्प इति । “**उभयोपलब्धिः**” । अस्या व्याख्या—

१. **अणुवलद्धी** पू० २ । २. **अस्या** पू० २ । ३. **उवलद्धी पंचविहा** पा० । **उवलद्धी पंचहा** पू० २ । ४. **नकुलोऽनुमीयते** पू० १ ।

**एगत्थे उवलद्धे, कम्मि वि उभयत्थ पच्चओ होइ ।**
**अस्सतरि खरऽस्साणं, गुल-दहियाणं सिहरिणीए ॥५१॥**

"**एगत्थे उवलद्धे०**" गाहा । '**अस्सतरो**'त्ति वेगसरो[1] । तं दट्ठुं खरऽस्साणं दोण्हं जातीणं उवलद्धी भवति । सिहिरिणीउवलंभे गुल-दहियाणं उवलद्धी भवति । '**उवमोवलद्धि**' त्ति । अस्या व्याख्या–

**पुव्वं पि अणुवलद्धो, घिप्पति अत्थो उ कोति ओवम्मा ।**
**जह गोरेवं गवयो, किंचिविसेसेण परिहीणो ॥५२॥**

"**पुव्वं पि अणु०**" गाधा । कण्ठ्या । '**आगमतो य उवलद्धि**' त्ति [गा० ४६] । अस्या व्याख्या–

**अत्तागमप्पमाणेण अक्खरं किंचि अविसयत्थे वि ।**
**भवियाऽभविया कुरवो, णारग दियलोग मोक्खो य ॥५३॥**

"**अत्तागम०**" गाधा । आप्ता नाम सर्वज्ञाः । तेभ्यः आप्तेभ्यः आगमः आप्ता-गमः । आप्तागम एव प्रमाणं आप्तागमप्रमाणम् । अतस्तेन आप्तागमप्रमाणेन किञ्चिद-विषयस्थमप्यक्षरमुपलभ्यते[2] । यथा–भव्या-ऽभव्य-देवकुरु-उत्तरकुरु-नारक-देवलोक-मोक्षा इति, किञ्चिदिति न सर्वमुपलभ्यते । चशब्दादन्ये च भावाः । एवं ताव सण्णीणं उवलद्धी भणिता । असण्णीणं कथम् ? भण्णति–[3]सो वि चउरि-ति-बिइंदिएहिं ।

**उस्सण्णेणं असण्णीण, अत्थलंभे वि अक्खरं णत्थि ।**
**अत्थो च्चिय सण्णीणं, तु अक्खरं णिच्छए भयणा ॥५४॥**

"**उस्सण्णेण०**" गाहा । '**उस्सण्णेणं**'ति एकान्तेनैव तेषामसंज्ञिनां उपलब्धेऽप्यर्थे-ऽक्षरलब्धिर्न भवति । अर्थो नाम सोइंदियादीणं गज्झो । संखशब्दं श्रुत्वा न तेषामेषा लब्धिरुत्पद्यते यथा संखशब्दोऽयमिति । एवं शेषाणामपीन्द्रियाणां विभाषाः । सण्णीणं कहं ? भण्णति–'**अत्थो च्चिय**' अत्थो नाम जहा सद्दो एस । '**णिच्छए भयण**' त्ति, संखसद्दो सिंगसद्दो वा एस एवं णिच्छयगमणं होज्जा वा नवेत्यर्थः । एवं शेषेन्द्रियाणामपि । **उक्तं लब्ध्यक्षरं । व्यञ्जनाक्षरमिदानीम्–**

**अत्थाभिवंजगं वंजणक्खरं इच्छितेतरं वदतो ।**
**रूवं व पगासेणं, वंजति अत्थो जओ तेणं ॥५५॥**

---

१. ति **खरतरो** पू० २ । २. ०**स्थं सम्यग् अक्षरमुप०** पू० २ । ३. **स ति-बिंदिएहिं** पू० २ । **सो विइंदिएहिं** पा० पू० १ ।

"**अत्थाभिवंज०**" गाहा । जो सोइंदियादीहिं अत्थो उवलद्धो, तं व्यञ्जयतीति वंजणक्खरं, अभिधानमित्यर्थः । इच्छितं णाम जइ आसं भणामि त्ति आसो चेव भणिओ इच्छितं । '**इतरं**'ति अणिच्छियं । आसं भणामि त्ति गावी भणिया इतरं । आह, कस्मात् कारणात् अभिधानाक्षरमेव नोच्यते ? उच्यते । '**रूवं व०**' पच्छद्धं । यथा रूपं घटादि प्रदीपादिना प्रकाशेन तमसि वर्तमानं अभिव्यज्यते दृश्यत इत्यर्थः । तद्वदर्थमभि-व्यंजय-तीत्यर्थः । अस्मात् कारणात् गौणमिति कृत्वा व्यञ्जनाक्षरमभिधीयते ।

**तं पुण जहत्थणियतं, अजहत्थं वा वि वंजणं दुविहं ।**
**एगमणेगपरियियं, एमेव य अक्खरेसुं पि ॥५६॥**

"**तं पुण०**" गाहा । तं पुण वंजणं जेणत्थो अभिव्यज्यते तद् द्विविधम् । जहत्थणियतं च अजहत्थनियतं च । '**जहत्थणियतं**' णाम जहत्थजुत्तं । जहा खमति खमणो इत्यादि । '**अजहत्थणियतं**' जहा ण इंदं गोवेतीति इंदगोवओ । ण पलमसति पलासो इत्यादि । इदानीं जं तेण वंजणेण वंजिज्जति वत्थुं तं एगपज्जायं वा, अणेगपज्जायं वा होज्जा । एकानेकाभि-धानमित्यर्थः । '**एगपरिययं**'[1] जहा—अलोकः थंडिलमित्यादि । '**अणेगपरिययं**'[2] जहा—जीवः, सत्त्वः प्राणी, भूत इत्यादि । अहवा एगक्खरियं अणेगक्खरियं च । '**एगक्खरियं**' जहा—धीः श्रीः इत्यादि । '**अनेकाक्षरिकं**' यथा— कन्या, वीणा, लता, माला इत्यादि । तं च वंजणं ।

**सक्कय-पाययभासाविणियुत्तं देसतो अणेगविहं ।**
**अभिधाणं अभिधेयातो होइ भिण्णं अभिण्णं च ॥५७॥**

"**सक्कय-पायय०**" गाहा । '**सक्कय**' जहा—वृक्ष इत्यादि । '**पाययं**' जहा—रुक्खो इत्यादि । देशाभिधानं च प्रतीत्याऽनेकविधानं[3] भवति । जहा **ओयणो मागहाणं, कूरो लाडाणं, चोरो दमिलाणं, इडाकु अंधाणं** । एतेसिं अभिधाणाभिधेयाणं किमेकत्वमन्यत्वं वा ? भण्णति—"**अभिधाणं**" पच्छद्धं । अभिधानं वचनं । अभिधेयादर्थात् भिन्नमभिन्नं वा अवगंतव्यम् । तत् कथं ? उच्यते—

**खुर-अग्गि-मोयगोच्चारणम्मि जम्हा उ वयण-सवणाणं ।**
**ण वि छेदो ण वि दाहो, ण वि पूरण तेण भिण्णं तु ॥५८॥**

'**खुर-अग्गि०**' गाहा । यथासंख्येन, एवं तावद्भिन्नं । अभिण्णं कहं ? भण्णति—

**जम्हा उ मोयगे अभिहियम्मि तत्थेव पच्चओ होइ ।**
**ण य होइ सो अणत्ते, तेण अभिण्णं तदत्थातो ॥५९॥**

---

१. एगपरियायं पू० १ । २. अणेगपरियायं ज० पू० १, पा० । ३. ०त्याऽनेकाभिधानं पा० ।

"जम्हा उ०" गाहा । यस्मात्तु मोदक इत्यपदिष्टे विप्रकृष्टेऽपि मोदके एव संप्रत्ययो भवति, न सन्निकृष्टेऽपि घटे । न चानभिहिते मोदकाभिधाने आसन्नेऽपि मोदके प्रत्ययो भवत्यतो अभिन्नमभिधानमर्थात् । एवं क्षुराग्न्योरपि वक्तव्यम् ।

**एक्केक्कमक्खरस्स उ, सप्पज्जाया हवंति इयरे य ।**
**संबद्धमसंबद्धा, एक्केक्का ते भवे दुविहा ॥६०॥**

"**एक्केक्कमक्खर०**" गाहा । अस्य पुनर्व्यञ्जनस्य यान्यक्षराणि तत्रैकैकस्याक्षरस्य द्विविधाः पर्यायाः भवन्ति । भेदा इत्यर्थः । तद्यथा—स्वपर्यायाः परपर्यायाश्च । एक्केक्का ते दुविहा—संबद्धा असंबद्धा य । कहं संबद्धा भवन्ति ? इति उच्यते—

**अत्थित्ते संबद्धा, होंति अकारस्स पज्जया जे उ ।**
**ते चेव असंबद्धा, णत्थित्तेणं तु सव्वे वि ॥६१॥**

"**अत्थित्ते संब०**" गाहा । जे अकारस्स[१] सपज्जवा ते अत्थित्तेणं संबद्धा विद्यमानत्वात्, ते चेव सपज्जवा णत्थित्तेणं मग्गिज्जमाणा असंबद्धा । कस्मात् ? विद्यमानत्वात् । एवं ताव सपज्जवा भणिया । असपज्जवा कहं ? भण्णति—

**एमेव असंता वि उ, णत्थित्तेणं तु होंति संबद्धा ।**
**ते चेव असंबद्धा अत्थित्तेणं अभावत्ता ॥६२॥**

"**एमेव असंता वि०**" गाहा । जेणेव पगारेणं सपज्जवा भणिया अत्थित्तेण संबद्धा एवं असंतावि णत्थित्तेणं संबद्धा । कस्मात् ? अभावत्वात् । '**ते च्चेव**' त्ति असपज्जवा असंबद्धा । कथं ? । उच्यते—सद्भावेणं ति अत्थित्तेणं । कस्मात् ? अभावत्वात् । स्वपर्यायाश्चाकारस्य ह्रस्वादयः, परपर्याया इकारादयः । उक्तञ्च—

**ह्रस्व-दीर्घ-प्लुतत्वाच्च त्रैस्वर्योपनयेन च ।**
**अनुनासिकभेदाच्च[२], संख्यातोऽष्टादशात्मकः ॥** [ ]

एवं शेषाणामप्यक्षराणां स्वपर्यायाः परपर्यायाश्च वक्तव्या अकारवत् । इदानीं इदं चिन्त्यते । एगक्खरस्स वा अभिधाणस्स अणेगक्खरस्स वा जे अभिधाणक्खरस्स सपज्जवा ते तद[३]भिधानाभिधेयेऽर्थे सम्बद्धा । अण्णभिधाणाभिधेयेऽर्थे असंबद्धा । णिदरिसणं—

**घडसद्दे घ-ड-ऽकारा, हवंति संबद्धपज्जया एते ।**
**ते चेव असंबद्धा, हवंति रहसद्दमादीसु ॥६३॥**

"**घडसद्दे०**" गाधा । '**घडसद्दे**' त्ति घडाभिधाने घकार-डकारा "**संबद्धपज्जव**"

---

१. **अक्खरस्स** पू० २ । २. **०नासिकसंख्यातो-ऽकारोऽष्टा०** पू० १ । ३. **स्वाभिधाना०** पा० ।

त्ति, घडे अभिधेये "**ते च्चेव**"त्ति घकार-डकारा संबद्धा । "**रहसद्दमादिसु**" त्ति रथाभि-धेयादिसु । किं बहुणा—

**संजुत्ताऽसंजुत्तं, इय लभते जेसु जेसु अत्थेसु ।**
**विणिओगमक्खरं ते, से हुंति सब्भा( भा )वपज्जाया ॥६४॥**

"**संजुत्ता०**" गाधा । **संजुत्तं** ति द्विअक्खराइअभिधाणं[१] जहा—कन्ना वीणा इत्यादि । **असंजुत्तं** एगक्खरमभिधाणं । जधा—धीः श्रीः इत्यादि । '**इय**' त्ति एवं '**लभति**' त्ति पावति '**भावेसु**' त्ति अभिधेयेसु, '**विणिओगं**' ति अभिधानत्वं । '**ते सिं होंति सब्भा( भा )व-पज्जाया**' संबद्धा इति वाक्यशेषः । आह- भणिता तुब्भेहिं सपज्जाया[२] असपज्जाया य ते पुण एगस्स अक्खरस्स केवतिया पज्जवा ? भण्णति[३] । सव्वागासपएसग्गं सव्वागासपएसग्गेहिं गुणियं जावतिया तम्मि पज्जवा एवतिया एगस्स अक्खरस्स सपज्जवा भवंति । एत्तिया चेव परपज्जवा । एत्थ भण्णइ—एगस्स आगासपएसस्स केवतिया पज्जवा ? भण्णति[४]—अणंता । तेसिं कओ पसिद्धी भवति ? उच्यते—रूपिद्रव्यमपेक्ष्य । पुनरप्याह—रूपिद्रव्यस्य कतिविहा पर्यायाः ? उच्यते—व्यवहारवशात् चतुर्विधाः—गुरुगादि । निश्चयतो द्विविधाः-गुरुलघवः अगुरुलघवश्च । यतोऽपदिष्टं—

**णिच्छयतो सव्वगुरुं, सव्वलहुं वा ण विज्जते दव्वं ।**
**ववहारतो तु जुज्जति, बादरखंधेसु णऽण्णेसु ॥६५॥**

"**णिच्छयतो०**" गाधा । निश्चयो नाम निश्चयनयः, तस्य न किंचिद् द्रव्यं एकान्तगुरु, यद्येकान्तगुरु स्यात् ततः एकान्तेनैव पतनधर्मि स्यात् । न च पतति । अतो न सर्वगुरु द्रव्यमस्ति । यद्यप्येकान्तेन लघु स्याद् न कदाचिदपि पतेत् । पतति च । तस्मान्न सर्वलघुद्रव्यमस्ति । व्यवहारात् तु युज्यते—गुरुद्रव्यं बादरपरिणतेष्वनन्तप्रदेशिकेषु स्कन्धेषु, [५]नान्येषु । सूक्ष्मपरिणतेष्वनन्तप्रदेशिकेष्वपीत्यर्थः । गुरु यथा—अयस्पिण्डः । लघु यथा—उलूकपत्रम् । गुरुलघु यथा—वायुः । अगुरुलघु आकाशं । निश्चयात्तु गुरुलघवः सर्वे पुद्गलाः । यस्मात् परमाणोरपि गुरुलघुभावो विद्यते । कथम् ? यदि तस्यैकान्तेन गुरुभावो न स्यात् ततोऽनन्तपरमाणुसमवायेऽपि गुरुत्वं न स्यात् ततश्चाऽसत्कार्यप्रसंगः । असत्कार्ये च **वैशेषिका**दिसिद्धान्तप्रसङ्गः । यस्मादमी दोषास्तस्मात् परमाणौ गुरुत्वं विद्यते। एवं लघुत्व-मपि । अगुरुलघवश्च सर्वे अमूर्तास्तिकायाः । अतो अवेक्खिता[६] पसिद्धी एतेसिं । पोग्गलत्थि-कायगुरुलघुपज्जवाणं परिमाणं भण्णति—

---

१. **द्व्यक्षराभिधानं** पू० २ । २. **०या परपज्जा०** पू० २ । ३. **०वा भवंति** पू० २ । ४. **पज्जवा भवंति** पू० १ पा० । ५. **नान्येषु । लघुद्रव्यं सूक्ष्म०** पू०२ विना । ६. **अपेक्षिका** पू० २ ।

**ते गुरुलहुपज्जाया, पण्णाछेदेण वोकसित्ताणं ।**
**जा बायरो जहण्णो, अणंतहाणीए हायंता ॥६६॥**

"**ते गुरुलघु०**" गाहा । ते गुरुपज्जाया लहुपज्जाया य प्रज्ञाच्छेदेन अवणिज्जंति। थूलदविएहिं आढवेत्ता जाव परमाणू । थूला बादरपरिणता अणंतपदेसिता खंधा, तेसिं गुरुपज्जाएहिंतो लहुपज्जाया अणंतगुणहीणा, तदणंतरा[1] सुहुमपरिणता अणंतपदेसिया खंधा । तेसिं बादरपरिणताणंतपदेसियखंधलघुपज्जाएहिंतो अणंतगुणहीणा गुरुपज्जाया । तग्गुरुपज्जाएहिंतो य अणंतगुणवड्डिया लहू पज्जाया । एवं जहा जहा सुहुमा तहा तहा गुरुपज्जाया अणंतगुणहाणीए[2] हायंति, लहू पज्जाया अणंतवुड्डीए वड्ढंति । जाव दुपएसियलघुपज्जएहिंतो अणंतगुणहीणा परमाणुगुरुपज्जाया । तग्गुरुपज्जाएहिंतो य अणंतगुणवड्डिया लहू पज्जाया । आह, भणिता पोग्गलाणं गुरु-लहुपज्जयाणं हाणी वुड्डी य । एतेसिं पुण के कतो बहुया थोवा वा ? उच्यते—सव्वथोवा अणंतपदेसिया खंधा ।

**णंतपएसाणं पि य, सव्वत्थोवा उ बादरा खंधा ।**
**तेसिं पि वग्गणाओ, हवंति णंताओ सट्ठाणे ॥६७॥**
**तत्तो य वग्गणाओ, सुहुमाण भवंतऽणंतगुणियातो ।**
**परमाणूण य एक्का, संखे संखेयरेऽसंखा ॥६८॥**

"**णतंपदेसा०**" गाधार्द्धम् । ते केवतिया भेदेणं ? उच्यते । '**तेसिं०**' पच्छद्धं । जहा कुचिकण्णस्स गावीणं । '**तत्तो य०**' पुव्वद्धं । परमाणूणं एगा वग्गणा । संखेज्जपएसियाणं संखेज्जाओ वग्गणाओ । '**इतरे**'त्ति, असंखेज्जपएसिया, तेसिं असंखेज्जाओ वग्गणाओ ।

**इति पोग्गलकायम्मी, सव्वत्थोवा उ गुरुलहू दव्वा ।**
**उभयपडिसेहिया पुण, अणंतकप्पा बहुवियप्पा ॥६९॥**

"**इति पोग्गल०**" गाधा । उभयपडिसेधिया णामं अगुरुलहू, ते य णयमतातो अत्थि **अण्णम्मि सिद्धंते** । इहं न भणिया **चुण्णिकारेणं । सिद्धंते** य "बादरमिह गुरुलहुयं अगुरुलहुं सेसयं सव्वं [विशेषा० भा० गा० ६६०] ॥"

इह पुण पगए बादरीहोंताणं पोग्गलाणं गुरुपज्जाया वड्ढंति, लघुपज्जाया हायंति । सुहमीहवंताण पुण लघुपज्जाया वड्ढंति गुरुपज्जाया हायंति ।

**केण हवेज्ज णिरोहो, अगुरुलहूपज्जवाण उ अमुत्ते ।**
**अच्चंतमसंजोगो, जहेय पुण तव्विवक्खस्स ॥७०॥**

१. तदणंतर० पू० १ । २. अणंतहाणीए पू० १-२ ।

"**केण०**" गाहा । अमुत्ते पुण अत्थिकाए केण कारणेणं णिरुंभणं णिरोधो तेसिं[1] अगुरुलघुपज्जायाणं, केण पुण कारणेणं णत्थि वियारणा अगुरुलघुपरियायाणं ? उच्यते– "**अच्चंतमसंजोगो०**" पच्छद्धं । तद्विपक्षस्येति गुरुलघुपर्यायानाम् ।

**एवं तु अणंतेहिं, अगुरुलहूपज्जवेहिं संजुत्तं ।**
**होइ अमुत्तं दव्वं, अरूविकायाण उ चउण्हं ॥७१॥**

"**एवं तु०**" गाहा । एक्केक्को पएसो अणंतेहिं अगुरुलहुपज्जवेहिं संजुत्तो । अरूवि-अत्थिकायाणं चउण्हं । आह च–तुब्भेहिं जं भणियं '**सव्वागासपएसग्गं अणंतगुणियं पज्जवग्गअक्खरं णिप्फज्जति**' तं कथं ? उच्यते–

**उवलद्धी अगुरुलहू, संजोग-सरादिणो य पज्जाया ।**
**एतेण हुंतऽणंता, सव्वागासप्पएसेहिं ॥७२॥**

"**उवलद्धी०**" गाहा । [2]उपलम्भनमुपलब्धिः ज्ञानमित्यर्थः । कस्य ? इत्यत्रोच्यते– धम्मा-धम्म-जीव-पोग्गलत्थिकाय-अद्धासमयाणं सव्वपगारेहिं उवलम्भनं[3] उपलब्धिः । '**अगुरुलहु**' त्ति सव्वागासपदेसाणं एक्केक्कस्स आगासपदेसस्स अणंता अगुरुलहुपज्जाया । '**संजोग**'त्ति ते भावा जावतिएहिं अक्खरसंजोगेहिं अभिलप्पंति त्रिकालविषये । '**सरादि**'त्ति त एव भावा उदात्तादिभिः स्वरैरभिलप्यन्ते । आदिग्रहणाद् या चान्या काचिच्चेष्टा, शकुनरुताद्या वा स्वरा गृह्यन्ते । **पर्याय**शब्दः अन्तेऽभिहितः प्रतिपदमुपतिष्ठति । यथा–उपलब्धिपर्यायः, एवं सर्वत्र । अनेन कारणेनानन्ता ज्ञानपर्यायाः सर्वाकाशप्रदेशेभ्यः । यच्चैतद् ज्ञानसंज्ञकमक्षरं, अस्य "**सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंतो भागो निच्चुग्घाडिओ**[4]" । अपिग्रहणात् केषांचित् सर्वमेव । सर्वे जीवाः सर्वजीवाः । सर्वजीवानामप्यक्षरस्य अनन्तभागो नित्याऽपावृतः[5], संसारस्थानामिति वाक्यशेषः । तं पुण केण च्छादितं यस्यानन्तभागो नित्यापावृतः[6] ? उच्यते–

**अविभागेहिं अणंतेहिं, णाणावरणस्स एक्कमेक्को उ ।**
**होति पतेसो वरिता, सव्वजियाणं जिणे मोत्तुं ॥७३॥**[7]

"**अविभागेहिं०**" गाहा । "**अविभागेहिं**"ति ण सक्कंति छउमत्थेणं चक्खुणा विभयितुं । पलिच्छेदा इति वाक्यशेषः । अंशा भेदा उत्तरपगडीओ इत्यनर्थान्तरं । तैर-विभागैरनन्तैः ज्ञानावरणीयस्य कर्मणः सर्वजीवानामेकैकः प्रदेश आवृतो जिनान् मुक्त्वा । अक्षरमित्येतस्याभिधानस्येयं व्याख्या–

१. **केसिं अ०** पू० १, पा० । २-३. **उपलभन०** पू० २ । ४. नन्दीसूत्रे सू० ७७, पृ० ३१; म०जै०वि० आवृत्ति; सं० मुनि पुण्यविजय । ५-६. **०प्रावृतः** पू० २ । ७. गाथेयं अत्र वृत्तौ नाहृता ।

**णाणं तु अक्खरं जेण खरति ण कयाति तं तु जीवातो ।**
**तस्स उ अणंतभागो, न वरिज्जति सव्वजीवाणं ॥७४॥**

**जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज, तेण जीवो अजीवयं गच्छे ।**
**सुट्ठु वि मेहसमुदए, होति पभा चंद-सूराणं ॥७५॥**

"**णाणं तु अक्खरं०**" गाधा । कधमजीवत्तं गच्छे ? अज्ञत्वात्[1] । यश्चाज्ञः स निश्चेतनो भवति, घटवत् । तस्मात् सुष्ठ्वप्याऽऽवृतोऽसौ न निश्चेतनः । कथं ? यथा–"**सुट्ठु वि मेहसमुदए**" । आह-णणु पुढविमादीणं पंचण्हं सव्वहा आवरितं णाणं ? उच्यते–

**अव्वत्तमक्खरं पुण, पंचण्ह वि थीणगिद्धिसहिएणं ।**
**णाणावरणुदएणं, बिंदियमाई कमविसोही ॥७६॥**

"**अव्वत्तमक्खरं०**" गाहा । अव्यक्तमस्फुटं, केनाऽस्फुटमिति चेदुच्यते–पञ्चानां पार्थिवादीनां इट्ठं चित्तमित्यर्थः । स्त्यानं इट्ठं । यथा-स्थीनेन उदकेन न प्रयोजनं भवति । अथवा स्थीनगृद्धिः, गृद्धिरित्यर्थः । जेण भण्णति–इच्छा–मुच्छा-गेधी । अतस्तेन थीणगिद्धि–सहिएणं णाणावरणोदएणं । तं च सव्वथोवं पुढविकाइयाणं । कस्मात् ? निश्चेष्टत्वात् । ततः क्रमाद् यावत् वनस्पतिकायिकानां विसुद्धतरं, ततो परं बेंदियमादी-कमविसोही जाव अणुत्तरोववा-इयाणं, ततो वि चोद्दसपुव्वीणं विसुद्धतरं । **सेत्तं अक्खरसुतं** ॥छ॥

इयाणिं **अणक्खरसुयं**–

**ऊससियं णीससियं, णिच्छूढं खासियं च छीयं च ।**
**णिस्सिंघियमणुसारं, अणक्खरं छेलिआदीयं ॥७७॥**

"**ऊससियं णीस०**" गाहा । उद्धं सासो उस्सासो, अहो सासो णिस्सासो[2] । आदि ग्रहणात् जंभातियमाइयाणि[3] । तत्थ णिदरिसणं–

**[4]तिट्टि त्ति णंदगोवस्स बालिया वच्छए णिवारेइ ।**
**छच्छ त्ति य मुद्धडए, सेसे लट्ठीणिवाएणं ॥७८॥**

"**तिट्टि त्ति नंदगोवस्स०**" गाहा । कंठ्या । **सेत्तं अणक्खरसुयं** ॥छ॥

इदाणिं **सण्णिसुयं** । तत्थ गाहा–

---

१. **अज्ञानत्वात्** पू० १, पा० । २. **अहोस्सासो अधस्सासो** पू० २ । ३. **०तियमणियाणि** पू० २ । ४. **तित्ति ति** पू० १-२ । **तत्ति न०** पा० ।

**संजाणणेण सण्णी, कालिय हेऊ य दिट्ठिवाए य ।**
**आदेसा तिण्णि भवे, तेसिं च परूवणा इणमो ॥७९॥**

"**संजाणणेण०**" गाधा । संजाणतीति सण्णा, सा जस्स अत्थि सो सण्णी । तस्स सुतं सण्णिसुतं । तं तिविहं—कालिओवदेसेणं, हेऊवदेसेणं, दिट्ठीवादोवदेसेणं । एते आदेसा तिण्णि भवे । "**तेसिं च परूवणा इणमो**" त्ति इमा । तत्थ कालिओवदेसेणं सण्णी जस्स णं ईहा-ऽपूहा-मग्गणा-गवेसणा-चिंता इत्यादिम(र्म)नःपर्यायो[1] यस्यास्ति स संज्ञी, तस्मान्मनसः उत्पत्तिर्वक्तव्या । अत उच्यते—

**खंधेऽणंतपएसे, मणजोगे गिज्झ गणणतोऽणंते ।**
**तल्लद्धि मणेति तओ, भासादव्वे व भासंते ॥८०॥**

"**खंधे०**" गाहा । जहा **णंदीए आवस्सए** मणवग्गणासु । **तल्लद्धि** त्ति मणलद्धी । भासाद्रव्याणीव भासंतो यथोपादत्ते तथा मणद्रव्याण्युपादाय "**मणेति**"—तेहिं य मणोदव्वेहिं ते ते भावे मुणेति । कहं ? उच्यते—

**रूवे होउवलद्धी, चक्खुमतोवदंसिए पगासेण ।**
**इय छव्विहमुवओगो, मणदव्वपगासिए अत्थे ॥८१॥**

"**रूवे होउवलद्धी०**" गाहा । जहा चक्खुमतो पगाससंजुत्तेण चक्खुणा घडादिरूवोवलद्धी भवति, एवं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु छट्ठो य सुमिणादिसु उवतोगो भवति **मणदव्वपगासिए अत्थे** । आह—जति मणदव्व-पगासिए अत्थे उवओगो तो असण्णीणं मणदव्वविरहियाणं कहं अत्थोवलद्धी भवतु ? उच्यते—

**एसेव य दिट्ठंतो, णातिफुडे खलु जहा पगासेणं ।**
**होउवलद्धी रूवे, अस्सण्णीणं तहा विसए ॥८२॥**

"**एसेव य०**" गाहा । एष इति, यथा—चक्षुष्मतो मन्दप्रकाशसंयुक्तेऽपि चक्षुषि रूपोपलब्धिर्भवति, **अस्सण्णीणं तधा विसए** । अथवा अयमन्यो दृष्टान्तः—

**अधवा मुच्छित मत्ते, पासुत्ते वा वि अत्थउवलंभो ।**
**इय होति असण्णीणं उवलंभो इंदिया जेसिं ॥८३॥**

"**अधवा मु०**" गाहा । "**अत्थउवलंभो**" **अव्वत्तो भवतीति** वाक्यशेषः । "**इय**[2] **होइ असण्णीणं उवलंभो** अव्वत्तो । इंदियाणि जइ जेसिं तेसिं ततिविहो । आह—यदि द्वयोरपि चैतन्यं जीवत्वं च तुल्यं कथं मनसो हीनाधिकत्वं भवति ? उच्यते—

१. ०पर्यायाः पू० २ । २. **इह हो०** पू० १ ।

**तुल्ले च्छेयणभावे, जं सामत्थं तु चक्करयणस्स ।**
**तं तु जहक्कमहीणं, न होइ सरपत्तमादीणं ॥८४॥**

"**तुल्ले च्छेयणभावे**" गाहा । आदिग्रहणात् दर्भाणाम् । एष दृष्टान्तः । अयमर्थोपनयः—

**एवं मणविसतीणं, जा पडुया होइ उग्गहातीसु ।**
**तुल्ले चेयणभावे, न होइ अस्सण्णिणं सा तु ॥८५॥**

"**एवं मणवि०**" गाहा । "**पडुत**"त्ति समत्थता उग्गहादीहिं चउहिं पगारेहिं अत्थावधारणे कायव्वे । "**न होति असण्णीणं सा तु**" उग्गहादीहिं अत्थावधारणा । से त्तं **कालिओवएसेणं** । इयाणिं **हेतूवदेसेणं** भण्णइ—

**जेसि पवित्ति-णिवित्ती, इट्ठा-ऽणिट्ठेसु होइ विसएसु ।**
**ते हेतुवाउ सण्णी, वइहम्मेणं घडो णाइं( यं ) ॥८६॥**

"**जेसिं पवित्ति०**" गाहा । जेसिं सत्ताणं इट्ठाणिट्ठेसु सद्दादिविसएसु पवित्ति-[1]णिवित्तीओ भवंति, ते हेउवातसण्णी । जहा—[2]पिपिलियाणं गुलादिसप्पणं । अतो हेतुवादसंज्ञिनो द्वीन्द्रियादय इति नः प्रतिज्ञा । कस्मात् ? इष्टानिष्टविषयप्रवृत्ति-निवृत्तित्वात् । वैधर्म्येणाऽऽसादृश्येन [3]ज्ञातं दृष्टान्तः घटः । यथा हि अचेतनस्य घटस्य इष्टानिष्टविषय-प्रवृत्तिनिवृत्ती[4] न भवतः न च तथा जीवानां विद्यमानेष्वीहादिषु इष्टानिष्टविषय-प्रवृत्तिनिवृत्ती[5] न भवतः । तस्मादिष्टानिष्टविषयप्रवृत्तिनिवृत्तित्वात् पश्यामः, येषामिष्टानिष्टविषयप्रवृत्तिनिवृत्ती[6] स्तः, ते संज्ञिनो द्वीन्द्रियादयः । इत्युक्तो **हेतुवादसंज्ञी** ॥छ॥

से किं तं [7]दिट्ठिवादोवदेसेणं ? दिट्ठिवादोवदेसेणं सण्णिसुतस्स खओवसमेणं सण्णीति लब्भति । असण्णीसुतस्स खओवसमेणं असण्णीति लब्भति । सण्णिसुतं नाम सम्मसुयं । असण्णिसुयं ति मिच्छसुयं । आह—जदि दो वि खओवसमियाणि दोण्ह वि य सुयाणि तो किं एगं असण्णिसुतं भण्णइ ? जेण असोभणं तं सुयं पि होंतयं ? जहा—

**होति असीला णारी, जा खलु पतिणो ण रक्खए सेज्जं ।**
**तं पि त हु होति सीलं, असोहणं तेण उ असीला ॥८७॥**

"**असीला०**" गाधा । कण्ठ्या । एस दिट्ठंतो । अयमत्थोवणओ—

**एवं खओवसमिए, जं वट्टंते उ णाणविसयम्मि ।**
**ते खलु हवंति सण्णी, अण्णाणी होंति अस्सण्णी ॥८८॥**

---

१. **णियत्तीओ** पू० १-२ । २. **पिविलियाणं** पू० २; **पिपीलियादीणं** पा० । ३. **नायं** पू० २ । ४-५. ०**निवृत्तिर्न भवति** पू० २ । ६. ०**निवृत्तिरस्ति** पू० २ । ७. **दिट्ठिवातीओ०** पू० १ । **दिट्ठिवादिओ०** पू० २ ।

"**एवं खओ०**" गाधा । जं भणियं सम्मद्दिट्ठी सण्णी, मिच्छद्दिट्ठी असण्णी । **सण्णि-असण्णिसुयाणि दोवि** गयाणि ॥छ॥

इदाणिं **सम्मसुय-मिच्छसुयाणिं** दो वि समयं चेव भण्णंति–

**अंगा-ऽणंगपविट्ठं, सम्मसुयं लोइयं तु मिच्छसुयं ।**
**आसज्ज उ सामित्तं, लोइय लोउत्तरे भयणा ॥८९॥**

"**अंगा-ऽणंगप०**" गाहा । "**आसज्ज**" त्ति प्राप्य "**सामित्तं**" ति परिगृहीतं[१] । लोइयसुयं पि सम्मद्दिट्ठिपरिग्गहियं सम्मसुयं भवति । लोउत्तरसुयं पि मिच्छद्दिट्ठिपरिग्गहियं मिच्छसुयं भवति । एस भयणा । सम्मद्दिट्ठिणा मिच्छद्दिट्ठिणा वा सामिणा उभयसुयसेवणत्ति भणियं होइ । आह–

जेण सम्मत्तेण परिग्गहियं सम्मसुयं भवइ, तं किंपच्चयं ? उच्यते–

आभिणिबोहियणाणभेदो अवायो पच्चयो तस्स । जेण भणितं–

**आभिणिबोहमवायं, वयंति तप्पच्चयाउ सम्मत्तं ।**
**जा मणपज्जवणाणी, सम्मद्दिट्ठी उ केवलिणो ॥९०॥**

"**आभिणिबोहि०**" त्ति गाधा । आभिणिबोधियणाणं [२]तब्भेदमवायं वदंति । सो केरिसो ? भण्णति । जहा–खाणुपुरिसोचिते पदेसे मंदमंदपगासाए रयणीए, तेसिं खाणुपुरिसाणं परिच्छेदो जया सलिंगेहिं कतो हवति । जहा–खाणू एस, न पुरिसो । पुरिसो वा एस, न खाणू। [३]तयो अवाओ भन्नति । एवं अवाएणं अवगएसु खाणु-पुरिसेसु जा तत्तरुयी तं सम्मत्तं भवति । जं भणितं-खाणुं खाणुं चेव रोएति, पोग्गलमयं वणस्सतिसरीरं, न बंभणादिं । एवं पुरिसं पि जहाऽवत्थियं रोएति । एवं च अवायपच्चयं सम्मद्दंसणं जाव मणपज्जवणाणी ताव भवति । "**सम्मद्दिट्ठी उ केवलिणो**", जं भणितं–णत्थि तेसिं अवायपच्चयं सम्मद्दंसणं आभिणिबोहियणाणाभावातो । तं पुण सम्मद्दंसणं कतिविहं ? अत उच्यते–

**उवसामग सासाणं, खाओवसमियं च वेदगं खइयं ।**
**सम्मत्तं पंचविहं जह लब्भति तं तहा वोच्छं ॥९१॥**

"**उवसामग सासायण०**" गाहा । उवसमसम्मत्तं, सासायणसम्मत्तं, खओवसमियसम्मत्तं, वेयगसम्मत्तं, [४]खइयसम्मत्तं ति । एयं "**पंचविहं सम्मत्तं जह लब्भइ, तं तहा वोच्छं**"ति भणामि । कम्माणं खएण वा उवसमेण वा खओवसमेण वा । एते य तिण्णि पगारा बद्धस्स कम्मणो हवंति, नाबद्धस्स । एएणाभिसंबंधेण–

१. **परिगृहीतारं लो०** पू० १ । **परिगृहीतिं** पू० २ । २. **तहेयमवायं** पू० १ । ३. **तदा** पा० । **तया** पू० १ । **ततो** पू० २ । ४. **खाइयं०** पा० ।

**बंधट्ठितीपमाणं, सामित्तं चेव सव्वपगडीणं ।**
**को केवइयं बंधइ, खवेइ वा केत्तियं कोइ ॥९२॥**

"**बंधट्ठिति०**" गाहा । **बंध** त्ति चउव्विहो बंधो वत्तव्वो । तत्थ जो ट्ठितिबंधो तम्मि—

**आउयवज्जा उ ठिई, मोहोक्कोसम्मि होइ उक्कोसा ।**
**मोहविवज्जुक्कोसे, मोहो सेसा य भइयाउ ॥९३॥**

"**आउयवज्जा०**" गाहा । वित्थरेण जहा **विसेसावस्सगस्स भस्से** । "**सामित्तं चेव सव्वपगडीणं । को केवतियं बंधति, खवेति वा केत्तियं को उ ?**" ॥ त्ति, जहा '**कम्मपगडीए**' । एतं पसंगेण गयं ॥छ॥

इयाणिं पगतं भण्णति । तत्थ सत्तण्ह[1] वि कम्मपगडीणं गंठिम्मि अपुव्वकरणेणं भिण्णे, अणियट्टिकरणेणं सम्मद्दंसणं लब्भति । एतेणाभिसंबंधेणं गंठी करणाणि य वत्तव्वाणि । तत्थ गंठी—

**अंतिमकोडाकोडीएँ होइ सव्वासि कम्मपगडीणं ।**
**पलिया असंखभागे, खीणे सेसे हवइ गंठी ॥९४॥**

"**अंतिमकोडाकोडीए०**" गाहा । कंठा । इयाणिं करणाणि—

**तिविहं च होइ करणं, अहापवत्तं तु भव्व-ऽभव्वाणं ।**
**भवियाण इमे अण्णे अपुव्वकरणाऽनियट्टी य ॥९५॥**

"**तिविहं०**" गाहा । कंठा । एतेसिं तिण्हं पि करणाणं कं कम्मि काले होति ? उच्यते—

**जा गंठी ता पढमं, गंठिं समतिच्छतो अपुव्वं तु ।**
**अणियट्टीकरणं पुण, सम्मत्तपुरक्खडे जीवे ॥९६॥**

"**जा गंठी०**" गाहा । कंठा । '**सम्मत्तपुरक्खडे**' त्ति सम्मत्ताभिमुहे । आह—जाव गंठी ताव णिग्गुणेण[2] कहं कम्मरासी खविओ ? उच्यते—

**णइ पह जर वत्थ जले, पिवीलिया पुरिस कोद्दवा चेव ।**
**सम्मद्दंसणलंभे, एते खलु अट्ठुदाहरणा ॥९७॥**

---

१. अट्ठण्ह पू० २ । २. निग्गुणा, ता कहं पू० १ ।

"**णइ पह०**" गाहा । अस्य व्याख्या—

**गिरिसरियपत्थरेहिं, आहरणं होइ पढमए करणे ।**
**एवमणाभोगियकरणसिद्धितो खवण जा गंठी ॥९८॥**

"**गिरिसरित०**" गाहा० । कंठा । इयाणिं जं तं भणितं "अणियट्टीकरणं पुण सम्मत्तपुरक्खडे जीवे" सो कहं सम्मत्तं लभेज्जा ? उच्यते—उवएसेण वा, सयं वा, णिसग्गेणं ति भणियं होति । दिट्ठंतो जहा-'**पह-जर**' । अनयोर्व्याख्या—

**उवदेसेण सयं वा, णट्ठपहो कोइ मग्गमोतरति ।**
**जरितो य ओसहेहिं, पउणइ कोई विणा तेहिं ॥९९॥**

"**उवएसेण सतं वा०**" गाहा । कंठा । ज्वरवद्दर्शनमोहं, औषधवदुपदेशः । इयाणिं जो खओवसमसम्मदिट्ठी सो तप्पढमयाए सम्मत्तं पडिवज्जिउकामो अपुव्वेणं तिपुंजं मिच्छत्तं कुणति । अपुव्वेणं[१] ति करणेणं तिपुंजं ति मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तं सम्मत्तं ति। दिट्ठंतो जहा-**वत्थ-जले** । अनयोर्व्याख्या—

**मइल दरसुद्ध सुद्धं, जह वत्थं होइ किंचि सलिलं वा ।**
**एसेव य दिट्ठंतो, दंसणमोहम्मि तिविहम्मि ॥१००॥**

[२]"**मइलदर०**" गाहा । कंठा । इयाणिं एयम्मि खओवसमसम्मदिट्ठिम्मि अच्छउ असमत्ते चेव । चोदओ भणति—'कहं भविया तं गंठिं भिंदिऊण तरंति ? अभविया वा कहं तम्मि चेव चिट्ठंति परिवडंति वा ?' उच्यते—जहा पिवीलिया । अस्य[३] व्याख्या—

**अधभावेण पसरिया, अपुव्वकरणेण खाणुमारूढा ।**
**चिट्ठंति तत्थ काई, पिपीलिया काइ उड्डुंति ॥१०१॥**

**पच्चोरुहणट्ठा खाणुआतो चिट्ठंति तत्थ एवावि ।**
**पक्खविहूणातो पिवीलियातो उड्डुंति उ सपक्खा ॥१०२॥**

"**अहभावेण पसरिया०**" गाथाद्वयम् । '[४]**पसरित**'त्ति बिलाओ णिग्गंतुं पचंकमिता[५] चिट्ठंति । तत्थ '**कायि**' त्ति । अस्य व्याख्या—"**पक्खविहूणाउ पिवीलियाओ । पिवीलिया काइ उड्डेंति**"त्ति, अस्य व्याख्या । '**उड्डेंति उ सपक्खा**' । एस दिट्ठंतो । अयं उवणओ—भवसिद्धि-सलद्धीण य पंखालपिवीलिया उवमा । अभविया पुण भविया य केइ परिवडेज्जा वि गंठीओ । जहा पिवीलियाणं पच्चोरुहणं वा खाणुयाहिं एवं । अहवा एतम्मि चेव अत्थे

---

१. **०णं ति त्ति करणेणं** पू० २ । २. **मलिण-दर०** पा० । **मलिण-तर** पू० २ । ३. **आसां** पू० २ । ४. **परिणतत्ति** पू० १ । ५. **पचक्कम्मिता** पू० २ ।

इमो अण्णो दिट्ठंतो-"पुरिस"त्ति, अस्य व्याख्या-

**जह वा तिण्णि मणूसा, सभयं पंथं भएण वच्चंता ।**
**वेलाइक्कमतुरिया, वयंति पत्ता य दो चोरा ॥१०३॥**

**तत्थेगो उ नियत्तो, एगो थद्धो अतिच्छितो एक्को ।**
**कमगति अहापवत्तं, भिण्णेयर धावणं तइए ॥१०४॥**

"**जह वा तिण्णि०**" गाहाद्वयम् । "**इतर**"त्ति अपुव्वकरणं । अयं उवणयो-

**एवं संसारीणं, जोए सव्वाइं तिण्णि करणाइं ।**
**भवसिद्धिसलद्धीण य, पंखालपिवीलिया उवमा ॥१०५॥**

"**एवं संसारीण०**" गाधा । पुव्वद्धं कंठं । तत्थ जो सो थद्धपुरिससरिसो, सो तम्मि गंठिम्मि संखेज्जमसंखेज्जं वा कालं चिट्ठेज्जा । तस्स य-

**दट्ठूण जिणवराणं पूयं अण्णेण वा वि कज्जेण ।**
**सुयलंभो उ अभव्वे, हविज्ज थद्धेण उवणीए ॥१०६॥**

"**दट्ठूण जिण०**" गाहा । कंठा । एत्थ जेण अणियट्टिकरणेणं सम्मत्तं लद्धं, तस्स वड्ढी वा हाणी वा । जति हाणी तो परिपडति । अध ण परिपडति, तो सावगादीणं पदाणि केच्चिरस्स लभति ? जहण्णेण समगं चेव लभेज्जा । जेण भणियं- "**सम्मत्त-चरित्ताइं, जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं**" ॥ [ ]

उक्कोसेणं-

**सम्मत्ते पुण लद्धे, पलियपुहुत्तेण सावगो होज्जा ।**
**चरणोवसम-खयाणं, सागरसंखंतरा होंति ॥१०७॥**

"**सम्मत्ते पुण०**" गाहा । "**पलियपुहुत्तेण**" त्ति । खविएणं ति वाक्यशेषः । सो तेण अप्परिवडिएणं कइ भवगहणाइं होज्जा ? उच्यते-उक्कोसेणं अट्ठ । जेण भणियं-

**एवं अप्पडिवडिए, सम्मत्ते देव-मणुयजम्मेसु ।**
**अण्णयरसेढिवज्जं, एगभवेणं च सव्वाइं ॥१०८॥**

"**एवं अप्पडिवडिए**" गाहा । कंठा । इदाणिं जं तं हेट्ठा भणियं-

**अपुव्वेण तिपुंजं, मिच्छत्तं काउ कोद्दवे उवमा ।**
**तिण्णि वि अवेययंतो, उवसामगसम्मदिट्ठीओ ॥१०९॥**

"**अपुव्वेण तिपुंजं०**" । मिच्छत्तं कुणति खओवसमसम्मदिट्ठी तप्पढमताए । तं

कधं ? उच्यते–कोद्दवे उवमा । एत्थ [1]वक्कं पडितं । कोद्दवा चेव । अस्य व्याख्या–

**जह मयणकोद्दवा ऊ, दरणिव्वलिया य णिव्वलियगा य ।**
**एमेव मिच्छ मीसं, सम्मं वा होति जीवाणं ॥११०॥**

"**जह मयण०**" गाहा । णिव्वलियगाणं मयभावो कहं णट्ठो ? उच्यते–

**कालेणुवक्कमेण व, जह णासति कोद्दवाण मदभावो ।**
**अहिगमसम्मं णेसग्गियं च तह होइ जीवाणं ॥१११॥**

"**कालेणुवक्कमे०**" गाहा । उवक्कम-णिव्वलियगसरिसं । अभिगमसम्मद्दंसणं–

**सोतूणं अहिसमेच्च व करेइ सो वड्ढमाणपरिणामो ।**
**मिच्छे सम्मामिच्छे, मीसे वि य पोग्गले समयं ॥११२॥**

"**सोऊणं०**" गाहा । कंठा । तिण्हं पुंजाणं दिट्ठंतेणं णिण्णओ कओ । इयाणिं ते पुंजे तिण्णि वि अवेयंतो उवसामगसम्मदिट्ठी । सो एस पुण उवसामगसेढी-अणियट्टी । जेण भणियं–

**उवसामगसेढिगयस्स होति उवसामियं तु सम्मत्तं ।**

आह-एस चेव एगो उवसमसम्मद्दंसणी ? उच्यते–ण वि । इमो बितीयो–

**जो वि य अकयतिपुंजो अखवियमिच्छो लहति सम्मं ॥११३॥**

"जो वि य अकयतिपुंजो" पच्छद्धं । अस्य व्याख्या–

**खीणम्मि उदिण्णम्मि तु, अणुइज्जंते य सेसमिच्छत्ते ।**
**अंतोमुहुत्तकालं, उवसमसम्मं लहति जीवो ॥११४॥**

"**खीणम्मि उदिण्णम्मि०**" गाधा । कंठा । आह–सो मिच्छत्ते संतकम्मे कहं न वेदेति मिच्छत्तं ? उच्यते–उदयाभावातो, जहा वणदवो इंधणाभावे ।

**ऊसरदेसं दड्ढेल्लयं च विज्झाति वणदवो पप्प ।**
**इय मिच्छस्स अणुदए, उवसमसम्मं लभति जीवो ॥११५॥**

"**ऊसरदेसं०**" गाधा । कंठा । एवं सो मिच्छत्तोदयाभावातो मिच्छद्दंसणं न वेदेति। किञ्च–

**[2]झीमीभवंति उदया, कम्माणं अत्थि सुत्तउवदेसो ।**
**उववायादी सायं, जह णेरइया अणुभवंति ॥११६॥**

१. वाक्यं पू० १-२ । २, झिम्मि० पू० २ ।

**उववाएण व सायं णेरतिया देवकम्मुणा वा वि ।**
**अज्झवसाणनिमित्तं, अहवा कम्माणुभावेणं ॥११७॥**

"**झीमीभवंति०**" गाधाद्वयम् । कंठं । 'झीमीभवंति' त्ति मंदीभवंति । एते य दो वि उवसामगा अंतोमुहुत्तं उवसमसम्मद्दंसणीहोउं अवस्समेव परिवडंति । जहा—

**वाही असव्वछिण्णो, कालाविक्खं कुरु व्व दड्ढदुमो ।**
**उवसामगाण दोण्ह वि, एते खलु होंति दिट्ठंता ॥११८॥**

"**वाही असव्व०**" गाधा । कंठा । एत्थ य उवसामगसेढी-अणियट्टी उवसम-सम्मद्दंसणी देसपडिवाएण वा सव्वपडिवाएण वा परिवडति । इतरो अवस्समेव सव्व-पडिवातेण परिवडति । मिच्छत्तं गच्छतीत्यर्थः । दिट्ठंतो—

**आलंबणमलहंती, जह सट्ठाणं ण मुंचए इलिया ।**
**एवं अकयतिपुंजी मिच्छं चिय उवसमी एति ॥११९॥**

"**आलंबणमलभंती०**" गाहा । कंठा । एत्थ य जो एस अकयतिपुंजी उवसामओ, एयं मोत्तुं सेसा मिच्छत्तम्मि अक्खविए तिपुंजी, सम्मद्दिट्ठिणो णियमा अवस्समेव त्रिपुञ्जिनः इत्यर्थः । क्षपकश्रेण्यां तु—"**खीणंमि उ०**" पच्छद्धं (पुव्वद्धं ?) । कंठं । से त्तं **उवसमसम्मत्तं** ॥छ॥

आह—सासायणसम्मद्दिट्ठी को ? उच्यते—जो कयतिपुंजी वा जो अकयतिपुंजी वा उवसामओ सो ।

**उवसमसम्मा पडमाणतो उ मिच्छत्तसंकमणकाले ।**
**सासायणो छावलितो, भूमिमपत्तो व पवडंतो ॥१२०॥**

"**उवसमसम्मा०**" गाहा । कंठा । आह—सासादण इति किमुक्तं भवति ? इत्युच्यते—

**आसादेउं व गुलं, ओहीरंतो न सुट्ठु जा सुयति ।**
**सं आयं सायंतो, सस्सादो वा वि सासाणो ॥१२१॥**

"**आसादेतुं व गुलं०**" गाधा । '**ओहीरंतो**' त्ति निद्दायंतो । अहवा स्वं आत्मीयं आयमागमं, सम्यग्दर्शनमित्यर्थः । तत् सादयति । अहवा सदिति शोभनं, तच्च सम्यग्दर्शनं । तत् [१]सादयति । से त्तं **सासायणं सम्मद्दंसणं** ॥छ॥

इयाणिं **खयोवसमसम्मद्दंसणं** । तं केरिसं ? उच्यते—

१. सातयति पू० २ ।

**जो उ उदिण्णे खीणे, मिच्छे अणुदिण्णगम्मि उवसंते ।**
**सम्मीभावपरिणतो, वेयंतो पोग्गले मीसो ॥१२२॥**

"**जो उ उदिण्णे०**" गाधा । "**सम्मीभावपरिणतो**"त्ति सम्मत्तपोग्गले वेदेंतो, **मीसो** त्ति, **खओवसमसम्मद्दंसणी** । ॥छ॥

इयाणिं **वेदगसम्मद्दिट्ठी खवगसेढीए**—

**जो चरिमपोग्गले पुण, वेदेती वेयगं तयं बिंति ।**
**केसिं चि अणादेसो, वेयगदिट्ठी खओवसमो ॥१२३॥**

"**जो चरिम०**" गाधा । **चरिमपोग्गले** त्ति अंतिमपोग्गले सम्मद्दंसणस्स । तओ अणंतरे समए खीणसम्मत्तओ होहि त्ति । '**केसिं चि**'त्ति **बोडियाणं** '**आएसो**' त्ति अभिप्पाओ । '**वेदगदिट्ठि**' त्ति, वेयगसम्मद्दंसणी । को ? जो मीसो त्ति खओवसमिओ । तच्च न ॥छ॥

इयाणिं खइयसम्मद्दंसणी, केरिसो ? उच्यते—

**दंसणमोहे खीणे, खयदिट्ठी होइ णिरवसेसम्मि ।**
**केण उ सम्मो मोहो, पडुच्च पुव्वं तु पण्णवणं ॥१२४॥**

"**दंसणमोहे०**" गाधा ।

दंसणमोहणिज्जे खीणे, **निरवसेसम्मि** त्ति तिविहे वि मिच्छत्ते सम्मामिच्छत्ते सम्मत्ते । आह—केण कारणेणं सम्मत्तं मोहणिज्जं ? उच्यते—"**पडुच्च पुव्वं तु पण्णवणं**" । जधा—मयणकोद्दवाणं णिव्वलियाणं पि कूरो भण्णति । एस सो मदणकोद्दवकूरो । एवं ते वि सम्मत्तपोग्गला पुव्वं मिच्छत्तपोग्गला आसि त्ति काउं मोहणिज्जं ति भण्णति ॥ एवमेतं सम्मत्तं पंचविहं साधितं । एतेण परिग्गहितं सम्मसुतं भवति । मिच्छत्तेण वा, सम्मामिच्छत्तेण[१] वा परिग्गहितं मिच्छत्तसुयं भवति । आह—[२]पंचविहंसम्मत्तवतिरित्तं मिच्छत्तं जाणामो । सम्मा-मिच्छत्तं पुण केरिसं ? उच्यते—मिच्छत्तोदयातो सम्मामिच्छत्तोदयसंकंती सम्मामिच्छत्तदंसणं । एतेनाभिसंबंधेण तिण्ह वि दंसणाणं संकंती भवति ।

**मिच्छत्ताओ मीसे, मीसस्स उ होज्ज संकमो दोसुं ।**
**सम्मे वा मिच्छे वा, सम्मा मिच्छं न पुण मीसं ॥१२५॥**

**मिच्छत्ताओ अहवा, मीसं सम्मं च कोइ संकमइ ।**
**मीसाओ वा सम्मं, गुणवुड्ढी हायतो मिच्छं ॥१२६॥**

"**मिच्छत्ताओ मीसे०**" गाहा । कंठा । "**मीसे**" त्ति सम्मामिच्छद्दंसणे मिच्छत्ताओ,

१. **मिच्छत्तेण वा परि०** पू० १ । २. **पंचविहं स०** पू० २ विना ।

अहवा मीसं सम्मं वा कोति संकमति, मीसाओ वा सम्मं, गुणवुड्ढी । अस्य व्याख्या—

**मिच्छत्ता संकंती, अविरुद्धा होति सम्म-मीसेसु ।**
**मीसातो वा दुण्णि वि, ण उ सम्मा परिणमे मीसं ॥१२७॥**

"**मिच्छत्ता संकंती०**" गाहा । कंठा । **हायतो मिच्छं** ति । अस्य व्याख्या—

**हायंते परिणामे, ण कुणति मीसे उ पोग्गले सम्मे ।**
**ण य सोहिया सि विज्जंति केई जे दाणि वेएज्जा ॥१२८॥**

**सम्मत्त-पोग्गलाणं, वेदेउं सो य अंतिमं गासं ।**
**पच्छाकडसम्मत्तो, मिच्छत्तं चेव संकमति ॥१२९॥**

"**हायंते परिणामे०**" गाहाद्वयम् । कंठं । आह, मिच्छादंसणी सम्मत्तं संकंतो[1] तस्समतं कति णाणाणि लभेज्जा ? उच्यते—तिण्णि वा, दोण्णि वा । यस्मादुक्तम्—

**विब्भंगी उ परिणमं, सम्मत्तं लहति मति-सुतोहीणि ।**
**तइभावम्मि मति-सुते, सुतलंभं केइ उ भयंति ॥१३०॥**

"**विब्भंगी तु परिणमं०**" गाहा । **सुतलंभं केति उ भयंति** । कधं ? जहा-सयंभुरमणे मच्छा । तेसिं पडिमासंठिए मच्छे उप्पलाणि वा पासित्ता सम्मत्तमुप्पज्जइ । तेसिं च ईहापूहादि करेंताणं आभिणिबोहियमत्थि, सुतं अणधीतं कतो ? एत्थ अम्हे भणामो—ण होति [2]एतं । कहं ? जेण भणियं—

**अण्णाण मती मिच्छे, जढम्मि मतिणाणतं जहा एइ ।**
**एमेव य सुयलंभो, सुयअण्णाणे परिणयम्मि ॥१३१॥**

"**अन्नाण मती०**" गाहा । जति तस्स तं [3]सुतअण्णाणं अच्छति तो मिच्छादिट्ठी, अह ण अच्छति तो सिद्धंतविरोधो । जेण भणियं—"**जत्थाभिणिबोहियणाणं तत्थ सुयणाणं**" ।[4] एकतरं पि विसंजुत्तं णत्थि । आह—सव्वमेव दुवालसंगं गणिपिडगं मिच्छत्तपरिग्गहियं होज्जा ? उच्यते—न ।

**चोद्दस दस य अभिण्णे, णियमा सम्मं तु सेसए भयणा ।**
**मति—ओहिविवच्चासो, वि होति मिच्छे ण उण सेसे ॥१३२॥**

"**चोद्दस दस य०**" गाहा । जाव दसपुव्वाणि अभिण्णाणि, संपुण्णाणीत्यर्थः । ताव नियमा सम्मं । **सेसे भयण** त्ति । दसपुव्वाणि ऊणाणि आदिं कातुं आरेणं सम्मं वा होज्ज मिच्छं

१. **संकमंतो** पू० १ । २. **एतं एवं** पा० पू० १ । ३. **सुतं अ०** पू० २ । ४. नन्दीसूत्रे सू० ४४, म० जै० वि० आवृत्ति, पृ० १९, सं० मुनि पुण्यविजयजी ।

वा । किंच–मतिणाणविवज्जासो वि भवति मतिअण्णाणं । ओहिविवज्जासो विभंगनाणं । '**न सेसेसु**' त्ति मणपज्जव-केवलनाणेसु नत्थि विवज्जासो । आह, एतेसिं सम्मद्दंसण–नाणाणं को पतिविसेसो तुल्ले तत्त्वावगमस्वभावे ?। उच्यते–जधा तुल्ले अवबोहे मइणाणस्स[१]-दंसण–णाणभेदो–

**दंसणमोग्गह ईहा, णाणमवातो उ धारणा जह उ ।**
**तह तत्तरुई सम्मं, रोइज्जइ जेण तं णाणं ॥१३३॥**

"**दंसणमो०**" गाहा । कंठा । तस्स पुण सम्मत्तस्स कहं लंभो भवइ ? उच्यते–

**सोच्चा व अभिसमेच्च व, तत्तरुई चेव होइ सम्मत्तं ।**
**तत्थेव य जा विरुयी, इतरत्थ रुई य मिच्छत्तं ॥१३४॥**

"**सोच्चाभि०**" गाहा । सोच्चा केवलिमादीणं अभिसमेच्चा जातिसरणादीहिं । एवमवधारणे । किमवधारइतव्वं ? यां तां गतिं गत्वा तत्त्वरुचिरेव[२] सम्मत्तं भवइ । '**तत्थेव य**'त्ति तत्त्वे । **इतरत्थ** त्ति, अतत्त्वे[३] । से त्तं **सम्ममिच्छासुयाणि** ।

इदाणिं साइय-अणादियाणि दो दाराणि–

**अव्वोच्छित्तिनयट्ठा, एयं तु अणाइयं जहा लोओ ।**
**वोच्छेयणया सादी, पप्प गईतो जहा जीवो ॥१३५॥**

"**अव्वोच्छित्ति०**" गाधा । अव्वोच्छित्तिणयो दव्वट्ठिओ । जेण भणियं-"दव्वट्ठियस्स [४]दव्वं सदा अणुप्पण्णमविणट्ठं" । अविणट्ठं ति एत्थेव **अपज्जवसियदारं** गतं ॥छ॥

वोच्छेतणतो पज्जवट्ठिओ । तस्स "उप्पज्जंति वियंति य भावा णियमेण पज्जवणयस्स" । वियंति यत्ति एत्थेव **सपज्जवसिय**त्ति दारं गयं । **वोच्छेद** त्ति वोच्छेयणया, **सादी**ति दुवालसंगं गणिपिडयं । एयं ओहेणं चउण्ह वि पयाणं वक्खाणं भणियं साईय-मणाईय-सपज्जवसिय–अपज्जवसियाणं । इताणिं विभागतो भण्णइ–

**दव्वाइचउक्कं वा, पडुच्च सादिं व होज्जऽणादिं वा ।**
**दव्वंसि एगपुरिसं, पडुच्च सादिं सणिहणं च ॥१३६॥**

"**दव्वाइ०**" गाहा । दव्वतो णं एगपुरिसं पडुच्च सादीयं ति, जं [५]तप्पढमताए पढइ । पज्जवसाणं, तं पंचहिं ठाणेहिं–

**पणगं खलु पडिवाए, तत्थेगो देवभावमासज्ज ।**
**मणुये रोग-पमाया, केवल-मिच्छत्तगमणे वा ॥१३७॥**

---

१. **मइणाण-दंसणाण भेदो** खं० पू० २ । २. **तत्ररुचि०** पू० २ । ३. **अतत्ते** पू० १, **अतत्थे** पू० २ । ४. **सव्वं** पू० १-२ । ५. **जं तं पढम०** पू० २ ।

"**पणयं खलु०**" गाहा । '**तत्थेगो**' त्ति, पडिवातो **देवभावमासज्ज** त्ति ।

**चउदसपुव्वी मणुओ, देवत्ते तं ण संभरइ सव्वं ।**
**देसम्मि होइ भयणा, सट्ठाण भवे वि भयणा उ ॥१३८॥**

"**चोद्दसपुव्वी०**" गाहा । देसो एक्कारसअंगाणि । न केवलं देवत्ते, सट्ठाणं मणुयत्तं, तम्मि वि भयणा । रोग-प्रमाद-मिच्छत्तगमेहिं भिण्णदसपुव्विस्स आरेणं परिवडेज्जेज्जा वि, परेण सभवेणं न परिवडइ केवलुप्पत्तिं मोत्तुं । आह—सुयणाणं जीवाओ अण्णं, अणण्णं ? उच्यते—अणण्णं । जेण भणियं—

**णियमा सुयं तु जीवो, जीवे भयणा उ तीसु ठाणेसु ।**
**सुयनाणि सुयअणाणी, केवलणाणी व सो होज्जा ॥१३९॥**

"**णियमा सुतं तु०**" गाहा । खदिरवनस्पतिवत् । दव्वतो गयं ।

इदाणिं खेत्त-काल-भावे पडुच्च **सादीयं सपज्जवसियं च** ।

**खेत्ते भरहेरवए, काले उ समातो दोण्णि तत्थेव ।**
**भावे पुण पण्णवगं, पण्णवणिज्जे व आसज्जा ॥१४०॥**

"**खेत्ते भरहेर०**" गाहा । '**समाओ**'त्ति, उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीओ । भावओ सातीयं सपज्जवसियं च भवति पण्णवगभावं पडुच्च →पण्णवण्णिज्जे य भावे पडुच्च ।←[1] तत्थ—

**उवयोग-सर-पयत्ता, ठाणविसेसा य हुंति पण्णवगे ।**
**गति-ठाण-भेय-संघाय-वण्णमादी य भावम्मि ॥१४१॥**

"**उवयोग-सर०**" पुव्वद्धं । उवओगोत्ति तिव्वो मज्झो मंदो य भवति, सुभो वा असुभो वा । स्वरा-उदात्ताद्या षड्जाद्या वा । '**प्रयत्न**' इति—आदरः, स क्षणे क्षणेऽन्यादृशः । '**ठाण-विसेस**'त्ति, ठाणपगारा वीरासनाद्याः । एषामुत्पादे प्रज्ञापकस्यैतै- र्भावैरुत्पादो विनाशे विनाशः । तस्योत्पादे विनाशे वा तदात्मकस्य श्रुतज्ञानस्य प्रागेव विनाशः उत्पादो वा । भावान् प्रतीत्य [2]सादि सनिधनं च कथं भवति ? उच्यते—"**गति-ठाण०**" पच्छद्धं । गतिलक्खणो धम्मत्थिकायो । गतिपरिणतस्स जीवस्स पोग्गलस्स वा उवग्गहे वट्टिउं तस्सेव ठाणपरिणतस्स उवग्गहे न वट्टइ । एवं सादी सणिधणो य । एवं अधम्मत्थिकाओ वि ठाणलक्खणो उवयुज्जिउं वत्तव्वो । अधवा गतिपरिणयं दव्वं होउं ठाणपरिणयं भवति । अहवा "**ठाण**" त्ति एगपएसोगाढो होउं दुपएसोगाढो भवति । दुपदेसोगाढो वा होउं एगपएसोगाढो भवति । एत्थ वित्थरेण सव्वावगाहणा वत्तव्वा । भेद-संघाता वि सव्वपोग्गलाणं उवयुज्जिउं वित्थरेण

१. →← एतदन्तर्गतं पू० १ प्रतौ नास्ति । २. **साद्यं** पू० १, पा० ।

वत्तव्वा। कालगवण्ण-परिणतो होउं नीलादिवण्णपरिणतो भवति । एवं एत्थ वित्थरेण परिणामो वत्तव्वो । आदिग्गहणेणं गंध-रस-फास-संठाणाणं ।

इताणिं दव्वादीणि चेव पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं च भण्णति ।

**दव्वे नाणापुरिसे, खेत्ते विदेहाइँ कालो जो तेसु ।**
**खयउवसम भावम्मि य, सुयणाणं वट्टए सययं ॥१४२॥**

"**दव्वे नाणा०**" गाहा । कंठा ।

इदाणिं गमिगागमिकमिति द्वारद्वयम् । गमिओ दिट्ठिवाओ । अगमियं कालियसुत्तं। एतं पि अपवदति—ण एगंतेणं एतं एवं । जम्हा भणियं—

**भंग-गणियादि गमियं, जं सरिसगमं तु कारणवसेणं ।**

'**भंगग०**' पुव्वद्धं । कालियसुते वा, दिट्ठिवाए वा, जत्थ भंगा चउभंगादि [१]गणियं संकलणादि । आदिग्गहणेण '**किरियाविसाले**' पुव्वे छंदपगतं सरिसगमगं । जहा—**णिसीहस्स** वीसतिमो उद्देसओ । '**कारणवसेणं**' ति अत्थवसेणं । एयं [२]भणियं गमियं । इयाणिं अगमियं—

**गाधादि अगमियं खलु, कालिय तह दिट्ठिवाते य ॥१४३॥**

"**गाधादि०**" पच्छद्धं । आदिग्गहणेणं सिलोगा-वृत्तानि. ॥छ॥

इदाणिं **अंगपविट्ठं अंगबाहिर**मिति दारदुगं । एत्थं जं तं हेट्ठा भणियं—

"णंदी य मंगलट्ठा, पंचग दुग तिगदुए य चोद्दस य ।

अंगगतमणंगगते कातव्व परूवणा पगतं ॥" (गा० ३) त्ति, तद् वाक्यं पतितं । अस्य व्याख्या—

**गणधर-थेरकयं वा, आदेसा मुक्कवागरणतो वा ।**
**धुव-चलविसेसतो वा, अंगा-ऽणंगेसु णाणत्तं ॥१४४॥**

"**गणहर थेर०**" गाहा । गणहरकतं अंगपविट्ठं । गणहरकतातो च्चेव थेरणिज्जूढं अंगबाहिरं । किंच आदेसा—जहा **अज्जमंगू** तिविहं संखं इच्छति । एगभवियं, बद्धाउयं, अभिमुहणामगोत्तं । **अज्जसमुद्दा** दुविहं-बद्धाउयं, अभिमुहनामगोत्तं च । **अज्जसुहत्थी** एगं अभिमुहणामगोत्तं इच्छइ । मुक्कवागरणा जहा—'वरिस देव ! कुणालाए' । मरुदेवा अणादि वणस्सइकातिता । एते आदेस-मुक्कवागरणा अंगबाहिरा । अधवा धुवा बारसंगा । चला पइण्णगा । कयाइ णिज्जूहिज्जंति, कताइ न वीत्यर्थः ॥छ॥

---

१. **भणियं** खं० । २. पू० १-२ न ।

एस. अंगाऽणंगेसु विसेसो । आह-दिट्ठिवाए सव्वमेव वचोगतमवतरति । किंणिमित्तं णिज्जूहणा ? उच्यते ।

**जति वि य भूतावादे, सव्वस्स वयोगयस्स ओयारो ।**
**णिज्जूहणा तहा वि य, दुम्मेहे पप्प इत्थी य ॥१४५॥**

"**जति वि य भूतावाते०**" गाहा । "**भूतावादे**" त्ति, दिट्ठिवाते, इत्थी ण चेव दिट्ठिवातं पढति । किंणिमित्तं पुण ? उच्यते–

**तुच्छा गारवबहुला, चलिंदिया दुब्बला य धीतीए ।**
**इति अतिसेसज्झयणा, भूतावातो य नो थीणं ॥१४६॥**

"**तुच्छा०**" गाहा । दिट्ठिवाते बहुविज्जातिसया सव्वकामकामिणो[1] सा य '**तुच्छ**'त्ति अप्पसत्ता । सेसं कंठं । [2]अतिसेसज्झयणा नाम **महापरिण्णं अरुणोववातादि** ॥ **सत्त वि एते** पदा **सपडिवक्ख** त्ति [गा० ४२] गाहानिबद्धपदाणं, एतं वित्थरेणं भणितं । आह, केणं पुण कारणेणं अक्खरणक्खरसुताणि पढमं ? उच्यते–

**सुणेतीति सुयं तेणं, सवणं पुण अक्खरेयरं चेव ।**
**तेणऽक्खरेयरं वा, सुयणाणे होति पुव्वं तु ॥१४७॥**

"**सुणेतीति०**" गाहा । कंठा ।

इताणिं जं तं हेट्ठा भणियं '**पगतं**'ति । (गा० ३) । अस्य व्याख्या–

**एत्थं पुण अहिगारो, सुयनाणेणं जतो हवति तेणं ।**
**सेसाण अप्पणो वि य, अणुयोग पईव दिट्ठंतो ॥१४८॥**

"**एत्थं पुण अहिगारो०**" गाहा । एताणि पंच नाणाणि मंगलनिमित्तं परूविताणि । एत्थं सुतनाणेणं अहिगारो । किं कारणमिति चेत् ? उच्यते–यत इति हेत्वर्थे पंचमी । यत इति यस्मात् कारणात् शेषाणामाभिणिबोधाऽवधि-मनःपर्याय-केवलज्ञानानामात्मनश्च श्रुतज्ञान-मनुयोगभाषणं करोति । दृष्टान्तः प्रदीपः । यथा प्रदीपः घटादीनां प्रकाशनं करोत्यात्मनश्च । एवं श्रुतज्ञानं शेषज्ञानानामात्मनश्चानुयोगभाषणं करोति । उक्तञ्च–

**सुयनाणं महिड्ढीयं, केवलं तदणंतरं ।**
**अप्पणो सेसगाणं च, जम्हा तं [3]परिभावगं ॥**

एतेन कारणेणं सुयणाणेणं अधिकारो । तस्स वि उद्देसादिचउक्कसंभवे अणुओगेणं अहिगारो । सो य इमेहिं दारेहिं अणुगंतव्वो ।

---

१. ०कामगुणिणो पा० । २. **अइसेसयं नामऽद्धापरिण्णं** पू० १ । ३. **पविभावणं** पू० २ । **पविभावगं** मु० ।

**णिक्खेवेगट्ठ णिरुत्त विहि पवित्ती य केण वा कस्स ।**
**तद्दार भेयलक्खण, तदरिह परिसा य सुत्तत्थो ॥१४९॥**

**णिक्खेवो णासो त्ति य, एगट्ठं सो उ कस्स णिक्खेवो ।**
**अणुओगस्स भगवओ तस्स इमे वण्णिया भेदा ॥१५०॥**

"**णिक्खेवगट्ठ०**" दारगाहा । "**णिक्खेव**" त्ति । अस्य व्याख्या—"**णिक्खेवो**" गाहा। णिक्खेवो त्ति वा, णासो त्ति वा, एगट्ठं । आह—सो कस्स णिक्खेवो ? उच्यते—अणुओगस्स भगवओ । तस्स इमे सत्त भेदा भवंति ।

**णामं ठवणा दविए, खेत्ते काले य वयण भावे य ।**
**एसो अणुओगस्स उ, णिक्खेवो होइ सत्तविहो ॥१५१॥**

**सामित्त-करण-अहिगरणतो य एगत्त तह पुहत्ते य ।**
**णामं ठवणा ( णं ) मोत्तुं इति दव्वादीण छब्भेया ॥१५२॥**

"**णामं ठवणा०**" गाहाद्वयम् । णाम-ठवणाणुओगा पुव्ववण्णिय त्ति काउं ते छड्डेत्ता सेसाणं दव्वादीणं पंचण्हं अणुओगाणं सामित्त-करण-अधिकरणतो य एगत्त-पुहुत्तेणं समासो कायव्वो । तं जहा-१ दव्वस्स वा अणुओगो दव्वाणुओगो,.दव्वाण वा ।२ दव्वेण वा ३ दव्वेहिं वा ।४ दव्वम्मि वा ५ दव्वेसु वा ६ अणुओगो । एवं खेत्त-काल-वयण-भावाणुओगाण वि एक्केक्कस्स छब्भेदा णेयव्वा । तत्थ दव्वस्स अणुओगोत्ति । अस्य व्याख्या—

**दव्वस्स उ अणुओगो, जीवद्दव्वस्स वा अजीवस्स ।**
**एक्केक्कम्मि य भेया, हवंति दव्वाइया चउरो ॥१५३॥**

"**दव्वस्स उ०**" गाहा । दव्वस्स अणुओगो दुविहो—जीवदव्वस्स वा अजीव-दव्वस्स वा । एतेसिं दोण्ह वि एक्केक्कस्स दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ अणुओगो वत्तव्वो । तत्थ जीवदव्वं ।

**दव्वेणेगं दव्वं, संखातीतप्पदेसमोगाढं ।**
**काले अणादिनिधणं, भावे नाणाइयाऽणंता ॥१५४॥**

"**दव्वेणेगं०**" गाहा । दव्वओ णं जीवे एगं दव्वं । खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढे । कालओ अणादिअणिहणे । भावओ अणंता णाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता चरित्तपज्जवा, अणंता अगुरुलघुपज्जवा ।

इदाणिं अजीवदव्वस्स भण्णति—

**एमेव अजीवस्स वि परमाणू दव्वे एक्कदव्वं तु ।
खेत्ते एगपएसे, ओगाढो सो भवे णियमा ॥१५५॥
समयाइ ठिति असंखा, ओसप्पिणीओं हवंति कालम्मि ।
वण्णादि भावऽणंता, एवं दुपदेसमादी वि ॥१५६॥**

"**एमेव य०**" गाहाद्वयम् । एवमवधारणे । किमवधारयितव्यम् ?। जहा जीवदव्वस्स दव्वादीहिं चउहिं अणुओगदारेहिं अणुतोगो भणिओ, तहा अजीवदव्वस्स वि । तं जहा– दव्वतो णं परमाणुपोग्गले एगं दव्वं । खेत्तओ एगपएसोगाढे । कालओ जहण्णेणं एगं वा दो वा तिण्णि वा समया, उक्कोसेणं असंखेज्जाओ उसप्पिणिओसप्पिणीओ । भावओ अणंता वण्ण-पज्जवा जाव अणंता फास-पज्जवा । एवं एगगुणादिणो विभासियव्वा । एतं दुपएस-तिपएस जाव अणंतपएसियस्स उवउंजिउं विभासियव्वं ।

इदाणिं दव्वाणं अणुओगं भण्णति । तत्थ गाहा–

**दव्वाणं अणुयोगो, जीवमजीवाण पज्जवा णेया ।
तत्थ वि य मग्गणाओ, णेगा सट्ठाण परठाणे ॥१५७॥**

"**दव्वाणं०**" गाहा । एत्थ दव्वाणं अणुओगे जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य जहा **पण्णवणाए** तहा वत्तव्वा । '**सट्ठाण परट्ठाणे**' त्ति । जइ एवं आलावओ होज्जा–

'णेरइयाणं भंते ! असुरकुमाराण य केवइया पज्जवा पण्णत्ता ?' [प० ५ पदे] एवमादि । 'परमाणुपोग्गलाणं भंते ! दुपएसियाण य खंधाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ?। गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?। गोयमा ! परमाणुपोग्गले दुपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए हीणे, नो तुल्ले नो अब्भहिए । जइ हीणे पएसहीणे, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले । जइ हीणे पदेसहीणे द्वितीए चउट्ठाणवडिए वण्णातिपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए' । एस एगवयणेण अत्थो दाइओ सुहगेज्झो त्ति काउं । इहरा दव्वाणं अणुओगो अहिगतो त्ति काउं पोहत्तिएण उवयुज्जिउं वत्तव्वो । दव्वस्स दव्वाण य सामित्ते गयं ।

इदाणिं **करणे** भण्णति–

**वत्तीए अक्खेण व, करंगुलादीण वा वि दव्वेण ।
अक्खेहि उ दव्वेहिं अहिगरणे कप्प कप्पेसु ॥१५८॥**

"**वत्तीए अक्खेण०**" गाहा । दव्वेण अणुतोगो जहा वत्तीए । वत्ती नाम सेडियाए सलागा कतेल्लिया । आदिग्गहणेणं [१]पलेवगादिणो । एस दव्वेणाणुओगो । दव्वेहिं अणुओगो जं

१. **पलेवइयाणो** पू० १ ।

बहूहिं अक्खेहिं दाएति । अहिकरणे-दव्वे एगम्मि कप्पे [१]सामलए त्ति भणियं होति । दव्वेसु बहुसु कप्पेसु । इयाणिं खेत्तस्स खेत्ताण य—

**पण्णत्ति जंबुदीवे, खित्तस्सेमादि होइ अणुओगो ।**
**खेत्ताणं अणुओगो दीवसमुद्दाण पण्णत्ती ॥१५९॥**

"**पण्णत्ति जंबुद्दी०**" गाहा । आदिग्रहणादन्यस्यापि द्वीपस्य । दीवसमुद्दाण पण्णत्ति त्ति दीवसमुद्दाण पण्णत्ती **दीवसागरपण्णत्ती** । खेत्तेण—

**जंबुद्दीवपमाणं, पुढविजियाणं तु पत्थयं काउं ।**
**एवं मविज्जमाणा, हवंति लोगा असंखेज्जा ॥१६०॥**

"**जंबुद्दीवप०**" गाहा । जहा—जंबुद्दीवप्पमाणेणं पत्थएणं पुढविकाइया मविज्जंति । असंखेज्जा [२]जंबुद्दीवलोगा । ते य अलोगे परिकप्पंति[३] । एवं असंखेज्जा लोगा भवंति ।

**खेत्तेहिँ बहू दीवे, पुढविजियाणं तु पत्थयं काउं ।**
**एवं मविज्जमाणा, हवंति लोगा असंखेज्जा ॥१६१॥**

"**खेत्तेहिं०**" गाहा । कंठा । तिप्पभिति बहू । **असंखेज्जा** बहू लोगा । शेषं पूर्ववत् ।

**खेत्तम्मि उ अणुयोगो तिरिए लोगम्मि जम्मि वा खेत्ते ।**
**अड्ढाइयदीवेसुं अद्धछव्वीसाएँ खेत्तेसु ॥१६२॥**

"**खेत्तम्मि उ०**" गाहा । जम्मि वा खेत्ते त्ति भरहादिम्मि, खेत्तेसु अड्ढादिज्जेसु दीवसमुद्देसु, अद्धछव्वीसाए वा खेत्तेसु **रायगिह-मगहादिएसु** ।

**कालस्स समयरूवण, कालाण तदादि जाव सव्वद्धा ।**
**कालेणऽणिलवहारो, कालेहि तु सेसकायाणं ॥१६३॥**

"**कालस्स०**" गाहा । कालस्स अणुओगो जहा समतस्स । तस्स परूवणा कायव्वा पट्टसाडियाए । कालाणं अणुओगो जहा बहूणं समयाणं परूवणा कुज्जा । एवं आवलियाणं, जाव सव्वअद्धाणं । "**कालेण अणिल**" गाहद्धं । कालेणं अणुओगो । जधा वाउक्कातिय-वेउव्वियसरीरा बद्धेल्लया पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति । '**अणिल**'त्ति, वाउक्कातिया । कालेहिं पुढविकातियादीणं ओरालियसरीरा बद्धेल्लगा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति ।

**कालम्मि बितितपोरिसि, समासु तिसु दोसु वा वि कालेसु ।**

१. सामलीए पा० । सामुलीए पू० २ । २. जंबुद्दीवा लोगो पा० । असंखेज्जजंबुद्दीवलोगो पू० २ । ३. सो य अलोगे पक्खिप्पति पू० २ ।

"**कालम्मि०**" पुव्वद्धं । काले बितियाए पोरिसीए अणुओगो कथ्यते । कालेसु ओसप्पिणीए तिसु, सुसमदुस्समाए पच्छिमे भागे दुस्समसुसमाए दुस्समाए त्ति । उस्सप्पिणीए दोसुं दुस्समसुसमाए सुसमदुस्समाए य ।

**वयणस्सेगवतादी, वयणाणं सोलसण्हं तु ।।१६४।।**

"**वयण०**" पच्छद्धं । एगवयण–दुवयणादीणं एगतरस्स अणुओगो । जधा–एरिसं एगवयणं । वयणाणं अणुओगो-सोलसण्हं वि वयणाणं ।

**वयणेणाऽऽयरियादी, एक्केणुत्तो बहूहि वयणेहिं ।**
**वयणे खओवसमिए, वयणेसु तु णत्थि अणुयोगो ।।१६५।।**

"**वयणे०**" गाधा । वयणेणं अणुओगो जधा–कोइ आयरिओ केणति आयरिएण वा भिक्खुणा वा सावएण वा भणितो–'अणुओगं कधेहि, इच्छक्कारेणं वयणेहिं' । बहूहिं आतरियादीहिं कोइ आयरिओ भणितो–'अणुओगं कधेहि' । उक्त इति भणितो, बहूहिं भणित इति वाक्यशेषः । अधवा वयणेणं आयरियादीणं पंचण्हं अन्नतरेणं एगेणं वयणेणं उत्तो अणुओगो । जधा–समभावः सामायिकमित्यादि । वयणेहिं बहूहिं । वयणे खओवसमिए अणुओगो वट्टए । वयणेसु नत्थि अणुओगो ।

**भावस्सेगतरस्स उ, अणुयोगो जो जहट्ठिओ भावो ।**
**दोमातिसण्णिकासे, अणुयोगो होति भावाणं ।।१६६।।**

"**भावस्से०**" गाधा । भावस्स अणुओगो । उदतियादीणं भावाणं एगतरस्स भावस्स जधावत्थाणकहणं । भावाणं अणुओगो दुगमादीणं भावाणं "**सन्निकासे**" त्ति संजोगो । जत्तिया भंगा भवंति, तेसिं जो अणुओगो ।

**भावेण संगहादी-अण्णयरेणं दुगातिभावेहिं ।**
**भावम्मि खओवसमे, भावेसु तु णत्थि अणुयोगो ।।१६७।।**

"**भावेण०**" गाधा । भावेणाणुओगो जधा–"पंचहि ठाणेहिं सुयं वाएज्जा । तं जहा–संगहट्ठयाए एवमादि" (स्था० ५-३-सू० ४६८) । एतेसिं जो जेणं भावेणं अणुओगं कधेति सो भावेणं अणुओगो भवति । भावेहिं अणुओगो–एतेहिं चेव दुग-तिग-चउक्क-सव्वेहिं वा अणुओगं कधेति सो भावेहिं अणुओगो । भावम्मि खयोवसमिए अणुओगो वट्टते । भावेसु णत्थि अणुयोगो ।

**अधवा आयारादिसु, भावेसु तु एस होति अणुयोगो ।**
**सामित्तं आसज्ज व, परिणामेसुं बहुविहेसुं ।।१६८।।**

"**अहवा आयारादिसु०**" गाधा । अहवा भावेसु वि अणुओगो भवति चेव । कधं ? आयारादिसु दुवालससु अंगेसु जे भावा तेसु अणुओगो भवति । अधवा सामित्तमासाद्य उदइयादिभावजुत्ते पुरिसम्मि अणुओगो । जो उदइयादिभावजुत्तो अणुओगं कधेति, बहुसु वा पुरिसेसु । किंणिमित्तं ? जीवस्स खणे खणे अण्णोण्णपरिणामो भवति । आह—एतेसिं दव्व-खेत्त-काल-भावाणं अन्नोन्नम्मि समोतारो अत्थि, णत्थि ? उच्यते । अत्थि । कधं ?—

**दव्वे णियमा भावो, न विणा ते यावि खित्त-कालेहिं ।**
**खेत्ते तिण्ह वि भयणा, कालो णियमा उ तीसुं पि ॥१६९॥**

"**दव्वे णिय०**" गाधा । दव्वे ताव णियमा भावो अत्थि । जीवदव्वे उदइयादिणो भावा । अजीवदव्वे वण्णादिणो । ते य दव्वभावा "**न विणा**" खेत्त-कालेहिं भवंति । खेत्ते पुण दव्व-काल-भावा होज्जा वा न वा । एतेसु पुण दव्व-खेत्त-भावेसु णियमा कालो भवइ । आह—कधमेतदवगंतव्यम् ? इत्युच्यते—

**आधारो आधेयं, च होति दव्वे तधेव भावे य ।**
**खेत्तं पुण आधारो, कालो णियमा उ आधेयो ॥१७०॥**

"**आधारो०**" गाधा । तत्थ दव्वं आधारो भावस्स । अओ दव्वे णियमा भावो भवति । आधेयं पुण खेत्ते । कालो य तम्मि चेव आधेयो । आधारो भावो कालस्स आधेयो पुण [१]दव्वे । जम्मि य दव्वं खेत्ते अवगाढं तदवगाढो भावो वि । [२]तदविभागो त्ति काउं । अतो **ण विणा ते यावि** दव्वभावा । खेत्त-कालेहिं **खेत्ते तिण्ह वि भयण** त्ति । खेत्ते दव्वमत्थि वा ण वा । अलोगे णत्थि कालो वि, समयखेत्तातो [३]वहिता णत्थि । भावो वि अलोगे चेव णत्थि । "**कालो णियमा तु तीसुं पि**" त्ति । समयखेत्तमधिगिच्च—

**वच्छग गोणी खुज्जा, सज्झाए चेव बहिरउल्लावे ।**
**गामिल्लए य वयणे, सत्तेव य हुंति भावम्मि ॥१७१॥**

"**वच्छग गोणी०**" गाधा । एतेसिं दव्वादीणं अणुओगाणं एक्केक्कस्स अणुओगो य भवति अणणुओगो य । अणुओगो नाम जहाऽवत्थियस्स भावस्स जा पण्णवणा । तव्विवरीतो अणणुओगो । एत्थ अणुओगे य अणणुओगे य उदाहरणाणि भवंति । तत्थ दव्वस्स अणुओगे इमं उदाहरणं—

**वच्छग-गोणी** । दोहओ जति जं पाडलाए वच्छगं तं बाहुलाए मुयति, बाहुलेरं वा वच्छगं पाडलाए मुयति तो अणणुयोगो भवति । तस्स य दुद्धकज्जस्स य अप्पसिद्धी[४] भवति । एवमिहावि जति जीवलक्खणेणं दोहयत्थाणीओ साधू अजीवं परूवेति,

१. दव्वो पा० पू० १ । २. तदभागो पू० १ । ३. बहिः । ४. असिद्धी भ० पू० १ ।

अजीवलक्खणेण वा जीवं परूवेति तो अणणुयोगो भवति । तं भावं अण्णहा गिण्हति, तेण विसंवतिएणं अत्थो वि विसंवयइ । अत्थेण विसंवइएण चरणं पि विसंवयइ, चरणेणं[1] विसंवइएणं मोक्खाभावो । मोक्खाभावे दिक्खा णिरत्थिया । जइ पुण जो जाए वच्छगं तं ताए चेव मुयति तो अणुतोगो भवति । तस्स य दुद्धकज्जस्स पसिद्धी भवति । एवमिहापि जति जीवलक्खणेणं जीवं परूवेति, अजीवलक्खणेणमजीवं, तो अणुओगो भवति । तस्स य मुक्खलक्खणस्स[2] कज्जस्स पसिद्धी भवति । खेत्तस्स वि अणुओगो अणणुओगो य भवति। तत्थ अणणुओगे सातवाहणखुज्जा उदाहरणं–

पतिट्ठाणं नयरं । [3]सातवाहणो राया । सो वरिसे वरिसे भरुकच्छे नधवाहणं रोधेति। जाधे य वरिसारत्तो भवति ताधे सयं णगरं पडियाति । एवं कालो वच्चति । अण्णया य तेणं रन्ना रोधगेणं गएल्लएणं अत्थाणियमंडवियाए णिच्छूढं । तस्स य पडिग्गहधारी खुज्जा। सा चिंतेति–अपरिभोगा [4]एसाऽऽदिट्ठा । नूणमेस राया जाइतुकामो । तीसे य राउलगो[5] जाणसालिओ परिजियओ । ताए तस्स सिट्ठं । सो पए जाणाइं पमक्खिओ, [6]पयट्टियाणि य । तं दट्ठुं सेसगो वि खंधावारो पयट्टिओ । राया रहस्सिययं पधाविओ जाव सव्वो खंधावारो गतेल्लओ। तुट्ठो राया चिंतेति–'न मए कस्स वि कधितं' ति । परंपरएणं जाव खुज्ज त्ति । [7]आपुच्छिया। ताधे तधेव अक्खातं । एस अणणुओगो । तीसे मंडवियाए विवरीयं । एवं जति[8] गणितविसंवातिं पण्णवेति खेत्तं जीव-धणुपट्ठादीहिं तो[9] अणणुओगो भवति, तं कज्जं ण साधेति। जति पुण अविसंवादिं कधेति तो अणुओगो भवति ॥छ॥

कालस्स अणणुओगे उदाहरणं–

एगो साधू पादोसियं परियट्टंतो रभसेण कालं न जाणति । सम्मदिट्ठिया य देवया तस्स हियट्ठयाए संबोधयति मिच्छादिट्ठियाए भएणं । सा तक्कस्स घडयं भरेउं महता महता सद्देणं उग्घोसेति–'महितं महितं' ति । सो तीसे कण्णारोडयं असहमाणो भणति–अहो ! तक्कवेल त्ति ? सा पडिभणति–जहा तुज्झं सज्झायवेल त्ति । उवउत्तो 'मिच्छा दुक्कडं' ति । देवयाए अणुसासितो–मा पुणो एवं काहिसि । मा मिच्छादिट्ठियाए छलिज्जिहिसि त्ति। एस अणणुओगो । काले पढियव्वं तो अणुओगो भवति ।

वयणस्स अणुओगो य अणणुओगो य । एत्थं दो उदाहरणाणि । बधिरउल्लावो य गामेल्लओ य ।

---

१. ०णं **मोक्खो मो०** पू० १, पा० । २. **तस्स य क०** पू० १, २, पा० । ३. **साल०** पू० २ । ४. **एस, नूणं राया** पू० १, २, पा० । ५. **रायओलग्गओ जा०** पू० १ । ६. **पयट्टाविताणि य** पा० । ७. **सा पुच्छिता** पा० । ८. **०ति भणि०** पू० २ विना । ९. **सो अण०** पा० ।

एगम्मि गामे बधिरकुडुंबं परिवसति । थेरो थेरी य । ताणं पुत्तो । तस्स भज्जा। सो ताणं पुत्तो अण्णदा छेत्तं वाहेउं गदो । सो य वाहेति । अण्णो य मणूसो तेणं पदेसेणं जाति । तेणं सो पंथं पुच्छितो । इतरो चिंतेति—एस बइल्ले सिंगेति । ताधे भणति—अरे! मम घरे[१] जातया बइल्ला । ण ठासित्ति हलं उव्वत्तेउं तस्स वधाए धाइतो । इतरो चिंतेति—गहिल्लओ एस। संपट्ठिओ चेव । तस्स य भज्जा भत्तं घेत्तुं आगया । सो भज्जाए कहेति—बइल्ला सिंगित त्ति। सा चिंतेति—एस भणति 'अलोणयं भत्तं' ति । तओ भणति—लोणियं वा भवतु मा वा । मातुणा ते सिद्धं[२] । सा घरं गया । [३]सासूए कधितं 'अलोणियं' ति । सासू से कंतंतिया चिंतेति—एसा भणति । 'अतिथूलं कंतसि' । ताए पडिभणितं—थूलं वा भवतु वरडं वा थेरस्स पोत्तं होही । सा थेरं सद्दावेत्ता भणति—सच्चं एतं अतिथूलं। तत्थ य तिला विसारियया । सो चिंतेति—अहं भणितो 'तुमे तिला खइत' त्ति। सो भणति-पितुं जीविएणं एक्कं पि तिलं ण खामि ।

एवं जति एगवयणं परूवेतव्वं [४]दुवयणेण परूवेति, [५]दुवयणेण वा एगवयणेणं, तो अणणुयोगो । अह तं चेव परूवेति तो अणुयोगो । गामेल्लओ—

एक्का नागरमहिला । भत्तारे मते 'कट्ठादीणि वि ता अकीताणि घेच्छामो' त्ति अजीवमाणी खुड्डुलयं पुत्तं घेत्तुं गामे पवुत्था । सो दारओ पवड्ढंतो मातरं पुच्छति—'कहिं मम पिया ?' । मतो त्ति भणितं । सो केणइ जीविताइओ ? भणति—ओलग्गाए । तो खाइं अहमवि ओलग्गामि । सा भणति—ण याणिहिसि । तो कहमोलग्गिज्जति ?। भणितो—विणयं करेज्जासि। केरिसो विणयो ? जोकारो कातव्वो । णीयं चंकमियव्वं । छंदाणुवत्तिणा भवियव्वं। सो भणति—एवं काहामो । सो णगरं पधावितो । अंतरा य णेणं वाहा मियाणं निलुक्का दिट्ठा । वड्डेणं सद्देणं 'जो भट्टि' त्ति भणितं अणेणं । तेण सद्देणं मिगा पलाया । तेहिं घेत्तुं पहतो । सब्भावो य णेण कधितो । मुक्को, भणितो य तेहिं—जया एरिसं पेच्छेज्जाहि[६] तदा णिलुक्कंतेहिं सणियं सणियं आगंतव्वं न उल्लाविज्जति त्ति सणियं वा । ततो एंतेण रयगा दिट्ठा। ताधे णिलुक्कंतो सणियं एति । तेसिं च रयगाणं पोत्तगाणि हीरंति । ठाणयं बद्धं रक्खंति एंते चोरे। 'एस चोरो णिलुक्कंतो एति' त्ति बंधिउं पिट्टितो । सब्भावे कधिते मुक्को भणितो य—भणेज्जासि 'सुद्धं सुद्धं भवतु, खारो पडतु'। पधावितो । कत्थ वि बीयाणि वाविज्जंति । तेणं भणितं—'सुद्धाणि हवंतु, खारो पडतु'। तेहिं वि पिट्टितो । सब्भावे कहिते मुक्को, भणितो य—'एरिसं बहुं भवतु, भंडिं भरेह एयस्स' । अण्णत्थ मडयं णीणिज्जंतं दट्ठुं भणति—बहुं भवतु एरिसं । सब्भावे कधिते

१. **घर०** पू० २ । २. **सिद्धं** पू० १ । ३. **सासुयाए कहेति** पू० १-२ । ४. **दुवयणं** पू० २ । ५. **दुवयणे वा एगवयणं** पू० २ । ६. **०ज्जासि** पू० १ ।

भणितो य–एरिसे भण्णति–अच्चंतवियोगो भे भवतु एरिसेणं । अण्णत्थ विवाहे भणति–'अच्चंतवियोगो भे भवतु एरिसेणं, तत्थ वि हतो । सब्भावे कधिते भणितो–एरिसे भण्णति–णिच्चं एरिसगाणि पेच्छंतया होध, सासतं च भवतु एयं । अण्णत्थ नियलबद्धयं दंडियं दट्ठुं भणति–'णिच्चं एरिसाणि पेच्छंतया होध सासयं च एयं भे भवतु' । तत्थ वि हतो । सब्भावे कधिते मुक्को । गंतुं एगस्स खउलयस्स अल्लीणो तं सेवंतो अच्छति। अण्णया दुभिक्खे तस्स खउलयस्स अंबिलजाऊ सिद्धेल्लिया भज्जाए । सो ताए भणिओ–जाहि, महाजणमज्झातो सद्दावेहि, सीयला [1]अचोक्खा 'जाऊ' । तेण गंतुं भणितो–सीयलीहोति किर अंबिलजाऊ । लज्जितो जातो । घरं गतेण अंबाडितो भणितो य–'एरिसकज्जे सणियं कण्णे कधेज्जति ।' अण्णया गिहं पलित्तं । ताधे गंतुं सणियं सणियं कधेति, जाव सो तस्स अक्खायति ताव घरं सव्वं झामितं । तत्थ वि अंबाडितो भणितो य–एरिसकज्जे ण वि आगम्मति अक्खाएहिं अप्पणा चेव पाणिएण वा आतिं काउं गोरसो विच्छुब्भति । अंबिली वि पल्हत्थिज्जति । जधा तधा विज्झातु त्ति। अण्णता पलित्ते तेल्लादिणो विच्छुभति। पाणिए अविज्जमाणे वत्थेसु वा धूविज्जंतेसु। एवं जो अण्णम्मि कहेयव्वे अण्णं च्चेव कहेति तस्स अणणुओगो भवति । सम्मं कहिज्जमाणे अणुतोगो भवति ।

भावस्स अणुओगो य अणणुओगो य भवति । तत्थ इमे सत्त उदाहरणा भवंति–

**सावगभज्जा सत्तवतिए य कुंकुणगदारए णउले ।**
**कमलामेला संबस्स साहसं सेणिए कोवे ॥१७२॥**

"**सावगभज्जा०**' गाधा । एगो सावओ, अण्णमहिलं दट्ठुं अज्झोववण्णो दुब्बली-भवति । भज्जाए पुच्छिओ। णिब्बंधे सिट्ठं । ताए भणियं–आणेमि त्ति । सा ताए अविरइयाए तणएहिं वत्थेहिं अप्पाणं णेवत्थेत्ता अंधगारे अल्लीणा । अच्छिओ । पच्छा बितितदिवसे अद्धितिं पकओ 'वतं खंडियं' ति । ताए भणियं–मा अद्धितिं करेहि । न खंडिज्जति । सो ण पत्तिज्जइ । ताहे साभिण्णाणं पत्तियावियो । एवं जो ससमयवत्तव्वयं परसमयवत्तव्वयं ति भणति, ओदतियभावलक्खणेणं उवसमियभावलक्खणं परूवेति ताहे अणणुयोगो भवति । सम्मं परूविज्जमाणे अणुयोगो भवति ॥छ॥ सत्तपदिओ–

एगम्मि पच्चंतगामे एगो ओलग्गयमणूसो । साहु-माहणादीणं न सुणेति न वा अल्लियति न वा वसहिं देति 'मा मम धम्मं कहेहिंति' त्ति । तो हं मा सदयो होहामि त्ति। अण्णता तं गामं साहुणो आगता पडिस्सयं मग्गंति । ताहे सो गोट्ठिल्लएहिं 'एतेसिं

१. सीयला अजोग्गा मु० ।

वसहिं ण देहि त्ति एतेहिं य पवंचिओ होउ' त्ति तस्स घरं चिंधियं 'जहा एरिसो तारिसो सावगो' त्ति। ते गता पुच्छंता, दिट्ठो, जाव न चेव आढायति । तत्थ एगेण साहुणा भणियं–जति वि ण चेव एस सो, अहवा पवंचिया मो त्ति । तं सोऊणं तेणं पुच्छिता। तेहिं जहावत्तं कहियं । सो चिंतेति–अहो! अकज्जं, मए(मं) ताव पवंचेंति[१], साहुणो वि कहं [२]पवंचित त्ति । ताहे मा 'तेसिं समो होउ' त्ति तेणं भणितं[३]-देमि वसहिं जइ मम धम्मं ण कहेह। साहूहिं भणियं–एवं होउ त्ति । दिण्णं घरं। वासारत्ते वित्ते आपुच्छंतेहिं धम्मो कहिओ । तत्थ ण किंचि तरइ घेत्तुं मूलगुण–उत्तरगुणाणं, मधु-मज्ज-मंसविरतिं वा। पच्छा सत्तपइयं वयं दिण्णं-मारेउकामेणं जावइएणं कालेणं सत्त पदाणि ओसक्किज्जंति एवतियं कालं पडिक्खित्ता मारेतव्वं । 'संबुज्झिस्सइ' त्ति दाउं गया [४]साहुणो । अण्णता [५]चोरियाए गतो । अवसउणेणं णियत्तो रत्तिं सणियं घरं एति । तद्दिवसं च तस्स भगिणी आगएल्लया पुरिसणेवत्थं काउं भाउज्जाइयाए समं गोज्जपेच्छिता गता। तओ चिरेण आगयाओ णिद्दक्कंताओ तहेव एगम्मि सयणे सयिताओ । इयरो य आगओ ताओ पेच्छति। 'परपुरिसो'त्ति असिं उक्करिसित्ता 'आहणामि' त्ति ववसिओ । वयं संभरियं । ठिओ 'सत्तपयंतरं अच्छामि' त्ति । एयम्मि अंतरे भगिणीए बाहा भज्जाए अक्कंतिया । ताए दुक्खाविज्जंतीए भणियं अवणेहि मे बाहातो सीसं । तेण सरो सण्णाओ । भगिणी मे एसा पुरिसणेवत्थिय त्ति । दिट्ठा । लज्जिओ जाओ 'अहो मणेणं अकज्जं कतं' ति । उवणओ जहा सावगभज्जाए । संबुद्धो । विभासा, पव्वतिओ ।।छ।।

[कोंकणदारग–]

कोंकणगविसए एक्को दारगो । तस्स माता मता । पिया से अण्णं महिलं ण लभति 'सवत्तिपुत्तो अच्छइ' त्ति काउं । अण्णता सपुत्तओ कट्ठाणं गओ । ताहे णेणं चिंतितं–एतस्स तणएणं महिलियं न लभामि । मारेमि त्ति । कंडं [६]लंखियं । पुत्तो भणिओ–वच्च, कंडं आणेहि। सो पहाविओ अण्णेणं कंडेणं विद्धो । दारएण लवितं–किं ति कंडं खित्तं ? विद्धो मि। पुणो वि खित्तं, रडंतो मारिओ । 'पुव्वं अयाणंतेणं विद्धो मि' त्ति अणणुयोगो, 'मारिज्जामि' त्ति एवं णाए अणुओगो । अहवा 'सारक्खणिज्जं' मारेमि' त्ति अणणुओगो, सारक्खंतस्स अणुओगो । जधा सारक्खणिज्जं मारेंतो विवरीयं करेति । एवं अण्णम्मि परूवितव्वे अण्णं परूवेमाणस्स विपरीतत्वादननुयोगो भवति । [७]जहारूवं परूवेमाणस्स अणुतोगो भवति । ।।छ।।

१. **पवंचंतु** पा० १ । २. **पवंचेति त्ति** पू० २, पा० । ३. **पवंचितत्ति मासातो तेणं भणितं** पू० १-२, पा० । ४. पू० १-२, पा० प्रतिषु नास्ति । ५. **चोरेउं** पू० २ । ६. **०त्ति लंखियं** पू० २ । **कंडं खित्तं** पा० । ७. **जधाभूतं** पू० १-२, पा० ।

[णउलोदाहरणं]

एगा चारभडिया गब्भिणी । अण्णा वि णउली गब्भिणी । तत्थ वि [1]पलिहए एति य जाति य । ताओ समिताओ पसूताओ । ताए चिंतियं–'मम पुत्तस्स रमणओ णउलो भविस्सइ' त्ति तस्स पीहयं खीरं च देति नउलस्स । अण्णता बारे तीसे अविरतियाए कंडेंतीए [2]जत्थ मंचुल्लियाए सो दारगो ओतारियओ तत्थ सप्पेण चडित्ता खाइओ मओ । इयरेणं नउलेणं [3]मंचुल्लियाए उयरंतओ दिट्ठो खंडाखंडिं [4]कओ । ताहे सो तेणं रुहिरलित्तेणं तुंडेणं तीसे अविरतियाए मूलं गंतुं [5]चाडूणि करेति । ताए णायं–एतेण मम पुत्तो खतिओ । मुसलेण आहणित्ता मारिओ । ताहे धावंती गता पुत्तमूलं । जाव सप्पं खंडाखंडिकएल्लयं पासइ, ताहे दुगुणतरयं अद्धितिं[6] पगता । तीसे अविरतियाए पुव्वं अणणुओगो, पच्छा अणुओगो । एवं जो अण्णं परूवेयव्वं अण्णं परूवेति तस्स अणणुओगो, जो तं चेव परूवेइ तस्स अणुओगो ।

[कमलामेलोदाहरणं]

बारवईए बलदेवपुत्तस्स णिसढस्स पुत्तो सागरचंदो नाम कुमारो । रूवेणं उक्किट्ठो सव्वेसिं संबादीणं इट्ठो । तत्थ य बारवईवत्थव्वस्स चेव अण्णस्स रण्णो कमलामेला नाम धूता उक्किट्ठसरीरा । सा य उग्गसेणपुत्तस्स नभसेणस्स वरिएल्लिया । इओ य णारओ सागरचंदस्स कुमारस्स सगासं आगतो, अब्भुट्ठितो । उवविट्ठं समाणं पुच्छति–किंचि भगवं ! अच्छेरगं दिट्ठं ? आमं, दिट्ठं । कहिं ? । इधेव बारवईए नयरीए इधं चेव कमलामेला णामं दारिया । कस्सति दिण्णिया ? आमं । कस्स ?। कधितं । कधं मम ताए समं संजोगो[7] होज्जा ?। 'न याणामि'त्ति भणित्ता गतो । सो य सागरचंदो तं सोउं ण वि असणे ण वि सयणे वा धितिं लभति । तं दारियं फलयटिक्कंतो[8] नामं च गेण्हंतो अच्छति । नारदो वि कमलामेलाए अंतियं गओ । ताए वि पुच्छितो–किंचि अच्छेरतं दिट्ठं ? ति । 'दुवे दिट्ठाणि, रूवेण य सागरचंदो विरूवत्तणेण य नभसेणो' । तओ सागरचंदे मुच्छिता नभसेणए' विरत्ता । णारएणं समासासिता । तेण गंतुं [9]सागरचंदस्स आतिक्खितं, जधा 'इच्छति' त्ति । ताधे सागरचंदस्स माता अण्णे य कुमारा अद्दण्णा 'मरति' त्ति संबो आगतो । जाव पेच्छति सागरचंदं विलवमाणं । ताधे णेणं पच्छतो अच्छीणि हत्थेहिं मुद्दिताणि । सागरचंदेण भणितं–कमलामेल त्ति । संबेण भणितं–णाहं कमलामेला, कमलामेलो हं । संबेण अब्भुवगयं–आमं, अहं चेव तुमं कमलामेलं दारियं मेलेहामि । ताधे तेहिं कुमारेहिं संबो भणितो–कमलामेलं मेलेहि सागरचंदस्स । ताधे तेण पज्जुन्नं पण्णत्तिं विज्जं मग्गितुं जद्दिवसं तस्स नभसेणस्स विवाहदिवसो तद्दिवसं तेण सागरचंद-संबपमुहा कुमारा

---

१. **य लिहए** मु० । २. **तत्थ** पू० १, मु० । ३. **ओयरंतओ मंचुल्लियाओ दिट्ठो** पू० १-२, पा० । ४. **०खंडीकओ** पू० २ । ५. **चाटुं करेति** पा० । ६. **अधियं गता** पू० १ । ७. **संपओगो** पू० २ । ८. **फलए लिहंतो** पू० २ । **फलए टिकेंतो** पू० १ । ९. पू० १-२, पा० प्रतिषु न ।

उज्जाणं गंतुं नारदरहस्सकतेणं कमलामेलं सागरचंदो परिणावितो । ते तत्थ किड्डंता अच्छंति । इयरे य दारियं ण पेच्छंति । मग्गंतेहिं उज्जाणे दिट्ठा । विज्जाहररूवं विउव्वित्ता नारायणो सबलो णिग्गतो, जाव अपच्छिमं संबरूवेणं पादेसु पडितो । सागरचंदस्स चेव दिण्णा, नभसेणंबताय अणुक्खामिता । एत्थं सागरचंदस्स कमलामेलं संबं मण्णमाणस्स अणणुयोगो, 'णाहं कमलामेल'त्ति भणिते अणुयोगो । एवं जो विवरीतं परूवेति तस्स अणणुयोगो, जधाभावं परूवेमाणस्स अणुयोगो ।

[संबसाहसमुदाहरणं]

जंबवती नारायणं भणति–एक्का वि मए पुत्तस्स अणाडिया न दिट्ठा । नारायणेण भणितं–'अज्ज दाएमि ।' ताधे नारायणेणं जंबवतीए आभीरीरूवं कतं, अप्पणो आभीर-रूवं। दो वि तक्कं घेत्तुं बारवतिं ओतिण्णाणि महितं विक्कंति । संबेण दिट्ठाणि । आभीरी भणिता–'महितं किणामि' त्ति एहि । सा अणुगच्छति । आभीरो से मग्गेण एति । सो संबो एगं देउलियं पविसति । आभीरी भणति–'णाहं पविसामि । 'किंति ?' मोल्लं देहि ।' 'दिज्जति, पविसाहि' । एत्थ चेव ठितो तक्कं गेण्हाहि । सो भणति–न वि, अवस्स पविसितव्वं । णेच्छति, ताहे हत्थे लग्गो । आभीरो उद्धाइऊण लग्गो संबेण समं । संबो आपिट्टिओ । वासुदेवो जाओ । इयरी वि जंबवती । लज्जिओ ओगुंट्ठिं[१] कातुं पलातितो । बीयदिवसे मड्डा आणिज्जंतो खीलगं घडेंतो एति । जोकारो कतो । वासुदेवेणं पुच्छितो–किं एयं घडिज्जति ? भणति–'जो पारियासितं बोल्लं[२] काहिति तस्स मुहे कुट्टिज्जति'[३] त्ति । पढमं अणणुयोगो णाए अणुयोगो । एवं जो विवरीयं[४] परूवेति तस्स अणणुयोगो भवति । तहाभावे अणुयोगो ।

[सेणियकोवोदाहरणं]

चेल्लणा सामिं वंदित्ता वेयालियं माहमासे पविसति । पच्छा साहू दिट्ठो पडिमा-पडिवण्णओ । तीए रत्तिं सुत्तियाए हत्थो किहवि लंबिओ[५] । जता सीतेणं गहितो तया चेतियं पवेसितो हत्थो । तस्स हत्थस्स तणएणं सव्वं सरीरं सीतेण गहितं । पच्छा ताए भणितं–'स तपस्वी किं करोति सांप्रतं ?' । पच्छा रण्णा सेणिएणं चिंतियं–संगारदिण्णओ से को वि । रुट्ठेणं कल्लं[६] अभओ भणितो–'सिग्घं अंतेउरं पलीवेहि' । सेणिओ गतो सामिणो मूलं । अभएण हत्थिसाला पलीविया । सामिं पुच्छति–चेल्लणा किं एगपत्ती अणेगपत्ती वा ? । सामिणा भणितं–एगपत्ती । ताहे 'मा डज्झिहिति' त्ति तुरियं णिवत्तो । अभओ य णिग्गच्छति । तेणं भण्णति, पलीवितं ? 'आमं' । [७]तुमं तत्थेव किं न पडितो ? पडिभणति–अहं पव्वतिस्सामि, किं मे अग्गिपवेसेणं ? ताहे तेण ण[८] णातं 'मा [९]छिद्दिज्जिहि' त्ति । पच्छा

---

१. **अंगुट्ठिं** मु०, पू० १-२ । २. **खोल्लं** पू० १ । ३. **तस्स मुहे को डिज्जिहिति त्ति** पू० १-२, **कोट्टिज्जिहितित्ति** पा० । ४. **विरूवं** प० पू० २ । ५. **हत्थो किल लं०** पू० १ । ६. **कण्णं** पू० २। ७. **तुमं किं तत्थेव** पा० । ८. **तेण नायं** पू० १-२ । ९. **छड्डिहिति** मु० ।

भणितं—ण डज्झति त्ति । सेणियस्स चेल्लणाए पुव्वं अणणुयोगो । पुच्छिते अणुयोगो । एवं विवरीते परूविते अणणुयोगो, जधाभावे परूविते अणुयोगो भवति । '**णिक्खेवे**'त्ति दारं गतं ॥छ॥

इदाणिं 'एगट्ठियाणि' त्ति दारं, तं भणामि । अच्छउ ताव एतं । एगट्ठिएहिं को गुणो भणितेहिं ? उच्यते—

**बंधाणुलोमता खलु, सुत्तम्मि उ लाघवं असम्मोहो ।**
**सत्थगुणदीवणा वि य, एगट्ठगुणा हवंतेते ॥१७३॥**

"**बंधाणु०**" गाधा । जाणि इच्छति अत्थपदाणि गाधादीहिं बंधिउं ताणि सुहं अण्णेणं अभिधाणेणं अपलोट्टेहोमाणे अण्णेणं बंधिस्सति, तेण य पल्लोट्टाभिहाणेणं बद्धं लघुं सुत्तं भवति । असंमोहो य । जहा सक्को त्ति वा इंदो त्ति वा पुरंदरो त्ति वा । एवं एगट्ठिताणं एगतरगहणे वि असम्मोहो भवति । तदर्थसंप्रत्यय इत्यर्थः । '**सत्थ**' त्ति तित्थकरा । तेसिं च गुणा दीविता भविस्संति । जहा एक्केक्कस्स दव्वस्स बहवे पज्जायनामे जाणंति । एते एगट्ठिताणं गुणा । आह—दिट्ठा एगट्ठितगुणा । पगतं भण्णतु । ताणि एगट्ठियाणि दुविहाणि सुत्तेगट्ठिताणि य अत्थेगट्ठिताणि य । तत्थ सुत्तेगट्ठिताणि इमाणि—

**सुत सुत्त गंथ सिद्धंत सासणे आण वयण उवदेसो ।**
**पण्णवणमागमे त्ति य, एगट्ठा पज्जवा सुत्ते ॥१७४॥**

"**सुत सुत्त गं०**" गाधा । तत्थ सुतं दुविहं—दव्वसुतं भावसुतं च । तत्थ दव्वसुतं वतिरित्तं ।

**दव्वसुतं पत्तग-पुत्थएसु जं पढइ वा अणुवउत्तो ।**
**आगम-णोआगमतो, भावसुतं होति दुविहं तु ॥१७५॥**

**आगमतो सुतणाणी, सुतोवउत्तो य होति भावसुतं ।**
**सो सुतभावाऽणण्णो सुतमवि उवओगओऽणण्णं ॥१७६॥**

"**दव्वसुतं पत्तय०**" पुव्वद्धं । कंठं । भावसुतं पि दुविहं-आगमतो णोआगमतो य । "**आगमतो**" गाधापुव्वद्धं । आह—केण कारणेण सुतणाणी सुओवउत्तो भावसुतं भवति ? । उच्यते—"**सो सुत०**" पच्छद्धं । कंठं ।

**जं तं दुसत्तगविधं, तमेव णोआगमो सुयं होइ ।**
**सामित्तासंबद्धं, समितीसहियस्स वा जं तु ॥१७७॥**

"**जं तं दुसत्तग०**" गाधा । णोआगमतो भावसुतं जं तं हेट्ठा भणितं चोद्दसविहं

सुतणाणं अक्खरसुतादि, तं चेव पुरिसेहिंतो असंबद्धं णोआगमतो भावसुतं भवति । जाए वा वेलाए सुतनाणी समितीसु उवउत्तो भवति, तं णोआगमतो भावसुतं भवति । अधवा दुसत्तगविहंति अंगपविट्ठं दुवालसविहं, अंगबाहिरं दुविहं—कालियं च उक्कालियं च । एते दो सत्तगा चोद्दस । सुतं ति गतं । इयाणिं '**सुत्तं**' ति दारं । तं दुविहं—दव्वसुत्तं भावसुत्तं च । दव्वसुत्तं वतिरित्तं ।

**पंचविधं पुण दव्वे, भावम्मि तमेव होति सुत्तं तु ।**

"**पंचविहं पुण०**" पुव्वद्धं । "**पंचविहं**" ति—अंडयं पोंडयं कीडयं वालयं वागतं ति भावसुत्तं । जं चेव भावसुतं भणितं तं चेव भावसुत्तं । सुत्तं ति गतं ।

इताणिं '**गंथो**' । सो दुविहो—दव्वगंथो य भावगंथो य ।

**सच्चित्तादी गंथो, दव्वे भावे इमं चेव ॥१७८॥**

"**सच्चित्तादी०**" पच्छद्धं । दव्वगंथो तिविहो—सचित्तो अचित्तो मीसतो । एस तिविहो वि उवरि पढमसुत्ते परूविज्जिहिति । भावगंथो इमं चेव **कप्प-व्ववहारसुतक्खंधं**। गंथे त्ति दारं गतं ॥छ॥

इदानीं **सिद्धंतो** वक्तव्यः ।

**जेण उ सिद्धं अत्थं, अंतं णयतीति तेण सिद्धंतो ।**
**सो सव्व-पडीतंतो अधिगरणे अब्भुवगमे य ॥१७९॥**

आह—सिद्धान्त इति कोऽर्थः ? । '**सिद्धमर्थं अन्तं णयती**'ति सिद्धान्तः । सः चतुर्विधः । तद्यथा—सर्वतन्त्रसिद्धान्तः, प्रतितन्त्रसिद्धान्तः, अधिकरणसिद्धान्तः, अभ्युपगम-सिद्धान्तः इति। तत्र सर्वतन्त्रसिद्धान्तः—

**संति पमाणातिं पमेयसाहगाइं तु सव्वतंतो उ ।**
**थेज्जवई य वसुमई, आपो य दवा चलो वाऊ ॥१८०॥**

"**संति पमाणातिं०**" गाधा । संतीति विद्यन्ते प्रमाणानि प्रत्यक्षादीनि द्रव्यादीनां प्रमेयादीनां साधकानीति सर्वतन्त्रसिद्धान्तः । अर्थं तन्त्रयतीति तन्त्रं शास्त्रमित्यर्थः । यथा स्थैर्यवती पृथिवी, आपो द्रवाः, चलो वायुरचाक्षुषश्चेति । अधुना प्रतितन्त्रसिद्धान्तः—

**जो खलु सतंतसिद्धो, न य परतंतेसु सो उ पडितंतो ।**
**णिच्चमणिच्चं सव्वं, णिच्चाणिच्चं च इच्चादी ॥१८१॥**

"**जो खलु०**" गाधा । यः स्वतन्त्रे सिद्धः न च परतन्त्रेषु सिद्धः स प्रतितन्त्रसिद्धान्तः । यथा—सर्वं नित्यं **सांख्यानाम्**, सर्वमनित्यं **क्षणिकवादिनाम्** । सर्वं नित्याऽनित्यमा**र्हतानाम्** ।

अधुना अधिकरणसिद्धान्तः-अधिक्रियन्ते तस्मिन्नर्था इत्यधिकरणसिद्धान्तः[१] ।

**सो अधिकरणो जधियं, सिद्धे सेसं अणुत्तमवि सिज्झे ।**
**जध निच्चत्ते सिद्धे, अन्नत्ता-ऽमुत्तसंसिद्धी ॥१८२॥**

"**सो अधिकरणो०**" गाधा । यस्मिन् [२]निष्पन्ने शेषमनुक्तमपि सिध्यति सोऽधिकरणसिद्धान्तः । यथा—आत्मनो नित्यत्वे सिद्धे शरीराद्यन्यत्वसिद्धिर्[३]स्तित्वसिद्धिश्च भवतीत्यादि ।

अधुना अभ्युपगमसिद्धान्तः-

**जं अब्भुविच्च कीरइ, सिच्छाएँ कहा स अब्भुवगमो उ ।**
**सीतो वण्ही गयजूह तणग्गे मग्गु-खरसिंगा ॥१८३॥**

"**जं अब्भुविच्च०**" गाधा । यदिति वस्तु, शेषसिद्धान्तेष्वसिद्धमभ्युपेत्य स्वेच्छया [४]अङ्गीक्रियते । यथा—शीतो वह्निः, गजयूथं तृणाग्रे, मद्‌गु-खरयोः शृंगम् । 'सिद्धान्त' इति द्वारं गतम् ।

इताणिं **सासणं आणं** च । दो वि दारा एते एगट्ठा चेव भण्णति ।

**कडकरणं दव्वे सासणं तु दव्वे व दव्वतो आणा ।**
**दव्वणिमित्तं वुभयं, दोण्ह वि भावे इमं चेव ॥१८४॥**

"**कडकरणं०**" गाधा । सासणं दुविहं—दव्वसासणं, भावसासणं च । आणा वि दुविधा—दव्वाणा, भावआणा य । तत्थ दव्वसासणं दव्वाणा य वतिरित्ता '**कडकरणं**' [५]मुद्दा इत्यर्थः । "**दव्वनिमित्तं**" ति दव्वहेउं करोतीत्यर्थः । "**उभयं**"ति सासणं आणं च । बीओ पकारो दव्वसासणं दव्वाणा य, भावसासणं भावाणा य । आगमओ णोआगमओ य । आगमओ विभासा । णोआगमतो इमं चेव, **कप्पववहारसुयक्खंध** इत्यर्थः । एयस्स जो आणं ण करेति सो अणेगाणि मरणादीणि पावति । '**दोण्ह वि**'त्ति सासण-आणाणं । सासणं आणा य गतानि ।

इताणिं '**वयणं**'ति दारं—वयणं ति वा, वति त्ति वा, एगट्ठं । सा वती दुविहा—दव्ववती भाववती य । तत्थ—

---

१. **अधिक्रियन्ते अस्मिन्नर्था इत्यधिकरणः** पू० १, पा० । २. **यस्मिन्निष्पते शेष०** पू० २ । ३. ०सिद्धिरमूर्त्तत्वसंसिद्धिश्च मुटी० । ४. **स्वेच्छया क्रियते** पू० २ । ५. **मुद्रा** पू० १, पा० ।

**दव्ववती दव्वाइं, जाइं गहिताइं मुंचति न ताव ।**
**आराधणि दव्वस्स वि, दोहि वि भावस्स पडिवक्खो ॥१८५॥**

"**दव्ववती०**" गाधा । वतिरित्ता दव्ववती, जाणि वि भासाजोग्गाणि दव्वाणि भासत्ताए गहिताणि न ताव णिसिरति सा दव्ववती । अधवा जा दव्वं आराधेति घडादि अभिव्यंजयतीत्यर्थः । "**दोहि वि**" त्ति दव्ववतीए पगारेहिं । "**भावस्स पडिवक्खो**" त्ति, जं भणितं—णोआगमतो भाववती, जाणि भासाजोग्गाणि भासत्ताए णिसिरिताणि । अधवा जा भावं आराधेति जीवस्स णाणादिं, अजीवस्स वण्णादिं । 'वयणं' ति दारं गतं ।

इयाणिं **उवएस-पण्णवणा-ऽऽगमे** तिण्णि वि दारे एगट्ठे चेव भणति । उवएसो दुविहो—दव्वुवएसो भावुवएसो य । एवं पण्णवणागमा वि दुविहा, तिण्णि वि दव्वे वतिरित्ताणि इमाणि—

**दव्वाण दव्वभूतो, दव्वट्ठाए व विज्जमादीया ।**
**अह दव्वे उवदेसो, पण्णवणा आगमे चेव ॥१८६॥**

"**दव्वाण०**" गाधा । दव्वुवएसो जधा—कोति आतुरस्स ओसध-दव्वाणं उवदेसं करेति । जो वा साधू अणुवयुत्तो उवएसं करेति, अधवा जो वेज्जो 'एस ममं दव्वं दाहिति' त्ति, ओसहदव्वाणं उवएसं करेति । दव्वपण्णवणा जधा कोइ दव्वे पण्णवेति जो वा भावं अणुवउत्तो पण्णवेति, जो [1]वा 'देहिति एस मम किंचि' त्ति, तो पण्णवेति दव्वादीणि । अधवा जो वेज्जो दव्वाणं पण्णवणं करेति सिस्सस्स तो मे किंचि देहिति, एस दव्वपण्णवणा । दव्वागमो हिरण्णादीणं आगमं करेति संग्रहमित्यर्थः । जो वा अणुवउत्तो पढति । जं वा वेज्जो पढति वरं वित्ती होति । एस दव्वागमो । णोआगमतो भावओ उवएसपण्णवणागमो जो उवउत्तो उवदिसति पण्णवेति पढति वा । एते एगट्ठा पज्जव त्ति णामा सुत्ते भवंति । सुत्तेगट्ठिताणि गताणि ।

इदाणिं अत्थेगट्ठियाणि अणुयोगेगट्ठियाणीत्यर्थः । ताणि इमाणि—

**अणुयोगो य णियोगो, भास विभासा य वत्तियं चेव ।**
**एते अणुओगस्स उ णामा एगट्ठिया पंच ॥१८७॥**

"**अणुयोगो य०**" गाधा । एताण अत्थो [2]णिरुत्तेहिं समं भण्णिहिति । **एगट्ठितमिति** दारं गतं ।

इयाणिं **णिरुत्तं** ति दारं ।

---

१. **जो भावा देहि त्ति** पू० १ । २. **अत्थणिरुत्तेहिं** पू० २ ।

**णिच्छियमुत्त निरुत्तं, तं पुण सुत्ते य होति अत्थे य ।**
**सुत्ते उवरिं वोच्छिति, अत्थणिरुत्तं इमं तत्थ ॥१८८॥**

"**णिच्छितमुत्त०**" गाधा । णिरुत्तमिति कोऽर्थः ? उच्यते—निश्चितं तथ्यं वा उक्तं निरुक्तम् । तं च दुविधं—सुत्तणिरुत्तं, अत्थणिरुत्तं च । तत्थ सुत्तणिरुत्तं उवरिं भण्णिहिति । 'णेरुत्तियाणि तस्स उ सूयति' इत्यादि गाधा (गा० ३१४) । अत्थणिरुत्तं पुण इमं—

**अणु बादरे य उंडिय, पडिंसुया चेव अब्भपडले य ।**
**वत्तिय चउक्क भंगो, णिरुत्तादी वत्तणी व जधा ॥१८९॥**

"**अणु बायरे०**" गाधा । एते दिट्ठंता अत्थणिरुत्तेसु । एते पुण अत्थेगट्ठितेसु वक्खाणिज्जंति । तं जधा—अणुयोगे[1] अणुं च बादरो य दिट्ठंतो कीरति । णियोगे सुत्तं अत्थो य उंडियापत्तएणं दिट्ठंतो कीरति । भासाए पडिंसुया दिट्ठंतो कीरति । विभासाए अब्भपडलदिट्ठंतो कीरति । वत्तीए चत्तारि भंगा करेत्ता मंखदिट्ठंतो कीरति । तत्थ पढमं दारं अणुयोगो । **अणु बादरे य०** । अस्य व्याख्या—

**अणुणा जोगो अणुयोगो, अणु पच्छाभावतो य थोवे य ।**
**जम्हा पच्छाऽभिहियं, सुत्तं थोवं च तेणाणू ॥१९०॥**

"**अणुणा०**" गाधा । अणुणा जोगो अणुयोगो । "**अणु पच्छाभावे[2] थोवे**" य त्ति काउं । जेण कारणेण पच्छा कतं सुत्तं थोवं च तेणाणू भण्णति । अत्थो पुण बादरो पुव्वं भणितो बहू चेत्यर्थः । एवं भणिए आयरिएणं सीसो भणति—

**पुव्वं सुत्तं पच्छा, य पगासो लोइया वि इच्छंति ।**
**पेडासरिसे सुत्ते, अत्थपया हुंति बहुया वि ॥१९१॥**

"**पुव्वं सुत्तं०**" गाधा । '**पगासो**'त्ति अत्थो । ते ते भावे पगासीकरेतीति पगासो, सुत्ताभावे कस्स अत्थो भवतु ? । लोइया वि एवं इच्छंति । यथा—

**पूर्वं सूत्रं ततो वृत्तिर्वृत्तेरपि च वार्त्तिकम् ।**
**सूत्र-वार्त्तिकयोर्मध्ये, ततो भाष्यं प्रवर्तते ॥**

एतेण कारणेणं जं भणध-पुव्वं अत्थो पच्छा सुत्तं ति, तं न घडति । जं पि य भणध—सुत्तं अणुं अत्थो बादरो, तं पि ण घडति । कधं ? जधा एगाए पेलाए बहूणि पोत्ताणि मायंति । तत्थ पुण पेलाए चेव बादरत्तणं भवति, जेण ते सव्वे वि ताए मायंति । एवं पेल्लियत्थाणीए सुत्ते बहू वि अत्थपदा भवंति चेव । एतेण कारणेणं जं भणध—पच्छा सुत्तं, एयं ण घडति । ण

१. **अणियोगे** पू० २ । २. **०भावो थोवेणत्ति** पू० १ ।

य एगंतेण अत्थस्स महत्थं ति ग्राह्यम् । कथं ? उच्यते–

**एगं वा अत्थपदं, सुत्ता बहुगा वि संपयं होंति ।**
**उक्खित्तणायमादिसु, अयमवि तम्हा अणेगंतो ॥१९२॥**

"**एगं वा०**" गाधा। एगं अत्थपदं बहूणि सुत्ताणि उवदंसेंति। जधा 'उक्खित्त-णाते' अणुकंपा कायव्व त्ति। बहूहिं सुत्तेहिं वण्णिता। आदिग्गहणेणं संघाडादिसु 'न वि वण्णहेउं आहारेयव्वं'ति। आचार्याह–जं तुमे भणितं–पुव्वं सुत्तं पच्छा अत्थो, तं ण भवति। कधं ? जेण **अरहा** गाहा।

**अत्थं भासति अरहा, तमेव सुत्तीकरेंति गणधारी ।**
**अत्थं च विणा सुत्तं, अणिस्सियं केरिसं होज्जा ॥१९३॥**

"**अत्थं भासइ अरहा०**" गाधा । कंठा । जं च तुमे भणितं पेलावद् बादरं सूत्रम्, अत्थो अणू, तं पि न भवति । कथं ? जधा [१]ताते चेव पेलातो एगं वत्थं णीणेउं अणेगात्तो पेडातो बज्झंति ।

**एवमेगतूभयतो वी अत्थस्सेह तु अनुत्तया पत्ता ।**[२]
**कध भण्णति अणुसुत्तं, महति पगासो इमं सुणसु ॥१९४॥**

"**एवमेगं वा**" गाधा । कंठा । तम्हा अणु पच्छाभावे, अयं ठितपक्खो अणुयोगो । अणु-बादरे त्ति गतं ।

इदाणिं णियोगे । '**उंडित**' त्ति । अस्य व्याख्या–

**अधिगो जोगो निजोगो, जधातिदाहो भवे णिदाहो त्ति ।**
**अत्थणिउत्तं सुत्तं, पसवति चरणं जतो मुक्खो ॥१९५॥**
**वच्छणियोगे खीरं, अत्थणियोगेण चरणमेवं तु ।**
**पत्तगउंडियमुभयं, उंडियसरिसो तहिं अत्थो ॥१९६॥**

"**अधियो जोगो०**" गाधाद्वयम् । निराधिक्ये युजिर् योग इति कृत्वा अधिको योगो नियोगो भवति । तथा अतीव दाघो निदाघ उच्यते । एवं अधिको योगो नियोगो भण्णति। स केन साकं आधिक्येन योग ? इति चेत्, उच्यते–अत्थेण समं सुत्तं नियुत्तं चरित्तं प्रसवति, सुयति त्ति भणितं होति । जतो संसारातो मोक्खो भवति । जधा वच्छेण गावी णिउत्ता खीरं पसवति, एवं अत्थेण समं णिउत्तं सुत्तं चरित्तं पसवति । जति पुण सुत्तं एक्कं, न वि अत्थो णेणं गहितो, णत्थि चरणं मोक्खो वा । अत्थेण वि सुत्तविहूणेणं कज्जं न साधेति चेव । जति पुण सुत्तत्थोववेतो तो साधेति सकज्जं । एत्थ दिट्ठंतो उंडियाए । जधा–एगेणं कज्जिएणं[३] पत्तयं

१. **तओ** पू० १-२ । २. गाथेयं बृहद्भाष्यसत्का इव, वृत्तौ न व्याख्याता, अशुद्धा प्रतिभाति । ३. **०णं वणिएणं** पू० १ ।

आणीतं, अमुद्दितयं । तेण न साधितं कज्जं, मुद्दा नत्थि त्ति । न करेंति आणं । अण्णेणं उंडिया चेव एगल्लिया, पत्तयं णत्थि । तेणं पि न साधियं कज्जं, पत्तयं णत्थि त्ति । अण्णेण पत्तयं समुद्दितयं आणीतं, तेण साधितं कज्जं । एवमेव पत्तयसरिसं सुत्तं, अत्थो उंडियासरिसो । जस्स सुत्तं एति, अत्थो ण एति स अमुद्दियलेहसरिसो । जस्स अत्थो एति सुत्तं ण एति स मुद्दितलेहसरिसो[१] । जस्स अत्थो वि सुत्तं पि, उभयसंपण्णे चरणपसवो, तप्पसवे मोक्खो । एगतरविहूणे णत्थि चरणं, कुतो मोक्खो दिक्खासाफल्लं वा ?। उंडिया णाम लेहस्स मुद्दा । **णियोगो उंडिया** य गताणि ॥छ॥

इयाणिं **भासा पडिंसुया** चेव त्ति दारं—

**पडिसद्दगस्स सरिसं, जो भासति अत्थमेगु सुत्तस्स ।**
**सामाइय-बाल-पंडिय-साधु-जतिमातिया भासा ॥१९७॥**

"**पडिसद्द०**" गाधा । जधा जलतले जारिसो सद्दो कीरति तारिसो चेव पडिसद्दओ उट्ठेति । एवं जो ज़ारिसं सुत्तं तारिसं चेव अत्थं भासति आयरिओ, सा भासा भवति । जधा— समभावः सामायिकं, बालभावो बालियं । अथवा द्वाभ्यां आगलितो बालः । पापाद् डीनः पंडितः । अधवा पंडा बुद्धिः, 'इण् गतौ', पंडां अनुगतः[२] पंडितः । साधुकारी साधुः, यततीति यतिः । आदिग्रहणात् तपतीति तपनः । **भासा पडेंसुया** य गतं ।

इयाणिं '**विभासा अब्भपडले य**' त्ति दारं—

**एक्केणं एक्कदलं, तहिं कयं बीतिएण बहुतरगा ।**
**ततिएण छादितं तं, तिल्लंऽबिलमादुवाएहिं ॥१९८॥**

"**एगेण०**" गाधा । जधा छत्तकारेणं सिस्साणं अब्भपडला दिण्णा । छत्तं छादेध त्ति । तत्थ एक्केण ताव दो वा तिण्णि वा दले करेत्ता लाइतं, बितिएणं पंच वा छ वा सत्त वा दले करेत्ता लाइताणि छत्ते । ततिएणं तेल्लंबिलादीहिं तिम्मिताणि भेदं कातुं सव्वं छत्तं छादितं ।

**एगपदे दुतिगादी, जो अत्थे भणति सा विभासा उ ।**
**असति य आसु य धावति ण य सम्मति तेण आसो उ ॥१९९॥**

"**एगपदे०**" गाधा । एवं एगम्मि पदे जो दो वा तिण्णि वा चत्तारि वा बहुतरए वा अत्थे भासति, ण वि सव्वं चेव णिव्वयणं सक्केति काउं, एस विभासा । यथा—अशति आशु च धावति, न च [३]श्राम्यते, तस्मात् अश्व इति । एत्थ दोहिं छत्तछादेहिं आदिल्लएहिं अहिगारो मंतव्यः । **विभासा अब्भपडले य** त्ति गतं ॥छ॥

---

१. **मुद्दियसरिसो** पू० १ । २. '**पंडां अनुगतः**' इति न पू० १ । ३. **श्राम्यति** पा० ।

इदाणिं [१]**वार्तिकः** इति ।

**सामाइयस्स अत्थं, पुव्वधर समत्तमो विभासंति ।**
**चउरो खलु मंखसुता, वत्तीकरणम्मि आहरणा ॥२००॥**

जो सामाइयस्स अत्थं वित्थरेण भासति णिव्वयणिज्जं सो वत्तीकरो भवति । आह, को पुण सो ? उच्यते—सामाइयस्स अत्थं **पुव्वधर समत्तमो विभासेति**[२] । जधा तेण छत्तारेण तेल्लंबिलादीहिं उवाएहिं सव्वं छादितं छत्तं । एस णत्थि[३] संपदं । आह—संपदं केरिसो [४]वत्तीकरो भवति ? उच्यते—

**जे जम्मि जुगे पवरा, तेसिं सगासम्मि जेण उग्गहियं ।**
**परिवाडीण पमाणं, वुच्छं वत्तीकरो स खलु ॥२०१॥**

"**जे जम्मि०**" गाधा । संपति जुगप्पवराणं सकासे तिहिं सत्तहिं वा वारेहिं जेणं गहणं-धारणासमत्थेणं उग्गहितं सो वत्तीकरो भवति । एत्थ वत्तीए चत्तारि भंगा भवंति । १. एक्कस्स सुत्तं एति णो अत्थो, २. एगस्स अत्थो एति, णो सुत्तं, ३. एगस्स सुत्तं पि एति, अत्थो वि एति । ४. एगस्स णावि सुत्तं एति, णावि अत्थो । एस अवत्थू चेव । एत्थं दो आइल्ला कज्जं न साधेंति । ण य वत्तीकरा भवंति । ततिओ सुत्तत्थ-समण्णागतो संजमकज्जं साधेति । दिट्ठंतो मंखेहिं चउहिं । जहा चत्तारि मंखा । तेसिं—

**फलएणेक्को गाहाय बितिओ तइओ वाचितत्थेणं ।**
**तिन्नि वि अकुडुंबभरा, तिगजोग चउत्थओ भरति ॥२०२॥**[५]

"**फलएणेक्को०**" गाधा । एक्को फलयं गेण्हित्ता [६]आहिंडति, ण गाधाओ उच्चारेति, ण वायाए ण अत्थेणं किंचि भणति । सो ण किंचि लब्भति । बितिओ फलयं ण चेव गेण्हति, णवरं गाधाओ पढंतो हिंडति, सो वि ण किंचि लब्भति । ततिओ ण वा फलयं गेण्हति ण वा गाधाओ उच्चारेति, परं वायाए अत्थं कहंतो हिंडति । एस वि ण किंचि लभति । चउत्थो फलयं गेण्हित्ता गाधाओ पढंतो वायाए य साहेंतो हिंडति । सो लभति । जधा एते तिण्णि मंखा अकुंटुबभरा । चउत्थो य [७]त्रिकयोगसंपउत्तो कुटुंबभरो भवति । एवं आदिल्ला दोण्णि पुरिसा मोक्खट्ठं न साधिंति । तइओ य चउत्थमंखवदप्पणो मोक्खट्ठं साधेति । णिरुत्तादि त्ति ।

**णिक्खेवा य णिरुत्ताणि जा य कधणा भवे पकासस्स ।**
**जह रिसभादीयाऽऽहंसु किमेवं वद्धमाणो वि ॥२०३॥**

१. **वत्तिकरेति** पा० । २. **०भासंति** पा० । ३. **अत्थि सं०** पू० २, पा० विना । ४. **वत्तीकारो** पा० । ५. मु० टीका पुस्तके २००-२०१ गाथे व्युत्क्रमेण दृश्येते । ६. **हिंडति** पू० १-२, पा० । ७. **तृग०** पू० २ ।

"**णिक्खेवा य०**" गाधा। सीसो भणति—णिक्खेवा य चउक्क-सत्तयादीया, णिरुत्ताणि य सुत्तत्थाणं अत्थकधणा य एगट्ठिताणं। अधवा चतुर्भिरणुयोगैः या प्रकाशकथना। एवं जधा उसभातिणो तेवीसं तित्थकरा भणंति किमेवं वद्धमाणसामी वि आतिक्खति ?। आयरिओ भणति—आमं। आह—तो ते उच्चतरा, वद्धमाणसामी सत्त रयणीओ, कधं तह चेव भणति ?। उच्यते—

**धिति-संघयण तुल्ला, केवलभावे य विसमदेहा वि।**
**केवलणाणं तं चिय, पण्णवणिज्जा य चरमे वि ॥२०४॥**

**णायज्झयणाहरणा, इसिभासियमो पइण्णगसुया य।**
**एते हुंति अणियता, णियतं पुण सेसमुस्सण्णं ॥२०५॥**

"**धिति संघयणा०**" गाधाद्वयम्। पण्णवणिज्जा[1] वि भावा जे उसभादीणं ते इमस्स वि। किं पुण णायज्झयणादिसु जे दिट्ठंता एते ते वा होज्जा अण्णे वा ? पच्चुप्पण्णयाणि इसिभासियादीणि, ओसण्णमिति प्रायशः। आह—को दिट्ठंतो ? जधा तह च्चेव वद्धमाणसामी वि आह ?। उच्यते—'**वत्तणी वि जधा**'। अस्य व्याख्या—

**जध सव्वजणवएसुं, एक्कं चिय सगडवत्तणिपमाणं।**
**विसमाणि य वत्थूणी, सगडाईणं तध णिरुत्ता ॥२०६॥**

"**जह सव्व०**" गाधा। '**विसमाणि य वत्थूणि**' त्ति। जति वि अण्णे महल्ला तधा अण्णे खुड्डुया। आदिग्गहणेणं [2]जुग्गयादीणं। आह—अवस्समेव पुरिल्लरधाणं संपयरहाण य विसेसो होति वित्थारस्स। महप्पमाणाण य मणुस्साणं संपतिच्चयाण य अप्पप्पमाणं ति ?। उच्यते—

**जति वि य वत्थू हीणा, पुव्विल्लरधेहिं संपयरधाणं।**
**तह वि जुगम्मि जुगम्मी, सहत्थ चउहत्थगा अक्खा ॥२०७॥**

"**जति वि य०**" गाधा। कंठा। आह-जति वि णिक्खेवा य णिरुत्ताणि चेव, जा य कधणा पगासस्स, जहा रिसभादी आहु तधा वद्धमाणो वि, तो वि पंचधणुसतियाणं सातिरेगादीण य मणुस्साणं महल्लाणींदियाणि, तेणं ते सोत्तादिसु[3] इंदिएसु बहुतरए खेत्ते सद्दातिए विसयोवलंभे जाणंति। जे हीणतरपमाणा पुरिसा तेसिं अप्पतराए खेत्ते सद्दादिविसओवलंभेणं भवितव्वं। तो कधं एतं एवं भवति ?। उच्यते—

---

१. **णिज्जे विभासा** पू० २। २. **जुग्गादीणं** पा०। **जुत्तयादीणं** पू० १। ३. **सद्दादिसु** पू० १-२।

**पुरिमेहिं जति वि हीणा, इंदियमाणा उ संपतनराणं ।**
**तह वि य सिं उवलद्धी, खेत्तविभागेण तुल्ला उ ॥२०८॥**

"**पुरिमेहिं** [१]**जइ०**" गाधा । '**खेत्तविभागेण**'त्ति आयंगुलेणं इंदियपमाणं, इंदियविसयखेत्तप्पमाणं च । जधा–

"**सोइंदियस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखिज्जतिभागातो उक्कोसेणं बारसहिं जोयणेहिंतो** [२]**अच्छिण्णे पोग्गले पुट्ठे** [३]**पविट्ठातिं सद्दातिं सुणेति**" । [प्रज्ञापना पञ्चदशमिन्द्रियपदं उ० १ सू० १९५] एवमादि । **अत्थणिरुत्तं** गतं । **णिरुत्तं** ति दारं गतं ।

इयाणिं '**विहि**'त्ति दारं । तीसे इमाणि एगट्ठियाणि ।

**अणुपुव्वी परिवाडी, कमो य णातो ठिती य मज्जाया ।**
**होति विधाणं च तधा, विहीएँ एगट्ठिया एते ॥२०९॥**

"**अणुपुव्वी०**" गाधा । कंठा । तत्थ इमाए विधीए अणुओगो कातव्वो–

**सुत्तत्थो खलु पढमो, बितिओ णिज्जुत्तिमीसिओ भणितो ।**
**ततितो य णिरवसेसो, एस विधी होति अणुयोगे ॥२१०॥**

"**सुत्तत्थो खलु०**" गाधा । पढमसोतारस्स [४]पढमं ताव सुत्तत्थो कधेतव्वो । जधा– "**नो कप्पति निग्गंथाणं वा निग्गंथीण वा आमे तालपलंबे अभिण्णे पडिग्गाहेत्तए**" (उ० १ सू० १) । न इति प्रतिषेधे । ण वट्टतित्ति[५] भणितं होति । न अस्य ग्रन्थो विद्यते इति निर्ग्रन्थः । वा विभाषायां । आमं अपक्वम् । तालो रुक्खो । ताले भवं तालं फलमित्यर्थः । पलंबं मूलं । तस्यैव अभिण्णं, [६]अव्यपगतजीवं । पडिगाहित्तए त्ति गेण्हित्तए । एवं ताव कहेतव्वं जाव समत्तं सुतक्खंधं । बितियपरिवाडीए णिज्जुत्तिमीसओ कहेतव्वो । पढियसुत्तफासियगाधातो य जाव समत्तं । तइयाए परिवाडीए पद-पदत्थ-चालणा-पच्चवत्थाणादीहिं कहेतव्वो । अणुओगकहणाए एस विधी । अधवा–

**मूतं हुंकारं वा, बाढक्कार पडिपुच्छ वीमंसा ।**
**तत्तो पसंगपारायणं च परिणिट्ठ सत्तमए ॥२११॥**

"**मूतं०**" गाधा । कंठा ।

**चोदेति राग-दोसे, समत्थ परिणामगे परूवणया ।**
**एतेसिं णाणत्तं, वुच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥२१२॥**

१. **जह** पू० २ । २. **छिण्णे** पू० २ । ३. **पविट्ठे** पू० १-२, पा० । ४. पू० २ प्रतौ न । ५. **वट्टिति** पू० १, पा० । ६. **अव्ववगय०** पू० १-२; **अव्यवगत०** पा० ।

"चोतेति राग-दोसे०" गाधा। चोदतो चोदेति–[१]अहो राग-दोसिया। कधं ?। सो सीसो दुविहो होज्जा-गहणधारणासमत्थो य जड्डो य।

**मच्छरता अविमुत्ती, पूया-सक्कार गच्छति य खिण्णो।**
**दोसो गहणसमत्थे, इतरे रागो य वोच्छेदो ॥२१३॥**

"**मच्छरता०**" गाधा। 'मच्छरत'त्ति, एस मम सवत्तीहोहिति लहुं सिक्खितो तेण खेदेध सत्तहिं परिवाडीहिं। अविमुत्ती[२]–एस सुत्तत्थेसु समत्तेसु णिप्फिडिहिति[३] त्ति इयरधा किंचि अमुत्ती[४] होहिति। सीसपरिवारितस्स पूयासक्कारो भविस्सति। ताधे य सो गच्छिधिति[५] खिण्णो त्ति परिस्संतो अण्णं गच्छं। अणुओगवोच्छेदो भवति। एवं द्वेषो गहणसमत्थे एताए विहीए कधिज्जमाणे। इतरो नाम जड्डो, तम्मि भे रागो, जं सत्तहिं परिवाडीहिं देह। असमत्थ त्ति आयरिओ अप्पणो असमत्थत्तणं सीसस्स य जाणित्ता इमं आह–

**णिरवयवो न हु सक्को, सयं[६] पगासो उ संपयंसेउं।**
**कुंभजले वि हु तुरितुज्झितम्मि न वि तिम्मए लिट्टू[७] ॥२१४॥**

"**णिरवयव०**" गाधा। कंठा। 'सयं' ति एगाए परिवाडीए। इदाणिं अपरिणामग त्ति। एकग्रहणात् तज्जातीयग्रहणं। सीसो तिविहो-परिणामओ अपरिणामओ अतिपरिणामओ य।

**सुत्त-ऽत्थे कधयंतो, पारोक्खी सिस्सभावमुपलब्भ।**
**अणुकंपाएँ अपत्ते, णिज्जूहति मा विणस्सिज्जा ॥२१५॥**

"**सुत्तऽत्थे०**" गाधा। "**णिज्जूहति**" त्ति अपवातं न कथयतीत्यर्थः। तत्थ [८]अपरिणामतेसु इमे उदाहरणा–

**दारुं धातुं वाही[९], बीए कंकडुय लक्खणे सुविणे।**
**एगंतेण अजोग्गे, एवमादी उदाहरणा ॥२१६॥**

**को दोसो एरंडे, जं रहदारुं ण कीरए तत्तो।**
**को वा तिणिसे रागो, उवजुज्जइ जं रहंगेसु ॥२१७॥**

**जं पि य दारुं जोग्गं, जस्स उ वत्थुस्स तं पि हु ण सक्का।**
**जोएउमणिम्मविउं, तच्छण-दल-वेह-कुस्सेहिं ॥२१८॥**

---

१. **अहोत्थ रागद्दो०** पा०। २. **अविज्झती** पू० २। ३. **०प्फिडति** पू० १-२ विना। ४. **अमुयी** पू० २, पा०। ५. **सो गंछिसीति** पू० २। ६. **सइं** ता०। ७. **लेट्टू** ता०। ८. **अतिपरिणामएसु** पा०। ९. **बाधिं बी०** ता०।

**एमेव अधाउं उज्झिऊण धाऊण कुणइ आयाणं ।**
**ण य अक्कमेण सक्का, धाउम्मि वि इच्छियं काउं ॥२१९॥**

**सुहसज्झो जत्तेणं, जत्तासज्झो असज्झवाही उ ।**
**जह रोगे पारिच्छा, सिस्ससभावाण वि तहेव ॥२२०॥**

**बीयमबीयं णाउं, मोत्तुमबीए उ करिसतो सालिं ।**
**ववइ विरोहणजोग्गे, ण यावि से पक्खवाओ उ ॥२२१॥**

**कंकडए को दोसो, जं अग्गी तं तु ण पयइ दित्तो ।**
**को वा इयरे रागो, एमेव य सूवकारस्स ॥२२२॥**

**जे उ अलक्खणजुत्ता, कुमारगा ते णिसेहिउं इयरे ।**
**रज्जरिहे अणुमण्णइ, सामुद्दो णेय विसमो उ ॥२२३॥**

**जो जह कहेइ सुमिणं, तस्स तह फलं कहेइ तण्णाणी ।**
**रत्तो वा दुट्ठो वा, ण यावि वत्तव्वयमुवेइ ॥२२४॥**

"दारुं धातुं०" दारगाधा । वक्खाणगाधा सिद्धा चेव । [1]किंचि भणामि । जोएतुं ति लाएतुं । दलो णामं दुधा-तिधादि-फालणं । कुस्सो णामं जो वेधे पवेसिज्जति [2]प्रान्ते । एवं चेव अम्ह वि रागो दोसो वा णत्थि । दारुत्ति गतं । जाधे राता(या) ववगतो भवति ताधे जे तस्स पुत्ता कुमारगा ते सव्वे सामुद्दलक्खणपाढओ परिक्खित्ता जो रायलक्खणसंपण्णो तं संदिसति—एस लक्खणजुत्तो त्ति। एगंतेण चेव अयोग्गे अववायस्स अतिपरिणामए पुरिसे एवमादीया उदाहरणा भवंतीति। जो पुण अपरिणामओ तस्स कमेण, णिम्मवेतुं णिम्मवेतुं कधिज्जति । असमत्थे[3] य इमाणि उदाहरणाणि—

**अग्गी बाल गिलाणे, सीहे रुक्खे करीलमादीया ।**
**अपरिणतजणे एते, सप्पडिवक्खा उदाहरणा ॥२२५॥**

**जध अरणी णिम्मवितो, थोवो विउलिंधणं ण चाएति ।**
**दहिउं सो पज्जलितो, सव्वस्स वि पच्चलो पच्छा ॥२२६॥**

**एवं खु थूलबुद्धी, णिउणं अत्थं अपच्चलो घेत्तुं ।**
**सो चेव जणियबुद्धी, सव्वस्स वि पच्चलो पच्छा ॥२२७॥**

---

१. किंपि पू० १ । २. प्रान्तो पू० २, पा० । ३. असमत्थेण पू० १ । असमत्थे व पू० २ ।

**देहे अभिवड्डंते, बालस्स उ पीहगस्स अभिवुड्डी ।**
**अइबहुएण विणस्सइ, एमेवऽहुणुट्ठिय गिलाणे ॥२२८॥**

**खीर-मिउपोग्गलेहिं, सीहो पुट्ठो उ खाइ अट्ठी वि ।**
**रुक्खो विवण्णओ खलु, वंसकरिल्लो य णहछिज्जो ॥२२९॥**

**ते चेव विवड्डंता, हुंति अछेज्जा कुहाडमाईहिं ।**
**तह कोमला वि बुद्धी, भज्जइ गहणेसु अत्थेसु ॥२३०॥**

"**अग्गी बाल०**" दारगाधा । "**अग्गि**"त्ति । "**जध अरणी०**" गाधा । "**एवं खु थूलबुद्धी०**" गाधा । कण्ठा । सेसाओ गाहातो पायं वक्खाणगाधासिद्धाओ । "[१]**करिल्लो**" त्ति वंसो । आदिग्गहणेणं—

**सिद्धत्थए वि गिण्हति, हत्थी थूलगहणे सुणिम्माओ ।**
**सरवेध-छिज्ज-पवए, घड-पड-चित्ते तधा धमए ॥२३१॥**

"**सिद्धत्थए वि०**" गाधा । जधा हत्थीण वल्लओ सिक्खाविज्जंतो पढमं कट्ठाणि गाहिज्जति, पच्छा [२]पाहणा खुड्डुलया, पच्छा गोलियाओ, तओ बोरे सिद्धत्थए वि गेण्हति । जति पुण पढमं चेव सिद्धत्थएं गाहिज्जंतो तो ण चेव सक्केंतो गेण्हिउं । सद्दवेही वि पढमं थूलं दव्वं विंधाविज्जति पच्छा वालं । पच्छा सद्देण चेव विंधति । पत्तछेज्जं पि जो सिक्खति सो पढमं अकिंचिक्करेहिं चीरेहिं सिक्खाविज्जति, जाधे णिम्मातो भवति ताधे इच्छितं पत्तच्छेज्जं करेति । पवओ वि पढमं वंसे लग्गावित्ता पवाविज्जति, पच्छा अब्भसंतो अब्भ अब्भ आगासे [३]वि ताणि ताणि करणाणि करेति । घडकारो वि पढमं सरावादीणि सिक्खविज्जति, पच्छा सिक्खिओ घडे वि करेति । पडयारो वि पढमं ताहे [४]चीरुल्लयाणि सिक्खविज्जति पच्छा पट्टाणि वि वुणति । [५]चित्तगारो वि पढमं अंडयं पच्छा सिक्खितो सव्वं चेव चित्तकम्मं करेति । धमओ वि पढमं सिंगमादीणि धमति, पच्छा संख-भेरियादीणि वि धमति । जधा एते हत्थिमातिणो [६]कमेणं णिम्मविज्जंति, एवं सिस्सस्स वि ।

**जत्थ मती ओगाहति, जोग्गं जं जस्स तस्स तं कहए ।**
**परिणामाऽऽगमसरिसं, संवेगकरं सणिव्वेयं ॥२३२॥**

"**जत्थ मती ओगाहति०**" जं च जस्स जोग्गं परिणामं जाणित्ता तं तस्स कहेतव्वं । जधा एरिसपरिणामयस्स [७]पुरिसस्स इमं जोग्गं, एरिसपरिणामस्स इतरमित्येवमादि । तं च

१. **करीलो** पू० १ । २. **पाहाणा** पा० । ३. **ठिताणि ताणि** पा० । ४. **चीरूल्लया सि०** पू० २ । ५. **चित्तकरो** पू० २ । ६. **कंमेणं** पू० २ । ७. नास्ति पू० १, पा० ।

संवेगकारयं कधेयव्वं । जधा—

"सिद्धी य देवलोगो, सुकुलुप्पत्ती य होति संवेगो ।

णिव्वेयकारयं च ज़धा—

"णरओ तिरक्खजोणी कुमाणुसत्तं च णिव्वेतो" ॥

कधं पुण जत्थ मंती ओगाहति तं तस्स कहेतव्वं ?। उच्यते—

**णिउणे णिउणं अत्थं, थूलत्थं थूलबुद्धिणो कहए ।**
**बुद्धीविवद्धणकरं, होहिइ कालेण सो णिउणो ॥२३३॥**

"**णिउणे णिउणं०**" गाधा । कंठा । सप्पडिपक्खा उदाहरण त्ति । जाणि हेट्ठा अग्गिमादीणि उदाहरणाणि भणियाणि । जधा—[1]जलियमेत्तओ अग्गी खोडेहिं [2]अक्कंतो विज्झाति। एतस्स पडिपक्खो—सो च्चेव अग्गी जया थोवं थोवं इंधणेणं उज्जालिओ भवति, तदा जारिसं छुब्भति तारिसं सव्वमेव डहति । एवं सीसो वि जदा थोवत्थोवेणं जणियबुद्धी कतो भवति, तदा जारिसं कहिज्जति उस्सगाऽववाएहिं तं सव्वं सक्केति गेण्हितुं । एवं सव्वोदाहरणाणि उवजुंजिउं सपडिपक्खाणि वत्तव्वाणि । तम्हा आयरिएणं सीसं परिणामगादि सुपरिच्छितं काउं, सीसेणं वि आयरियं सुपरिच्छितं काउं, वत्तव्वं सोतव्वं वा। सा य परोप्परपरिच्छा ।

**गेण्हंत-गाहगाणं, आइसुएसु उ विही समक्खाओ ।**
**सो चेव य होइ इहं, उज्जोगो वण्णिओ णवरं ॥२३४॥**

"**गेण्हंत०**" गाधा । "**आदि सुते**" त्ति सामाइए । जधा—"**गोणी चंदण कंथा०**" [आव नि० १३६] । कस्स ण [3]होहिति वेसो । विणओणएहिं पंजलियउडेहिं पजंपइ इत्यादि । 'विहि' त्ति परिक्खा, एसा चेव णिरवसेसा इधं वत्तव्वा । '**उज्जोग**' त्ति परिवाडीहिं तिहिं सत्तहिं वा उज्जोगो कातव्वो उस्सग्गाववातपरमत्थजाणणट्ठाए । '**विधि**' त्ति दारं गतं ॥छ॥

इयाणिं **पवित्ति** त्ति दारं—पवित्ति त्ति वा पवहो त्ति वा पसूति त्ति वा एगट्ठं । कधं ? अणुयोगो पवत्तइ त्ति भणितं होति । सा पवित्ती दुविधा—दव्वे भावे य । तत्थ गाहा—

**अणिउत्तो अणिउत्ता, अणिउत्तो चेव ते वि उ णिउत्ता ।**
**नि( णे )उत्तो अणिउत्ता, उ णिउत्तो चेव उ णिउत्ता ॥२३५॥**

**णिउत्ता अणिउत्ताणं, पवत्तई अहव ते वि उ णिउत्ता ।**
**दव्वम्मि होइ गोणी, भावम्मि जिणादयो हुंति ॥२३६॥**

---

१. **जणिय०** पू० १, पा० । २. **ओक्कंतो** पू० २ । ३. **होति पेस्सो** पू० २ ।

"**अणिउत्तो०**" गाधाद्वयम् । तत्थ दव्वे गावी अणिउत्ता, दोहओ वि अणिउत्तो १। गावी अणिउत्ता, दोहओ णिउत्तो २। एवं चत्तारि भंगा । तत्थ पढमं भंगं वक्खाणेति–

**अप्पण्हुया य गोणी, णेव य दुद्धा समुज्जओ दोद्धुं ।**
**खीरस्स कओ पसवो, जइ वि य सा खीरदा धेणू ॥२३७॥**

**बीए वि णत्थि खीरं, थेवं व हविज्ज एव तइए वि ।**
**अत्थि चउत्थे खीरं, एसुवमा आयरिय-सीसे ॥२३८॥**

"**अपण्हुगा०**" गाधाद्वयम् । '**अपण्हुत**'त्ति अपण्हुता गावी, दोहतो वि ण [1]दुहति । णत्थि खीरस्स पवित्ती । बितिए वि भंगे णत्थि चेव खीरस्स पसवो । अधवा थोवस्स होज्जा पवत्ती वातादीहिं । ततिए वि भंगे जत्थ गावी पण्हुता, दोहओ न दुहति, णत्थि चेव पसवो खीरस्स । थोवं वा होज्जा थणएसु गलंतेसु । चउत्थभंगे गावी पण्हुता, दोहतो वि दुहति । अत्थि खीरस्स पसवो । एसा चेव उवमा भावे अणुयोगस्स पसवे आयरिए सीसेसु य । आयरिओ अणिउत्तो, सीसा वि अणिउत्ता, णत्थि अणुयोगस्स पवित्ती । अणिउत्तो णिउत्तेसु णत्थि अणुयोगस्स पसवो ।

**अधवा अणिच्छमाणमवि किंचि उज्जोगिणो पवत्तंति ।**
**तइए सारिंते वा होज्ज पवित्ती गुणिंते वा ॥२३९॥**

"**अधवा०**" गाधा । अधवा होज्जा पवत्ती । कधं ?। ते उज्जोगमंता सीसा अणिच्छंतयं चेव पडिपुच्छादीहिं पवत्तेंति । णिउत्तो आयरिओ, सीसा अणिउत्ता । एत्थ वि णत्थि पवत्ती । होज्जा वा पवत्ती सारेंते जधा, एवं अणि[2]योगे भणितेल्लयं । अधवा असोतुकाममवि कंचि गुणणाणिमित्तं, माणस्स ओ त्ति सेलसमाणस्स कधिज्जा, बला वा घेत्तुं कहेज्जा–सुणेहि त्ति । एवं ततिए भंगे पवत्ती होज्जा । जधा–कोति णिउत्तो अणिउत्ता[3] य । एत्थ दिट्ठंतो **अज्जकालया**–

**सागारियअप्पाहण, सुवण्ण सुयसिस्स खंतलक्खेण ।**
**कहणा सिस्सागमणं, धूलीपुंजोवमाणं च ॥२४०॥**

"**सागारिय०**" गाधा । **उज्जेणीए अज्जकालया** नाम आयरिया सुत्त-ऽत्थोववेता बहुपरिवारा विहरंति । तेसिं च **अज्जकालताणं** सीसस्स सीसो सुत्त-ऽत्थोववेतो **सागरो** णामं **सुवण्णभूमीए** विहरति । ताधे अज्जकालया 'एते मम सीसा अणुओगं न सुणेंति त्ति काउं किं एतेसिं मज्झे अच्छामि ? तहिं जामि जहिं अणुओगं पवत्तेमि । अवि य–एते वि सिस्सा लज्जाहिताए सोच्छिहिंति' काउं सेज्जायरं आपुच्छंति–'अहं जामि अण्णत्थ, [4]ण सुणेहिंति

१. पडिदुहति पू० १।२ । २. **अणुओगे** पू० १-२ । ३. **अणिउत्तो** पू० १। ४. **तो** पू० २, पा० ।

सिस्सा । मा साहेज्जासि तेसिं । जति पुण गाढं णिब्बंधं करेज्जा तो खरंटेउं साहेज्जासि–**सुवण्णभूमीए सागराणं** सगासं गत त्ति' । एवं अप्पाहेत्ता रत्तिं चेव पासुत्ताणं गता **सुवण्णभूमिं** । तत्थ गंतुं खंतलक्खेणं पविट्ठा **सागराणं** गच्छं । ताधे **सागरेहिं** 'खंतो[१]'त्ति काउं तं णाढाइया अब्भुट्ठाणादीहिं । ताधे अत्थपोरिसिवेलाए भणिता **सागरेहिं**-खंता ! 'तुब्भं एतं गतेल्लयं' ? ति । आयरिया भणंति–आमं । 'तो खाइं सुणेह'त्ति पकधिता अत्थं । गव्वातंता य कधेंति । इतरे वि सीसा पभाते संते संभंता आयरियं अपासंता ते मग्गितुं सेज्जातरं पुच्छंति । ण कधेति य । तुहं अप्पणो आयरिओ न कधेति कतो जामि त्ति, तो ममं कधेति !। ताधे गाढे णिब्बंधे कते आतुरीभूतेसु कधितं जधा-तुब्भच्चवएणं णिव्वेदेणं गता **सुवण्णभूमिं सागराणं** सगासं आयरिया । खरंटिया य । ताहे ते उच्चलिया **सुवण्णभूमिं** । पंथे य लोगो पुच्छति–एस कतरो आयरिओ जाति त्ति ?। ते कधेंति–'**अज्जकालय**'त्ति । ताधे **सुवण्णभूमीए सागराणं** कधितं लोगेणं–जधा **अज्जकालया** णाम आयरिया बहुस्सुया बहुपरिवारा इह आगंतुकामा पंथे वट्टंति त्ति । ताधे **सागरा** सिस्साणं पुरओ भणंति–मम अज्जया इंति । तेसिं सगासे पयत्थे पुच्छीहामि त्ति । अचिरेणं[२] ते सीसा आगया । तत्थ अग्गिल्लेहिं पुच्छिज्जंति–केति एत्थं आयरिया आगत त्ति ?। णत्थि । णवरं अण्णे खंता आगता। केरिस ? त्ति । वंदिते णातं । ताधे सो **सागरो** लज्जिओ जातो । मए एत्थं बहुं पलत्तं, खमासमणा य वंदावित त्ति । ताधे अवरण्हवेलाए मिच्छामि दुक्कडं करेति 'आसातित' त्ति। भणियं च णेण–केरिसं खमासमणो ! अहं अत्थं कधेमि त्ति ?। आयरिया भणंति–सुंदरं, मा पुण गव्वं करेज्जासि[३] । ताधे धूलिपुंजदिट्ठंतं कधेंति[४] । धूलिं हत्थेण घेत्तुं तिहिं अंतेहिं उत्तारेंति, जधा एसा धूलीवि ठविज्जमाणी उक्खिप्पमाणी य सव्वत्थ परिसडति । एवं अत्थो वि तित्थकरेहिंतो[५] जाव गणहराणं, गणहरेहिंतो जाव अम्हं आयरि-उवज्झायाणं[६] परंपरएणं आगतं। को जाणति कस्स के वि पज्जाया गलिता ?। ता[७] मा गव्वं काहिसि त्ति । ताधे 'मिच्छा दुक्कडं' करेत्ता आढत्ता **अज्जकालया** सीस-पसीसाणं अणुयोगं कधेउं ।

'**सागारिउ**'त्ति, सेज्जातरो । सुतो सीसो । तस्स सीसो सुतसीसो । कधणा अणुओगस्स **सागराणं** । चउत्थभंगो णिउत्तो णिउत्ताणं । एत्थं **भावम्मि जिणादिता होंति** त्ति । अस्य व्याख्या–

**णिउत्तो उभयकालं, भयवं कहणाएँ वद्धमाणो उ ।**
**गोयममाई वि सया, सोयव्वे हुंति उ णिउत्ता ।।२४१।।**

'**णिउत्तो**'य सव्वगाधा । कंठा । '**पवत्ति**'त्ति दारं गतं ।। इयाणिं '**केण व**'त्ति दारं।

---

१. **खंते** पू० १-२ । **खंति** खं० । २. **आयरेणं** पा० **आतरेणं** खं० । ३. **करेज्जध** प्रा० । ४. **करेंति** खं० पा० । ५. **०हिंतो जाव अम्हं आय०** पा० । ६. **आयरियाणं उवज्झायाणं खं०** । ७. **तो** पू० १-२ ।

केरिसेणं अणुओगो कधेतव्वो ?। उच्यते—

**देस-कुल-जाइ-रूवी, संघयणी धिइजुओ अणासंसी ।**
**अविकंथणो अमाई, थिरपरिवाडी गहियवक्को ॥२४२॥**

"**देस-कुल०**" गाधा । '**देस**'त्ति जो मज्झदेसजातओ । अधवा अद्धछव्वीसाए जणवतेहिं जातो । किं कारणं ? सो भणितिं णाहिति । सुहं च तस्स सीसा परियच्छंति, कुडुक्कादीणं ण चेव परियच्छंति । कुलं पेतियं, जधा—इक्खागकुलिओ, णायकुलिओ इत्यादि । मातिकी जाती । एतेहिं जो उववेतो तेण कधेतव्वो । किं कारणं ? कुलीणे गुणा विणयादिणो बहू भवंति । सो य जइ रूवसंजुत्तो भवति । किं कारणं ? 'यत्राकृतिर्भवति तत्र गुणा वसन्ती'[1]ति काउं । ण वि अवत्थुम्मि सीसे णिओएहिति । संघतणधितिजुत्तो ण वि लहुं खिज्जिहिति त्ति । जुत्तसद्दो सव्वहिं अणुयत्तति । जो य अणासंसी, ण वि सोतारेहिंतो वत्थादीणि आसंसति, तर्क्कयतीत्यर्थः । अविकंथणो [2]णातिबहुं पलवेति[3] । [अमायी न शाठ्येन शिष्यान् वाहयति] । थिरपरिवाडिस्स न गलति । गहितवक्को शोभनवाक्यः ।

**जितपरिसो जितणिद्दो, मज्झत्थो देस-काल-भावण्णू ।**
**आसण्णलद्धपइभो, णाणाविहदेसभासण्णू ॥२४३॥**

"**जितपरि०**" गाधा । जितपरिसस्स संखोभो न भवति । जितनिद्दस्स ण णस्सति, लहुं च उस्सारेति । मज्झत्थो सव्वेसु सिस्सेसु समचित्तो । देश-काल-भावज्ञः देसं कालं भावं च णातुं तथा विहरिस्सति कधेहिति य । आसण्णलद्धपतिभो परवादिणा आभट्ठो लहुं उत्तरं दाहिति । नानाविधदेशभाषाज्ञस्य[4] नानादेसीया सीसा सुहं परियच्छंति[5] । किञ्च—

**पंचविधे आयारे, जुत्तो सुत्त-ऽत्थतदुभयविहण्णू ।**
**आहरण-हेउ-उवणय-णयणिउणो गाहणाकुसलो ॥२४४॥**

"**पंचविधे०**" गाधा । पंचविधो आयारो नाणादि । '**सुत्तत्थ**'त्ति चउभंगो सूतिओ । '**तदुभय**'त्ति, ततियभंगिओ इच्छिज्जति । विहण्णु त्ति जाणओ । आहरणं दिट्ठंतो । हेतू चउव्विधो जावगादि । जधा—धम्मो मंगल०णिज्जुत्तीए तधा भाणितव्वो[6] । अधवा हेतुरिति कारणापदेशः । स पुनर्द्विविधः-कारको ज्ञापकश्च । तत्र कारको यथा—मृत्पिण्ड-दंड-चक्र-सूत्रोदक-कुलालसामग्रीलक्षणो हेतुर्घटादीनां निर्वर्तकत्वात् कारकः । ज्ञापको यथा-तैल-स्थाल-वर्ति-ज्योतिःसामग्रीनिष्पन्नः प्रदीपलक्षणो हेतुः । वस्त्र-शयनाऽसनानामनेकेषां द्रव्याणां तमस्यभिव्यञ्जकत्वाद् ज्ञापकः । अस्मिन् चतुर्विधे वा हेतौ निपुणः हेतुनिपुणः ।

---

१. **गुणापि संति** पू० १-२ । २. **णोति०** पू० २ । ३. **बहुं वलवलेति** पू० १-२ । ४. **भावज्ञ** पू० २ । ५. **परियच्छेहिंति** पा० । ६. ०**धा वत्तव्वो** पू० १-२ ।

निपुणशब्दः सर्वानुपातीति कृत्वा । आह, हेतुनिपुणत्वे किं प्रयोजनम् ?। उच्यते—निर्हेतुको [१]हि व्यपदेशो वाङ्मात्रमेव भवतीति कृत्वा हेतुनिपुणः प्रशस्यते । उवणओ उवसंहारो । णया णेगमादिणो सत्त । एतेहिं आहरणादीहिं निउणो जो सो य सीसगाहणाकुसलो । किञ्च—

**ससमय-परसमयविऊ, गंभीरो दित्तिमं सिवो सोमो ।**
**गुणसयकलिओ जुत्तो, पवयणसारं परिकहेउं ॥२४५॥**

"**ससमयपरसमय०**" गाधा । [२]विद् ज्ञाने, सो अक्खित्तो सुहं णिव्वहिति[३] । गम्भीरो तुच्छत्तं न काहिति । दित्तिमंतो परवादीणं अणोद्धंसणिज्जो भवति । अण्णे य बहू गुणा तम्मि । सिवो अकोधणो । अधवा अणोद्दाइयसरोगसंसतिकरो[४] गच्छस्स । [५]सोम्मो अघोरदिट्ठी, अकुद्धमुही वा । गुणा–मूलगुणा उत्तरगुणा य । गुणाण सताणि गुणसताणि तेहिं गुणसतेहिं, कलितो त्ति संपण्णो । जुत्तो जोग्गो । पवयणं—द्वादशाङ्गम् । सारो तस्स अत्थो, उत्सर्गापवादा वा, तं कथयितुं योग्यः । आह, किं निमित्तं गुणसतसंपन्नेणं अत्थो कधेतव्वो ? । उच्यते—

**गुणसुट्ठितस्स वयणं, घयपरिसित्तु व्व पावओ भाइ ।**
**गुणहीणस्स ण भायति, णेहविहूणो जह पईवो ॥२४६॥**

"**गुणसुट्ठितस्स०**" गाधा । जो मूलगुणादिएहिं गुणेहिं सुट्ठिओ तस्स वयणं घयपरिसित्तो इव अग्गी दीप्यते । शेषं कंठं । उक्तञ्च—

**आयारे वट्टंतो, आयारपरूवणे असंकियओ[६] ।**
**आयारपरिब्भट्ठो, सुद्धचरणदेसणे भतिओ ॥**

'**केण व त्ति**' दारं गतं ॥छ॥ इताणिं '**कस्स**'त्ति दारं । आह—

**जति पवयणस्स सारो, अत्थो सो तेण कस्स वत्तव्वो ।**
**एवं गुणण्णिएणं, सव्वसुयस्साऽऽउ देसस्सा ॥२४७॥**

"**जति पवयणस्स सारो०**" गाधा । कंठा । णवरं कस्स सुतस्स ?। सव्वस्स आओ देसस्स ?। देसो णाम एगो सुयक्खंधो दो वा तिण्णि वा इत्यादि ।आयरियो भणति— अणुओगम्मि य त्ति सव्वम्मि चेव अणुयोगे जो अत्थो सो एरिसेणं वत्तव्वो । जेण भणितं—

**को कल्लाणं णेच्छति, सव्वस्स वि एरिसेण वत्तव्वो ।**
**कप्प-व्ववहाराण उ, पगयं सिस्साण थिज्जत्थं ॥२४८॥**

'**को कल्लाणं णेच्छति सव्वस्स वि एरिसेण वत्तव्वो**' । अणुओगम्मि । च शब्दात्

---

१. **हि वाङ्मात्रेण बोधयितुं न शक्नोतीति कृत्वा हेतु०** पा० । २. विदक् पू० १, पा० । ३. **णिव्वहिहिति** पू० २ । ४. **०'रोगसंतिकरो'** इति पाठः संभवति । ५. **सोमो** पू० १, पा० । ६. **असंकेओ** पू० २, पा० ।

**'कप्प-व्ववहाराणं पगतं सीसाणं थेज्जत्थं'** । जेण एतं अववायबहुलं सुतखंधं, तेण वित्थरेण एयस्स एवंगुणजुत्तेणं कधेतव्वो । किं कारणमिति चेदुच्यते—सीसाण थिरी-करणत्थं । कधं ते सोतारा णाहिंति ?—

**एसुस्सग्गठियप्पा, जयणाणुण्णातो दरिसयंतो वि ।**
**तासु ण वट्टइ नूणं, णिच्छयओ ता अकरणिज्जा ॥२४९॥**

"**एसुस्सग्ग०**" गाधा । जति ताव एस जतणाए पणगादियाए अणुण्णाओ पडिसेवणाओ पयरिसंतो अप्पणा उस्सग्गे ठितेल्लओ तासु जयणाए अणुण्णासु न वट्टते, नूणं णिच्छएण ताओ [१]जतणाए अणुण्णाओ अकरणिज्जाओ अणायरितव्वाओ भवंतीति । किं च—

**जो उत्तमेहिँ पहओ, मग्गो सो दुग्गमो ण सेसाणं ।**
**आयरियम्मि जयंते, तदणुचरा केण सीएज्जा ॥२५०॥**

**अणुओगम्मि य पुच्छा, अंगाई कप्प छक्कणिक्खेवो ।**
**सुय खंधे णिक्खेवो, इक्केक्को चउव्विहो होइ ॥२५१॥**

"**जो उत्तमेहिँ०**" गाधा । '**उत्तमा**' गणधरा आयरिया य । तेहिं जो मग्गो '**पहतो**'त्ति क्षुण्णः, सो पंथो ण य सेसाणं दुग्गमो भवति, सुगमो चेव भवति । '**सेस**'त्ति तद्व्यतिरिक्ताः-शिष्या इत्यर्थः[२] । आचार्ये च जतंते तदनुचारिणां शिष्याणां कथं सीदना भविष्यतीति । इदाणिं पुच्छा—'**अंगादि**'त्ति । अस्य व्याख्या—

**जति कप्पादणुयोगो, किं सो अंगं उयाहु सुयखंधो ।**
**अज्झयणं उद्देसो, पडिवक्खंगादिणो बहवो ॥२५२॥**

**सुयखंधो अज्झयणा, उद्देसा चेव हुंति णिक्खिप्पा ।**
**सेसाणं पडिसेहो, पंचण्ह वि अंगमाईणं ॥२५३॥**

"**जति कप्पा०**" गाधा । जति एरिसेणं आयरिएणं **कप्पस्स** अणुओगो वत्तव्वो, आदिग्गहणेणं **ववहारस्स** । तो किं ते **कप्पववहारा** ? १ अंगं अंगाइं, २ सुयक्खंधो सुयक्खंधा, अज्झयणं ३ अज्झयणाइं, ४ उद्देसो उद्देसा ?। उच्यते—**कप्पववहारा** णं णो अंगं णो अंगाइं, सुयक्खंधो णो सुयक्खंधा, [३]अज्झयणं णो अज्झयणाइं, णो उद्देसो उद्देसगा ।

**तम्हा उ णिक्खिविस्सं, कप्प-व्ववहारमो सुयक्खंधं ।**
**अज्झयणं उद्देसं, णिक्खिवियव्वं तु जं जत्थ ॥२५४॥**

---

१. जयणाओ पू० १ । पा० प्रतौ नास्ति । २. शिष्याणामि० पा० । ३. **णो अज्झयणं अज्झयणाइं** पू० २ । **णो अज्झयणं णो अ०** पू० १ ।

"**तम्हा उ०**" गाधा । तम्हा कप्पं णिक्खिविस्सामि, ववहारं णिक्खिविस्सामि, सुतं णिक्खिविस्सामि, खंधं णिक्खिविस्सामि, अज्झयणं निक्खिविस्सामि, उद्देसा णिक्खिविस्सामि । **णिक्खिवितव्वं च जं जत्थ** त्ति । अस्य व्याख्या—कप्पस्स छव्विधो णिक्खेवो—णामादि । जेण भणितं—'**कप्प छक्कणिक्खेवो**' । ववहारस्स चउव्विहो णिक्खेवो—णामादि । एतेसिं—

**आदिल्लाणं दुण्ह वि, सद्दाणं होइ णामणिप्फण्णे ।**
**अज्झयणस्स उ ओहे, उद्देसस्सऽणुगमे भणिओ ॥२५५॥**

"**आदिल्लाणं०**" ति गाधा । सूत्रक्रमप्रामाण्यात् '**दोण्ह वि**' त्ति कप्प-ववहाराणं '**सद्दाणं**'ति णिक्खेवा । छक्कग-चउक्कगा **णामणिप्फण्णे** त्ति णिक्खेवो । **कप्पस्स पंचकप्पे, ववहारस्स** पेढियाए ।

इयाणिं सुयक्खंधे णिक्खेवो । एक्केक्के चउव्विहो होति इमो णामादि ।

**णामसुयं ठवणसुयं, दव्वसुयं चेव होइ भावसुयं ।**
**एमेव होइ खंधे, पण्णवणा तेसि पुव्वुत्ता ॥२५६॥**

"**णामसुयं०**" गाधा । एतस्स सुतस्स खंधस्स य पण्णवणा पुव्वपरूविया । **आवस्सए** अज्झयणस्स चउव्विहो निक्खेवो । ओहनिप्फण्णे भण्णिहिति । उद्देसगस्स वि उपोग्घातणिज्जुत्तिअणुगमे भण्णिहिति । '**कस्स**'त्ति दारं गतं ।

इदाणिं '**तद्दार**'त्ति दारं ।

**कप्प-व्ववहाराणं ओहत्थो वण्णितो समासेणं ।**
**एत्तो एक्केक्कं पुण अज्झयणं वण्णतिस्सामि ॥२५७॥**

तत्थ पढमं अज्झयणं **कप्पो** । तस्स चत्तारि अणुओगद्दाराणि भवंति । तस्स दाराणि तद्दाराणि । तस्येति कल्पस्य दाराणि अत्थमुहाणि उवक्कमादीणि ।

**चत्तारि दुवाराइं, उवक्कम णिक्खेव अणुगम णया य ।**
**काऊण परूवणयं, अणुगम-णिज्जुत्ति सुत्तस्स ॥२५८॥**

"**चत्तारि**" पुव्वद्धं । तं जधा—उवक्कमो णिक्खेवो अणुगमो णयो । एतेसिं चउण्हं वि परूवणा कातव्वा । जधा **अणुओगदारे** । जाव अणुगमस्स सुत्ताणुगमस्स णिज्जुत्ति-अणुगमस्स य परूवणा कता पच्छद्धेणं । एतं भेयद्दारं सूतियं । आह, कीस अणुओगद्दाराणि कताणि, कीस वा चत्तारि, एगं चेव सुंदरं दारं ? । अतो भण्णति—वच्छ ! जधा—

**अद्दारगं अनगरं, एगद्दारे य होइ पलिमंथो ।**
**चउदारे तेण भवे, देसपएसे य छिंडीओ ॥२५९॥**

"**अद्दारगं०**" गाधा । कंठा । '**पलिमंथो**'त्ति आस-हत्थिमादीहिं पविसंत-णिंतेहिं संघट्टो । देसो द्दारस्स कुच्छी, तीए छिंडी भवति । पदेसा पगासा, अणेगाओ छिंडीओ, तेसु तेसु पदेसेसु । इमो उवणओ—अकताणुओगद्दारो ताव सव्वधा अगेज्झो अद्दारक-नकरवत् । एगाणुओगद्दारो पुण दुरधिगमो एकद्वार-नकरवत् । तेणाणुओगद्दाराणि चत्तारि कयाणि । '**तद्दार**'त्ति दारं गतं ॥छ॥

इयाणिं '**भेद**'त्ति दारं । जधा णगरस्स देसपदेसेसु छिंडीओ तधा अणुओगस्स वि चउण्हं दाराणं भेदो । तत्थ उवक्कमो छव्विधो णामादि । णाम-ठवणाओ गताओ । **दव्वोवक्कमो**—

**सच्चित्तादी तिविहो, उवक्कमो दव्वि सो भवे दुविधो ।**
**परिकम्मणम्मि एक्को, बितिओ संवट्टणाए उ ॥२६०॥**

"**सच्चित्तादी०**" गाधा । दव्वोवक्कमो तिविधो । सचित्तो अचित्तो मीसओ य । एक्केक्को दुविधो—परिकम्मणाए य संवट्टणाए य । परिकम्मणं संवट्टणं च । किमुक्तं भवति ? । उच्यते—

**जेणं विसिस्सति रूवं, भासा व कलासु वा वि कोसल्लं ।**
**परिकम्मणा उ एसा, संवट्टण वत्थुणासो उ ॥२६१॥**

"**जेण विसिस्सति०**" गाधा । **विसिस्सति** त्ति णिम्मविज्जति । [1]कहं ? [2]रूवं जधा सुवण्णे अंगुलेज्जयं विसिस्सति । भासा वा जेण विसिस्सति उप्पातिज्जतीत्यर्थः । जधा—अमुगस्स कलाकोसल्लं । जहा—बावत्तरिकलापंडिओ पुरिसो कीरति । एसा परिकम्मणा भवति। संवट्टणा णाम जं वत्थुं चेव विणासिज्जति, जधा-अंगुलेज्जयं भज्जति, पुरिसो वा मारिज्जति । तत्थ सचित्ते संवट्टणा, जधा—कोति पुरिसो मारिज्जति । परिकम्मणा जधा—णडस्स[3] रायणेवत्थं कीरति, [4]सुयओ वा पाढिज्जति, पुरिसो वा बावत्तरिं कलाओ गाहिज्जति। अचित्ते संवट्टणा-अंगुलेज्जयं भज्जति । परिकम्मणा जधा—सुवण्णे अंगुलेज्जयं चेव कीरति । मीसए संवट्टणा जधा-सायुधो पुरिसो मारिज्जति। परिकम्मणा जधा—साभरणो [5]णडो रायवेसं कारिज्जति । अधवा [6]सुगस्स सरो[7] पाढिज्जति । अथवा साभरणो पुरिसो बावत्तरिं कलाओ सिक्खाविज्जति । **दव्वोवक्कमो** गतो ।

इदाणिं **खेत्तोवक्कमो**—

---

१. पू० २ प्रतौ न । २. पा० प्रतौ न । ३. **रायाण णे०** खं० । '**राय**' न पू० २ । ४. **सूयओ** पा० । ५. **भडो** पू० १ । ६. **सूयओ** पा० । **सूयओ** पू० १-२ । ७. **सरोमओ** पू० १-२, पा० ।

**णावाति उवक्कमणं, हल-कुलियाइहिं वा वि खेत्तस्स ।**
**सम्मज्ज-भूमिकम्मे, पंथ-तलागाइएसुं तु ॥२६२॥**

"**णावाति उ०**" गाधा । णावाए जधा—णदिं तरति, आदिग्गहणेणं उडुपादीहिं । अधवा हलकुलियादीहिं वि खेत्तं उवक्कामिज्जति । अहवा संमज्जणं घरातीणं जं कीरति । भूमिकम्मं वा देउलादीणं जं कीरति । जधा [1]पंथो सोधिज्जति, तलागं वा खण्णति । आदिग्गहणेणं अगडादि । एसो **खेत्तोवक्कमो** भवति ।

इदाणिं **कालोवक्कमो**—

**छायाएँ णालियाइ व, कालस्स उवक्कमो विउपसत्थो ।**
**रिक्खाईचारेसु व, साव-विबोहेसु व दुमाणं ॥२६३॥**

"**छायाए०**" गाधा । छायाए वा णालियाए वा णज्जति जधा—एत्तितो कालो गतो । "**विदू**" जाणगा । **प्रशस्तः** प्रशंसितः । विदूहिं पसत्थो अपसत्थो वि । **रिक्खं** णक्खत्तं । आदिग्गहणेण गहाण वि चारेणं । जधा—एत्तिएणं कालेणं अमुगं णक्खत्तं [2]भुज्जति एवमादि । समि-चिंचिणियादीणं वा सावं विबोहं च पासित्ता णज्जति जहा—सूरो अत्थं [3]गतो उदितो वा । **कालोवक्कमो** गतो ।

इयाणिं **भावोवक्कमो** । सो दुविधो—पसत्थो अप्पसत्थो य ।

**गणिया मरुगीऽमच्चे, अपसत्थो भावुवक्कमो होइ ।**
**आयरियस्स उ भावं, उवक्कमिज्जा अह पसत्थो ॥२६४॥**

"**गणिया०**" पुव्वद्धं । तत्थ अप्पसत्थो भावोवक्कमो इमो—

एक्का गणिया चउसट्ठिकलापंडिया । तीए चित्तसभाए सव्वमणूसंजातीणं जातिधम्मं[4] सिप्पाणि कुवित—पसातणं च लिहावितं । ताधे जो कोति मेथुणट्ठी एति तं भणति—चित्तसभं पेच्छ । परं णज्जंतो किंजातिओ ? केरिसो वा एस ? । ताधे सो तत्थ जातिधम्मं सिप्पाणि कुवित-पसातणं च दट्ठुमवस्समेव भणति-जं [5]जत्थ सुकतं दुक्कतं वा । ताधे सा जाणति एस-अमुगजातीओ, अमुगं सिप्पं जाणति । कुवितपसायणे दारुणसभावो इत्थिणिज्जितो वा । एवं णाउं तथा उवचरति ।

[मरुगीदिट्ठंतो—]

एगा मरुइणी । सा चिंतेति—कधं मज्झ धीयाओ सुहिया होज्ज त्ति ? । ताधे जा जाधे

१. **वायवो** पू० २ । २. **भुंजति** पा० । ३. **अत्थन्नो** पू० २ । ४. **जातिकम्मं** पू० २ । **जायाकम्मं** पू० १। ५. **तत्थ** पू० १-२, पा० ।

परिणिज्जति-तं ताधे सिक्खावेति—भत्तारस्स दुक्कमेत्ता चडंतं तं पण्हीताए आहणेज्जासि। तत्थ पढमाए आहओ पादं मद्दितुमारद्धो[१] परिचुंबति य 'हा ! दुक्खावित' त्ति । ताए माउं (तीए माऊए) सिट्ठं । माताए भण्णति—"दासभोज्जो एस तव" । बितियाए आहओ । रुट्ठित्ता[२] उवसंतो । सिट्ठे[३] भणति—तुमं पि दासभोगेण चेव भुंजाहि । मा अति आतयं । नात्यायतं न शिथिलं । ततियाए आहतो । रुट्ठो । पिट्टिता य । उट्ठित्ता गतो । माऊए सिट्ठं । [४]मातूए भणिता—एस उत्तमो, चंगिता होज्जाहि । देवयं व जधा उवचरेज्जासि, 'भर्तारदेवता नारी' । पच्छा किधवि गमेत्ता पसादितो । एस अम्हं कुलधम्मो । उवायकं वा ।

[५]अमच्चे—पज्जोतस्स रण्णो आहेडएणं णिग्गतस्स आसेण मुत्तितं । पडिनियत्तो [६]राया तेणेव [७]मग्गेण आगतो पासति मुत्तं ण चेव [८]सुक्खयं । सुचिरं णिरिक्खित्ता चिंतितं णेणं—'जति एत्थं तलागं खणेज्जा [९]तो सुंदरं होज्ज' त्ति । अमच्चेण तस्स भावं णातुं तलागं खणावितं, तडे वणसंडाणि रोविताणि । अण्णदा रण्णा णिग्गतेणं दिट्ठं । पुच्छितं—कस्सेतं तलागं ? । तुब्भं ति। कधं ? । सव्वं सिट्ठं अमच्चेणं, अमच्चस्स राया तुट्ठो । एस अप्पसत्थो भावोवक्कमो ।

इयाणिं पसत्थो भावोवक्कमो—आयरियाणं भावो उवक्कमियव्वो । उवक्कमित्ता किं कायव्वं ? उच्यते—

**जो जेण पगारेणं, तूसइ कार-विणयाणुवत्तीहिं ।**
**आराहणाइ मग्गो, सु च्चिय अव्वाहओ तस्स ॥२६५॥**

"**जो जेण०**" गाधा । "**जो**" त्ति आयरिओ "**जेणं पगारेणं**" ति काराइणा । कारो जधा पादा कप्पेतव्वा विस्सामेतव्वा वेयावच्चं गिलाणादीण य णिच्चं कातव्वं । विणयस्स जत्तिया भेदा तेसिं जो जेणं तूसति तस्स करेज्जा । अणुयत्ती सव्वत्थेसु अपडिकूलया[१०] तं करेज्जा । किं निमित्तं, जेणं जेणं कएणं तूसति तं तं कायव्वं ?। उच्यते—आराधणाए एस 'अव्याहतः पन्थाः' अनिवारित इत्यर्थः । किञ्चापरं—

**आगारिंगितंकुसलं, जइ सेयं वायसं वए पुज्जा ।**
**तह वि य सिं न विकूडे, विरहम्मि य कारणं पुच्छे ॥२६६॥**

"**आगारिं०**" गाधा । आकारैरिंगितं आकारे इंगितं आकारिंगितं । आकारो अवलोयणा दिसाणं । 'इगि गतौ' सर्वे गत्यर्था धातवो ज्ञानार्था इति वचनात् । इंगितं ज्ञानमित्यर्थः । आकारे ज्ञातव्ये कौशलं यस्य स भवत्याकारेंगितकुशलः । अतस्तं—आकारेंगितकुशलं । अधवा आकारो अवलोयणादि, इंगितमभ्यंतरोऽभिप्रायः । ताभ्यां आकारेंगिताभ्यां कुशलं शिष्यं, 'पूज्याः' आचार्या

१. ०**माढत्तो** पा० । २. **रुट्टित्ता** पू० २ । **रुंढित्ता** पा० । ३. **सिट्ठं** पू० २ । ४. **मायाए** पू० १ । **माऊए** पू० २ । ५. **अमच्चे** पू० २, पा० । ६. नास्ति पू० १-२, पा० । ७. **अंतेण** पा० । ८. **सुक्कयं** पा० । ९. **तं** पू० १-२ । १०. ०**डिक्खलया** पू० २ ।

इत्यपदिश्यन्ते[१] । स यदि ब्रूयात् 'श्वेतो वायस' इति । तथापि तस्य आचार्यस्य तद्वचनं तेन शिष्येण न [२]प्रतिषेद्धव्यं, यथा—न भवति श्वेतः, कृष्णो वायसः इति । अन्यत्र विरहे[३] प्रष्टव्यं । कथं तद् गुरुपादैरपदिष्टं[४] 'श्वेतो वायस' इति ?। तत्राचार्येण वक्तव्यं—आमं, न भवति श्वेतः । किं तर्हि ? मया तवैव जिज्ञासनार्थं उक्तम् । किं मज्झ कोवयसि न वेति ॥छ॥

**भावे उवक्कमं वा, छव्विहमणुपुव्विमाइ वण्णेउं ।**
**जत्थ समोयरइ इमं, अज्झयणं तत्थ ओयारे ॥२६७॥**

"**भावे उवक्कमं०**" गाधा । उवक्कमो[५] छव्विहो भवति । तं जधा—अणुपुव्वी, नामं, जहा [६]**अणुओगदारे** तधा भाणितव्वं जाव समोयारे, इच्चेयं कप्पज्झयणं उवक्कमे अणुपुव्वि-मातिएहिं दारेहिं जत्थ जत्थ समोयरति तत्थ तत्थ समोयारेयव्वं । [७]तत्थाणुपुव्वी तिविधा—पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी । तत्थ—

**दोण्हं अणाणुपुव्वी, ण हवइ पुव्वाणुपुव्विओ पढमं ।**
**पच्छाणुपुव्वि बिइयं, जइ उ दसा तेण बारसमं ॥२६८॥**

"**दोण्हं अणा०**" गाधा । "**जति तु दसा तेण बारसमं**" ति । केति आयरिया भणंति—कप्प-ववहार-दसाओ एगं चेव सुयक्खंधं । तेण पुव्वाणुपुव्वीए पढमं । पच्छाणुपुव्वीए बारसमं । अणाणुपुव्वीए एगादियाए एगुत्तरियाए बारसगच्छगयाते सेढीए अण्णमण्णब्भासो[८] [९]दुरूवहीणो ।

**सव्वज्झयणा णामे, ओसण्णं मीसए अवतरंति ।**
**जीवगुण णाण आगम, उत्तरऽणंगे य काले य ॥२६९॥**

"**सव्वज्झय०**" गाधा । छव्विहणामे समोयरंति । तत्थ वि भावणामे मीसए त्ति । खओवसमिए उस्सण्णं ति सव्वकालं । पमाणे भावपमाणे समोतरति । तं तिविहं—गुणप्पमाणं, णयप्पमाणं, संखप्पमाणं च । तत्थ गुणप्पमाणं दुविधं—जीवगुणप्पमाणं, अजीवगुणप्पमाणं । जीवगुणप्पमाणे समोतरति, णो अजीवगुणप्पमाणे । जीवगुणप्पमाणं तिविधं—नाणगुणप्पमाणं, दंसणगुणप्पमाणं, चरित्तगुणप्पमाणं । णाणगुणप्पमाणे समोतरति । तं पच्चक्खादि चउव्विहं । तत्थ वि आगमे । तत्थ वि लोउत्तरिए, तत्थ वि अणंगपविट्ठे, तत्थ वि कालिए । णो णयप्पमाणे समोतरति । संखाए कालियसुयपरिमाणसंखाए समोयरति ।

**पज्जव पुव्वुद्दिट्ठा, संघाया पज्जव-ऽक्खराणं च ।**
**मुत्तूण पज्जवा खलु, संघायाई उ संखेज्जा ॥२७०॥**

---

१. **इत्यपदिश्यते** पा० पू० २ । २. **प्रतिषेधयितव्यं** पू० २ विना । ३. **विरहेऽपदेष्टव्यं** पू० २ । ४. **०रुपदिष्टं** पू० १ । ५. पू० २, पा० **मध्ये न** । ६. **अणुओगे** पू० २ । ७. **तथाणु०** पू० २ । ८. **अणोण्णब्भा०** पा० २ । ९. **दुरूवूणो** पू० २, पा० ।

"**पज्जव०**" गाधा । कप्पस्स वक्खाणे अणंता पज्जवा । "सव्वागासपएसग्गं अणंतगुणितं [१]पज्जवग्गं अक्खरं लब्भति" । एयं **णंदीए** पुव्वुत्तं । संघाता दुविधा—पज्जवाणं, अक्खराण य । '**संघातादी उ संखेज्ज**'त्ति अक्खरसंघाता गहिता । इतरे अणंता चेव । आदिग्गहणेणं सिलोगा वेढादयो कप्पस्स संखेज्जा—

**उस्सण्णं सव्वसुयं, ससमयवत्तव्वया समोयरइ ।**
**अहिगारोँ कप्पणाए, समोयारो जो जहिं एस ॥२७१॥**

"**उस्सण्णं०**" गाहा । ससमयवत्तव्वयाए '**उस्सण्णं**'ति णिच्चं सव्वज्झयणाइं समोयरंति । अत्थाहिगारो मूलगुण-उत्तरगुणेसु आवण्णाणं पायच्छित्तकप्पणाए । इयाणिं सीहावलोइतेणं जं भणितं ससमयवत्तव्वयाए समोयरति तं अववदति, परसमयवत्तव्वयाए समोयरति । कधं पुण ? अत उच्यते—

**परपक्खं दूसित्ता, जम्हा उ सपक्खसाहणं कुणइ ।**
**णो खलु अदूसियम्मी, परे सपक्खंजसा सिद्धी ॥२७२॥**

**णिक्खेवो होइ तिहा, ओहे णामे य सुत्तनिप्फण्णे ।**
**अज्झयणं अज्झीणं, आओ झवणा य तत्थोहे ॥२७३॥**

"**परपक्खं०**" गाधा । जम्हा परपक्खस्स परूवणं वोत्तुं तं दूसेत्ता सपक्खो साहिज्जति। तेणं परसमयवत्तव्वयाए वि समोयरति । णो खलु अदूसितम्मि परसमए '**सपक्खस्स अंजस**'त्ति, व्यक्ता प्रधाना वा सिद्धिर्भवति । इच्चेतं **कप्पज्झयणं** उवक्कमे अणुपुव्विमादीएहिं दारेहिं जत्थ जत्थ समोतरति तत्थ तत्थ समोतारितं । से त्तं **उवक्कमे** । ॥छ॥

से किं तं **णिक्खेवे** ? णिक्खेवे तिविधे पण्णत्ते—तं० ओहणिप्फण्णे, णामणिप्फण्णे, सुत्तालावगणिप्फण्णे य । तत्थोहणिप्फण्णे चउव्विधे—अज्झयणे, अज्झीणे, [२]आओ, ज्झवणा । जधा **अणुओगद्दारे** ।

**एक्केक्कं तं चउहा, णामाईयं विभासिउं ताहे ।**
**भावे तत्थ उ चउसु वि, कप्पज्झयणं समोयरति ॥२७४॥**

"**एक्केक्कं तं०**" गाधा । चउसु वि भावेसु समोतरति । ओहणिप्फण्णो णिक्खेवो गतो ॥ णामणिप्फण्णे कप्पो त्ति ।

**णामे छव्विध कप्पो, दव्वे वासि-परसादिएहिं तु ।**
**खेत्ते काले जहुवक्कमम्मि भावे उ पंचविहो ॥२७५॥**

१. **पज्जवग्गक्खरं** पा० । २. आए पू० २, पा० ।

**"णामे छव्विह०"** गाधा । सो कप्पो छव्विधो—णामकप्पो, ठवणकप्पो, दव्वकप्पो, खेत्तकप्पो, कालकप्पो, भावकप्पो । नाम-ठवणाओ गताओ । दव्वकप्पो जं वासि-परसुमादीहिं दव्वेहिं किंपि कप्पिज्जति । खेत्त-कालकप्पा जधा खेत्त-कालोवक्कमा भणिया तहा भाणियव्वा । भावकप्पो पंचविहो इमो—

**छव्विह सत्तविहे या दसविह वीसइविहे य बायाला ।**
**जस्स उ णत्थि विभागो, सुव्वत्त जलंधकारो से ॥२७६॥**

एसा गाधा जहा **पंचकप्पे** [१७५] तहा विभासितव्वा । से तं णामनिप्फण्णो[१] । ॥छा।

इयाणिं सुत्तालावगणिप्फण्णो णिक्खेवो पत्तो । सो—

**पत्तो वि न णिक्खिप्पइ, सुत्तालावस्स इत्थ णिक्खेवो ।**
**सुत्ताणुगमे वुच्छं, इति अत्थे लाघवं होइ ॥२७७॥**

**"पत्तो वि न०"** गाधा । स इदानीं सूत्रालापकणिप्फण्णो निक्षेपः प्राप्तलक्षणो पि सन् न निक्षिप्यते । यदुक्तं भवति [२]अवसरप्राप्तस्यापि व्याख्या तस्य न क्रियते । कस्मात् ? लाघवार्थम्[३] । इतो अत्थि ततियं अणुओगद्दारं **अणुगमे** त्ति, तहिं वा णिक्खित्तो इहं णिक्खित्तो भवति । इहं वा णिक्खित्तो तहिं णिक्खित्तो भवति । तम्हा इधं न णिक्खिप्पति, तहिं णिक्खिप्पिहिति । निक्षेप इति द्वारं वर्त्तते । तस्यैव निक्षेपद्वारस्यानुगमे त्रयो द्वाराः प्रत्येतव्याः । तद्यथा—लक्षण, तदरिह, परिसा य त्ति । तत्थ पढमं 'लक्खणं' ति दारं, तं भण्णति । तस्स कप्पणामज्झयणस्स लक्खणजुत्तं सुत्तं इच्छिज्जति । जं लक्खणविहूणं तं सुत्तं चेव न भवति। आह—कधं सुत्तं ण भवति ? । उच्यते—

**लक्खणतो खलु सिद्धी, तदभावे तं न साहए अत्थं ।**
**सिद्धमिदं सव्वत्थ वि, लक्खणजुत्तं सुयं तेण ॥२७८॥**

**"लक्खणतो०"** गाधा । लक्खणजुत्तस्स सुत्तस्स अत्थो भवति । लक्खणहीणस्स अत्थो चेव णत्थि । अत्थाभावे जंणिमित्तं सुत्तमुवणिबद्धं तस्याप्रसिद्धिरिति । सिद्धं चेदं सव्वलोए, लक्खणहीणं जं किंचि मणिमादि दव्वं[४] लाभत्थं कीतं तं लाभत्थं ण साधेति । एवं लक्खणहीणं सुत्तं तमत्थं ण साहेति । एतेण कारणेणं लक्खणजुत्तं सुत्तं इच्छिज्जति । केरिसं पुण लक्खणजुत्तं सुत्तं ? । उच्यते—

---

१. **णिप्फण्णे** पू० १-२ । २. **अवसरप्राप्ताऽपि** पू० २ । ३. **लाघवार्थः** पू० १-२ । ४. **दव्वलाभ०** पू० २ ।

**अप्पगगंथ महत्थं, बत्तीसादोसविरहियं जं च ।**
**लक्खणजुत्तं सुत्तं, अट्ठहि य गुणेहिँ उववेयं ॥२७९॥**

"**अप्पगगंथ०**" गाधा । अप्पक्खरं अप्पत्थं च चउभंगो । अप्पक्खरं अप्पत्थं जधा—कप्पासीयं । अप्पक्खरं महत्थं-सामातिय-कप्प-ववहारादी । महक्खरं अप्पत्थं जहा—जीमूतेति वा, अंजणेति वा, इत्यादि बहुएहिं अक्खरेहिं कालयवण्णो भणितो । महक्खरं महत्थं—दिट्ठिवातो । जं अप्पक्खरं महत्थं तारिसं सुत्तं इच्छिज्जति । दोसा बत्तीसं अलियादिणो भणिया । तं जहा—

**अलियमुवघायजणयं, अवत्थग णिरत्थयं छलं दुहिलं ।**
**णिस्सारमहियमूणं, पुणरुत्तं वाहयमजुत्तं ॥२८०॥**
**कमभिण्ण वयणभिण्णं, विभत्तिभिण्णं च लिंगभिण्णं च ।**
**अणभिहियमपयमेव य, सभावहीणं ववहियं च ॥२८१॥**
**काल-जइ-च्छविदोसो, समयविरुद्धं च वयणमित्तं च ।**
**अत्थावत्ती दोसो, हवइ य असमासदोसो य ॥२८२॥**
**उवमा-रूवगदोसो, परप्पवत्ती य संधिदोसो य ।**
**एए उ सुत्तदोसा, बत्तीसं हुंति णायव्वा ॥२८३॥**

"**अलियमुव०**"गाहातो चत्तारि । तत्थ अलियं दुविधं—अभूतुब्भावणं, भूतणिण्हवो य। तत्थ अभूतुब्भावणं जधा—सामागतंदुलमेत्तो जीवो । भूतणिण्हवो जधा—णत्थि जीवो एवमादि । '[1]उवग्घातजणगं' जं परस्स [2]उवग्घाते वट्टति । यथा—'न मांसभक्षणे दोषः' (मनुस्मृति अ० ५ श्लो० ५६) । 'चर पिब च[3] खाद मोद च' इत्यादि । 'अवत्थयं' जस्स अवयवे अत्थो अत्थि समुदए णत्थि । जधा—'शंखः कदल्यां कदली च भेर्याम्' असंबद्धार्थमित्यर्थः । अधवा—

**[4]वंजुलपुप्फुम्मीसा, उंबर-वडकुसुममालिया सुरभी ।**
**वरतुरगस्स विरायइ, ओलइता अग्गसिंगेसु ॥**

'णिरत्थयं' जस्स अवयवे वि अत्थो णत्थि । जधा—डित्थो डवित्थो [5]अडबडो-पाहुडु । 'छलं' जधा—नवकम्बलो देवदत्तः । अथवा—अस्त्यात्मा, यद्यस्ति आत्मा तेन तर्हि यद् यदस्ति स स आत्मा भवतु, सर्वस्यात्मप्रसंगः । द्रोहणशीलं द्रुहिलं, जेण भणिएणं पुण्णपाव-

१. **उवघाय०** पा० । २. **उवघाते** पू० १, पा० । ३. **पिबत** पू० १-२ । ४. **वंजुलफलउम्मीसा** पू० १-२, पा० । ५. **अडपन्नो पन्नो** पू० १ । **अड्डुपड्डो पाड्डाड्डु** पा० । **अडपड्डो पाड्डाडुः** पू० २ ।

हीणाहियसमत्तणं भवति । यथा—'एतावानेव पुरुषो यावानिन्द्रियगोचरः' ।

'णिस्सारं' जम्मि सारो णत्थि, जो वि अत्थो सो वि तुच्छो । जहा अस्थि-चर्मशिलापृष्ठं वृद्धाः । 'अधितं' जं पंचण्हं अवयवाणं अन्नयरेण । 'ऊणं' एतेहिं चेव । पुणरुत्तं तिविधं—अत्थपुणरुत्तं, वयणपुणरुत्तं, उभयपुणरुत्तं । तत्थ अत्थपुणरुत्तं जधा—इन्द्रः शक्रः पुरन्दरः । वचनपुणरुत्तं यथा—सैन्धवमानय लवणं । यथा—सैन्धवमानय मनुष्यम्। एवं अश्वं वस्त्रम् । उभयपुणरुक्तं यथा—क्षीरं क्षीरं । तत्थ[१] वयणपुणरुत्तं निद्दोसं । 'वाहतं' जत्थ पुव्वं अवरेण [२]वाहम्मति । यथा—

**कर्म चास्ति फलं चास्ति, भोक्ता नास्ति च निश्चये ।**

'अजुत्तं' जं चिन्तिज्जंतं बुद्धीए जुत्तिं ण देति । जधा—

**तेषां कटतटभ्रष्टैर्गजानां मदबिन्दुभिः ।**
**[३]प्रावर्तत नदी घोरा, हस्त्यश्वरथवाहिनी ॥**

"कमभिण्णं" जधा—धरणिधर-इंद-चंद-पउम-सागरे गंभीर-नयण-मुह-बल-थिरगुणेहिं जिणति । 'वयणभिण्णं' जत्थ एगवयणे दुवयणं बहुवयणं वा कीरति । एवं दुवयण-बहुवयणाण विवच्चासो वत्तव्वो । 'विभत्तिभिण्णं' अट्ठण्हं विभत्तीणं जत्थ अण्णहा पयोगो कीरति । 'लिंगभिण्णं' जत्थ इत्थिलिंगे पुल्लिंगं णपुंसगलिंगं वा कीरति । एवं सेसाण वि । 'अणभिहितं' जं ससमए अणभिधितं अप्पणो इच्छाए भण्णति । 'अपदं' जत्थ गाधापए गीतियापदं वाणवासियापदं वा कीरति । अपदं परपदमित्यर्थः ।

'सभावहीणं' जो जस्स दव्वस्स अप्पणओ [४]भावो तेण सुण्णं भवति । जधा—थिरो वायू । 'ववहितं' जत्थ किंचि कारणं णिद्दिसितूणं णिण्णिमित्तं अण्णं कारणं वित्थारेणं वण्णेतूणं पुणो आइल्लस्स गहणं करेति । 'कालदोसो' जत्थ तीया-णागय-वट्टमाणकाल-विवच्चासो कीरति । "जती" नाम विच्छेदो, तीए दोसो—जत्थ सिलोगे गाधाए वृत्ते वा स्वलक्षणप्राप्तः पदच्छेदो न क्रियते, [५]अस्थाने वा क्रियते । यथा—

**जयति जतीणं पवरो, गुणनिगरो नाणकिरणउज्जोओ ।**
**लोईसरो मुणिवरो सिरिवच्छधरो महावीरो ॥**

'छविदोसो' जत्थ फरुसा छवी कीरति । 'समयविरुद्धं' जधा—जति **वइसेसिओ** भणति—पधाणं कारणं । **आर्हतो** वा भणति—'णत्थि जीवो' इत्यादि । **'वयणमेत्तं'** जधा—कोइ खीलगं णिहंतूणं भणेज्जा—एत्थ लोगमज्झं । [६]किं वि हेउं कारणं वा ण णिद्दिसति ।

१. **एत्थ** पू० १-२ । २. **वाहण्णति** पा० । ३. **आवर्तेत** पू० २ । ४. **सभावो** पा० । ५. **अत्थाणे** पू० २ । ६. **किंचि** पू० २ ।

'अत्थापत्तिदोसो' जधा–'बंभणो ण हंतव्वो', अर्थादापन्नं सेसलोगो हंतव्वो त्ति । 'असमासदोसो' जत्थ समासे विज्जमाणे असमासजुत्तं वयणं भण्णति । 'उवमादोसो' जधा–बंभंणस्स सुरा पिबणिज्जा [काञ्जिकमिव] । 'रूवगदोसो' जधा–पव्वतरूवगं अप्पणोच्चएहिं अंगेहिं[१] करेति । 'परपवित्तिदोसो' नाम जत्थ सुबहुं पि अत्थं वण्णेउं णिद्देसं ण करेति । 'पददोसो' सुबंते वि [२]तिगंतं करेति तिगंते वि य सुबंतं। संधिदोसो–जत्थ संधिं होंतियं ण करेति। विसग्गलोवं वा कातुं पुणो संधिं करेति । एतेहिं बत्तीसाए दोसेहिं विरहितं लक्खणजुत्तं सुत्तं भवंति । अट्ठहि य इमेहिं गुणेहिं उववेतं । तं जधा–

**णिद्दोसं सारवंतं च, हेउजुत्तमलंकियं ।**
**उवणीयं सोवयारं च, मियं महुरमेव य ॥२८४॥**

**दोसा खलु अलियादी, बहुपज्जायं सारवं सुत्तं ।**
**साहम्मेयरहेऊ, सकारणं वा वि हेउजुयं ॥२८५॥**

**उवमाइ अलंकारो, सोवणयं खलु वयंति उवणीयं ।**
**काहलमणोवयारं, दंडगममियं तिहा महुरं ॥२८६॥**

"**णिद्दोसं सार०**" गाहा । 'णिद्दोसं'ति दोसा खलु अलियादी तेहिं वज्जियं । 'सारवंतं च'त्ति । अस्य व्याख्या–बहुपज्जायं तु सारवंतं सुत्तं, बहुअभिधाणमेकैकस्मिन्नभिधेये इत्यर्थः । 'हेतुजुत्तं' ति, साधम्मेण वइधम्मेण य हेतुणा जुत्तं । अथवा हेतुः कारणं निमित्तमित्यनर्थान्तरम् । ततो यत् सकारणं तद् हेतुयुक्तमिति उच्यते । जधा–"**सुत्तत्तं भंते ! साधू ? जागरियत्तं साधू ?**" इत्यादि । 'अलंकियं' ति उवमादिअलंकारो जं उवमाजुत्तं, जधा–"सूरेव सेणाए समत्तमायुहे" । आदिग्गहणेणं–

**णियमा अक्खरलंभो, माउक्कमणिट्ठुरं छवीजमगं ।**
**महुरत्तणमत्थघणत्तणं च सुत्ते अलंकारा ॥**

'उवणीतं' उवसंहारजुत्तं । जधा–महज्झयणेसु अप्पच्चक्खाणकिरियाए । 'अणोवयारं' नाम जं काहलं जधा–पुग्गलउं फुट्टएहिं वा । एय'वतिरित्तं' सोवयारं । 'मितं' णाम पदेहिं सिलोगादीहिं वा, अमितं दंडएहिं । 'मधुरं' तिविधं–सुत्तमधुरं, अत्थमधुरं, उभयमधुरं। केति भणंति–ततियं अभिहाणमधुरं, अट्ठहिं य गुणेहिं उववेतं । चशब्दात्–

**अप्पक्खरमसंदिद्धं, सारवं विस्सओमुहं ।**
**अत्थोभमणवज्जं च, सुत्तं सव्वण्णुभासियं ॥२८७॥**

---

१. ०प्पणोच्चएहिं गुणसुत्तएहिं अंगेहिं क० पू० १, पा० । २. तिदंतं० तिदंते पू० २ ।

"**अप्पक्खरं०**" गाधा । पुव्वभणितं तु जं भण्णति "**कारग०**" गाधा (३२९) । संदिद्धं ति ।

**अत्थेसु दोसु तीसु व, सामण्णभिहाणओ उ संदिद्धं ।**
**जह सिंधवं तु आणय, अत्थबहुत्तम्मि संदेहो ॥२८८॥**
**उय-वइकारो ह त्ति य, हीकाराई य थोभगा हुंति ।**
**वज्जं होइ गरहियं अगरहियं होइ अणवज्जं ॥२८९॥**

"**अत्थेसु०**" गाधा । यस्मिन्नर्थेऽभिहिते[1] द्वयोस्त्रिषु चार्थेषु [2]सन्देह उत्पद्यते तत् संदिग्धम् । यथा—सैन्धवमानयेत्युक्ते सन्देह उत्पद्यते । किं तावद् वस्त्रस्य ग्रहणं आहोस्वित् पुरुष-लवणयोरिति ?। सारवदिति नवनीतभूतम् । सर्वतोऽर्थं प्रयच्छतीति 'विश्वतो-मुखं' । '**अत्थोभमणवज्जं**'ति । अनयोर्व्याख्या—उत वै हा ही अकारणे एवमादीनां प्रक्षेपः स्तोभकाः । शेषं कंठं । तं पुण एवंगुणजातीयं सुत्तं कहमुच्चारेतव्वं पढितव्वं वा ? । उच्यते—

**अहीणऽक्खरं अणहियमविच्चामेलियं अवाइद्धं ।**
**अक्खलियं च अमिलियं, पडिपुण्णं चेव घोसजुयं ॥२९०॥**

"**अहीणक्खरं०**" गाधा । हीणं दुविधं—दव्वहीणं, भावहीणं च । दव्वहीणे उदाहरणम्—

**तित्त-कडुओसहाइं, मा णं पीलिज्जऊ ण ते देइ ।**
**पउणइ ण तेहि अहिएहिँ मरइ बालो तहाहारे ॥२९१॥**

"**तित्त-कडु०**" गाधा ।

एगाए अविरतियाए पुत्तो गिलाणो । तीए वेज्जो पुच्छितो । तेण ओसहाणि दिण्णाणि । सा चिंतेति—इमाणि तित्त-कडूणि[3] मा पीडेज्जा । ततो णाए अद्धाणि अवणीताणि । सो तेहिं ण तिगिच्छितो मतो । '**तहाहारे**'त्ति ।

एगा ऊणयं पीहयं देति । तीए वि मतो । जधा ताओ एगभवियं दुक्खं पत्ताओ, एवं चेव जो भावहीणं सुत्तं करेति अक्षरैर्हीनमित्यर्थः, तस्स मासलहुं । आणं तित्थयराणं अतिचरति र्ण्का [चतुर्गुरु] । अणवत्थाए र्ण्का [चतुर्गुरु] । मिच्छत्ते र्ण्क चउलहुं । विराहणा दुविधा—आतविराहणा, संजमविराहणा य । तत्थ आतविराहणा पमत्तं देवया छलेज्जा । अण्णो वा साधू भणेज्जा—किं विद्दवेसि ? तत्थ असंखडे पसंगेण अट्ठिभंग-मारणादी होज्जा । सुत्तं हीणं करेंतेणं संजमो विराहितो चेव । कहं ? उच्यते—

१. ०ते द्वाभ्याम् त्रिषु पू० २ । २. सन्देहमुत्पद्यते पू० १-२ । ३. कडुआणि पू० १ ।

**अक्खर-पयाइएहिं, हीणऽइरेगं च तेसु चेव भवे ।**
**दोसु वि अत्थविवत्ती, चरणे य अयो य ण य मुक्खो ॥२९२॥**

हीणे सुत्ते अत्थविसंवादो । अत्थविसंवादे चरणविसंवादो । चरणविसंवादा मोक्खाभावो । मोक्खाऽभावे [1]सव्वा दिक्खा णिरत्थिया । एस भावहीणस्स दोसो । दव्वहीणे बालो दिट्ठंतो । इयाणिं भावहीणे इमो दिट्ठंतो–

**विज्जाहर रायगिहे, उप्पय पडणं च हीणदोसेणं ।**
**सुणणा सरणा गमणं, पयाणुसारिस्स दाणं च ॥२९३॥**

"**विज्जाहर०**" गाहा ।

रायगिहे सामी समोसढो । तत्थ एगो विज्जाहरो वंदितुं पडिणियत्तो विज्जं आवाहेति। तस्स तीसे विज्जाए कतियि अक्खराणि विस्सरिताणि । सो उप्पय-पडणं[2] करेति । [3]सा हीणदोसेण ण वहति । **अभतो** तं [4]दट्ठूण तस्स सगासं गंतुं पुच्छति । तेण सिट्ठं । अभएण भणितं–जति ममं पि देसि तो उज्जुयारेमि[5] । इयरेण पडिवण्णं । अभएण भणितं–तो खाइं भण एगं पदं । तेण भणितं । अभएण सुयं । एस सुणणा । ताहे अभएण पयाणुसारिणा ताणि अक्खराणि सरियाणि । एस '**सरणा**' । **गमणं**'ति । ताधे सो विज्जाधरो उप्पतित्ता गतो। सो चेव उवणओ । अहियं पि दुविधं–दव्वे, भावे य । दव्वे अहिए तधेव दो अविरतियाओ दिट्ठंतो–ओसधेहिं पीहएण य । एवं भावे वि सुत्तं अक्खरेहिं अधियं करेति, मासलहुं । विभासा तधेव, जधा हीणे ।

इयाणिं भावे अधिए दिट्ठंतो–

**पाडलऽसोग कुणाले, उज्जेणी लेहलिहण सयमेव ।**
**अहिय सवत्ती मत्ताहिएण सयमेव वायणया ॥२९४॥**

**मुरियाण अप्पडिहया, आणा सयमंजणं णिवे णाणं ।**
**गामग सुयस्स जम्मं, गंधव्वाऽऽउट्टणा को त्ति ॥२९५॥**

**चंदगुत्तपपुत्तो तु, बिंदुसारस्स णत्तुओ ।**
**असोगसिरिणो पुत्तो, अंधो जायइ कागिणिं ॥२९६॥**

"**पाडलऽसोग०**" गाधाओ तिण्णि ।

पाडलिपुत्ते णगरे चंदगुत्तपुत्तस्स बिंदुसारस्स रण्णो पुत्तो असोगो णाम राया । तस्स

१. **सव्वदिक्खा** पू० २ । २. **सोउप्पयणं पडणं च** खं० । ३. **सो** पू० १, पा० । ४. **दट्ठुं** पू० १-२, पा० । ५. **उज्जुतारेमि** पू० १-२ ।

**असोगस्स** पुत्तो **कुणालो** णाम **उज्जेणीए** । सा से कुमारभुत्तीए दिण्णिया । सो खुड्डुलओ । अण्णता तस्स रण्णो णिवेदितं, जधा—कुमारो सातिरेगट्ठवासो जायओ त्ति । ताधे रण्णा सयमेव लेहो लिहितो । जधा—अधीयतां कुमारः । कुमारस्स य माति-सवत्तीए रण्णो पासे ट्ठिताए भणितं—आणेहि, पासामि लेहं ति । रण्णा पणामितो । ताधे ताए रण्णो अण्णओचित्तस्स अंजणातो सलागाप्रान्तेन [1]थिणुएणं तिम्मेत्ता अकारस्स अणुस्सारो कतो । 'अंधीयतु'त्ति जातं । पडिअप्पितो रण्णो । रण्णा वि पमत्तेणं न चेव पुणो अणुवातितो । मुद्दित्ता उज्जेणिं पेसितो । वाइतो । वायगा पुच्छिता—किं लिहितं ति ?। णेच्छंति कधेउं । ताधे कुमारेणं सयमेव वातितो । चिंतियं च णेणं—'अम्हं मुरियवंसिताणं अप्पडिहता आणा, तो कधं अप्पणो पिउणो आणं भंजामि त्ति ?' तत्तसलागाए अच्छीणि अंजियाणि । ताधे रण्णा णातं । परितप्पित्ता उज्जेणी अण्णस्स कुमारस्स दिण्णा । तस्स वि **कुणालस्स** अण्णो गामो दिण्णो । अण्णता तस्स **कुणालस्स** अंधयस्स पुत्तो जातो । णामं च से कतं **संपती**। सो त अंध**कुणालो** गंधव्वे अतीव कुसलो । अण्णता अण्णातवज्जाए हिंडति गायंतो । तत्थ रण्णो णिवेदितं, जधा—एरिसो तारिसो गंधव्विओ अंधलओ । आणेधत्ति । आणीतो । जवणीअंतरितो गायति । जाधे अतीव **असोगो** अक्खित्तो, ताधे भणति—किं देमि त्ति ?। एत्थ **कुणालेण** गीतं—"**चंदगुत्तपवोत्तो य**" गाधा । ताधे रण्णा [2]पुच्छितो—को एस तुमं ? । तेण कधितं—तुब्भं पुत्तो । जवणियं अवसारेउं कंठे घेत्तुं अंसुपातो कतो । [3]भणितं च णेण—किं देमि ? । कागणिं देहि । भणियं च णेणं- किं कागणीए वि तुमं [4]नारिहसि त्ति जं कागिणिं जायसि ? । अमच्चेण भणितं—सामि ! रायपुत्ताणं रज्जं कागणी । तो किं काहिसि अंधगो रज्जेणं ?। **कुणालो** भणति—मम पुत्तो अत्थि **संपती** नाम कुमारो । दिण्णं ते रज्जं । सो चेव उवणओ ॥ अधवा भावाधिके चेव इमं लोइयं अक्खाणयं—

कामितसरस्स तडे वंजुलरुक्खो महतिमहालओ । तत्थ किर रुक्खे विलग्गिउं जो सरे पडति सो जति तिरिक्खजोणिओ तो मणूसो भवति । अध मणूसो पडति तो देवो भवति । अध बितियं वारं पडति तो प्रकृतिं [5]गमयति । तत्थ य वाणरो सपत्तीओ ओतरति पाणितं पाउं । अण्णता पाणियपिबणट्ठाए आगतो । संलावं प्रकृतिगमण-[6]विरहितं सोतुं वाणरो सपत्तीओ संपहारेति-रुक्खं विलग्गिउं सरे पडामो, जा माणुसजुयलं भवामो । पडिताणि । उरालं माणुसजुयलं जातं । सो भणति—पुणो पडामो जा देवजुयलं होमो[7] । इत्थी वारेति—को जाणति ण होज्जामो देवा ? । पुरिसो भणति—जति न होज्जामो देवा, किं [8]माणुसत्तं अम्हं णासिहिति ?। वारिज्जमाणो पडितो, वाणरो जातो । पच्छा सा रायपुरिसेहिं गहिता । रण्णो

१. **थेणुएणं** पू० १, पा० । २. **पुच्छितं** पू० १-२ । ३. **भणितो-किं देमि ते ?, काकणिं०** पा० । ४. **नारिहिसिज्जित्ति** पा० । **नार्हसित्ति** पू० १ । ५. **गच्छति** पा० । ६. **विरहितं** पू० २ । **विरहिं** पा० । ७. **भोमो** पू० २ । ८. **माणुसत्तणं पि** पू० २ विना ।

भज्जा जाया.। इतरो वि मायारएहिं गहितो। खेड्डाओ सिक्खावितो । अन्नदा ते मायारगा रण्णो पुरतो पेच्छं देंति । राया देवीए समं पेच्छति। ताधे सो वाणरो देविं णिज्झायंतो अभिलसति। ताधे ताए अणुकंपाए वानरो भणितो–

**जो जधा वट्टए कालो, तं तधा सेव वाणरा ! ।**
**मा वंजुलपरिब्भट्ठो, वाणरा पडणं सर ॥२९७॥**

"**जो जहा वट्टते कालो०**" सिलोगो । अण्णं वाणरिं मग्गाहीत्यर्थः । "**मा वंजुल-परिब्भट्ठो**" । तुमं तदा मए भणितो–मा वंजुलरुक्खातो सरं पडाहि । बितियं वारं पडितो पगतिं जाएज्जासि त्ति, तं सराहि मम पडिसेधं ति । एवं भावे अधिए अत्थादिविसंवाद-विभासा ।

'**अविच्चामेलितं, अवाइद्धं**' च । एते दो वि एक्कगाधाते वक्खाणेति–

**विच्चामेलण अण्णुण्णसत्थपल्लवविमस्स पयसो वा ।**
**तं चेव य हिट्ठुवरिं, वायद्धे आवली णायं ॥२९८॥**

"**विच्चामेलण०**" गाधा । विच्चामेलितं दुविधं–दव्वे जधा–कोलिता वतियं गता। तत्थ तेहिं ओहारएण 'परमण्णं रंधेमो'त्ति दुद्धं [१]आदुहेत्ता जं जं एत्थ छुब्भति, तं सव्वं पायसो भवति त्ति, तंदुला चवलया तिला मुग्गा कुक्कुसा यपण्णं च छूढं । तं सव्वं विणट्ठं अकिंचिकरं जातं । एवं चेव भावे । भावे सुत्तं विच्चामेलेति जहा–"**सव्वभूयप्पभूतस्स सम्मं भूयाणि [२]पासतो**" [दश० अ० ४ गा० ९] एत्थ इमं पि [३]घडति त्ति काउं छुब्भति–

"[४]**श्रूयतां धर्मसर्वस्वं०**" श्लोकः । एवं भावे विच्चामेलितं सुत्तं करेंतस्स अत्थविसंवायादी जाव दिक्खा णिरत्थया । वाइद्धं दुविधं–दव्वे–आवली णाम हारो, सो उदाहरणं–

एगा आभीरी णगरं गता । तीसे वयंसिता वाणिगिणी, सा हारं पोएति । इतरी भणति–आणेध, अहं हारं पोएमि । ताए पणामितो । इयरीए उप्परिवाडीए पोतितो । जाव वाणिगिणी वक्खित्ता । पच्छा ताए दट्ठुं भणिता–हा पावे ! विणासितो ते हारो । महं दुक्कम्मयं कयं । एतं दव्ववाइद्धं । एवं जो भावे सुत्तं वाइद्धं करेति तस्स अत्थविसंवातादि विभासा, जाव दिक्खा णिरत्थया । केरिसं पुण वाइद्धं ? तं चेवेगं सुत्तं हेट्ठोवरिं करेति । जधा–

---

१. **अद्दहेत्ता** पू० २ । २. **पस्सओ** पू० २ । ३. **इमं घ०** पू० २ ।

४. **श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।**
**आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत् ॥ [ इतिहास समुच्चये ]**

**अहिंसा संजमो तवो, धम्मो मंगलमुक्कट्ठं ।**
**जस्स धम्मे सया मणो, देवा वि तं नमंसंति ॥**

सुत्तं वाताइद्धं करेंति, ०।, अत्थं करेंति ०।, आणादीया । तम्हा अवायाइद्धं कातव्वं। खलित-मिलित-अपडिपुण्ण-अघोसजुत्ताणं । अस्य व्याख्या–

**खलिते पत्थरसीया, मिलिए मिस्साणि धण्णवावणया ।**
**मत्ताइ-बिंदु-वण्णे घोसाइ उदत्तमाईया ॥२९९॥**

"**खलिते पत्थर०**" गाधा । खलितं दुविधं । दव्वे '**पत्थरसीत**'त्ति, सीतत्ति खेत्तं, तम्मि वाहिज्जमाणे हल-कुलियादीणि उप्फिडित्ता अण्णहिं अण्णहिं निवडंति[१] । एवं भावखलितं जो अंतरा अंतरा आलावए छड्डेति । जधा–"धम्मो, अहिंसा, संजमो, तवो । देवा वि तं णमंसंति, पुप्फेहिं भमरा जधा" । (दश० अ० १ गा० ४) । पच्छित्तं तं चेव, दोसा य । मिलियं पि दुविधं–दव्वमिलितं जधा–बहूणि वीहिणि जवादीणि एगट्ठाणि कताणि । एवं जो भावे अण्णोण्णस्स उद्देसगस्स अज्झयणस्स वा आलावए मेलेति । सव्वं चेव तं जिणवयणं ति काउं । जहा "**सव्वे चेव पाणा पिताउगा**" [आचा० श्रु० १ अ० २ उ० ३] । "**सव्वजीवा वि इच्छंति, जीविउं ण मरिज्जिउं**" [दश० अ० ६ गा० ११] एवमादी । न णज्जति–किं कालियं उक्कालियं वा छेयसुत्तं वा ? । एत्थ वि तं चेव पच्छित्तं विराहणा य। पडिपुण्णं दुविधं, [२]दव्वे भावेण य । दव्वे घडो पडिपुण्णो । भावे पडिपुण्णं मत्तादीहिं । आदिग्गहणेणं पदेहिं बिंदूहिं वण्णेहिं ति अक्खरेहिं अपडिपुण्णे तं चेव पच्छित्तं विराहणा य । मत्ताहिं अपडिपुण्णं जधा– "**धम्म मंगलमुक्कट्ठं**" पदेहिं जधा–**धम्मो उक्कट्ठं**। बिंदूहिं जधा–**धम्मो मंगल उक्कट्ठ** । वण्णेहिं जधा–"**धम्म लंक्कट्ठं**" । घोसजुत्तं ति, घोषाः उदात्ताद्याः त्रयः । उच्चैरुदात्तः, नीचैरनुदात्तः, समाहारः स्वरितः । [३]उच्चैःशब्देन यथा–"**उप्पण्णेति**" वा "एवमादि । [४]नीचैःशब्देन यथा– "**जे भिक्खू हत्थकम्मं करेति**" [निशीथ उ० १ सू० १] इत्यादि । घोसे अजुत्तं करेंतस्स तं चेव पच्छित्तं ।

इताणिं विच्चामेलितादीणं पंचण्हं इमो अण्णो वि अत्थो–

**मोत्तूण पढम-बीए, अक्खर-पय-पाय-बिंदु-मत्ताणं ।**
**सव्वेसि( सु )समोयारो, सट्ठाणे चेव चरिमस्स ॥३००॥**

"**मोत्तूण पढम०**" गाधा । '**पढमं**' ति हीणक्खरं, **बितियं** ति अधितक्खरं । सव्वेसुत्ति विच्चामेलितादीसु । विच्चामेलितं अण्णोण्णसत्थाणं पदेहिं अक्खरेहिं बिंदूहिं मत्ताहिं घोसेहिं

१. **निप्फडंति** पू० १ । २. पू० १, पा० प्रत्योर्न । ३. '**उच्च**' **शब्देन** पू० १-२, पा० । ४. '**नीच**' शब्देन पू० १-२, पा० ।

वाइद्धं । तस्सेवेगस्स हेट्ठोवरिं करेति पयाणि अक्खराणि बिंदूणि मत्ताओ घोसे वा । **खलितं** पि पदादीहिं चेव पंचहिं । '**मिलितं**'—सामाइयपदे **दसवेयालिय-उत्तरज्झय-णादीणं** अणेगाणि पदादीणि पंच एगम्मि मेलेति । **अपडिपुण्णं** पि पदादीहिं चेव पंचहिं । '**सट्ठाणे चेव चरिमस्स**'त्ति घोसअजुत्तं[1], घोसेहिं चेव न पदादीहिं । इताणिं एतेसिं हीणक्खरादीणं पच्छित्तं भण्णति—

**खलिय मिलिय वाइद्धं, हीणं अच्चक्खरं वयंतस्स ।**
**विच्चामेलिय अप्पडिपुण्णे घोसे य मासलहुं ॥३०१॥**

"**खलिय मिलिय०**" गाधा । हीणक्खरं वयमाणे अधितक्खरं, विच्चामेलितं, वाइद्धं, खलितं, मिलितं,अपडिपुण्णं, अघोसजुत्तं वदमाणे सव्वेसु एतेसु मासलहुं । आणाभंगे सामिणो ह्ल ४ । अणवत्थाए ह्ल ४। जधा सो तधा अण्णे वि काहिंति मिच्छत्ते ह्ल ४ । जधा तं[2] अलितं [3]तहण्णं पि त्ति मिच्छत्तं भवति । अधवा जहुत्तकारी न भवति त्ति मिच्छत्तं[4] भवति। विराधणा दुविधा—आतविराधणा, देवता छलेज्जा, अण्णो वा साधू भणेज्जा—'मा हीणादीणि करेहि' त्ति असंखडादी होज्जा । आतविराधणाए परितावमहागिलाणाऽरोवणा, संजमविराधणा । [5]सुत्तऽण्णधुच्चारणे अत्थविसंवादो, अत्थविसंवादे चरणविसंवातो, चरणाभावे सव्वा दिक्खा णिरत्थिया । लहुगग्रहणाद् ह्रस्व–दीर्घवद् गुरुकोऽपि सूचितो भवति। गुरुगं ति वा, अणुग्घातियं ति वा, कालगं ति वा, गुरुगस्स णामाणि । लहुगं ति वा, उग्घातियंति वा, सुक्किलं ति वा लहुगस्स णामाणि । एत्थ गुरुय-लहुय-विसेस-वित्थरजाणणत्थं आयरितो तिविधं पच्छित्तं दाएति । तं जधा—दाणपच्छित्तं, तवपच्छित्तं, कालपच्छित्तं । तत्थ दाणपच्छित्तं गुरुयं लहुयं च । एवं तव-कालपच्छित्ताणि वि गुरु-लहूणि। तत्थ दाणपच्छित्तं गुरुयं—

**जं तु निरंतरदाणं, जस्स व तस्स व तवस्स तं गुरुगं ।**
**जं पुण संतरदाणं, गुरू वि सो खलु भवे लहुओ ॥३०२॥**

"**जं तु निरंतर०**" गाधा । '**जस्स व तस्स व तवस्स** त्ति,' गुरुगस्स वा अट्ठमादिणो, लहुगस्स वा णिव्वियादिणो ।

इदाणिं दाणओ चेव लहुयं भण्णति । '**जं पुण संतरदाणं, गुरू वि**'त्ति अट्ठमादी वि तवो संतरं कीरति जाए[6] आवत्तीए सा दाणतो लहुती । जहा चउलहु-छल्लहुगाणं अट्ठम-दसमाणि संतरं कीरंति । एस ताव दाणओ विशेषो गुरुलघ्वोः ।

---

१. **घोसजुत्तं** पू० १ । २. **जधेयं** पू० १-२ । ३. **वण्णं पि,** पा० । ४. **पच्छित्तं भ०** पू० २ । ५. सूत्राऽन्यथोच्चारणे । ६. **जाव** पू० २ ।

इदाणिं तव-कालाभ्यां गुरू लहू[१] वाऽभिधीयते–

**[२]तव-काले आसज्ज व, गुरू वि होइ लहुओ लहू गुरुगो ।**
**कालो गिम्हो उ गुरू, अट्ठाइ तवो लहू सेसो ॥३०३॥**

"**तव-काले०**" गाधा । [३]अट्ठमादिणा तवेण जं बुज्झति तं तवगुरुयं । णिव्वीयादिणा छट्ठंतेण बुज्झमाणं तवलहुयं । कालतो जं गिम्हे बुज्झति तं कालगुरुयं । जं वासारत्ते हेमंते वा बुज्झति तं काललहुं । एत्थं णवविहववहारेण तं दाणं दायव्वं[४] । तम्हा पच्छित्तं परियाणामि । आणा, अणवत्था, मिच्छत्तं, विराहणा य परिहरिया [५]भवंति । तेण दोसविजुत्तं सुत्तं विधीए उच्चारेयव्वं ।

**सुत्तं पदं पयत्थो, पयणिक्खेवो य णिण्णयपसिद्धी ।**
**पंच विगप्पा एए, दो सुत्ते तिण्णि अत्थम्मि ॥३०४॥**

"**सुत्तं पदं०**" गाधा । सुत्तं उच्चारेतव्वं । उच्चारिए पदाणि छेतव्वाणि, ताधे पदत्थो वत्तव्वो, ताधे पदाक्षेपो वक्तव्यः । पदार्थचोदनेत्यर्थः । ताधे पदाक्षेपनिर्णयः करणीयः । निर्णये कृते सर्वार्थप्रसिद्धो निरवशेषो अर्थो वक्तव्यः । एतेसिं पंचण्हं विकप्पाणं सुत्तं पदं च सुत्तपविट्ठा णातव्वा । पदार्थ–तदाक्षेप-निर्णय-प्रसिद्धयोऽर्थे ज्ञातव्याः । **अण्णे** भणंति–

**संघिया य पयं चेव, पयत्थो पयविग्गहो ।**
**चालणा य पसिद्धी य, पंचहा विद्धि लक्खणं ॥३०५॥**

"**संघिया य०**" गाधा । पढमं ताव संहितासूत्रमुच्चारयितव्यम्, अस्खलित-मित्यादि । आह–

संहितेति कोऽर्थः ? । उच्यते–

**सण्णिकरिसो परो होइ संहिया संहिया व जं अत्था ।**
**लोगुत्तर लोगम्मि य, हवइ जहा धूमकेउ त्ति ॥३०६॥**

"**सण्णिकरिसो०**" गाधा । 'परः सन्निकर्षः संहिता' पर इति पूर्वस्योत्तरत्र[६], सन्निकर्ष इति संपर्कः । द्वयोर्बहूनां वा पदानां अक्षराणां वा यः सन्निकर्षः, संपर्क इत्यर्थः, सा संहिता । अथवा संहिता अर्थाः संहिता । सा द्विधा–लौकिकी[७] लोकोत्तरा च । लौकिकी[८] यथा– धूमकेतुः । पदानि यथा इति पदम् । धूम इति पदम् । केतुरिति पदम् ।

---

१. **गुरुलहुया अभि०** पा० । २. **'काल-तवे'** मु० टी० पाठः । ३. **अट्ठमादिणो** पू० १-२ । ४. **णातव्वं,** पा० । ५. **भवइ** पू० २ । ६. **पूर्वस्योत्तरं** पू० १ । ७. **लौकिका लोकोत्तरा च** पू० १-२ । ८. **लौकिका** पू० १-२ ।

**तिपयं जह ओवम्मे, धूम अभिभवे केउ उस्सए अत्थो ।**
**को सु त्ति अग्गि उत्ते, किंलक्खणो डहण-पयणादी ॥३०७॥**

"**तिपदं०**" गाधा । **त्रिपदं** संहितासूत्रमेतत् । पदार्थ उच्यते—यथेत्यौपम्ये, धूम इत्यभिभवे, केतुरुच्छ्रये । एष पदार्थः । एकपदत्वान्नास्ति विग्रहः । कश्चासौ ? उच्यते—अग्निः । अग्निरित्युक्ते ब्रवीति-स कीदृग्लक्षणः ? । उच्यते—दहन-पचन-प्रकाशन-समर्थोऽर्चिष्मान् इति । अत्र चालना—

**जति एव सुत्त-सोवीरगाई वि होंति अग्गिमक्खेवो ।**
**ण वि ते अग्गि पइण्णा, कसिणग्गिगुणण्णितो हेतू ॥३०८॥**
**दिट्ठंतो घडकारो, ण वि जे उक्खेवणादि तक्कारी ।**
**जम्हा जहुत्तहेऊसमण्णिओ णिगमणं अग्गी ॥३०९॥**

"**जति एव०**" गाधाद्वयम् । यदीदृशलक्षणोऽग्निर्भवति, तेन तर्हि शुक्तसौवीर[1]-कादयो दहन्ति, करीषादयः पचन्ति, खद्योत-मणिप्रभृतयः प्रकाशयन्ति, एवमेतेऽप्यग्निर्भवन्तु इत्याक्षेपः । अत्र प्रसिद्धिं करोत्याचार्यः—यदभिहितमनेन 'यदि दहनादिलक्षणोऽग्निर्भवति तेन तर्हि शुक्तादयो[2]ऽप्यग्निर्भवन्ति', इत्यत्र ब्रूमः—'असदेतत्' इति नः प्रतिज्ञा, [3]'कृत्स्नाग्नि-गुणसमन्वितत्वात्' इति हेतुः । दृष्टान्तो घटकारः । यथा हि—घटकर्ता मृत्पिण्ड-दण्ड-चक्र-सूत्रोदकप्रयत्नहेतुकस्य घटस्य कार्त्स्न्येनाभिनिर्वर्तको भवति, अभिनिवृ(र्वृ)त्तस्य चोत्क्षेपणो-द्वहनसमर्थो यथा भवति तथाऽन्येऽपि पुरुषाः । नह्युत्क्षेपणोद्वहनादिसामर्थ्यादेव तेषां घटकर्तृत्वं भवति । किमेवं न गृह्यते घटकर्तुरेवैकस्य घटकारत्वं विद्यते, नेतरेषां ? तस्मात् कृत्स्न-गुणान्वितत्वात् पश्यामोऽग्नेरेवैकस्याऽग्नित्वं विद्यते, न शुक्तादीनामिति[4] निगमनम् । लोकोत्तरे इदानीम्—

**उत्तरिएँ जध दुमादी, तदत्थहेऊ अविग्गहो चेव ।**
**को पुण दुमु त्ति वुत्तो, भण्णति पत्तातिउववेयो ॥३१०॥**
**तदभावे न दुमु त्ति य, तदभावे वि स दुमु त्ति य पतिण्णा ।**
**तग्गुणलद्धी हेतू, दिट्ठंतो होति रधकारो ॥३११॥**

"**उत्तरिए०**" गाधाद्वयम् । "**जधा दुम्मस्स पुप्फेसु भमरो आयियती रसं**" [दश० अ० १ गा० २] संहितैषा । पदानि—**यथा** इति पदम्, **द्रुम** इति पदम्, **पुष्प** इति पदम्, **भ्रमर** इति पदम्, **आ** इति पदम्, **पिबतीति** इति पदम्, **रसमिति** पदम् । पदार्थ उच्यते—'यथा' इत्यौपम्ये ।

---

१-२. **शुक्ल०** पू० १, मु० टी० । ३. **कृत्स्नगुण०** पू० १-२ । ४. **शुक्लादी०** पू० १-२ ।

"**दु द्रु गतौ,**" द्रुमः, दोहिं वा मातो द्रुमः । पुष्प विकसने, भ्रमु अनवस्थाने, आङ् मर्यादाभिविध्योः । पा पाने, रस प्रीणने । अत्र व्यस्तपदत्वाद् विग्रहानुपपत्तिः । अत्र चोदक आह—किंलक्षणः पुनर्द्रुमः ? उच्यते—

**पत्र-पुष्प-फलोपेतो, मूलस्कन्धसमन्वितः ।**
**एष वृक्ष इति ज्ञेयं, विपरीतमतोऽन्यथा ॥**

यदि [१]पत्राद्युपेतलक्षणो द्रुमः इति अभिप्रेतं, तेन तर्हि यदा परिशटितपाण्डुपत्रादिद्रुमो भवति, तदा हि अद्रुमत्वं प्राप्तमिति चालना । अत्र प्रत्यवस्थानम्—यदुक्तं भवता पत्राद्यनुपपेतस्याद्रुमत्वं, 'असद् एतदिति नः प्रतिज्ञा', 'तद्गुणलब्धित्वात्' इति हेतुः । दृष्टान्तो रथकारः । यथा—रथकारस्य रथकर्तृत्वे प्रयत्नमकुर्वाणस्यापि रथकर्तृत्वं नातिवर्तते, किमेवं न गृह्यते परिशटितपाण्डुपत्रस्यापि वृक्षस्य तद्गुणलब्धेरनिवृत्तौ भवत्येव द्रुमत्वं[२] ?। तस्मात् तद्गुणलब्धित्वात् पश्यामो यदुक्तं भवता 'परिशटितपाण्डुपत्रत्वाद् द्रुमस्याद्रुमत्वं प्राप्तम्' तदसदिति निगमनं । लक्षणमिति वर्तते । जं च हेट्ठा भणियं—सुत्तणिरुत्तं उवरिं भण्णिहिति त्ति [गा० १८८] । तं इदाणिं भण्णति—

**सुत्तं तु सुत्तमेव उ, अधवा सुत्तं तु तं भवे लेसो ।**
**अत्थस्स सूतणा वा, सुवुत्तमिति वा भवे सुत्तं ॥३१२॥**

**पासुत्तसमं सुत्तं, अत्थेणाबोधियं ण तं जाणे ।**
**लेससरिसेण तेणं, अत्था संघातिता बहवे ॥३१३॥**

"**सुत्तं तु सुत्तमेव तु०**" गाधा । अस्य व्याख्या—"**पासुत्तसमं०**" पुव्वद्धं । जधा—बावत्तरिकलापंडितो वि मणूसो पासुत्तेल्लओ न किंचि तासिं कलाणं जाणति विसेसं । एवं चेव सुत्तं पि अत्थतो अबोधितं न किंचि वि अत्थविसेसं जाणति । जता सो चेव पुरिसो पडिबोहितो भवति तदा तासिं जाणओ भवति । एवं चेव जधा सुत्तं पडिबोधितं भवति तदा सव्वेसिं तदन्तगताणं[३] भावाणं जाणतं भवति । "**अधवा सुत्तं तु तं भवे लेसो**"त्ति । अस्य व्याख्या—

"**लेससरिसेण०**" पच्छद्धं । सिलेसो दुविधो—दव्वसिलेसेणं जधा—पदाणि पदकारो दोण्णि तिण्णि वा एगतो लेसेति । एवं सुत्ते वि । एगेणं सुत्तपदेणं अणेगाणि अत्थपदाणि सुलेसिताणि अच्छंति । **अत्थस्स सूतणा वा** इति । अर्थस्य सूचनात् सूत्रमित्यपदिश्यते । यस्मात् तेनार्थः सूचित इत्यर्थः । [४]**सुवुत्तमिति वा सुत्तं** तु सुट्ठु उक्तं [५]सुत्तं भवतीत्यर्थः । अथवाऽन्यः प्रकारो नैरुक्तिकानां, पुव्वभणितं तु कारकगाधा—

---

१. **पत्राद्युपपेत०** पू० २ । २. **द्रुमत्वात्** पू० २ । ३. **तदंतग्गताणं** पू० १-२ । ४. **सुव्वुत्त०** पू० २ । ५. **सूक्तं** पू० २ ।

**णेरुत्तियाइँ तस्स उ, सूयति सिव्वति तधेव सुवति त्ति ।**
**अणुसरति त्ति य भेदा, तस्स उ णामा इमे हुंति ॥३१४॥**

"**णेरुत्तियाइं०**" गाधा । तस्स उ सुत्तस्स इमाणि णिरुत्तणिप्फण्णाणि नामधेज्जाणि भवंति । तं जधा सुतति त्ति वा, सिव्वति त्ति वा, पसवति त्ति वा, अणुसरति त्ति वा । तत्थ '**सूयति**'त्ति, अस्य व्याख्या—

**सूइज्जति सुत्तेणं, सूयी णट्ठा वि तध सुतेणऽत्थो ।**
**सिव्वति अत्थपयाणि व, जह सुत्तं कंचुगादीणि ॥३१५॥**

"**सूइज्जति०**" पुव्वद्धं । यथा—नष्टा सूची सूत्रेण पाशकविलग्नेन सूच्यते एवं अर्थः सूत्रेण । सूच्यत इति सूत्रम् । "**सिव्वति**" त्ति, अस्य व्याख्या—'**सिव्वति अत्थ०**' पच्छद्धं । सिव्वणा दुविहा । दव्वे भावे य । दव्वे जहा—सुत्तेणं [1]कंचुगादीणि सिव्विज्जंति, आदिग्गहणेणं फाडितादीणि । तद्वद्भावे एगेण सुत्तपदेण अणेगाणि अत्थपयाणि एगओ सिव्विताणीति सूत्रं भवति । '**पसवति**'त्ति, अस्य व्याख्या—

**सूरमणी जलकंतो व, अत्थमेवं तु पसवती सुत्तं ।**
**वणियसुयंध कयवरे, तदणुसरंतो रयं एवं ॥३१६॥**

"**सूरमणी०**" पुव्वद्धं । यथा हि—सूर्यकान्त—जलकान्तादयोऽग्न्युदकानि श्रवन्ति—एवमर्थं श्रवतीति सूत्रम् । "[2]**अणुसरति त्ति य भेदा**" । अणुसरणं दुविधं । दव्वे "**वणितसुत**" पच्छद्धं । जधा—

एगस्स वणियस्स पुत्तो अंधलओ । वणिएण चिंतियं—मा एस अणिविट्ठं भत्तं भुंजतु 'मा परिभविज्जिहिति'त्ति । खंभे दो णि[3]हणीऊण रज्जू बद्धा । सो अंधलओ तेण अणुसारेणं [4]कतारं छड्डाविज्जति । एष दृष्टान्तः । अयमर्थोपनयः—वाणियथाणीओ आयरिओ, अंधल-थाणीओ साधू । रज्जूथाणीएणं सुत्तेणं अट्ठविहं कम्मकतारं छड्डेति । तम्हा अणुसरति त्ति भण्णति । आह, तं पुण सुत्तं कतिविधं ? । उच्यते—

**सण्णा य कारगे पकरणे य सुत्तं तु तं भवे तिविधं ।**
**उस्सग्गे अववाते, अप्पे सेए य बलवंते ॥३१७॥**

"**सण्णा य०**" पुव्वद्धं । तत्थ सण्णासुत्तं—जं सामतियाए सण्णाए भण्णति । जधा—[5]"**जे छेते**' पच्छद्धं (गा० ३१८) । "**जे [6]छेये से सागारियं परियाहरे ।**" तधा—"**सव्वामगंधं परिण्णात**

१. सीवि० पू० २ । २. **अणुसरति त्ति । अथेदानीं अणु०** पू० २ विना । ३. **दोण्णि हणीतूण** पू० १-२ विना । ४. **कयरं** पा० । ५. **जधा च्छेदे** पा० । ६. **जे छेये सागरियं** पू० २ ।

**णिरामगंधो परिव्वए**" (आचा० श्रु० १ अ० २ उ० ५) । तधा–"**आरं दुगुणेणं पारं एगगुणेणं**" तिं । सागारियं मैथुनमित्यर्थः । परियाहरे [१]परिवज्जतेदित्यर्थः । तधा–आमं–अविसोधिकोडी, गंधो–विसोधिकोडी । परिण्णा दुविधा–जाणणापरिण्णा, पच्चक्खाणपरिण्णा य । जाणणापरिण्णाए जाणित्ता पच्चक्खाणपरिण्णाए पच्चक्खाइत्ता, परि–समंतात् व्रजेत्–"**व्रज गतौ**" अप्रतिबद्धो विहरेद् इत्यर्थः । आरो–संसारो । सो दुगुणेणं ति रागेण य दोसेण य । पारो मोक्खो, सो एगगुणेणं ति राग-दोसविमुक्केण साधिज्जति । आह, को गुणो भवति सण्णासुत्तेणं ? । उच्यते–

**उवयार अणिट्ठुरया, कज्जित्थीदाणमाहु णित्थक्का ।**
**जे छेएँ आमगंधादि, आरं सण्णा सुतं तेणं ॥३१८॥**

"**उवयार०**" पुव्वद्धं । उवयारवयणेणं भण्णमाणेण वि णिट्ठुरत्तणं न भवति । ताहे कज्जे पत्ते इत्थियाते साहुणो पासे पढंतीए सुहं दिज्जति, इहरधा भिण्णमाणे भिण्णकधा भवति । ततो य सा '**णित्थक्क**'त्ति णिल्लज्जा भवति । जारिसे य कज्जे साधुणी साधुसगासे पढति, तं उवरिं भण्णिहिति । कारगसुत्तं नाम जधा–**अहाकम्मं णं भंते ! भुंजमाणे [२]समणे निग्गंथे कति कम्मपगडीओ बंधंति** ? **पण्णत्तीए** आलावतो । **गोयमा** ? **आयुअवज्जाओ सत्त** । आलावगो । **से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति** ? (भग० श० १ उ० ९) । **आधाकम्मं णं** आलावओ । एतं 'कारगं'ति सुत्तं । आह, ननु सर्वज्ञोक्तप्रामाण्यादेव एतद् श्रद्धीयते । यथा–आधाकर्म [३]भुंजानः आयुर्वर्जानां सप्तानां कर्मप्रकृतीनां बन्धकः इति । उक्तञ्च–"**तमेव सच्चं णीसंकं जं जिणेहिं पवेतितं**" । उच्यते–

**सव्वण्णुप्पमाणाओ, जति वि य उस्सग्गतो सुतपसिद्धी ।**
**वित्थरतोऽपायाण य, दरिसणमिति कारगं तम्हा ॥३१९॥**

"**सव्वण्णु०**" गाधा । यद्यपि सर्वज्ञोक्तप्रामाण्यादेकान्तेन सर्वश्रुतस्य प्रसिद्धि-र्भवति, तथापि विस्तरापायदर्शनार्थं कारकश्रुतमपदिश्यते इति । प्रकरणसूत्रमिदानीम्–

**पगरणतो पुण सुत्तं, जत्थ उ अक्खेव-णिण्णयपसिद्धी ।**
**नमि-गोतम-केसिज्जा, अद्दग-नालंदइज्जा य ॥३२०॥**

"**पगरण०**" गाधा । प्रकरणसूत्रं खलु भो ! यत्र [४]स्वसमयेनैवाक्षेपस्य निर्णयेन प्रसिद्धिर्वर्ण्यते । यथा–**नमिप्रव्रज्या, गौतमकेशीयं, आर्द्रकीयं, नालन्दकीय**मिति । अधवा दुविधं सुत्तं–उस्सग्गियं च अववातियं च । तत्थ उस्सग्गियं जहा–"**णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा आमे तालपलंबे अभिण्णे पडिगाहित्तए**" (बृ०क०उ० १ सू० १) ।

---

१. **परिवर्जयेदि०** पा० । २. '**समणे निग्गंथे**' नास्ति पू० १-२, पा० । ३. **०कर्म भुंजमानः आयुष्कवर्जा०** पू० २ । ४. **स्वसमयैवा०** पू० २ ।

अववातियं जहा—"**कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पक्के तालपलंबे भिण्णे वा अभिण्णे वा पडिगाहित्तए**"। अहवा तिविधं सुत्तं—उस्सग्गितं, अववातितं, उस्सग्गाववातियं च। उस्सग्गियं अववातियं च भणियमेव। उस्सग्गाववातियं जधा—"**णो कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अण्णमण्णास्स मोयं आदित्तए वा आयमित्तए वा णण्णत्थागाढेहिं रोगायंकेहिं**" (बृ०क०उ० ५ सू० ४७-४८)। अधवा चउव्विहं सुत्तं-उस्सग्गितं, अववातितं,उस्सग्गाववातितं,अववाउस्सग्गितं ति। एत्थ आदिल्लाणि तिण्णि सुत्ताणि भणिताणि चेव। अववाउसग्गितं जधा—"**मंसयं मंसयं दलाहि मा अट्ठिताणि**"। आह-उत्सर्ग इति कोऽर्थः, अपवादो च ? इत्युच्यते—

**[१]उज्जयसग्गुस्सग्गो, अववाओ तस्स चेव पडिवक्खो।**
**उस्सग्गा विणिवतितं, धरेति सालंबमववातो ॥३२१॥**

"**[१]उज्जतस०**" गाधा। उद्यतः सर्गः उत्सर्गः। उत् प्राबल्ये, सृज् गतौ[२], तस्य उत्सर्ग इति भवति। उत्सर्गो नाम उद्यतविहार इत्यर्थः। तस्य चोत्सर्गस्याऽपवादः प्रतिपक्षो भवति। कथमित्युच्यते—उत्सर्गाद् अध्वानावमौदर्यादिषु प्रच्युतं ज्ञानादिसालंबं अपवादो धारयतीति। आह, कथं सो भग्गव्वओ न भवति उस्सग्गातो अववातं गतो संतो ? उच्यते—

**धावंतो उव्वाओ, मग्गण्णू किं ण गच्छइ कमेणं।**
**किं वा मउई किरिया, ण कीरये असहुओ तिक्खं ॥३२२॥**

"**धावंतो०**" गाधा। सव्वो अम्हं पयासो मोक्खसाधणणिमित्तं, सो तहा मोक्खट्ठं साधेति इतरहा न साधेति। दिट्ठंतो जधा—कोइ पाडलिपुत्तं गंतुकामो धावंतओ जाधे [३]उव्वातो भवति ताधे गतीए वच्चंतो णवरं जाणओ होतुं किं न गच्छति पाडलिपुत्तं ? परं चिरेण गच्छेज्जा। अध पुण धावति[४] तो अंतरा चेव [५]मरति। एवं सो तारिसे कज्जे अपवादं अपडिवज्जंतो विणस्सति चेव। किं वा रोगिणो तिक्खं किरियं असहंतस्स मउई किरिया न कज्जति ?। जधा एयं एवमेव उस्सग्गविणिवातितस्स अववातगमणं भवतीति। आह-किं ताव उस्सग्गातो अववातप्पसिद्धी, अह अववातातो उस्सग्गपसिद्धी भवति ? उच्यते—

**उण्णतमविक्ख णिण्णस्स पसिद्धी उण्णयस्स णिण्णातो।**
**इय अण्णुण्णपसिद्धा, उस्सग्गऽववातमो तुल्ला ॥३२३॥**

"**उण्णत०**" गाधा। यथा हि उन्नतमपेक्ष्य निम्नप्रसिद्धिर्भवति, [६]उन्नतस्य च निम्नात् प्रसिद्धिरित्येवमुत्सर्गादपवादप्रसिद्धिरपवादाच्चोत्सर्गप्रसिद्धिरिति। उत्सर्गे(र्गो) अववादो[७] त्ति

---

१. **उज्जुय०** पू० २। २. '**सृ गतौ**' पू० १-२, पा०। ३. **उव्वाणओ** पू० २। ४. **धावति चेव**, पू० २। ५. **भवति**, पा०। ६. **निम्ना-च्चोन्नतप्रसिद्धि०** पा०। ७. **अपवादे०** पा० पू० १।

गतम् । ॥छ॥

इदाणिं **अप्पे** त्ति दारम् । सीसो पुच्छति—भगवं ! किं उसग्गा अप्पा [1]अववादा वा ? उच्यते—तुल्ला । यस्मादुक्तम्—

**जावतिया उस्सग्गा, तावतिया चेव हुंति अववाता ।**
**जावतिया अववाता, उस्सग्गा तत्तिया चेव ॥३२४॥**

"**जावतिया०**" गाहा । कंठा । केण कारणेणं ? उच्यते—जेण सव्वपडिसेहस्स अणुण्णा भवति ।

इदाणिं **सेए य बलवंते,** एते दो वि दारे एगगाधाए भणति । सीसो चेव पुच्छति—किं उस्सग्गो सेओ अववादो वा ?, उस्सग्गो बलवं अववादो वा ? उच्यते—

**सट्ठाणे सट्ठाणे, सेया बलिणो य हुंति खलु एते ।**
**सट्ठाण-परट्ठाणा य, हुंति वत्थूतों णिप्फण्णा ॥३२५॥**

"**सट्ठाणे०**" गाधा । पुव्वद्धं कंठं । परट्ठाणे दुब्बलया । आह, किं सट्ठाणं परट्ठाणं ति वा ? उच्यते—"**सट्ठाण-परट्ठाणा**" पच्छद्धं, कंठं । आह—वत्थुमेव ण याणामि किं वत्थुं ति ? उच्यते—पुरिसो वत्थुं । तस्स—

**संथरतो सट्ठाणं, उस्सग्गो असहुणो परट्ठाणं ।**
**इय सट्ठाण परं वा, ण होति वत्थू विणा किंचि ॥३२६॥**

"**संथर०**" गाधा । संथरंतस्स उस्सग्गो सट्ठाणं भवति । अववादो परट्ठाणं । असहू नाम जो ण सक्केति संथरिउं तस्स असंथरंतस्स अववातो सट्ठाणं, उस्सग्गो परट्ठाणं । एस वत्थू जो संथरति वा न वा, एतातो णिप्फण्णं सट्ठाणं वा परट्ठाणं वा भवति । **सुत्तं** ति दारं गतम् । इदानीं **पदं** ति दारं । तत्थ गाहा—

**णाम णिवाउवसग्गं, अक्खाइय मिस्सयं च णायव्वं ।**
**पंचविधं होति पदं, लक्खणकारेहिँ णिद्दिट्ठं ॥३२७॥**

"**णाम णिवाउस्स( वस )ग्गं०**" । अश्व इति नामिकं पदं भवति । खल्विति नैपातिकं पदं भवति । परि इत्यौपसर्गिकं पदं भवति । [2]पतति इत्याख्यातिकं पदं भवति । संयत इति मिश्रं पदं भवति । एतत् पंचविकल्पं पदं लक्षणविद्भिराख्यातम् ॥छ॥

इदानीं **पदार्थ** इति द्वारं । तत्थ—

**होति पदत्थो चउहा, सामासिय तद्धितो य धातुकओ ।**
**णेरुत्तिओ चउत्थो, तिण्ह पयाणं पुरिल्लाणं ॥३२८॥**

---

१. अल्पा अपवा० पू० १-२ । २. पचति पू० १-२ ।

"**हवति०**" गाधा । एषामेव पूर्वोद्दिष्टानां पदानां णाम-णिपात-उस्स(वस)ग्गिताणं तिण्हं चउव्विहो पयत्थो भवति । सामासिकः ताद्धितिकः धातुकृतो नैरुक्तिकश्च । सामासिकः सप्तविधो भवति ।

**दंदे य बहुव्वीही, बोधव्वे कम्मधारय दिगू य ।**
**तप्पुरिस-अव्वइभावे एगसेसे य सत्तमे ॥**

तत्र द्वंद्वः—दन्ताश्च औष्ठौ च दन्तोष्ठं । बहुव्रीहिः—फुल्ला इमम्मि गिरिम्मि कुडय-कयंबा सो इमो गिरी [1]फुल्लकुडयकयंबो । कर्म्मधारयः—श्वेतः पटः श्वेतपटः । द्विगुः—त्रीणि मधुराणि त्रिमधुरं । तत्पुरुषः—वने हस्ती वनहस्ती । अव्ययीभावः-अणुचरिया अणुफरिहा । एगसेससमासः—यथा एकः पुरुषः तथा [2]बहवः पुरुषाः, यथा बहवः पुरुषाः तथा एकः पुरुषः । उक्तः सामासिकार्थः । इदानीं तद्धितार्थः । स चाष्टविधो भवति ।

**कम्मे सिप्पे सिलोगे य, संजोग-समीवओ य संजूहे ।**
**ईसरियाऽवच्चेण य, तद्धियअत्थो उ अट्ठविहो ॥**

कर्मतो यथा—तणहारओ । सिप्पओ जहा—[3]तुण्णागादी । श्लाघतो जधा—समणे माहणे। संयोगतः—राज्ञः श्वसुरः । समीपतः—[4]गिरिसमीपे नगरं गिरिनगरम् । संजूहतः—**मलयवती**कारः इत्यादि । ईश्वरतः—राजा युवराजा । अपत्यतः—तीर्थकरमाता ।

इदानीं धातुकृतः । यथा—भू सत्तायाम्, परस्मैभाषा । इदानीं नैरुक्तिकः—मह्यां शेते महिष इत्यादि । त्रयाणां पदानामेष [5]अर्थो वक्तव्यः । आख्यातिकपदस्य कारक० गाहा—

**कारगकतो चउत्थे, मिस्सपदे मिस्सतो चउत्थो उ ।**
**सामासिओ सत्तविधो, हवति पयत्थो उ णायव्वो ॥३२९॥**

"**कारग०**" गाहा । कारक इति क्रियामित्यर्थः । शेषमुक्तार्थम् ॥छ॥ उक्तः **पदार्थः**। इदानीं **आक्षेपः प्रसिद्धिश्च**—

**अक्खेवो सुत्तदोसा, पुच्छा वा तत्तो णिण्णयपसिद्धी ।**
**आयपया दो सुत्ते, उवरिल्ला तिण्णि अत्थम्मि ॥३३०॥**

"**अक्खेव०**" गाहा । सिद्धमेव । [6]शिष्याह—पदस्य किं परिमाणम् ? आचार्याह—

**अत्थवसा हवति पदं, अत्थो इच्छियवसेण विण्णेयो ।**
**इच्छा य पकरणवसा, पकरणतो णिच्छओ सत्थे ॥३३१॥**

---

१. **फुल्लिय०** पू० १-२ । २. **बहवे** पू० २ । ३. **पुण्णागादी**, पू० २ । ४. **गिरेः समीपे** पा० । ५. **०मेष पदार्थो**, पा० । ६. **शिष्य आह** पा० २ ।

"**अत्थ०**" गाहा । अत्थस्स किं परिमाणं ? अत्थो पदेनोत्तरं[१] । इच्छाया(याः) किं प्रमाणं ? इच्छा[२]पदेनोत्तरं । प्रकरणस्य निश्चयः शास्त्रे वक्तव्यः । **लक्षणं** ति दारं गतं ॥छ॥

एवंगुणजातीयस्स सुत्तस्स को अरिहो ? एतेन अभिसंबंधेणं '**तदरिह**'त्ति दारं पत्तं । सो अरिहो [३]उंडियादिदिट्ठंतस्स उवणए भण्णिहिति ।

**उंडिय भूमी पेढिय, पुरिसग्गहणं तु पढमतो काउं ।**
**एवं परिक्खितम्मी, दायव्वं वा ण वा पुरिसे ॥३३२॥**

"**उंडिय भूमी०**" गाधा । '**उंडिय भूमी पेढिय**' अस्य व्याख्या—

**अभिणवणगरणिवेसे, समभूमिविरेयणऽक्खरविहण्णू ।**
**पाडेइ उंडियाओ, जा जस्स सठाणसोधणया ॥३३३॥**

**खणणं कोट्टण ठवणं, पेढं पासाय रयण सुहवासो ।**
**इय संजम णगरुंडिय, लिंगं मिच्छत्तसोहणयं ॥३३४॥**

**वय इट्टगठवणणिभा, पेढं पुण होति जाव सूतगडं ।**
**पासातो जहिँ पगतं, रयणणिभा हुंति अत्थपदा ॥३३५॥**

"**अभिणवणगर०**" गाधा दिवड्ढा । जधा—कोति राया अभिणवं णगरं णिवेसितुकामो भूमिं परिच्छित्ता वरं सव्वो लोगो जाणंतो जधा समा भूमी विरिक्कत्ति । अणूणिं मवेत्ता[४] पासायं [५]करेत्ता तत्थ ठाइत्ता रयणाणं आदाणं करेत्ता सुहंसुहेण परिवसति । एष दृष्टान्तोऽयमर्थोपनयः—"**पुरिसग्गहणं तु पढमतो काउं**" ति पुच्छा । सुद्धं पव्वावेउं ? ति भणितं होति । ताधे **ठवणं** ति—नगरट्ठाणीए[६] संजमे [७]ठविज्जति । ताधे से उंडियाथाणीयं लिंगं दिज्जति रयहरणादि । [८]ततो से मिच्छत्तं अण्णाणं कयवरथाणीयं खणित्ता सोधित्ता थिरीकरणणिमित्तं सम्मत्तद्रुहणेहिं कोट्टित्ता, इट्टगठवणथाणीयाणि [९]वयाणि दिज्जंति । ताधे से **आवस्सयं** आदिं काउं जाव **सूतगडं** [१०]ताव पेढत्थाणीयं भवति । ताहे से पासायठाणीया जेहिं पगतं ति **कप्पववहारा** ते दिज्जंति । रयणसरिसा अववातपदा भवन्ति । एते पुण **कप्पववहारे** जाधे सिक्खिउं पत्तो ताधे परिणामओ अपरिणामओ वत्ति परिच्छित्तव्वो । सा परिच्छा उवरिं भण्णिहिति । ताधे "**एवं परिच्छितम्मि दातव्वं वा न वा पुरिसे** त्ति ?" । अपरिणामगस्स अतिपरिणामगस्स वा ण दायव्वं । '**तयरिह**'त्ति दारं गयं ॥छ॥

इयाणिं **परिस** त्ति दारं—जीसे **कप्प-ववहारा** दिज्जंति सा परिसा सेलघणादीहिं

---

१. **अर्थः पादेनो०** पू० १-२ । २. **०पादेनो०** पू० १-२, पा० । ३. **दंडिया०** पू० २ । ४. **त्ति धणूणा मवे०** पू० १ । ५. **कारेत्ता** पा० । ६. **भणंति-णगरं तट्ठाणीए** पू० २ । ७. **ठावि०** पा० । ८. **ताधे** पू० १, पा० । ९. **से वयाणि** पा० । १०. **ताव जाव पेढ०** पा० ।

दिट्ठंतेहिं परिच्छिज्जति । तं जधा–

**सेलघण कुडग चालिणि, परिपूणग हंस महिस मेसे य ।**
**मसग जलूग बिराली, जाहग गो भेरि आभीरी ॥३३६॥**

"**सेलघण०**" गाधा । '**सेलघणे**'त्ति । अस्य व्याख्या–

**उल्लेऊण ण सक्का, गज्जति इय मुग्गसेलओ रण्णे ।**
**तं संवट्टगमेहो, सोउं तस्सोवरिं पडति ॥३३७॥**

**रवितु त्ति ठितो मेहो, उल्लो य ण व त्ति गज्जइ य सेलो ।**
**सेलसमं गाहिस्सं, णिव्विज्जति गाहगो एवं ॥३३८॥**

"**उल्ले०**" गाधाद्वयम् । '**मुग्गसेलओ**' त्ति मुग्गप्पमाणो पाहाणो । तस्स य पुक्खल-संवट्टगस्स य महामेहस्स विसंवादो । मुग्गसेलओ भणति–जति तुमं मम तिलतुस-तिभागमेत्तमवि सक्केसि खंडिउं तो सि सच्चो पुक्खलसंवट्टओ त्ति । सो पडिभणति–जति तुमं मम एगधाराणिवातमवि सक्केसि सहिउं तो सि मुग्गसेलओ त्ति । मुट्ठिप्पमाणाहिं धाराहिं सत्तरत्तं वासित्ता चिंतेति–सो विरातो होहिति त्ति । अवरिसतो[1] जातो, जाव मुग्गसेलो मिलिमिलेंतो अच्छति । ताहे सो मुग्गसेलो गज्जति आगारेति य–जं तं भणियं तं कहिं गतं ? ति । मेहो लज्जितो जातो विलक्खीभूओ य । एरिसं सेलसमं अण्णण्णायरिएणं[2] ण सक्किउं गाहेउं, ताधे अण्णो भणति–अहं गाधेमि त्ति । सो किलिसित्ता णिव्विज्जति, ण किंचि सक्केति गाहेउं । इमो य दोसो–

**आयरिए सुत्तम्मि य, परिवादो सुत्त-अत्थपलिमंथो ।**
**अण्णेसिं पि य हाणी, पुट्ठा वि ण दुद्धदा वंझा ॥३३९॥**

"**आयरिए०**" गाधा । आयरिए परिवादो–अहो से सिक्खावेंतओ, जेणेरिसो [3]सिक्खवितो । सुत्तपरिवादो–नूणं एरिसं चेव सुत्तं जारिसं एस पढति । **सुत्त-अत्थ-पलिमंथो** त्ति । जाव सो गाहिज्जति ताव अप्पणा न गुणेति । अण्णेसिं च सिक्खगाणं हाणी जाव सो गाहिज्जति । जहा–वंझागावी दुद्धनिमित्तं सुपोसिता वि न दुद्धदा भवति, एवं सुबहुओ वि किलेसो तम्मि कज्जमाणो निरत्थओ चेव । सेल-घणा गता । एय-पडिपक्खे सिस्से दायव्वं । केरिसो पुण सो ? उच्यते–कण्हभूमीसमाणो । जो–

**वुट्ठे वि दोणमेहे, ण कण्हभोमाउ लोट्टती उदयं ।**
**गधण-धरणासमत्थे, इय देयमछित्तिकारिम्मि ॥३४०॥**

१. अधरिसतो, पू० २ । २. **अण्णेणा०** पू० २ । ३. **सिक्खा०** पू० १, पा० ।

"**वुड्ढे वि०**" गाधा । जधा—कण्हभूमीए दोणमेहे वि वुट्ठे जं जत्थ पडति तं तत्थेव पविसति अण्णत्तो ण पलोट्टति । एवं जो जत्तियं भासिज्जति तं सव्वं गेण्हति । एरिसे गहण-धारणसमत्थे दातव्वं । अव्वोच्छित्तिं काहिति सो ।

इयाणिं '**कुडो**'त्ति दारं—

**भाविय इयरे य कुडा, पसत्थ-अपसत्थभाविता दुविधा ।**
**पुप्फादीहिँ पसत्था, सुर-तिल्लादीहिँ अपसत्था ॥३४१॥**

**वम्मा य अवम्मा वि य, पसत्थवम्मा य हुंति अग्गिज्झा।**
**अपसत्थअवम्मा वि य, तप्पडिवक्खा भवे गेज्झा ॥३४२॥**

**कुप्पवयण-ओसण्णेहिँ भाविता एवमेव भावकुडा ।**
**संविग्गेहिँ पसत्था, वम्माऽवम्मा य तध चेव ॥३४३॥**

"[१]**ते भावित०**" गाथात्रयम् । कुडा दुविधा—भाविता अभाविता य । जे भाविता ते पसत्थभाविता य, अप्पसत्थभाविता य । जे पसत्थभाविता ते [२]पुप्फादीहिं । आदिग्रहणात् गंधेहिं कप्पूरेणं । जे अप्पसत्थभाविता ते सुराए तेल्लेणं, आदिग्गहणेणं वसादीहिं। तत्थ जे पसत्थाऽपसत्थभाविता ते एक्केक्का-वम्मा[३] य अवम्मा य । वम्मा नाम जे तं भावं [४]सक्केंति छड्डावेतुं, इयरे अवम्मा । एत्थ जे पसत्थभाविता वम्मा, जे य अपसत्थभाविता अवम्मा, एते [५]अगेज्झा । '**तप्पडिवक्ख**'त्ति, जे पसत्थभाविता अवम्मा, जे य अपसत्थभाविता वम्मा [६]एतेपि ग्राह्याः, कुडा इति घडा । एते दव्वकुडा । एवं चेव भावकुडा सीसा ते दुविधा—भाविता य अभाविता य । जे भाविता ते दुविधा—पसत्थभाविया य, अपसत्थभाविया य। तत्थ जे पसत्थभाविता ते जे संविग्गेहिं भाविता । जे अप्पसत्थभाविता ते कुप्पवयणओसण्णेहिं भाविता । जे पसत्थ-अप्पसत्थभाविता ते दुविधा—वम्मा अवम्मा य । तत्थ जे पसत्थभाविता वम्मा, अपसत्थ-भाविता य अवम्मा, एते अगेज्झा । जे पसत्थभाविता अवम्मा, जे अप्पसत्थभाविता वम्मा, एते दो वि गेज्झा । जे अवम्मा ते सुचिरेण वि कालेणं तं भावं ण छड्डेंति । पच्छा ते णिस्साणपदं लभित्ता पावतरा भवंति । **गेज्झा** णाम कहिज्जंति जेसिं ।

**जे पुण अभाविता ते, चउव्विधा अधविमो गमो अण्णो।**
**छिड्डुकुड खंड बोडे, सगले य परूवणा तेसिं ॥३४४॥**

"**जे पुण अ०**" गाधा । जे अभाविता कुडा ते छिड्डादिणो चउव्विधा भवंति।

१. '**ते**' इति पाठः गाथायां न दृश्यते । २. **पुप्फेहिं,** पू० १-२, पा० । ३. वम्मास्थाने **धम्मा** पा० पू० २ । ४. **सक्किज्जंति,** पा० । ५. **अग्राह्याः** पू० २, पा० । ६. **एते दोवि** पू० १ । **एते** पू० २ ।

"**अहविमो गमो अण्णो**" त्ति। अण्णेसिं आयरियाणं जं एवं भणितं, एतं मतं अण्णेसिं, जाधे [१]कुडयं ति दारं पत्तं भवति ताधे ते आयरिया परूवेंति–कुडा दुविधा दव्वकुडा भावकुडा य। तत्थ दव्वकुडा इमे चत्तारि "**छिड्ड [२]कुड**" पच्छद्धगहिता **परूवणा तेसिं** ति एए परूवेतव्वा को केरिसो त्ति ? १ '**छिड्डकुडो**' नाम जस्स छिड्डं हेट्ठा तत्थ छूढं च गलियं च। २ '**खंडकुडो**' नाम जस्स कण्णा बोडिया सो ऊणतं पाणितं गेण्हति। ३ '**भिण्णो**' णाम जस्स पासे कपालभेओ तत्थ वि थोवं ठाति। ४ '**सगलो**' नाम संपुण्णो घडो, तत्थ जत्तियं छुब्भति तं सव्वं ठाति। एमेव चत्तारि सीसा भवंति। तं जहा–छिड्डकुडसमाणे, खंडकुडसमाणे, भिण्णकुडसमाणे, सयलकुडसमाणे। एते भावकुडा। छिड्डकुडसमाणस्स जं कधिज्जति तं जाव कधिज्जति ताव सरति, उट्ठितो न सरति। खंडकुडसमाणो ऊणं गेण्हति। भिण्णकुडसमाणो थोवं गेण्हति। सकलकुडसमाणो सव्वं गेण्हति, जत्तियं कहिज्जति। एतेसिं सगलसरिसं वज्जेत्ता जे मुग्गसेलसमाणस्स दोसा ते च्चेव। सकलकुडसमाणस्स कहेतव्वं सो अव्वोच्छित्तिं काहिति। ॥छ॥

इयाणिं '**चालणि**'त्ति दारं। चालणीए जं पाणियं पक्खिप्पति, तं पक्खिप्पंतं चेव हेट्ठेणं सरति णासति। एवं जो चालणीसमाणो सिस्सो तस्स एक्केणं कण्णेणं पविसति बितिएणं नासति। एरिसे वि गाहिज्जमाणे मुग्गसेलसमाणे जे दोसा ते भवंति।

**सेले य छिद्द चालिणि, मिधो कधा सोउ उट्ठियाणं तु।**
**छिड्डाऽऽह तत्थ विट्ठो सरिंसु सुमराणि णेयाणिं ॥३४५॥**
**एगेण विसति बीएण णीति कण्णेण चालिणी आह।**
**धण्ण त्थ आह सेलो, जं पविसति णीति वा तुज्झं ॥३४६॥**

"**सेले य०**" गाधाद्वयम्। तेसिं मुग्गसेल-छिड्डकुड-चालणि[३]समानानां सिस्साणं सोऊण उट्ठियाणं समा[४]णाणं इमे एतारूवे मिधो कधासमुल्लावो भणध–अज्जो ! केण भे किं अवधारितम् ? ति। तत्थ छिड्डकुडसमाणो भणति–जाव तत्थ मंडलीए अच्छिताइओ ताव सुमरातिओ अहं, उट्ठितस्स सव्वं विस्सरितं। चालणिसामाणो आह–एगेण कण्णेण अतीति बितिएण [५]मे नासति। सेलसमाणो भणति–धण्णा तुब्भे सभग्गा य जेसिं पविसति वा णीति वा, मम ण चेव पविसति।

**तावसखउरकढिणयं, चालणिपडिवक्खु न सवति दवं पि।**

"**तावस०**" पुव्वद्धं। चालणीए पडिपक्खो तावसखउरकढिणयं, तं तावसस्स भवति।

---

१. कुड इति, पू० २, पा०। **कुडयं दारं**, पू० १। २. **छिद्द०** पू० २। ३. **समणाणं सोऊणं** पू० १। **सामाणाणं सिस्साणं** पू० २। ४. **समणाणं**, पू० १। ५. **ते** पू० २।

तं च खउर-बिल्ल-गिरिभल्लायगरसेहिं लित्तं घणपाणियस्स वि भरियं ण गलति । एरिसस्स कहेतव्वं । जस्स किंचि ण णासति सो अव्वोच्छित्तिं काहिति ।

इयाणिं **परिपूणगे** त्ति दारं ।

**परिपूणगं पिव गुणा, गलंति दोसा य चिट्ठंति ॥३४७॥**

परिपूणओ णामं जेण घतपुण्णाणं संपाणं गलिज्जति । तत्थ किट्टं ठाति, सारो गलति । एरिसो जो सीसो जस्स गुणा गलंति, दोसा ठायंति, तम्मि गाहिज्जमाणे सेलसमाणा दोसा । आह—किं भट्टारयवयणे दोसा अत्थि ? उच्यते—

**सव्वण्णुप्पामण्णा, दोसा उ ण हुंति जिणमते के वि ।**
**जं अणुवउत्तकहणं, अपत्तमासज्ज व हवंति ॥३४८॥**

"**सव्वण्णु०**" गाधा । सर्वज्ञप्रामाण्यादिति ।

**वीतरागा हि सर्वज्ञाः मिथ्या न ब्रुवते वचः ।**
**यस्मात् तस्माद् वचस्तेषां, तथ्यं भूतार्थदर्शनम् ॥**

इति वचनाज्जिनानां मते न विद्यन्ते दोषाः । यदनुपयुक्तेनाऽऽचार्येण कथितं स्यात्, अथवा अपात्रमासाद्य गुणा अपि सर्प्योदकवद् दोषीभवन्ति । तं परिपूणगसामाणं गाहेमाणस्स ते चेव दोसा जे सेलघणसामाणस्स ।

'**हंसे**'त्ति, परिपूणगस्स पडिपक्खो । तस्स—

**अंबत्तणेण जीहाइ कूइया होइ खीरमुदगम्मि ।**
**हंसो मोत्तूण जलं, आपियति पयं तह सुसीसो ॥३४९॥**

"**अंब०**"गाधा । सो खीरमिस्सउदए खीरं आदियति उदयं छड्डेति । कथं पुण ? उच्यते—तस्स जीहा अंबा, ताए खीरं विक्कुइत्ता [१]कुच्चीभवति । जाधे तं [२]कुच्चीभूतं खीरं ताधे तं कुच्चितं खातति । एवं जो गुणे गेण्हति दोसे छड्डेति तस्स सीसस्स दातव्वं ।

**महिसो** त्ति—

**सयमवि ण पितति महिसो, ण य जूधं पियति कलुसितं तोयं ।**
**विग्गह-विकहाहिँ तधा, अथक्कपुच्छाहि य अभागी[३] ॥३५०॥**

"**सयमवि०**" गाधा । जधा—महिसो तण्हातितो 'पाणियं पाहामि' त्ति काउं द्रहं ओयरित्ता पढमं चेव सव्वं लोलेति, जधा—कद्दमीभूतं । ण वि अप्पणा पिबति ण वि अण्णं सक्केति जूहं पाउं । एरिसो जो सीसो पट्ठविए समाणे विग्गहेणं जधा—अमुओ भिक्खाए ण

१-२. **कुची०** पू० २ । ३. **य कुसीसो** ता० ।

गच्छति, अमुओ एरिसो तारिसो त्ति विकहाहिं य अथक्कपुच्छाहि य आयरियं तधा तधा परिस्समेति, जधा ण वि तस्स कहिज्जति ण वि अण्णस्स गणस्स । एरिसे ते च्चेव दोसा । "**मेसे**"–त्ति, महिसपडिपक्खो मेसो-एलओ । सो–

**अवि गोपयम्मि वि पिबे, सुढितो तणुयत्तणेण तुंडस्स ।**
**ण करेति कलुस तोयं, मेसो एवं सुसीसो वि ॥३५१॥**

"**अवि गोपयं०**" गाधा । गोप्पए वि जं जण्णुएहिं णिसुढित्ता तणुयत्तणेणं तुंडस्स अलोलितं चेव पाणियं पीउं गच्छति । एरिसो जो सीसो आयरियं अणुद्दुरूसेंतो[1] गेण्हति तारिसे दातव्वं ।

इयाणिं '**मसए**' त्ति दारं–

**मसगो व्व तुदं जच्चाइएहिं णिच्छुब्भती कुसीसो वि ।**
**जलुगा व अदूमिंतो पियति सुसीसो वि सुयणाणं ॥३५२॥**

"**मसगो व्व०**" गाधा । जधा मसओ [2]लग्गंतओ चेव दुक्खावेति, पच्छा उड्डाविज्जति मारिज्जति वा । एवं जो सिस्सो जातिकुलादीहिं तज्जेति[3] सो णिच्छुब्भति । तारिसस्स देंते असंखडादतो दोसा । '**जलोग**' त्ति । मसगपडिपक्खो जलूगा । जधा–सा अदूमेंती अदुक्खावेंति त्ति भणियं होति, लग्गित्ता रुधिरं पिबति । उक्तञ्च–

**दंसो तिक्खणिवातेणं, अप्पणो वधमिच्छति ।**
**जलूगा वि तदेवत्थं, मद्दवेणोपसप्पति ॥**

एवं जो सीसो आयरियं अदुहावेंतो गेण्हइ तस्स दायव्वं । '**विरालि**'त्ति । सा–

**छड्डेउं भूमीए, खीरं जह पियति मुद्ध मज्जारी ।**
**परिसुड्डियाण पासे, सिक्खति एवं विणयभंसी ॥३५३॥**

"**छड्डेउं०**" गाधा कंठा । '**मुद्ध**'त्ति अपंडिया । एवं जो गारवेणं ण सुणेति मंडलीए, जाधे उट्ठित्ता सोतारा भवंति, ताधे अणुभासंताणं पासे उवेसित्ता सुणेति, तस्स न दायव्वं । '**जाहए**' त्ति विरालीए पडिवक्खो । सो–

**पाउं थोवं थोवं, खीरं पासाणि जाहगो लिहति ।**
**एमेव जियं काउं, पुच्छति मइमं ण खेएइ ॥३५४॥**

"**पाउं**" गाधा कंठा । '**गो**'त्ति–

---

१. अणुद्दुरुसेंतो, पू० २, पा० । २. लब्भंतओ पू० २ । ३. हीलेति पा०, पू० १-२ ।

**अण्णो दुज्झिहि कल्लं, णिरत्थयं किं वहामि से चारिं।**
**चउचरणगवी य मता अवण्ण हाणी य मरुयाणं ॥३५५॥**

**मा णे हुज्ज अवण्णो, गोवज्झा मा पुणो य ण दलिज्जा।**
**वयमवि दोज्झामो पुण, अणुग्गहो अण्णदूढे वि ॥३५६॥**

**सीसा पडिच्छगाणं, भरो त्ति ते वि य हु सीसगभरो त्ति ।**
**ण करिंति सुत्तहाणी, अण्णत्थ वि दुल्लभं तेसिं ॥३५७॥**

"**अण्णो०**" गाधात्रयं । [१]एगेणं अविरतएणं गावी चाउवेज्जस्स[२] दिण्णा । ते तं वारएणं दिणे दिणे दुहंति । जाधे जस्स वारओ भवति ताधे सो चिंतेति—सुचारितं पि एतं कल्ले अण्णो दुहिहि त्ति चारितफलं ण चेवाहं उवजीवीहामि, तो किं णिरत्थयं से चारिं खावेमो त्ति काउं दुहित्ता अवतालेउं मुयति । एवं सा मता । ताधे तेसिं मरुताणं अवण्णो जातो—गोवज्झारय त्ति । दाणहाणी य जाता—मारेंति त्ति काउं । ण कोइ वि दाणं देति। एस अपसत्था। एवं गोणीथाणीया आयरिया, धिज्जातितथाणीया सीसा । ते चिंतेंति—अम्हे धुवा, पडिच्छगा सुत्तत्थाणि घेत्तुं गंतुकामा, ते से काहिंति पडिलेहण-भिक्ख-पादधोवणादीणि । पडिच्छगा वि चिंतेंति—'एस सीसगाणं से भरो, अम्हे सुत्तत्थाणि गेण्हामो' । पच्छा आयरिओ अकज्जमाणे सव्वं अप्पणा करेति । ताधे वातिय-पेत्तिय-सेंभिएहिं रोगायंकेहिं गहितो किं देउ ?। एवं सुत्तत्थहाणी जाता । पच्छा ते तेणं दोसेणं अण्णहिं पि गच्छे ढोयं ण लभंति । [३]एरिसेसु न दायव्वं । बितिया गोणी पसत्था, एगेणं तधेव दिण्णा । ते चिंतेंति—मा णे होज्ज अवण्णो जाव अणुग्गहो चण्णदूढे वि त्ति काउं [४]णीसट्ठं तण-पाणियं देंति । एरिसेसु आयरियभत्तिमंतेसु दातव्वं ॥छ॥ '**भेरि**' त्ति—

**कोमुदिया संगामिया य दुब्भूतिया य भेरीओ ।**
**कण्हस्स आसि तइया, असिवोवसमी चउत्थी उ ॥३५८॥**

"**कोमुदिया संगामिया०**" गाधा । बारवती णगरी । कण्हो वासुदेवो । तस्स तिण्णि भेरीओ । कोमुइया, संगामिया, दुब्भूतिया । गोसीसचंदणमईयातो[५] देवता-परिग्गहियातो । चउत्थी असिवोपसमणभेरी । सा जत्थ तालिज्जति तत्थ छम्मासे सव्वरोगा पसमंति, जो तं सद्दं सुणेति । तस्स य सा देवेहिं दिण्णा । कधं ? उच्यते—

**सक्कपसंसा गुणगाहि केसवा णेमिवंद सुणदंता ।**
**आसरयणस्स हरणं, कुमारभंगे य पुययुद्धं ॥३५९॥**

---

१. **एगेण अविरएणं** पा० । २. चतुर्वेदब्राह्मणस्य । ०**विज्जस्स** पू. १ । ३. **एरिसे णं दातव्वं** पा० । ४. **नीसढं** पू० १ । ५. ०**चंदणमईओ** पू० १-२ । पा० ।

**णेहि जितो मि त्ति अहं, असिवोवसमीएँ संपयाणं च ।**
**छम्मासियघोसणया, पसमेति ण जायए अण्णो ॥३६०॥**

"**सक्क०**" गाधाद्वयम् । सक्को सभाए भणति-केसवा सव्वे गुणगाहिणो णीययुद्धं च ण करेंति । तत्थ एगो देवो असद्दहंतो भणति—'अहं अगुणे गेण्हावेमि णीययुद्धं च कारेमि'त्ति। कण्हस्स अरिट्ठणेमिवंदगस्स सखंधावारस्स पट्टितेल्लियस्स अंतरा सुणहरूवं कुधितं दुब्भिगंधं मतेल्लयं, दंता से अतीव पंडरया सोभमाणा विउव्विया । ताधे सो खंधावारो जाधे तं पदेसं पत्तो, ताधे उत्तरिज्जएहिं मुहं ठवेत्ता अण्णेणं अंतेणं पगतो। कण्हेण पच्छातो एंतेण पुच्छितं 'किमेतं ति ?' । 'सुणहो कुधितो' त्ति । ताधे सो तेण चेव अंतेण आगतो, मुहं च णेण न चेव [1]कुणितं ठतियं वा ण वि य विरूवं कयं, एयं च पुणो भणियं—अहो ! सुणयस्स [2]पंडुरा दंता सोभंति य त्ति, जाधे ण खोभितो ताधे [3]पडिएंतस्स आसरयणमणेण अक्खित्तं । कधितं वासुदेवस्स । संबादिया कुमारा णिग्गता । ते जुद्धे भग्गा । ताधे सयं वासुदेवो णिग्गतो । दिट्ठो य अणेणं आसो णिज्जंतो । भणितो य णेणं—किं आसं [4]अवहरसि त्ति ? देवो भणति—अहं अमुगो विज्जाहरो, जुद्धं मग्गामि । बाढं जुज्झामो, केरिसेणं जुज्झेणं ति पुच्छितो देवो भणति—परोप्परं पुतफेट्टाहिं। वासुदेवो भणति—णाहमेरिसेणं जुद्धेणं जुज्झामि त्ति पराजितो हं, णेहि आसं ति । ताधे देवो सरूवं काउं भणति—सच्चं सक्को भणति । ब्रूहि वरं । कहियं च णेणं सव्वं । ताहे वासुदेवो भणति—मम असिवोवसमणिं भेरिं देहि, [5]जीए ताडिताए जत्थ तीसे सद्दो सुव्वति तत्थ छम्मासे रोगातंको ण भवति, पुव्वुप्पण्णा य खिप्पामेव उवसमंति । दिण्णा भेरी। गतो देवो ।

**आगंतु वाधिखोभो, महिड्ढि मोल्लेण कंथ डंडणया।**
**अट्ठम आराधण अण्ण भेरि अण्णस्स ठवणं च ॥३६१॥**

"**आगंतु०**" गाधा । तत्थ अण्णदेसीओ वाणिओ आगओ । महिड्ढीओ त्ति ईसरो । सो सीसवेयणाए गहितो । तस्स वेज्जेणं गोसीसचंदणमुवतिट्ठं । अण्णत्थ अलब्भमाणे रहस्सितयं बहुं मोल्लं दाउं ततो खंडं दिण्णं । तत्थऽण्णं लाइतं । एवं सा तेणं कंथा कता । पच्छा से तारिसो सद्दो नत्थि । ण य रोगा उवसमंति । भेरी जोताविया जाव कंथा कता । ताधे सो भेरीपालो सकुलो उच्छादितो । ताधे वासुदेवेणं अट्ठमेणं भत्तेणं आराधित्ता अण्णा लद्धा । अण्णो य भेरीपालो ठवितो । सो आयरेणं रक्खति । एवं जो सीसो आलावए णट्ठे समाणे अण्णं लाएति लोइयं एवं सो वि कंथं करेति । तस्स ण दातव्वं । जो तहेव रक्खति तस्स दातव्वं । इदाणिं 'आभीरि'त्ति दारं—

१. **विक्कुणियं ठतियं वा, भणियं च णेणं-अहो !** पू० १-२, पा० । २. **पंडरा** पू० १-२, पा० । ३. **पडिनियत्तस्स** पू० १ । ४. **आसं हरसि** पू० २, पा० । ५. **जाए तालिताए** पू० २ ।

**मुक्कं तया अगहिते, दुपरिग्गहियं कयं तया कलहो।**
**पिट्टणय इयर विक्किय, गएसु चोरेहि ऊणऽग्घो ॥३६२॥**

"**मुक्कं त०**" गाधा । जधा–

एगा आभीरी सगडाणि घतस्स भरेउं णगरं [1]विक्किया गता समं भत्तारेणं–अण्णेहिं य आभीरेहिं घतविक्किणएहिं समं । तत्थ सो आभीरो उवरिं विलग्गओ, सगडस्स हेट्ठा ठिताए तीसे आभीरीए घतघडए [2]पणामेति । तत्थ तेणं णायं–गहितो । ताए णातं–ण ताव मुंचति त्ति; घडतो पडित्ता भिण्णो । ताधे सा आभीरी भणति–तुमे अगहितो चेव मुक्को । आभीरो भणति–तुमाए दुग्गहितं कतं । एवं तेसिं 'तुमं तुमं'ति [3]भंडंताणं कलहो जातो । पच्छा उत्तरिंत्ता णीसट्ठं पिट्टिता । तं पि छड्डिएल्लयं घयं तेसिं भंडंताणं सुणयजातीएहिं चट्टितं भूमीए य पविट्ठं । ताव य अण्णेहिं घतविक्किणएहिं विक्कियं । ताहे ताइं पविक्कीयाइं ऊणग्घेण । तेसु य घयविक्किणएसु गतेसु सग्गामं ताइं एकल्लयाणि जायाणि । चोरेहिं [4]उच्छूढाति । एवं जो सीसो आलावयं विच्चामेलेंतो आयरिएहिं भणितो–अज्जो ! मा एवं भण, ताधे सो भणति–

**मा णिण्हव इय दाउं, उवजुंजिय देहि किं विचिंतेसि ।**
**विच्चामेलणदाणे, किलिस्ससी तं च हं चेव ॥३६३॥**

"**मा णिण्हव०**" गाधा । तुमए चेव एवं दिण्णं । आयरिओ भणति–ण देमि अहं, एवं तुमे विणासितं । सीसो भणति–मा णिण्हवाहि, ण वट्टति अप्पणा चेव एवं दाउं, उवउज्जिउं देहि, मा अण्णं चेव चिंतेहि । विच्चामेलिए दिज्जंते अहं च तुमं च किलिस्सामो। एतेण कारणेणं उवउज्जिउं उवउज्जिउं देहि । एवं तेसिं असंखडं भवति । एरिसस्स ण दातव्वं ।

अण्णा आभीरी तधेव णगरं गता । तधेव भिण्णं । ताधे सो भणति–ण तुमं दोसो, ममं एस दोसो । बितियो वि भणति–न तुमं, ममं ति । तधेव सा वालुया संगहिता । उण्होदएणं तावेत्ता सीयलं काउं सव्वं णिरवयवं गहितं । एवं जो सीसो 'मा विच्चामेलेहि' त्ति भणितो, 'मिच्छामि दुक्कडं मए विणासितं' ति । जति वा आयरिएहिं अणुवयुत्तेहिं दिण्णं जं ताधे भणंति 'मिच्छामि दुक्कडं मए चेव अणुवउत्तेणं दिण्णं' ति । एत्तिएणं चेव गतं भवति । एरिसस्स दायव्वं ।

इदाणिं एतेसिं सेलादीणं आभीरीपज्जवसाणाणं पच्छित्तं भण्णति–

**सेल-कुडछिद्द-चालिणि, सुद्धो चउगुरुग घडदुवे होंति ।**
**परिपूण महिस मसए, बिरालि आभीरि एमेव ॥३६४॥**

---

१. **विक्किणिता** पा० । २. **पणावेति** पू० २ । ३. **भणंताणं** पू० २ विना । ४. **उद्दूढाति** पू० २ ।

**एमेव गोणि भेरी, हंसे मेसे य जाहग जलूगा ।**
**चउलहुगमदाणम्मी, पावति एतेसु आयरितो ॥३६५॥**

"**सेलकुड०**" गाधा । मुग्ग-सेल-च्छिड्डकुडग-चालणिसमाणाणं गुणणाकज्जे देंतो सुद्धो भवति । किंणिमित्तं ? तत्थ णत्थि सुत्तत्थहाणी । अण्णेसिं वा सिस्साणं परिहाणी, अकज्जे एतेसु चेव चतुलहुं । '**घडदुइए**'त्ति पसत्थवम्मेसु[१] अपसत्थअवम्मेसु य । बितिओ खंडे य भिण्णे य, एतेसु चउसु वि चउगुरु चउगुरु । परिपूणए महिसे मसए विरालीए आभीरीए गोणीए भेरीए, एएसु सव्वेसु चउगुरुं । जे एतेसिं पडिपक्खा चोक्खा हंसादिणो य, तेसिं जो ण देति आयरिओ, तस्स चउगुरु ॥ अधवा इमा तिविधा परिसा–

**जाणंतिया अजाणंतिया य तध दुव्वियड्डिया चेव ।**
**तिविधा य होति परिसा, तीसे णाणत्तगं वोच्छं ॥३६६॥**

"**जाणंतिया०**" गाधा । इमा–

**गुण-दोसविसेसण्णू, अणभिग्गहिया य कुस्सुतिमतेसु ।**
**सा खलु जाणगपरिसा, गुणतत्तिल्ला अगुणवज्जा ॥३६७॥**

"**गुण-दोस०**" गाधा । कंठा । जे वि णाम दोसा भवंति ते वि छड्डेंति । कहं ?–

**खीरमिव रायहंसा, जे घोट्टंति उ गुणे गुणसमिद्धा ।**
**दोसे वि य छड्डुंती, ते वसभा धीरपुरिस त्ति ॥३६८॥**

"**खीरमिव०**" गाधा । कंठा । '**वसभ**'त्ति, जे **णिसीधेण** गीतत्था इमस्स अज्झयणस्स जोग्गा इति यावदुक्तं भवति । इयाणिं '**अजाणिया**'–

**जे होंति पगतिमुद्धा, मिगछावग-सीह-कुक्कुरगभूता ।**
**रयणमिव असंठविता, सुहसण्णप्पा गुणसमिद्धा ॥३६९॥**

"**जे होंति पगति०**" गाधा । जधा–मिगछावया सीह-कुक्कुरगा वा अरण्णातो आणेउं जति रुच्चति भद्दया कीरंति । [२]अहवा कूरा कीरंति । एवं चेव जे पगतिमुद्धा अभाविता परतित्थिएहिं जधा भण्णंति तधा कीरंति । जध वा रयणं असंठवियं जारिसो अभिप्पाओ तारिसं घडेउं कीरति, तस्यैव विभाषा ।

**जे खलु अभाविता कुस्सुतीहिँ न य ससमए गहियसारा ।**
**अकिलेसकरा सा खलु, वयरं छक्कोडिसुद्धं वा ॥३७०॥**

१. ०त्थधम्मेसु अपसत्थवम्मे० पू० २ । २. अध रुच्चति तो कूरा० पू० १-२, पा० ।

"**जे खलु०**" गाधा । छक्कोडिसुद्धं नाम सभावेण चेव जं सुद्धयं छसु दिसासु ।

इयाणिं [१]**दुव्वियड्ढिया**—

**किंचिम्मत्तग्गाही, पल्लवगाही य तुरियगाही य ।**
**दुवियड्ढगा उ एसा, भणिया परिसा भवे तिविहा ॥३७१॥**

**णाऊण किंचि अण्णस्स जाणियव्वे ण देति ओगासं ।**
**ण य णिज्जितो वि लज्जति, इच्छति य जयं गलरवेण॥३७२॥**

**ण य कत्थइ णिम्मातो, ण य पुच्छति परिभवस्स दोसेण ।**
**वत्थी व वायपुण्णो, फुट्टति गामिल्लगवियड्ढो ॥३७३॥**

"**किंचिम्मत्तग्गा०**" गाधात्रयम् । कंठं । गामेल्लएसु विदग्धो गामेल्लगविदड्ढो । सो केरिसो ? उच्यते—

**दुरधि( धी )तविज्जो पच्चंतनिवासो वावदूक कीकाको ।**
**खलिकरण भोइपुरतो, लोगुत्तर पेढियागीते ॥३७४॥**

"**दुरधि( धी )तवि०**" गाधा । जधा—एगो वागरणसुत्ताणि दरपढियाणि काउं पच्चंतं गंतुं भणति—अहं वैयाकरणो । तत्थ सो गामेल्लएहिं आभीरएहिं परिग्गहितो । वित्ती से कता। एवं सो तत्थ सुहं णिवसति । अण्णदा तत्थ एगो वावदुगो पंडित इत्यर्थः, पोत्थगभारेण चट्टेहिं परिवुडो आगतो । तेहिं पच्चंतिएहिं ते तस्स सीसा पुच्छिता—को एस ? तेहिं भणितं—वइयाकरणो । ते पच्चंतिया भणंति—अम्ह वि अत्थि वागरणो । बोल्लाबोल्ली होतु त्ति पडिस्सुते, दुरधीतविज्जेण भणितं—काको कधं भण्णति ?। वाकरणिणा भणितं—**काकः** । ताहे दुरधीतविज्जो[२] भणति—अण्णो वि लोगो काकमेव भणति । को विसेसो वागरणस्स ? अहं भणामि **क्रीकाकः** । गामेल्लएहिं हसितं [३]उक्किट्ठी त कता । 'अम्हं वागरणेणं पराजितो' त्ति । पच्छा सो वागरणी पओसमावण्णो णगरं गंतुं जस्स भोइयस्स सो गामो तेण कड्ढावेत्ता तस्स पुरओ खलीकरेत्ता ततो गामातो णिच्छुब्भावितो । एवमेव लोउत्तरो वि । कोति कस्सति आयरियस्स सीसो किंचि पेढियामेत्तं सिक्खितुं एगाणिओ पच्चंतणगरं गंतुं अण्णे अगीयत्था-(त्थे?)द्रावेति, अकरणिज्जाणि य करेति, अपच्छित्ते य पच्छित्तं देति, ण य अण्णं पुच्छति पूयासक्कारगारवेणं । पच्छा अण्णे गीतत्था आगता । तेहिं द्राविते, पच्छित्तं च से दिण्णं । दिसा य से हरिया । जे एरिसा पुरिसा सा दुव्वितड्ढिया परिसा ॥

१. **दुद्दिड्ढिया** पू० २ । २. **०विज्जेण भणितं** पा० । ३. **उक्कुट्ठी** पू० १, पा० ।

**आयरियत्तणतुरितो, पुव्वं सीसत्तणं अकाऊणं ।**
**हिंडति चोप्पायरितो, णिरंकुसो मत्तहत्थि व्व ॥३७५॥**

"**आयरिय०**" गाधा । जधा वा कोति सीसो [1]**दसवेकालियमे**त्तं दरपढितं काउं आयरियत्तणतुरितो अकातूण सीसत्तणं पूर्वमन्येषामाचार्याणां पच्चंतं गंतुं पीढियाए णिविट्ठो अप्पाणं आयरियं ति मण्णति । **चोप्प** इति [2]अचोक्खो मूर्खोऽसौ, केरिसं पुण तस्स मुक्खत्तणं ? उच्यते–

**छण्णालयम्मि काऊण कुंडियं अभिमुहंजली सुढितो ।**
**गेरू पुच्छति पसिणं, किण्णु हु सा वागरे किंचि ॥३७६॥**

"**छण्णालय०**" गाधा । जधा–कोति '**गेरू**'त्ति परिव्वायओ तिदंडे कुंडियं काउं अभिमुहो पंजलिओ [3]जाणुपादपडितो तं कुंडितं प्रश्नं पृच्छति–अत्थि सा कुंडिया पुच्छिज्जंती तस्स परिव्वायगस्स किंचि वागरेज्जा ? णो त्ति । एरिसं तस्स आयरियत्तणं जारिसं तीए कुंडियाए । जधा वा–

**सीसा वि य तूरंती, आयरिया वि हु लहुं पसीयंति ।**
**तेण दरसिक्खियाणं, भरितो लोगो पिसायाणं ॥३७७॥**

"**सीसो वि य०**" गाधा । कंठा । जधा–कोति दरसिक्खितो ? उच्यते–

**तेगिच्छ मते पुच्छा, अण्णहि वालुंक देवि कहि चिण्णा ।**
**तोसत्थेण कहंति य, वेज्जणिसिद्धे ततो दंडो ॥३७८॥**

"**तेगिच्छ०**" गाधा । जधा–एगो वेज्जो राउलोलग्गओ । मतो । रण्णा पुच्छितं–अत्थि से पुत्तो त्ति ? कधितं–अत्थि । णवरं असिक्खितओ वेज्जयं । रण्णा भणियं- वच्च, पढाहि, तदवत्था चेव ते भोगा । सो अण्णत्थ गंतुं पढितो । तत्थ य अतियाए पुरोहडे चरंतीए वालुंकं गलए लग्गं, चिर्भिटमित्यर्थः । सा वेज्जसमीवमाणिया । वेज्जेण पुच्छिता–कहिं चिण्णा एसा ? कधितं–पुरोहडे । तेण णातं–चिब्भिडं लग्गं ति । पोत्तं गलए बंधिउं तहा वलितं जधा तस त्ति भग्गं, णिग्गतं गलयातो । तेण वेज्जपुत्तेण चिंतियं–एस उवाओ वेज्जियाए किरियाए । पडिगतो रण्णो अल्लीणो । पुच्छितो–सिक्खिता वेज्जिय ? त्ति । जहाणवेह । 'अहो ! मेहावी' ति सक्कारो कतो । अण्णया रण्णो महादेवीए गलगंडं उट्ठितं । सो वाहित्तो भणति कहिं चिण्णेल्लिया ? तेहिं भणियं–पुच्छामो । इतरो भणति–भणध–'पुरोहडे' त्ति । इतरे चिंतेंति–णूणं वेज्जरहस्सं एतं ति । भणितं पुरोहडे चिण्णिया । पच्छा तेण गलए साडगेण आवेढेत्ता मारिया । पच्छा रण्णा अण्णे वेज्जा पुच्छिता–किं सत्थणिद्देसेण कता किरिया ? उस्सत्थेणं ?। ति ? तत्थ विवादे

१. **दसालियमेत्तं** पू० १-२, पा० । २. **अचोक्षः** पू० १-२, पा० । ३. **जंणुपाद०** पू० २ ।

वेज्जेहिं णिसेधितो। पच्छा सारीरेण दंडेण दंडितो । एवामेव कोइ सीसो—

**कारणणिसेवि लहुसग, अगीयपच्चय विसोहि दट्ठूण ।**
**सव्वत्थ एव पच्चंतगमण गीतागते दंडो ॥३७९॥**

"**कारण०**" गाधा । आयरिएहिं अण्णस्स कस्सइ साहुस्स कारणणिसेविस्स अगीय[1]पच्चयाणिमित्तं किंचि अधालहुस्सयं पच्छित्तं दिण्णं । तं दट्ठुं चिंतेति—एवं सव्वत्थ वि दायव्वं ति । पच्चंतं गतो भणति—एध, अहं पि जाणामि पच्छित्तं । णिक्कारणे पडिसेविते भणति—भणह, कारणे । ताधे इतरो भणति—सुद्धो त्ति । पच्छा अण्णेहिं गीतत्थेहिं दिट्ठो । तेहिं द्रावितो । दिसा य से हरिता । एरिसा जे पुरिसा सा दुव्वियड्ढिया परिसा । दुव्वियड्ढियाए जो देति तस्स ह्व (४) । जाणियाए अजाणियाए य जो ण देति तस्स वि ह्व (४) । अधवा परिसा दुव्विहा—लोइया लोउत्तरिया य । लोइया पंचविधा । तं जधा—

**पूरंती छत्तंतिय, बुद्धी मंती रहस्सिया चेव ।**
**पंचविधा खलु परिसा, लोइय लोउत्तरा चेव ॥३८०॥**

**पूरंतिया महाणो, छत्तविदिण्णा उ ईसरा बितिया ।**
**समयकुसला उ मंती, लोइय तह रोहिणिज्जा या ॥३८१॥**

"**पूरंतिया महाणो०**" त्ति गाधा । अस्य व्याख्या—

**णीहम्मियम्मि पूरति, रण्णो परिसा ण जा घरमतीति ।**
**जे पुण छत्तविदिण्णा, अतंति ते बाहिरं सालं ॥३८२॥**

"**णीहम्मियम्मि०**" गाधा । जाधे राया घरातो णिग्गतो भवति, ताधे [2]जावंतिको एति सव्वो ढुक्कति, जाव घरं न एति । एसा पूरेंतिता । '**छत्तविदिण्णा य ईसरा बितिय**' त्ति परिसा। जाधे बाहिरिल्लं सालं पविसेति ताधे जे छत्तविदिण्णा रायाणो भड-भोइया य ते पविसंति, सेसा वारिज्जंति । एसा छत्तंतिया । बुद्धिपरिसा **समयकुसला** य त्ति । अस्स [3]विभासा—

**जे लोग-वेद-समएहिँ कोविया तेहिँ पत्थिवो सहितो ।**
**समयमतीतों परिच्छति, परप्पवादागमे चेव ॥३८३॥**

"**जे लोग०**" गाधा । कंठा । **परप्पवादागमे चेव** त्ति परप्रवादानां आगमं करोति शृणोतीत्यर्थः । एसा **बुद्धिपरिसा** । '**मंतिपरिसा**' । अस्य [4]व्याख्या—

---

१. **०पच्चय०** पू० १, पा० । २. **जावंति कोइ एति** पू० १-२ विना । ३. **व्याख्या** पा० । ४. **विभासा** पू० २ ।

**जे रायसत्थकुसला, अतक्कुलीया हिता परिणया य ।**
**मातिकुलीया वसिया, मंतेति निवो रहे तेहिं ॥३८४॥**

"**जे रायसत्थ०**" गाहा । जे **कोडिल्लयादीहिं** रायसत्थेहिं कुसला । '**अतक्कुलीय**'त्ति, जे पेतिएणं संबंधेणं असंबद्धया । जस्स वा जातो सबंधातो दाइयत्तणं भवति तेण असंबद्धया जे ते अतक्कुलीया । '**हित**'त्ति हितान्वेषिणः । '**परिणता**' वएणं । '**मातीकुलिता वसिय** त्ति । अण्णेसिं मातिसंबंधेण वि दाइयत्तणं भवति । तेण भणियं करेति । '**णिवो**' त्ति राया। सो एतेहिं समं मंतेति विरहे । एसा **मंतिपरिसा** । '**लोइय**' त्ति, परिसा । इयाणिं राहस्सिया। सा **रोहणिज्जा** य । अस्स विभासा–

**कुविया तोसेतव्वा, रयस्सला वारअऽण्ण( वार-कण्ण? )मासत्ता ।**
**छण्ण पगासे य रहे, मंतयते रोहिणिज्जेहिं ॥३८५॥**

"**कुविया०**" गाधा । जा देवी रुट्ठिया रण्णो तं रोहणिज्जा णिवेदेंति । ते वा पेसिज्जंति दूता । तीसे [१]पत्तियाणिमित्तं । **तोसेतव्व** त्ति पसातेतव्वा । **रतस्सल** त्ति ऋतुस्नाता, तं रोहणिज्जा कहेंति । जीसे वा [२]तद्दिवसं वारओ । **कण्ण** त्ति, जा कण्णा पत्तजोव्वणा तं पि ते चेव कहेंति । '**आसत्त**'त्ति आवण्णसत्ता । अथवा [३]**अण्णआसत्ता** अन्यासक्ता या व्यभिचारिणीत्यर्थः । एयाओ सव्वाओ रोहिणिज्जा कहेंति । अण्णे य जे छण्णा पगासा य रतिकज्जा ते राया रोहिणिज्जेहिं समं मंतेति । '**रोहिणिज्ज**'त्ति । वड्डितया अंतेपुरमहत्तरया[४] इत्यर्थः । जहा एसा लोतिया पंचविहा परिसा भवति रण्णो । एवामेव य आयरियस्स वि अम्हं लोउत्तरे पंचविहा परिसा भवति ।

**आवासगमादी या ( जा ) सुत्तकड पुरंतिया भवे परिसा ।**
**दसमादि उवरिमसुता, हवति उ छत्तंतिया परिसा ॥३८६॥**

"**आवासग०**" गाधा । **आवस्सयं** आदिं काउं जाव **सूतकडं** ताव पूरेंतिया परिसा। एत्थ ण को ति साधू [५]रुब्भति । णवरं पढियतं[६] होतु । **दसाओ** आदिं काउं परेण सव्वा छत्तंतिया परिसा । एत्थ जेहिं पढितं तेसिं जे परिणामता ते ण वारिज्जंति । बुद्धिपरिसा–

**लोइय-वेइय-सामाइएसु सत्थेसु जे समोगाढा ।**
**ससमय-परसमयविसारया य कुसला य बुद्धिमती ॥३८७॥**

"**लोइय०**" गाधा । कंठा । '**बुद्धिमति**' त्ति बुद्धिपरिसा । आह–किं पओयणं बुद्धिपरिसाए ? । उच्यते–

---

१. **पत्तियावणनिमित्तं** पा० । २. **जद्दिवसं** पू० १, पा० । ३. **अण्णं आसत्ता** पा० । ४. **०मयहरया** पू० २। ५. **णिरुब्भति** पू० १ । ६. **पढियओ** पू० १ ।

**आसण्णपतीभत्तं, खेयपरिस्समजतो तधा सत्थे ।**
**कहमुत्तरं च दाहिसि, अमुगो किर आगतो वादी ॥३८८॥**

"**आसण्णपती०**" गाहा । कंठा । पुव्वं [१]संसीलिए सुहं णिग्गिज्झति परप्पवादी । इयाणिं मंतिपरिसा—

**पुव्वं पच्छा जेहिं, सिंगणादितविधी समणुभूतो ।**
**लोए वेदे समए, कतागमा मंतिपरिसा उ ॥३८९॥**

"**पुव्विं पच्छा०**" गाधा । अस्स विभासा—

**[२]गिहवासे अत्थसत्थेहिं कोविया केइ समणभावम्मि ।**
**कज्जेसु सिंगभूतं, तु सिंगणादिं भवे कज्जं ॥३९०॥**

"**[२]गिहवासे०**" गाधा । पुव्विं तु गिहवासे पच्छत्ति पव्वज्जाए कोविदा—विपश्चित इत्यर्थः । '**सिंगणाइयं**'ति सव्वेसिं कज्जाणं सिंगभूतं । किं पुण तं सिंगभूतं ? उच्यते—

**तं पुण चेतियणासे, तद्दव्वविणासणे दुविधभेदे ।**
**भत्तोवधिवोच्छेदे, अभिवादण-बंध-घातादी ॥३९१॥**

"**तं पुण०**" गाधा । '**चेतियणासे**'त्ति [३]लोउत्तमघर-पडिमविणासे चेतिय-दव्वविणासे । **दुविहभेद** त्ति मारणे उप्पव्वावणे य । जो वा भत्तं ति भिक्खं वारेति, उवधिं वा वारेति 'मा एतेसिं कोति देतु' । जधा वा कोति भणेज्जा-बंभणे अभिवादेह । जो वा बंधेति । जो वा पहारेहिं पिट्टावेति । आदिग्गहणेणं जो णिव्विसए आणवेति अक्कोसावेति वा । एताणि जो पदुट्ठो रातादी करेति । एरिसं सिंगणाइयं भवति । ते य जेहिं लोइय-वेतिय- सामातिय-सत्थेहिं आगमो कओ, ते मंतिपरिसा भवति । ताधे—

**वितधं ववहरमाणं, सत्थेण वियाणतो निहोडेइ ।**
**अम्हं सपक्खडंडो, ण चेरिसो दिक्खिए डंडो ॥३९२॥**

"**वितधं०**" गाधा । रायादिं वितधं ववहरमाणं तेन शास्त्रेण विजाणगो उ तस्य शास्त्रस्य सुहं वारेहि त्ति । जधा अम्हं [४]सपक्खदंडो भवति । संघो दंडं करोतीत्यर्थः । ण वि राया [५]पसीयति ण य दिक्खियस्स एरिसो दंडो भवति । एस **मंतिपरिसा** । इयाणिं **रहस्सिता** । का पुण सा ? उच्यते—

**सल्लुद्धरणे समणस्स चाउकण्णा रहस्सिया परिसा ।**
**अज्जाणं चउकण्णा, छक्कण्णा अट्ठकण्णा वा ॥३९३॥**

---

१. **संसालिहे सुत्तं** पा०, **संसालिए** पू० २ । २. **गिहि०** पू० २ । ३. **लोउत्तर०** पा० । ४. **सपक्खो** पू० १-२ । ५. **वसायति** पू० २ ।

"**सल्लुद्धर०**" गाधा । सल्लो दुविधो—दव्वे भावे य । दव्वे कंटादिसल्लो, भावे माया-णिदाण-मिच्छा । अधवा भावसल्लो मूलुत्तरगुणातिचारो । तं आलोएंतस्स आयरिय-सगासे रहस्सिता परिसा भवति, जाव चउकण्णा आयरियस्स २, आलोयंतस्स साहुस्स २, एते चत्तारि साहू जदा—

**आलोयणं पउंजति, गारवपरिवज्जितो गुरुसगासे ।**
**एगंतमणावाते, एगो एगस्स णिस्साए ॥३९४॥**

"**आलोयण०**" गाधा । कंठा । '**गारवपरिवज्जितो**' त्ति, गारवेणं ण किंचि गूहियव्वं । तं पुण कहं आलोएयव्वं ? उच्यते—

**विरहम्मि दिसाभिग्गह, उक्कुडुतो पंजली णिसेज्जा वा ।**
**एस सपक्खे परपक्खे मोत्तु छण्णं णिसिज्जं च ॥३९५॥**

"**विरहम्मि०**" गाधा । जत्थ ण कोइ अच्छति छण्णे ठाणे पुव्वं णिसेज्जं काउं पुव्वं उत्तरं चरंतियं वा दिसं अभिगेज्झ वंदणगं दाउं उक्कुडुओ [१]पंजलीए अध अरिसालो बहुं च आलोएयव्वं ताधे णिसेज्जं अणुजाणावेति, ताधे आलोएतव्वं । परपक्खो णाम संजती । जया संजतिं संजतस्स आलोएति तदा छण्णं वज्जेति । जत्थ लोगस्स संलोगो तत्थ आलोएति, णिसेज्जं च ण करेति आयरियस्स, अप्पणा वि उट्ठितिया ईसिं [२]ओणता आलोएति । अज्जाण चउकण्णा छक्कण्णा अट्ठकण्णा व त्ति । जता णिग्गंथी णिग्गंथीए आलोएति तदा तह चेव चउकण्णा आलोयणा, जधा णिग्गंथस्स णिग्गंथे । सा पुण—

**आलोयणं पउंजति, गारवपरिवज्जिया उ गणिणीए ।**
**एगंतमणावाए, एगा एगाएँ णिस्साए ॥३९६॥**

"**आलोयणं०**" गाधा । कंठा । छक्कण्णा कधं ? उच्यते—

**आलोयणं पउंजइ, एगंते बहुजणस्स संलोए ।**
**अब्बितियथेरगुरुणो, सबिईया भिक्खुणी णिहुता ॥३९७॥**

"**आलोयणं प०**" गाधा । कंठा । थेरायरियस्स अब्बितियस्स णिग्गंथी सब्बितिया, **णिहुत** त्ति ण वि दिसाओ पलोएति जं किंचि वा उल्लावेति । सा पुण केरिसी तीसे बितिज्जिता भवति ? उच्यते—

**णाण-दंसणसंपण्णा, पोढा वयस परिणया ।**
**इंगियागारसंपण्णा, भणिता तीसे बितिज्जिया ॥३९८॥**

---

१. **पंजली** पू० २, पा० । २. **अण्णोअत्ता** पू० २ । **अण्णता** पू० १ ।

"**णाण-दंसण०**" गाधा । पोढा णाम जा एगमेगस्स असुभं भावं जाणित्ता ण मंतक्खयं करेति, भणति 'आलोइयं, वच्चामो'त्ति । ण चेव तस्स पासे आलोएति । का ? जा य इंगितेणं जस्स जारिसो भावो तं जाणति । सा पुण केदूरे ठाति ? । **एगे** आयरिया भणंति– जत्थ आगारादी पासति । **अण्णे** भणंति–जत्थ सुणति वि । अट्ठकण्णा कधं ? उच्यते–

**आलोयणं पउंजति, एगंते बहुजणस्स संलोए ।**
**सब्बितियतरुणगुरुणो, सब्बितिया भिक्खुणी णिहुता ॥३९९॥**

"**आलोयणं प०**" गाधा । जति तरुणो आलोयणायरिओ तो सो वि सब्बितिओ भिक्खुणी वि सब्बितिया चेव । णिग्गंथीए बितिज्जिता पुव्वभणिया । आयरियस्स बिइज्जिओ केरिसो ? उच्यते–

**णाणेण दंसणेण य, चरित्त-तव-विणय-आलयगुणेहिं ।**
**वयपरिणामेण य अभिगमेण इतरो हवति जुत्तो ॥४००॥**

"**णाणेण०**" गाधा । कंठा । **आलउ** त्ति बाहिरा चेट्ठा पडिलेहणादि, उवसमो य । गुणसद्दो सव्वाणुवादी । अभिगमो अत्थो । सो वि तद्दूरे चेव ठाति जं [१]पुव्वं भणितं ॥ एसा परिसा वण्णिता ॥ एत्थ कतराए अहिगारो ? उच्यते–

**छत्तंतियाएँ पगतं, जति पुण सा होज्जिमेहि उववेया ।**
**तो देंति जेहिँ पगतं, तदभावे ठाणमादीणि ॥४०१॥**

"**छत्तंतिया०**" गाधा । कंठा । सेसाओ परिसाओ उच्चारियसरिसाओ त्ति काउं परूवियाओ । सा छत्तंतिया परिसा **जति इमेहिं** ति वक्ष्यमाणेहिं गुणेहिं उववेता भवति ता दिज्जति । '**जेहिं पगतं**'ति **कप्प-व्ववहारा** । **तदभावे** त्ति अध वक्ष्यमाणेहिं न उववेता तो ठाणमादीणि दिज्जंति । आदिग्गहणेणं **पइण्णगाणि** । के पुण ते गुणा ? उच्यते–

**बहुस्सुते चिरपव्वतिते, कप्पिए य अचंचले ।**
**अवट्ठिए य मेधावी, अपरिस्सावी य जे विदू ॥४०२॥**

**पत्ते य अणुण्णाते, भावतो परिणामगे ।**
**एतारिसे महाभागे, अणुओगं सोउमरिहति ॥४०३॥**

"**बहुस्सुए०**" दारगाधाओ दो । तत्थ पढमं दारं बहुस्सुतो । सो–

**तिविधो बहुस्सुतो खलु, जघण्णतो मज्झिमो उ उक्कोसो ।**
**आयारपकप्पे कप्प णवम-दसमे य उक्कोसो ॥४०४॥**

१. पुव्वभणितं पा० ।

"**तिविधो बहु०**" गाधा । जहण्णओ बहुस्सुओ **आयारपकप्प**धरो । '**आयार-प्पकप्पो**'त्ति, **णिसीहं कप्पे** त्ति । मज्झिमो **कप्पववहार**धरो । उक्कोसो णवम-दसमपुव्वधरो । इयाणिं '**चिरपव्वतिए**'त्ति दारं । सो वि–

**चिरपव्वतितो तिविधो, जघण्णतो मज्झिमो य उक्कोसो ।**
**तिवरिस पंचग मज्झो, वीसतिवरिसो य उक्कोसो ॥४०५॥**

"**चिरपव्व०**" गाधा । तिवरिसपव्वतितो जहण्णओ चिरपव्वतिओ । पंचवरिस-पव्वतिओ मज्झिमओ चिरपव्वतितो । वीसवरिसपव्वतिओ उक्कोसो चिरपव्वतितो ।

**बहुसुत चिरपव्वइओ, उ एत्थ मज्झेसु होति अधिगारो ।**
**एत्थ उ कमे विभासा, कम्हा उ बहुस्सुओ पढमं ॥४०६॥**

"**बहुस्सुय०**" गाधा । एत्थ जो मज्झिमो बहुस्सुओ, जो य मज्झिमो चिरपव्वतितो तेधिं अहिगारो । आह–**कम्हा बहुस्सुओ पढमं** ति ? पढमं ताव पव्वज्जा भवति, ततो [१]सुतं, तओ केण कारणेणं बहुस्सुतस्स पुव्वणिवातणं कतं । अत्र क्रमे विभाषा करणीया । [२]क्रियताम् । उच्यते–जो बहुस्सुतो सो णियमा चिरपव्वतिओ भवति । जेण तिवरिसस्स **णिसीहं** उद्दिसति । पंचवरिसपव्वतितस्स **कप्प-ववहारा**, वीसतिवरिसस्स **दिट्ठिवातो** ।

इदाणिं '**कप्पिए**' त्ति दारं । सो दुवालसविधो इमो–

**सुत्ते अत्थे तदुभय, उव्वट्ट विचार लेव पिंडे य ।**
**सिज्जा वत्थे पाए, उग्गहण विहारकप्पे य ॥४०७॥**

"**सुत्ते अत्थे०**" पडिदारगाधा । तत्थ **सुत्तकप्पिओ** इमो–

**सुत्तस्स कप्पितो खलु, आवस्सगमादि जाव आयारो ।**
**तेण पर तिवरिसादी, पकप्पमादी य भावेणं ॥४०८॥**

"**सुत्तस्स०**" गाधा । **आवस्सयं** आदिं काउं जाव **आयारो** । एत्थ ण कोइ विरुज्झति । परेणं तिवरिसमादिं काउं जं जं **ववहारे** भणितं तं तं तधा उद्दिसति जाव वीसतिवरिसे सव्वसुत्ताणुवाती भवति । णवरं **आयारपकप्प**मादिं काउं जे अववायबहुला अज्झयणा, जे वा अतिसेसिता, ते जता भावेण परिणओ भवति, [३]अधिकारि त्ति भणितं होति, तदा उद्दिस्संति । आह-तिसु वरिसेसु अपुण्णेसु **आयारे** पढिए किं करेउ ? उच्यते–

**सुत्तं कुणति परिजितं, तदत्थगहणं पइण्णगाइं वा ।**
**इति अंगऽज्झयणेसुं होति कमो जाहगो णायं ॥४०९॥**

१. सुत्तं पा० । २. क्रियते पू० २ । ३. अविकारि पू० २ ।

"**सुत्तं कुणति०**" गाधा । जं पढितं सुत्तं तं परिजियं[1] करेउं, तस्स चेव अत्थं गेण्हउ । **पतिण्णगाणि** य सुत्तत्थाणि अज्झायति त्ति । एवं अंगाणं अज्झयणाण य जाणि अतिसेसियाणि जाव तेसिं कप्पितो भवति ताव एस कमो । **जाहगदिट्ठंतो** पुव्वं भणितो । एवं इमो वि सुत्तत्थाणि सुगहिताणि करेउ । एस सुत्तकप्पिओ ।

इदाणिं **अत्थकप्पिओ** सो–

**अत्थस्स कप्पितो खलु, आवासगमादि जाव सूयगडं ।**
**मोत्तूणं छेयसुतं, जं जेणऽहियं तदट्ठस्स ॥४१०॥**

"**अत्थस्स०**" गाधा । कंठा । **सूयगडस्स** उवरिं पि छेयसुत्तं मोत्तुं जं जेण पढितयं तो तस्स सव्वस्स अत्थस्स कप्पिओ सोतव्वस्स । छेयसुत्ता पुण पढिता वि जाव अपरिणओ ताव न सुणाविज्जति । जता पुण परिणतो भवति तदा कप्पिओ भवति । **अत्थकप्पिओ** गओ ।

इयाणिं '**तदुभयकप्पिओ**'त्ति दारं ।

**तदुभयकप्पिय जुत्तो, तिगम्मि एगाहिएसु ठाणेसु ।**
**पियधम्मऽवज्जभीरू, ओवम्मं अज्जवइरेहिं ॥४११॥**

"**तदुभय०**" गाधा । '**तदुभय**'त्ति, सुत्तं अत्थो य । जस्स समयं दिज्जंति सो य जुत्तो त्ति । जो दो वि समत्थो एगसराए घेत्तुं सो उभतकप्पिओ । अधवा–**तदुभयकप्पी जुत्तो** [2]**तिगम्मि एगाधिएसु ठाणेसु**'त्ति । तिगम्मि सुत्तं, [3]अत्थो, उभयं । सुत्तातो अत्थो अधिओ, अत्थाओ उभतं अधितं । एतम्मि ततियठाणे '**जुत्तो**'त्ति जोग्गो, सो तदुभयकप्पी । सो य जो "**पियधम्म**" पच्छद्धं । अधवा **तिगम्मि एगाधिएसु ठाणेसु** त्ति । '**पियधम्म**' इति ग्रहणात् चत्तारि भंगा-१ पियधम्मे णामेगे णो दढधम्मे, २, दढधम्मे नामेगे णो पियधम्मे, ३ एगे पियधम्मे वि दढधम्मे वि । एयं तियं, चउत्थभंगो अवत्थुमेव । एतम्मि तिगे **एगाधिएसु** त्ति, पढमभंगाओ बितियभंगे दढधम्मट्ठाणयं अधितं । २ बितियभंगातो ततियभंगे [4]पियधम्मे दढधम्मट्ठाणयं अधितं, जुत्तो तिगम्मि एगाधिएसु ठाणेसु ततियभंगेनेत्यर्थः । एसेव '**ऽवज्जभीरू**' भवइ । जो पियधम्मो दढधम्मो य आवज्जंति कस्स उवमं ? **अज्जवइरेणं**। जधा तेण बालभावे कण्णाऽऽहाडियं, पच्छा से उद्दिट्ठं, समुद्दिट्ठं, अणुण्णायं । अत्थो य से तहेव बितियपोरुसीए कधिज्जइ । एवं अण्णेण वि होज्जा ।

**पुव्वभवे वि अहीयं, कण्णाहडगं व बालभावम्मि ।**
**उत्तममेहाविस्स व, दिज्जति सुत्तं पि अत्थो वि ॥४१२॥**

१. **परिचितं क०** पा० । २. **तिगंति** पा० १, पा० । ३. **अत्थं** पू० २ । ४. **पियधम्मट्ठाणयं अधितं** पू० २ ।

"**पुव्वभवे वि०**" गाधा । कंठा । एरिसोभयकप्पितो भवइ ण अण्णो । इदाणिं '**उवट्ठावणाकप्पिओ**'त्ति दारं—

**अप्पत्ते अकधेत्ता, अणहिगयऽपरिच्छणे य चउगुरुगा ।**
**दोहि गुरू तवगुरुगा, कालगुरू दोहि वी लहुगा ॥४१३॥**

"**अप्पत्ते अकधेत्ता०**" गाधा । अप्पत्तं सुत्तेणं जति उवट्ठावेति चउगुरुगा, तवेण वि गुरुगा कालेण वि । तं पुण किं सुत्तं ? इदाणिं **छज्जीवणिया**, पढमं **सत्थपरिण्णा** आसि । अह वि सुत्तेण पत्तं अत्थं अकहेत्ता उवट्ठावेति तस्स वि (४) चउगुरुगा कालेणं लहुगा । अध कहियं ण ताव से अधिगतं परितच्छितमित्यर्थः । अधवा अणधिगतो परियच्छितं पि न ताव सद्दहति, तं अणधिगतं उवट्ठावेति ह्व । चतुगुरुगा, तवेणं लहुगा, कालेणं गुरुगा । अध अभिगतं पि अपरिच्छित्ता उवट्ठावेति ४ । तवेण वि कालेण वि लहुगा । इमा विरयणा—४, ४, ४, ४ । एस तवकालविसेसणा । आणादीया दोसा सव्वत्थ । जं सेविहिति[१] छण्हं जीवणिकायाणं तं उवट्ठावेंतओ पावति । तम्हा पच्छित्तं परियाणामि । आणा अणवत्था मिच्छत्तं विराहणा य परिहरिता भवंति । तेण—

**पढिते य कहिय अहिगय, परिहर उवठावणाए सो कप्पो ।**
**छक्कं तीहिँ विसुद्धं परिहर णवगेण भेदेण ॥४१४॥**

"**पढिते य०**" गाधा । सुत्तं पाढेत्ता अत्थं[२] गाहेत्ता जाव सद्दहति, परिच्छित्ता य जाधे परिहरति '**छक्कं**'ति छज्जीवणिकाए **तीहिं** ति मण-वयण-काएहिं **विसुद्धं** ति भावतो न पराणुयत्तीए । **नवएण भेदेणं** ति, छक्कं मणेण परिहरति १ परिहरावेति २ परिहरंतं अणुजाणति ३। एवं वायाए वि ३ काएण वि ३। एते तिण्णि तिया णव, ताहे उवट्ठावेतव्वो । आह—अच्छउ ताव उवट्ठावणा कधं चेव पव्वावेतव्वो ? एत्थ छव्विधदवियकप्पो भाणितव्वो । तं जधा—

**पव्वावण मुंडावण, सिक्खावण उवट्ठ[३]भुंज य संवसणा ।**
**एसो उ दवियकप्पो, छव्विहतो होति णायव्वो ॥४१५॥**

"**पव्वावण०**" गाधा । जो उवट्ठितो 'पव्वामि'त्ति, सो धम्मेण कधिएण वा अकधिएण वा, जता पुच्छा—'परिसुद्धो' ? 'आमं' ति अब्भुवगतो तदा पव्वावणा[४], भण्णति । ताधे पसत्थेसु दव्वादिसु आयरिओ सयमेव अट्टगहणं करेति । एस मुंडावणा । थिरहत्थेण लोए कए रयहरणमप्पेतुं सामातियं से कीरति । णिवेदाविज्जति—"**सामातियं मे कयं । इच्छामि अणुसट्ठिं**" । ते भणंति—

---

१. **से विराहेति** पू० १ । २. **अत्थं पाढेत्ता अत्थं कहेत्ता** पा० । ३. **संभुंजणा** पू० २ विना । ४. **पव्वाविओ** पू० १-२ ।

**णित्थारगपारओ होहि, खमासमणाण य** [१]**गुणेहिं वड्ढाहि**। ताधे दुविहं पि सिक्खं गाधिज्जति–गहणसिक्खा पाढो, आसेवणासिक्खा सामायारी। जाधे दुविधं सिक्खं गाधियो[२] भवति, ताधे उवट्ठाविज्जति पसत्थेसु दव्वादिसु। दव्वतो–सालिकरण–उच्छुकरण–चेतियरुक्खे वा। खेत्ततो–पउमसरे साणुणादे चेतियघरे वा। कालतो–चउत्थि छट्ठि [३]अट्ठमि णवमि बारसीओ वज्जेत्ता। भावतो–अणुकूले णक्खत्ते। जति तस्स न णज्जति तो आयरियस्स अणुकूले सुंदरे मुहुत्ते अधाजातेणं लिंगेणं। तं जधा–रयहरणेणं णिसेज्जादुएणं मुहपोत्तियाए चोलपट्टेण य वामे पासे ठवेत्ता एक्केक्कं महव्वयं तिण्णि वारे उच्चारिज्जति जाव रातीभोयणं। जति ते दो तिण्णि तिण्णि वा, ताधे जो अभणितो आयरियस्स आसण्णतराओ तस्स रातिणियत्तं, अध उभयतो पासितो जे समा ते दो दो समरातिणिया वतेसु उच्चारितेसु पदाहिणं काउं पादेसु पाडिज्जंति, भणति य–**महव्वता मे आरुभिता इच्छामि अणुसट्ठिं**। सेसाण वि साधूणं णिवेदेति। ते वि भणंति–**णित्थारयपारओ होहि, खमासमणाण य गुणेहिं वड्ढाहि**। उवट्ठावितस्स य दुविधो संगहो साधुस्स–'**अहं ते आयरिओ, अमुगो ते उवज्झाओ**।' साधुणीए तिविधो संगहो, ततिया '**अमुता ते पवत्तिणी**'। एवं उवट्ठावेउं केसिंचि पंचकल्लाणयं, केसिंचि अब्भत्तट्ठं, केसिंचि आयंबिलं, केसिंचि निव्वीतं, जं वा जस्स तवोकम्मं, अण्णेसिं ण किंचि वि। एवं उवट्ठावितो संभुज्जति। सेहो य पाढिज्जंतो[४] जाव उवट्ठावणं ण पावेति ताव भिक्खं ण हिंडाविज्जति। **छज्जीवणियाए** इमे अधिकारा कधिज्जंति–

**जीवा-ऽजीवाभिगमो, चरित्तधम्मो तहेव जयणा य।**
**उवएसो धम्मफलं, छज्जीवणिकाएँ अहिगारा ॥४१६॥**

"**जीवा-ऽजीवाहिगमो०**" गाधा। जहा–[५]**दसालियाए**। गतो **उवट्ठावणाकप्पिओ** ॥छ॥

इयाणिं '**वियारकप्पिओ**' त्ति दारं। **वियारो** त्ति सण्णाभूमी। एत्थ वि–

**अप्पत्ते अकहेत्ता, अणहिगयऽपरिच्छणम्मि चउगुरुगा।**
**दोहि गुरू तवगुरुगा, कालगुरू दोहि वी लहुगा ॥४१७॥**

"**अप्पत्ते०**" गाधा। '**अप्पत्ते**'त्ति सुत्तं, तं च **सत्तिक्कएसु ओहनिज्जुत्तीए** वा। सेसं तहेव विभासितव्वं। वीयाराधिकारेण धी धी धी धी[६]। आणादिणो य दोसा, संजमविराहणा। सो अप्पत्तो एगाणिओ पट्ठविओ[७] छसु काएसु वोसिरेज्जा, तण्णिप्फण्णं, जं च उड्डाहं [८]काहिति आतोवहातिए वा आयविराहणं पावेज्जा। तम्हा–

---

१. **गुरुगुणेहिं** खं०। २. ०**क्खं सिक्खाविओ भव०** पू० १। ३. **सत्तमि-अट्ठमि** पू० २। ४. **सिक्खं सिक्खावितो** पू० २। ५. दसालिए पा०। ६. **ह्वा ह्वा ह्वा ह्वा** पा०, ४, ४, ४, ४ पू० २। ७. **पत्थवितो** पा०। ८. **काहिंति** पू० १।

**पढिते य कहिय अहिगय, परिहरति वियारकप्पितो सो उ ।**
**तिविहं तीहि विसुद्धं, परिहर णवगेण भेदेणं ॥४१८॥**

"**पढिते य०**" गाधा । जाधे पढितं सुत्तं, कधितं अत्थओ, अभिगतं णाम सद्दहति । जति य परिच्छिज्जमाणो परिहरति । परिच्छा जधा **णिसीधे** । तं पुण जति कधं परिहरति ? उच्यते— '**तिविधं**' ति-सच्चित्तं, मीसयं, अचित्तं । अणावात—असंलोगवज्जेसु उवरिमेसु भंगेसु, जं तं मणेणं ण गच्छति १, ण गच्छावेति २, गच्छंतं णाणुजाणति ३। एवं वायाए वि ३। काएण वि ३। एते णव चेव भेदा । जं अचित्तं तं पि 'आवात-संलोगदोसोत्ति काउं परिहरिज्जति ।

**भेदा सोहि अवाया, वज्जणया खलु तहा अणुण्णा य ।**
**कारणविही य जयणा, थंडिल्ले होंति अहिगारा ॥४१९॥**

"**भेदा सो०**" गाधा । '**भेद**'त्ति तस्स अचित्तथंडिल्लस्स इमे तिण्णि पंथा—

**अचित्तेण अचित्तं, मीसेण अचित्त छक्क मीसेण ।**
**सच्चित्त छक्कएणं, अचित्त चउभंग एक्केक्के ॥४२०॥**

अचित्तेण पंथेण अचित्तं थंडिलं गच्छेज्जा । मीसेणं पंथेणं अचित्तं थंडिलं [1]गमेज्जा। केण मीसएण ? इति चेदुच्यते—छक्कायमीसएणं । सचित्तेणं पंथेण अचित्तं थंडिलं गमेज्जा, सो पुण पंथो छक्काएहिं सचित्तो होज्जा । '**अचित्तं**'ति अचित्तं थंडिलं गमेज्जा । एवं मीसयस्स वि तिण्णि पंथा । सचित्तस्स वि तिण्णि पंथा । '**चउभंग[2] एक्केक्के**' त्ति । एतेसिं अचित्त-मीस-सचित्ताणं एक्केक्कं चउप्पगारं इमं—

**अणवातमसंलोए, अणवाए चेव होति संलोए ।**
**आवायमसंलोए, आवाए चेव संलोए ॥४२१॥**

"**अणावात०**" गाधा । एतेसिं पढमं अणुण्णातं, सेसाणि पडिकुट्ठाणि । णिग्गंथीणं ततियं अणुण्णातं । एत्थं च चउत्थं थंडिल्लं वक्खाणेति । आवातं संलोगं च, तं च आवातं संलोगं वा इमेसिं होज्जा—

**तत्थाऽऽ-वायं दुविहं, सपक्ख-परपक्खतो उ णायव्वं ।**
**दुविहं होइ सपक्खे, संजय तह संजतीणं च ॥४२२॥**

"**तत्थावायं०**" गाधा । कंठा । परपक्खो गिहत्था ।

**संविग्गमसंविग्गा, संविग्ग मणुण्ण एतरा चेव ।**
**असंविग्गा वि य दुविहा, तप्पक्खिय एयरा चेव ॥४२३॥**

---

१. गच्छेज्जा पू० १ । २. चउभंगो, पू० २ ।

"**संविग्ग०**" गाधा । **तप्पक्खिय** त्ति, संविग्गपक्खिता । '**एयर**'त्ति, असंविग्ग–पक्खिया ।

**परपक्खे वि य दुविहं, माणुस तेरिच्छगं च णायव्वं ।**
**एक्केक्कं पि य तिविहं, पुरिसित्थि णपुंसगं चेव ॥४२४॥**
**पुरिसावायं तिविहं, दंडिय कोडुंबिए य पागइए ।**
**ते सोयऽ-सोयवादी, एमेव णपुंस-इत्थीसु ॥४२५॥**
**दित्तमदित्ता तिरिया, जहण्णमुक्कोस मज्झिमा तिविहा ।**
**एमेवेत्थि-णपुंसा, दुगुंछिय-ऽदुगुंछिया णवरं ॥४२६॥**

"**परपक्खे वि य०**" गाधात्रयम् । कंठं । किंचि भणामि । '**दित्ते**' त्ति दुष्टाः । दुगुंछिता महासद्दियादी । उक्कोसा हत्थिमाई मज्झिमा महिसमादी, जहण्णा एलियादी । एतेसिं तं आवातं संलोगं वा होज्जा । '**भेद**'त्ति गतं । इयाणिं '**सोधि**'त्ति पच्छित्तं । तं आवातं संलोगं वा चउत्थथंडिलं गच्छंतस्स–

**मणुय-तिरिएसु लहुगा, चउरो गुरुगा य दित्ततिरिएसु ।**
**तिरियणपुंसित्थीसु य, मणुयत्थि-णपुंसगो गुरुगा ॥४२७॥**
**मणुय-तिरियपुंसेसुं, दोसु वि लहुगा तवेण कालेण ।**
**कालगुरू तवगुरुगा, दोहिँ गुरू अद्धोंकंती वा ॥४२८॥**
**पागय कोडुंबिय दंडिए य अस्सोय-सोयवादीसु ।**
**चउगुरुगा जमलपया, अहवा चउ छच्च गुरु-लहुगा ॥४२९॥**
**[ पागइयऽसोयवादी, पुरिसाणं लहुग दोहि वी लहुगा ।**
**ते चेव य कालगुरू, तेसिं चिय सोयवादीणं ॥४३०॥**
**ते च्चिय लहु कालगुरू, कोडुंबीणं असोयवादीणं ।**
**तेसि चिय ते चेव उ, तवगुरुगा सोयवादीणं ॥४३१॥**
**दंडिय असोय ति च्चिय, सोयम्मि य दोहि गुरुग चउलहुगा ।**
**एस पुरिसाण भणिओ, इत्थि-नपुंसाण वी एवं ॥४३२॥ ]**[१]

१. अत्र मुद्रित बृ०क०वृ० पुस्तके (विभाग १, पृ० १२३) श्रीपुण्यविजयमुनिना कृता टिप्पणी एवं– "मणुयतिरिएसु' गाथाष्टकं कण्ठयम् । सोधि त्ति गतम् ।" इत्यनेन चूर्णिग्रन्थेन चूर्णिकृता "भद्द तिरी पासंडे" ४२९ गाथां यावत् शोधिद्वारसत्कं गाथाष्टकमावेदितम् इति "पागय कोडुंबिय" इति ४२७ गाथाटीकायां टीकाकृद्भिः "उक्तं च" इति उल्लिख्य यत् "पागइयऽसोयवादी०" इत्यादि गाथात्रिकं निष्टङ्कितं तत् चूर्णिकारमतेन भाष्यसत्कामिति सम्भावयामः । न खल्वेतत् "पागइयसोयवादी०" इत्यादिकं गाथात्रिकमस्मत्पार्श्ववर्तिनीषु भाष्यप्रतिषु क्वापि दृश्यते ।" एतत्सम्भावनामाश्रित्य एतद्गाथात्रयं अत्र [ ]कृत्वा मूलपाठ रूपेण निर्दिष्टमस्तीति बोध्यम् ॥

**तिरिएसु वि एवं चिय, अदुगुंछ-दुगुंछ-दित्त-ऽदित्तेसु ।**
**अमणुण्णेयर लहुगो, संजतिवग्गम्मि चउगुरुगा ॥४३३॥**

**भद्द तिरी पासंडे, मणुयाऽसोएहिँ दोहिँ लहु लहुगा ।**
**कालगुरू तवगुरुगा, दोहि गुरू अड्ढोक्कंति दुगे ॥४३४॥**

**मणुय-तिरिएसु** । गाहाष्टकं कंठं । '**सोहि**'त्ति गतं । इदाणिं **अवाया-**[१]**दोसा** । ते ताव इमे भण्णंति—

**अमणुण्णेतरगमणे, वितहायरणम्मि होइ अहिगरणं ।**
**पउरदवकरण दट्ठुं, कुसील सेहादिगमणं च ॥४३५॥**

"**अमणुण्णेतर०**" गाधा । '**अमणुण्णाणं**'ति [२]अण्णसंभोइयाणं असंविग्गाण य आवाते केसिंचि आयरियाणं अण्णधा सामायारीओ । ताधे वितधाचरणे तीसे सामायारीए "**ण एस सामायारी, इम**" त्ति[३] अधिकरणं होज्जा । '**इतर**'त्ति पासत्थादिणो ते पउरेणं दवेणं [४]निल्लेवणं करेंति । तं दट्ठुं सेहा आदिग्गहणेणं सुतिवादिणो मंदधम्मा य तेसिं कुसीलाणंतेणं[५] गच्छंति ।

**णिग्गंथाणं पढमं, सेसा खलु होंति तेसि पडिकुट्ठा ।**
**दव अप्प कलुस असती, अवण्ण पुरिसेसु पडिसेहो ॥४३६॥**

तम्हा णिग्गंथाणं पढमं अणावातमसंलोगं अणुण्णातं । अध परपक्खावातं वच्चंति, तो '**दवे अप्पे**'त्ति थोवे कलुसे वा '**असति**'त्ति विणा पाणएणं गतो होज्जा, ताधे पासित्ता '**अवण्णं**' करेज्जा असुतियत्ति **डिसेधो** नाम मा एतेसिं कोति किंचि वि देतु असुतियाणं । एस दोसो पुरिसावाते भवति ।

इदाणिं इत्थि—णपुंसावाते सा भण्णंति—

**आत पर तदुभए वा, संकाईया हवंति दोसा उ ।**
**पंडित्थीसुं गहिते, उड्डाहो पडिगमणमादी ॥४३७॥**

"**आत पर०**" गाधा । '**आत**'त्ति, साधू संकिज्जेज्जा जधा—एत्थ एस उब्भामेति कं पि । '**पर**'त्ति, इत्थिया नपुंसओ वा संकिज्जेज्जा । एते पावकम्मा एतं साधुं कामेंति । **तदुभए** त्ति, दो वि परोप्परं एत्थ मेथुणट्ठिता आगता । सो य तत्थ आत-पर-उभयसमुत्थेणं दोसेणं, पंडएणं, इत्थियाए वा सद्धिं मेहुणं सेवेज्जा । तत्थ केणति अगारेणं दट्ठुं गहितो, ताधे उड्डाहो । सो य उड्डाहो

१. **दोसा सपक्खा वा** पू० १-२ । २. **अण्णं सं०** पा० । ३. **इमेसत्ति** पा० । ४. **निल्लेवणकरणं** पू० १-२ । ५. **कुसीलाणंते** पू०१-२।

त्ति काउं पडिगमणादीणि करेज्जा । इमे चउत्थथंडिले च्चेव । तिरितावाए दोसा आहणणादी—

**आहणणादी दित्ते, गरहियतिरिएसु संकमादीया ।**
**एमेव य संलोए, तिरिए वज्जित्तु मणुएसु ॥४३८॥**

"**आहणणादी०**" गाधा । आदिग्गहणेणं मारणं संका मेथुणे । आदिग्गहणेणं पडिसेविज्जा वि । '**एमेव य**' पच्छद्धं । चउत्थे थंडिले जं संलोतिज्जति तत्थ तिरिक्खजोणिएसु णत्थि दोसो, [१]मणुस्साणं पुरिसित्थि-नपुंसाणं जे आवाते दोसा ते चेव संलोए वि । जइ वि मेधुणे [२]आतादिसमुत्था दोसा कदाति ण होज्जा, तधा वि चउत्थे थंडिले गिहत्था गिहत्थीओ य इमं चिंतेज्जा—

**जत्थऽम्हे पासामो, जत्थ य आयरइ णातिवग्गो णे ।**
**परिभव कामेमाणो, संकेयगदिण्णको वा वि ॥४३९॥**

"**जत्थऽम्हे०**" गाधा कंठा । किंच—

**कलुस दवे असतीय व, पुरिसालोए हवंति दोसा उ ।**
**पंडित्थीसु वि य तहा, खद्धे वेउव्विए मुच्छा ॥४४०॥**

"**कलुस०**" गाधा । खद्धं वा सागारियं, कसातियं वा विउव्वितं वा दट्ठुं णपुंसगो इत्थिया वा मुच्छिता वा संता तं साधुं उवसग्गेज्जा । चउत्थथंडिलं गतं ॥छ॥

इदाणिं ततितं **आवातं असंलोगं** । तत्थ—

**आयसमुत्था तिरिए, पुरिसे दव कलुस असति उड्डाहो ।**
**आयोभय इत्थीसुं, अतिंति णिंते य आसंका ॥४४१॥**

"**आयसमुत्था०**" गाधा । कंठा । च शब्दात् नपुंसकेषु च ।

**आवातदोस तइए, बिइए संलोयतो भवे दोसा ।**
**ते दो वि णत्थि पढमे, तहिँ गमणं तत्थिमा मेरा ॥४४२॥**

"**आवातदोस०**" गाधा । '**बितिए**' त्ति थंडिले आवाते पच्छित्तं पुव्वभणितं, पुरिसालोए ह्व । इत्थि-णपुंसालोए ह्वा । तम्हा पढमं गंतव्वं । तत्थ णत्थि दोसा । का सा मेरा ? उच्यते—

**कालमकाले सण्णा, कालो तइयाएँ सेसगमकालो ।**
**पढमा पोरिसि आपुच्छ पाणगमपुप्फिअण्णदिसिं ॥४४३॥**

"**कालमकाले०**" गाधा । तत्थ ताव अकालसण्णाए भण्णति—किध वि गंतव्वं ?' तत्थ जति पढमपोरुसीए हवेज्जा तो उग्गाहेत्ता पाणगस्स वच्चति । अध न उग्गाहेति, लोगो[३]

१. **माणुस्सीणं** प० । २. **आतसमुत्था** पू० २ । ३. **मासलहू** । **लोगो** पू० २ विना ।

जाणेज्जा जधा—एस बाहिरे पाणयं[१] गिण्हति त्ति ण देज्जा चउत्थरसयं[२] । उग्गाहिते य इमो गुणो—कोति सड्डो धावितो[३] सड्ढाए उप्पण्णाए पडिलाभेज्जा, सो वि लाभो भवति, संका वि न भवति जधा—एस पाणगस्स हिंडति । सो पुण केरिसं पाणगं गेण्हति ? '**अपुप्फितं**' अच्छं, सुगंधं । जाधे चउत्थरसयं[४] ण होज्जा ताधे उण्होदकाती गेण्हति । '**अण्णदिसिं**'ति, जाए दिसाए सण्णाभूमी ताए दिसाए ण गंतव्वं पाणगस्स । जति ताए दिसाए वच्चति—

**अतिरेगगहणमुग्गाहियम्मि आलोय पुच्छियं गच्छे ।**
**एसा उ अकालम्मी, अणहिंडिय हिंडिए काले ॥४४४॥**

"**अतिरेग०**" गाधा । तं च अतिरेगं घेत्तव्वं । केत्तियं ? जति दो जंतया तो तहा गेण्हति जधा एगस्स उव्वरति । एवं जत्तिया वच्चंति तत्तियाणं घेत्तुं जधा उवरिं एगस्स उव्वरति तथा घेत्तव्वं । आगतो बाहिं [५]पडिसयस्स पाए पमज्जित्ता दंडयं ठवेत्ता इरियावहियं पडिक्कमेत्ता आलोइत्ता दाएत्ता आपुच्छित्ता 'जामो सण्णाभूमिं'ति, जति कोति वच्चति उग्गाहणयातो मत्तए तप्पमाणं पाणयं गेण्हति जधा एगस्स [६]उव्वरति । ताधे उग्गाहणयं अण्णस्स दातुं दंडयं पमज्जित्ता आवस्सितं काउं वच्चति । एत्थ सव्वत्थ अकरणे[७] मासलहू । एस अकालसण्णाए विधी ॥

इदाणिं **कालसण्णं** भण्णति—ततियाए पोरुसीए अहिंडितए कालस्स पडिक्कंते जाव ण ताव भिक्खवेला । अधवा हिंडिते समुद्दिट्ठे भायणेसु कप्पिएसु जाव न ताव [८]उग्गाहति पोरसीए सकालो । अध उस्सूरे भिक्खवेला चिरं वा हिंडिओ ओगाढाए वि । तत्थ पुण काले इमा विही—

**कप्पेऊणं पाए, एक्केक्कस्स उ दुवे पडिग्गहगे ।**
**दाउं दो दो गच्छे, तिण्हट्ठ दवं च घेत्तूणं ॥४४५॥**

"**कप्पेऊणं**" गाधा । कंठा । जे संघाडइल्ला[९] तेसिं एगो दोण्ह[१०] वि पडिग्गहे धरेति । बितिओ अण्णेण समं जाति । तेसु आगतेसु जे अच्छिताइया ते गच्छंति । इयरे धरंति । ते पुण कधं जंति ?—

**अज्जुयलिया अतुरिया, विगहारहिया वयंति पढमं तु ।**
**णिसिइत्तु डगलगहणं, आवडणं वच्चमासज्जा ॥४४६॥**

---

१. **बाहिरि पाणयं गि०** पू० २ । **बाहिरपाणयं** पा० । २. **रसितं** पू० २, पा० । ३. **०ड्डो पहाविओ** पू० २ । ४. **०रसियं** पू० २, पा० । ५. **पडितस्स** पू० २ । ६. **उव्वरितं** पा० । ७. **अकारणे मा०** पू० २ । ८. **ओगा०** पू० २ । ९. **जे संघाडतल्ला** पू० १ । १०. **दोन्नि वि** पा० १ ।

"**अज्जुयलिया०**" गाधा । कंठा । '**पढमं**' थंडिल्लं अणावातमसंलोगं इत्यर्थः । उद्धठिता[१] ण गेण्हंति डगलए । ते य जे असंबद्धा भूमीए ते **आवडणं** ति टिट्टियावेत्ता । जो तत्थ विच्चुगादी सो अवसरति । **वच्चमासज्ज**त्ति तेसिं पमाणं वच्चं आसाद्य भवति । जो भिण्णवच्चो सो तिण्णि गेण्हति, अण्णो दोण्णि एगं वा । ताधे थंडिलं गंतुं—

**आलोएउं य दिसा, संडासगमेव संपमज्जित्ता ।**
**पेहिय पमज्जिएसु य, जयणाए थंडिले निसिरे ॥४४७॥**

"**आलोएउं०**" गाधा । कंठा । '**जयणाए**'त्ति "**दिस पवणादियाए**" [गा० ४६१] । तं पुण अणावातमसंलोगं थंडिल्लं इमेहिं दसहिं विसुद्धं णातव्वं ।

**अणावायमसंलोए, परस्स अणुवघातिए ।**
**समे अज्झुसिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ॥४४८॥**

**विच्छिण्णे दूरमोगाढेऽणासण्णे बिलवज्जिए ।**
**तसपाण-बीयरहिए, उच्चारादीणि वोसिरे ॥४४९॥**

"अणावातमसंलोगं १, परस्स अणुवघातियं २, समं ३, अज्झुसिरं ४, अचिरकालकतं वा ५, वित्थिण्णं ६, दूरमोगाढं ७, अणासण्णं ८, बिलवज्जितं ९ तसपाणबीजरहितं १०, एस एगसंजोगो ॥ इदाणिं दुगसंजोगादी संजोगा—

**एग-दु-ती-चउ-पंचग-छग-सत्तग-अट्ठ-णवग-दसगेहिं ।**
**संजोगा कायव्वा, भंगसहस्सं चउव्वीसं ॥४५०॥**

सुद्धाण असुद्धाण य [२]मिस्सा । तत्थ दुगसंजोगो इमो-अणाव्रातमसंलोगं, परस्स अणुवघातियं, समं, अज्झुसिरं, अचिरकाल जाव बिलवज्जितं, तसपाण-बीयरहितं २। अणावातमसंलोगं जाव अणासण्णं बिलवज्जितं तसपाण-बीजरहितं ३। अणावातमसंलोगं जाव दूरमोगाढं, अणासण्णं बिलवज्जितं तसपाणबीजरहितं ३। अणावातमसंलोगं जाव दूरमोगाढं अणासन्नं बिलरहितं तसपाणबीजरहितं । एवं **पण्णत्ती—वीसइम-सतग-मतेण** जाव दससंजोएण भंगसहस्सं चउव्वीसं ।

इदाणिं ताणि चेव दस पदाणि असुद्धाणि वक्खाणेति—जे य जत्थ दोसा तत्थ आवातं च संलोगं च पुव्वभणितं होति ।[३]

इयाणिं परस्स उवघातितं । तं—

---

१. **उट्ठितया** पू० १-२ । २. **मिस्साण तत्थ** पू० २ । ३. **होति, ते आता विराधेज्जा । 'उभयं'ति सण्णा काइयं च तं लुढं । इया०** पा० ।

**आता पवयण संजम, तिविधं उवघातितं मुणेयव्वं ।**
**आराम वच्च अगणी, घायादऽसुती य अण्णत्थ ॥४५१॥**

"**आता पवयण०**" गाधा । पच्छद्धेण जधासंखं विभासा । आरामे वोसिरंतस्स आतोवग्घातितं पिट्टणादि । 'वच्च घरे असुतिणो' त्ति पवयणोवघातितं अगणिट्ठाणे संजमोवघातितं, अण्णत्थ अथंडिल्ले अगणिट्ठाणं करेंति[1] । उज्झंति वा तं सण्णं अथंडिले । विसमे दोसा ।

**विसम पल्लोट्टणे आया, इतरस्स पलोट्टणम्मि छक्काया ।**
**झुसिरम्मि विच्छुगादी, उभयक्कमणे तसादीया ॥४५२॥**

"**विसम पलोट्टणे०**" गाधा । विसमे साधू पडेज्ज, लुढेज्ज त्ति भणियं होइ, तत्थ आता विराधेज्जा । '**उभयं**'ति सण्णा काइयं च, तं लुंढंतं छक्काए [2]विराहेज्जा । एस संजमविराधणा । झुसिरे-आताए विच्चुगादीहिं विराहणा, आदिग्गहणेणं सप्पादी । '**उभयं**'ति कातितं सण्णाततेहिं अक्कमणे तस-थावराण वहो । एस संजमविराहणा । केरिसं पुण चिरकालकतं ? उच्यते-

**जे जम्मि उउम्मि कया, पयावणादीहिँ थंडिला ते उ ।**
**होंति इयरे चिरकया, वासावुत्थे य बारसगं ॥४५३॥**

"**जे जम्मि०**" गाधा । जे हेमंते कता ते हेमंते चेव अचिरकालकया थंडिलीभूता इत्यर्थः । जत्थ पुण एगं वासारत्तं सधणो गामो वुत्थो भवति तत्थ बारसवासातिं थंडिलं भवति, परेणं अथंडिलीभवति ।

इदाणिं **वित्थिण्णं**-

**हत्थायामं चउरस, जहण्ण उक्कोस जोयणविछक्कं ।**
**चउरंगुलप्पमाणं, जहण्णयं दूरमोगाढं ॥४५४॥**

"**हत्थायामं०**" गाधा । जहण्णयं हत्थायामं समंततो चउसु वि दिसासु तं चउरंसं[3] । इतरं ति उक्कोसं बारसजोयणवित्थिण्णं । तं चक्कवट्टीखंधावारणिवेसस्स ।

इदाणिं दूरोगाढं-जहण्णेणं चत्तारि अंगुलाइं, जत्थ हेट्ठा अचित्ता भूमी । अर्थादापन्नं, परेण जं तं उक्कोसं [4]पंचअंगुलादिं । इदाणिं आसण्णं । तं दुविधं । तत्थ-

**दव्वासण्णं भवणाइयाण तहियं तु संजमाऽऽयाए ।**
**आया-पवयण-संजमदोसा पुण भावमासण्णे ॥४५५॥**

---

१. **करेति** पू० १-२ । २. **वधेज्जा** पा० । ३. **चउरस्सं** पू० १-२, पा० । ४. **पंचंगुलादि** पा० ।

"**दव्वासण्णं०**" गाधा । दुक्कडयं भवणादीणं गृहादीनामित्यर्थः । आदिग्गहणेणं देवउलाणं गामस्स छेत्तस्स पंथस्स रुक्खस्स, जस्स हत्थिपयपमाणमेत्तो खंधो तस्स हत्थो समंततो वज्जेतव्वो । जदि दव्वासण्णे वोसिरति [१]ततो संजमोवघातो । ते तं अथंडिले उज्झेज्जा पाणिएण वा [२]लिंपेज्जा, आतविराहणा पंतावणादि । भावासण्णं णाम ताव अच्छति जाव सण्णा किंचि ण आगच्छति । ताधे अणधितासतो थंडिलं असक्केमाणो गंतुं अथंडिले वोसिरेज्जा, भवणादियाण वा आसण्णे वोसिरेज्जा, ते चेव दोसा । अध अथंडिलं ति वा सागारितं ति वा काउं धरेति तो आतविराधणा भवति । अणधियासेण य लोगपुरओ वोसिरिए वा लेवाडिए वा पवयणोवघातो भवति ॥ बिलसहिते तस-पाण-बीयसहिते य इमा गाधा–

**होंति बिले दो दोसा, तसेसु बीएसु वा वि ते चेव ।**
**संजोगतो य दोसा, मूलगमा होंति सविसेसा ॥४५६॥**

"**होंति बिले०**" गाधा । **दो दोस** त्ति आतविराधणा संजमविराधणा य । जे बिले जीवा ते सण्णाते [३]काइयाए या वधिज्जंति । आताए सप्पादी खाएज्जा । बीएसु संजमविराधणा आयविराधणा य । तेसिं सरगालं छेज्जा, फिल्लुसित्तु वा पडितो भज्जेज्जा । विभासा । एते एक्केक्के दोसा भणिता ।

इदाणिं जे दुगादिसंजोगतो दोसा भवंति, ते **मूलगमातो**त्ति । एक्कगमसंजोगातो, **सविसेस** त्ति दुगुणा जाव दसगुण त्ति, उवउंजितुं[४] वत्तव्वा ।

**पंथम्मि य आलोए, झुसिरम्मि तसेसु चेव चउलहुगा ।**
**पुरिसावाए य तहा, तिरियावाए य ते चेव ॥४५७॥**

"**पंथम्मि य०**" गाधा । [५]**अण्णायरिय**परिवाडीए पुव्वभणितं पि पच्छित्तं पुणो भण्णति । 'पुव्वभणितं [६]तु जं तं **कारग०** गाधा । एत्थ विसेसोवलंभो दट्ठव्वो । पंथे पंथासण्णे आलोगे झुसिरे तससहिते, एतेहिं चउलहुगा । सव्वमणूसपुरिसावाते सव्वतिरियपुरिसावाते एतेसु वि चउलहुगा चेव ।

**इत्थि-णपुंसावाए, भावासण्णे बिले य चउगुरुगा ।**
**पणगं लहुयं गुरुगं, बीए सेसेसु मासलहुं ॥४५८॥**

"**इत्थि०**" गाधा । सव्वित्थितावाते, सव्वणपुंसगावाते, भावासण्णे, बिलसहिते य । एतेसु सव्वेसु चउगुरुगा । [७]परित्तेहिं बीएहिं पंचरातिंदिया लहुगा । अणंतेसु बीयसंकुलेसुं[८] ते

१. तो पू० १-२ । २. **लेवेज्ज** पू० २ । ३. **काइएण य व०** पा० । ४. **उवउज्जित्तुं** पा० । ५. **अण्णायपरि०** पू० २ । ६. **पि जं भं** पा० । **तु जं हं** पू० २ । ७. **परित्तेसु बीएसु** पा० । ८. **अणंतेहिं तेच्चेव गुरूगा** पू० २ ।

च्चेव गुरुगा। सेसेसु थंडिलेसु सव्वेसु मासलहू। एवं सुद्धं सुद्धेणं जं चण्णं आवज्जति तं सव्वं पावति। जत्थ असामायारिं करेति तत्थ वि मासलहुं।

**अपमज्जणा अपडिलेहणा य दुपमज्जणा दुपडिलेहा।**
**तिय मासिय तिय पणगं, लहु काल तवे चरिम सुद्धो ॥४५९॥**

"**अपमज्जणा०**" गाधा। वोसिरंतो ण पडिलेहेति ण पमज्जति मासलहुं, तवगुरु काललहुं। पडिलेहेति न पमज्जति मासलहु, कालगुरु। पमज्जति ण पडिलेहति मासलहुं, दोहिं वि लहुं।

इदाणिं पडिलेहेति, पमज्जति। तत्थ दुप्पडिलेहितं दुप्पमज्जितं पंचराइंदिया लहुगा, तवगुरुगा काललहू। दुप्पडिलेहिए सुपमज्जिते पंचराइंदिया लहुगा, तवलहुगा कालगुरू। सुप्पडिलेहिते दुप्पमज्जिए पंचराइंदिया लहुगा। सुप्पडिलेहिए सुप्पमज्जिते सुद्धो।

**खुड्डो धावण झुसिरे, तिक्खुत्तो अपडिलेहणा लहुगो।**
**घर-वावि-वच्च-गोवय-ठिय-मल्लगछड्डुणे लहुगा ॥४६०॥**

"**खुड्डो धावण**" गाधा। अण्णपरिवाडीए **पुव्वभणितं तु** गाधा। खुड्डुलओ धावणदोसो भवति पलोट्टणदोसो इत्यर्थः। [1]कूवे वोसिरति वावीए वोसिरति वा, घरे वोसिरति वच्चघरे वच्चोवरिं वा, गोप्पदे उट्ठितंतो वा वोसिरेति, मल्लए वोसिरित्ता छड्डेति। एतेसु सव्वेसु चउलहुगा। **अवाय** त्ति गतं।

इदाणिं **वज्जणत** त्ति, इमाणि वज्जंतेण विहीए वोसिरितव्वं।

**दिस-पवण-गाम-सूरिय-छायाएँ पमज्जिऊण तिक्खुत्तो।**
**जस्सुग्गहो त्ति काऊण, वोसिरे आयमे वा वि ॥४६१॥**

**उत्तर पुव्वा पुज्जा, जम्माएँ णिसीचरा अभिवडंति।**
**घाणारसा य पवणे, सूरिय गामे अवण्णो उ ॥४६२॥**

"**दिस पवण०**" गाधा। "**दिस**"त्ति। "**उत्तर**" गाधा। उत्तर-पुरत्थिमा य दिसा पुज्जा लोगस्स, तासु अवण्णो भवति। "**जम्म**"त्ति दाहिणा, तीए रत्तिचरा देवा चरंति, ताधे ताए दिसाए रत्तिं पिट्ठंतो न कायव्वो। मा छलेज्जत्ति। जतो पवणो ततो पिट्ठंतो ण कातव्वो। लोगो भणति—एतं चेव अग्घाति। अरिसाओ वा खुब्भंति। सूरिए गामे य तेणं पिट्ठंते कज्जमाणे अवण्णो भवति। लोगो भणति—लोउज्जोयकरं गामं वा अभिणिंतु[2] एंति। एते

१. घरे पू० २। २. अभिभूएंति पा०।

चत्तारि वि दारा एगगाधाए चेव गता भवंति। "**छायाए**" [गा० ४६१] त्ति–

**संसत्तग्गहणी पुण, छायाए णिग्गयाएँ वोसिरइ ।**
**छायाऽसति उण्हम्मि वि, वोसिरिय मुहुत्तगं चिट्ठे ॥४६३॥**

"**संसत्त०**" गाधा । कंठा । **पमज्जिऊण तिक्खुत्तो** त्ति, अप्पडिलेहितस्स अप्पडिलेहणे अपमज्जणे दुप्पडिलेहिए दुप्पमज्जिए य पुव्वुत्तं पच्छित्तं । वोसिरंतस्स य उवगरणस्स इमा विधी–

**उवगरणं वामगऊरुगम्मि मत्तो य दाहिणे हत्थे ।**
**तत्थऽण्णत्थ व पुंसे, तिहिं आयमणं अदूरम्मि ॥४६४॥**

"**उवगरणं०**" गाधा । दंडगं रयहरणं च वामे ऊरुम्मि ठवेति, मत्तओ दाहिणहत्थे, डगलया [1]डब्बहत्थे । **तिहिं** ति णावापूरेहिं आयमति णिल्लेवेति । णावा पसती । जइ दूरे आयमती उड्डाहो । कोति पासित्ता चिंतेति–ण चेव णिल्लेवितं तो गतो । जति तं पढमं थंडिल्लं अविहीए वच्चति तो इमं पच्छित्तं–

**छक्काय चउसु लहुगा, परित्त लहुगा य गुरुग साहारे ।**
**संघट्टण परियावण, लहु गुरुगऽतिवायणे मूलं ॥४६५॥**

"**छक्काय०**" गाधा । पुढविक्कायं संघट्टति मासलहुं, परियावेति मासगुरुं, उद्दवेति चउलहुगं । एवं जाव '**परित्त**' वणस्सतिकाए । एवं एक्केक्केणं दोहिं मासगुरूए आढवेत्ता चउगुरूए ठाति, एवं जाव अट्ठहिं सपदं । अणंतवणस्सइकाए मासगुरुए आढवेत्ता चउगुरुए ठाति । एवं जाव सत्तहिं दिवसेहिं सपदं । बेइंदिए चउलहुए आढवेत्ता छल्लहुए ठाति । एक्कसिं जाव छहिं सपदं । तेइंदिए चउगुरूए आढवेत्ता छगुरूए ठाति, पंचहिं सपदं । चउरिंदिए छल्लहुए आढवेत्ता छेदे ठाइ, चउहिं सपदं । एगं पंचेंदियं संघट्टेति छग्गुरु, परितावेति छेओ, उद्दवेइ मूलं, तिहिं वाराहिं चरिमं । '**वज्जण**'त्ति गतं । इयाणिं "**अणुण्णा कारणविहीए** [गा० ४१९] परिपाट्या इत्यर्थः ।

**पढमिल्लुगस्स असती, वाघातो वा इमेहिँ ठाणेहिँ ।**
**पडिणीय तेण बाले, खेत्तुदग णिविट्ठ थी अपुमं ॥४६६॥**

"**पढमिल्लुग०**" गाधा । भवे कारणं ण गच्छेज्जा वि पढमं थंडिलं । **असति** त्ति नत्थि पढमं थंडिलं । अधवा होंतयं पि इमेहिं वाघातितं–पडणीतो तत्थ अच्छति । पंथे वा तेणया दुविधा–उवगरणतेणा सरीरतेणा य । वाला वा तत्थ होज्जा सप्पादी । खेत्तं वा जातं, उदएणं वा

१. दव्व० पू० २ ।

तं अक्कंतं । गामो वा णिविट्ठो तत्थ, वतिया वा, खंधावारो वा, इत्थी वा तत्थ, अपुमो वा, मेधुणट्ठियाणि संजते एंते पडिक्खंति ।

**पढमासति वाघाए, पुरिसालोगम्मि होति जयणाए ।**
**मत्तग अपमज्जण डगल कुरुअ तिविहे दुविहभेदो ॥४६७॥**

"**पढमासति०**" गाधा । एवं असति वाघाते वा पढमस्स कत्थ गंतव्वं ?। उच्यते—बितियं थंडिलं अणावातसंलोगं[1] संजयाणं अण्णसंभोतियाणं संविग्गाणं गंतव्वं । तस्सासति अमणुण्णाण चेव आवातं गंतव्वं । तत्थ अपरिणता पुव्वं चेव गाहितव्वा । जधा—केसिंचि आयरियाणं विसरिसाओ सामायारीओ । तो तुब्भे ते मा पडिचोएज्जाह, तुब्भे वि तेहिं चोइया उदासीणा होज्जाध । एवं असंखडादयो दोसा परिहरिया भवंति । असति अमणुण्णावातस्स पासत्थादीणं जं आलोगं तं जंति । तस्सासति तेसिं चेव पासत्थादीणं आवातं वच्चंति । तत्थ खुड्डादी अपरिणता य पुव्वं गाहेतव्वा । जहा—एते णिद्धम्मा इत्यादि विभासा । तं तुब्भे मा चित्ते करेज्जाध—'एतं सुंदरं'ति । संजतिसंलोगावातं सव्वपयत्तेण परिहरेज्जा । तत्थ [2]संगार-दिण्णउ त्ति संकादी, आत-परोभयसमुत्था य दोसा । एसा सपक्खजतणा ।

इदाणिं परपक्खजतणा—पासत्थादियावातस्स असति "**पुरिसालोगम्मि होति जतणाए**" । एत्थ '**जयण**'त्ति वाक्यं पडितं । तिविधं ति—पुरिसा इत्थीओ नपुंसगा । दुविध भेद त्ति—एतेसिं [3]एक्केक्को असोयवादी य सोयवादी य । अधवा दुविधभेदो—सावगा असावगा य । अधवा तिविधभेदो—थेर मज्झिम तरुणा । अधवा तिविधा पायाऽवच्चकुडुंबिया डंडिया य। एवं इत्थि-णपुंसगाण वि भेदो । एत्थ जा पुरिसालोगे जतणा सा पुरिसावाते वि। तेण तं पुरिसावाते चेव भणीहामि लाघवत्थं ।

**तेण परं पुरिसाणं, असोयवादीण वच्च आवायं ।**
**इत्थि-णपुंसालोए, परम्मुहो कुरुकुया सा य ॥४६८॥**

"**तेण परं०**" पुव्वद्धं । '**तेण परं**' ति, पुरिसालोगस्स परतो असति सोयवादीणं तत्थ जतणा । '**मत्तग**'त्ति पत्तेयमत्तएहिं पउरं दवं गेण्हंति, डगलादी ण पमज्जंति, कुरुकुचं च करेंति। मट्टियादीहिं मत्तगस्स य बाहिरकप्पं करेंति । असति ताधे "**इत्थि-णपुंसालोए**" पच्छद्धं । सोयवादीणं संलोगे परम्मुहो कुरुकुचा । सा एव ॥

**तेण परं आवातं, पुरिसेतर-इत्थियाण तिरियाणं ।**
**तत्थ वि य परिहरेज्जा, दुगुंछिए दित्तऽदित्ते य ॥४६९॥**

"**तेण परं०**" गाधा । कंठा । तदसति आवातं पाता-ऽवच्चादीणं, इत्थि—णपुंसाणं

१. **०वातं सं०** पा० खं० । २. **संगारा०** पू० २ । ३. **एक्केक्का** पू० २, पा० ।

वच्चति। अस्स [१]व्याख्या–

**तत्तो इत्थि-णपुंसा, तिविहा, तत्थ वि असोयवाईणं ।**
**तहियं च सद्दकरणं, आउलगमणं कुरुकुया य ॥४७०॥**

**इत्थि-णपुंसावाते, जा उण जयणा उ मत्तगादीया ।**
**पुरिसावाए जयणा, सच्चेव उ मत्तगादीया ॥४७१॥**

"**तत्तो इत्थि ण०**" गाधाद्वयम् । '**आउल**'त्ति वृन्देण [२]सद्ददद्दराणि [३]उल्लावित्ता वच्चंति। हत्थारुंडिं च [४]करेत्ता सव्वत्थ । पढमं असोयवादीसु, पच्छा सोयवादीसु वि जतणाए। एवं ताव अचित्तं थंडिलं चउप्पगारं अचित्तेणं पंथेणं गम्मतित्ति गतं ।

इदाणिं तं चेव मीसेणं पंथेणं अववादेणं गमेज्जा । ताधे एतं चेव सचित्तेणं पंथेणं अववादेणं चेव [५]गमेज्जा ।

इदाणिं मीसं थंडिलं, तं पि अणावातादि चउव्विधं । तस्स वि अच्चित्तादी तिण्णि पंथा। एत्थ गाधा–

**[६]अच्चित्तेणं मीसं, मीसं मीसेण छक्कमीसेणं ।**
**सच्चित्तछक्कएणं, मीसे चउभंगिग पदेसे ॥४७२॥**

"**अच्चित्तेणं मीसं०**" गाधा । एत्थ मत्तएहिं जतितव्वं । असति मत्तयाणं वोसिरंताण वा सागारियं परिट्ठवेत्ताण वा, ताधे धम्मत्थिकायादिपदेसे णिस्सा काउं वोसिरति । एतं अववाते पत्ते । एवं भवति चउभंगिय त्ति । अणावातादिअसंलोगे चउव्विधे वि ।

इदाणिं सच्चित्तं थंडिलं, तं पि आवातादि चउव्विधं । एतस्स वि अचित्तादी तिण्णि पंथा–

**अच्चित्तेण सचित्तं, मीसेण सचित्त छक्कमीसेण ।**
**सच्चित्त छक्कएणं सचित्त चउभंगिय पदेसे ॥४७३॥**

"**अच्चित्तेण०**" गाधा । कंठा ।

**पढित सुत गुणियमगुणिय, धारमधार उवउत्तो परिहरति ।**
**आलोयाऽऽयरियादी, आयरिओ विसोहिकारो से ॥४७४॥**

"**पढित सुत०**" गाधा । जम्हा अयाणए पच्छित्तं भवति तम्हा पढियं जेण सुतं च

१. **विभासा** पा०, पू० २ । २. **सद्दरविड्डराणि** पा० । **सद्दरवद्दराणि** पू० १ । ३. **उल्लावेंति** पू० २ । ४. **करेंता** पू० १-२ विना । ५. **गम्मेज्जा** पू० २ । ६. **सच्चि०** पू० २ ।

गुणितं वा भवतु अगुणितं वा, धारितं वा भवतु अधारितं वा, णवरं उवउत्तो [१]परिहरितो कप्पिओ चेव भवति । पुणरवि पठ्यते । पढिएण वा, अपढिएण वा, सुएण वा असुतेण वा, गुणिएण वा, अगुणिएण वा, धारिएण वा, अधारितेण वा, थंडिलसुत्तेणं उवजुत्तो वा, अणुवयुत्तो वा जं विराधणं करेति, आलोएति आयरियस्स । आदिग्गहणेणं असति आयरियस्स अण्णस्स वि उवज्झायादिणो आलोएति । आलोइज्जंते आयरिया पच्छित्तं देंति तेण सुद्धो भवति । '**वियारे**'त्ति दारं गतम् ।

इदाणिं **लेवे** त्ति—

**अप्पत्ते अकहेत्ता, अणहिगयऽपरिच्छणे य चउगुरुका ।**
**दोहि गुरू तवगुरुगा, कालगुरू दोहि वी लहुगा ॥४७५॥**

"**अप्पत्ते अकहेत्ता०**" गाधा । सुत्तं **पाएसणा ओहणिज्जुत्ति**गाहातो वा । एतं अप्पत्तं जति लेवस्स पेसेति तं चेव पच्छित्तं गाधाए, चर्चा पूर्ववत् । चोदओ वदति—

**अज्जक्कालिय लेवं, वयंति अवियाणिऊण सब्भावं ।**
**ते वत्तव्वा लेवो, दिट्ठो तेलोक्कदंसीहिं ॥४७६॥**

अज्जकालियलेवो कहं पुण ? उच्यते—

**आता पवयण संजम, उवघाओ दिस्सए जओ तिविहो ।**
**तम्हा वयंति केई, ण लेवगहणं जिणा बेंति ॥४७७॥**

"**आता पवयण०**" गाधा । **केइ** त्ति **चोदकाः** । स्यान्मतिः—कहं पुण आत-पवयण-संजमाणं उवग्घाओ भवति ? । उच्यते—

**रधपडण उत्तमंगादिभंजणा घट्टणे य करघातो ।**
**अह आयविराहणया, जक्खुल्लिहणे पवयणम्मि ॥४७८॥**

"**रधपडण०**" गाधा । कंठा । '**घट्टणे**'त्ति [२]भाणे दिण्णे लेवे घट्टएणं घट्टेंतस्स । 'यक्ष' इति श्वा, तेण अक्खो उल्लिहितो । इमो वि तम्मि चेव गेण्हेज्जा ।

**गमणाऽऽगमणे गहणे, तिट्ठाणे संजमे विराहणया ।**
**महि सरि उम्मुग हरिया, कुंथू वासं रयो व सिया ॥४७९॥**

"**गमणागमणे०**" गाधा । '**महि**'त्ति, पुढवी । '**सरि**'त्ति, णदी । तीए भोम्मो आउकाओ होज्जा । **उम्मुग** त्ति, कदादि सागडिएहिं अगणिकाओ उद्दीविओ होज्जा, तं

१. परिहरउ पू० २ । २. भायणे दिन्नं लेवं घुट्टएणं पा० । दिन्ने लेवघट्टएणं पू० १ । हाणे दिण्णे पू० ।

संघट्टेज्जा । 'यत्राग्निस्तत्र वायुः', कुंथुमादिणो य पाणा लेवे लग्गया होज्जा । एतेण कारणेणं आता-पवयण-संजमाणं विराधणा । किंच, जधा पिंडेसणा–पाणेसणातो[1] भणियातो, ण एवं लेवेसणा । आयरिओ भणति–जे एवं भणंति ते अवियाणित्तूण सब्भावं । ते वत्तव्वा–लेवो अज्जकालितो न भवति, जेण दिट्ठो तेलोक्कदंसीहिं । कधं पुण ? उच्यते–जेण पाएसणाए तिविधं पायं भणितं अधाकडादि । एत्थ अप्पसपरिकम्माणं अवस्स लेवेण कज्जं । जं च **ओहणिज्जुत्तीए** इहं च लेवेसणा भणिया, तम्हा लेवो दिट्ठो तेलोक्कदंसीहिं । जं च भणसि–आतोवघातादी दोसा, हे चोदक ! । तेसिं–

**दोसाणं परिहारो, चोयग जयणाएँ कीरए तेसिं ।**
**पाते उ अलिप्पंते, ते दोसा होंतऽणेगगुणा ॥४८०॥**

"**दोसाणं०**" गाधा । कंठा । '**अणेगगुण**'त्ति अणेगप्पगारा, ते आयादीणं उवग्घाता भवंति । कधमिति चेत् ? उच्यते–

**उड्डादीणि उ विरसम्मि भुंजमाणस्स होंति आयाए ।**
**दुग्गंधि भायणं ति य, गरहति लोगो पवयणम्मि ॥४८१॥**

"**उड्डादीणि०**" गाधा । कंठा । किंच, जधा–

**[2]पवयणोवघाता अण्णे, वि अत्थि ते उ जयणाएँ कीरंति ।**
**आयमणभोयणाई, लेवे तव मच्छरो को णु ॥४८२॥**

"**पवयणोवघाता अण्णे वि०**" गाधा । कंठा । जधा अंबिलाऽऽयमणं काइयायमणं अणायमणं पात्रभोयणं मंडलीभोयणं चेति ।

**खंडम्मि मग्गियम्मी, लोणे दिण्णम्मि अवयवविणासो ।**
**अणुकंपादी पाणम्मि होति उदगस्स उ विणासो ॥४८३॥**

"**खंडम्मि०**" गाधा । अलित्ते पाते कम्मिइ कज्जे खंडे मग्गिते अविरतियाए 'खंड'ति काउं अणाभोगेणं सेंधवादिलोणं दिण्णं, ताधे अलित्ते अंबे भायणे तं पुढविक्कातियं विद्धंसति । '**अवयव**'त्ति, अंबावयवेहिं अधवा पाणए मग्गिते अणुकंपाए सा अविरतिया 'एते उदगस्स सायं न जाणंति' त्ति उदगं देज्जा । आदिशब्दादनाभोगेणं । वताणि वा से भज्जंतु, ताधे अंबावयवेहिं आउक्काओ विद्धंसिज्जति ।

**पूतलियलग्ग अगणी, पलीवणं गाममादिणं होज्जा ।**
**रोट्टपणगा तरुम्मिं, भिगु-कुंथादी य छट्ठम्मि ॥४८४॥**

---

१. **पादेसणातो** पा० । २. **पवयणघाया** पा० मु० ।

"**पूतलिय०**" गाधा। काएति अविरतियाए सइंगाला पूयलिया दिण्णा होज्जा, ताधे अंबाऽवयवेहिं विद्धंसति। अधवा तं चेव पादं डहेज्जा, ताधे अचेतंतस्स पलित्तं होज्जा। सहस त्ति छड्डिए वतिमादीहिं पलित्ताहिं गामो [1]डज्झेज्जा। आदिग्गहणेण गाउयदुगुणा दुगुणं [2]डज्झेज्जा, वाउक्कातो वि तत्थेव। वणस्सतिविराधणा—अतिछड्डाणं[3] रोट्टो दिण्णो होज्जा, सो विद्धंसति अंबभावेणं। पणओ वा भिग्गूहिं सम्मुच्छेज्जा, सो अण्ण-पाणेणं विराहिज्जति। तसकायविराधणा [4]भिग्गूहिं कुंथू जाता होज्जा, ते अंबभावेणं विराधिज्जंति। "**छट्ठम्मि**" त्ति तसकाए। एवं छण्ह वि कायाणं विराधणा अवस्सं।

**पातग्गहणम्मि उ देसियम्मि लेवेसणा वि खलु वुत्ता।**
**तम्हा उ आणणा लिंपणा य लेवस्स जयणाए ॥४८५॥**

"**पातग्गहणम्मि०**" गाधा। कंठा। चोदगो भणति—जति जतणाए कातव्वा आणणादी तो अहं जतणं भणामि जेण एते दोसा ण भवंति। आणणे ताव हत्थोवघातो, तम्हा गंतूण लिंपणा।

**हत्थोवघाय गंतूण लिंपणा सोसणा य हत्थम्मि।**
**सागारिए पभू जिंघणा य छक्कायजयणाए ॥४८६॥**

"**हत्थोवघाय०**" दारगाधा। '**गंतूण लिंपण**'त्ति अस्स [5]विभासा—

**चोयगवयणं गंतूण लिंपणा आणणे बहू दोसा।**
**संपातिमादिघातो, अहिउस्सग्गो य गहियम्मि ॥४८७॥**

"**चोयग०**" गाधा। आदिग्गहणेणं असंपातिमाण वि। अहिओ य कतादि होज्जा, ताधे '**उस्सग्गो**'त्ति पारिट्ठावणिया भवति। **आयरितो** भणति—

**एवं पि भाणभेदो, वियावडे अत्तणो उ उवघातो।**
**निस्संकियं च पायम्मि गेण्हणे इयरहा संका ॥४८८॥**

"**एवं पि भाण०**" गाधा। [6]उट्ठितो लेवं घेत्तुं घेत्तुं भाणे छुब्भति, तत्थ वियावडस्स विछुडेज्जा। एवं ताव[7] भाणभेदो भवति। आतोवघातो कधं ? सगडेण खुत्तिएणं अभिहम्मेज्जा। किंच पवयणोवघातो वि। ते पच्चक्खमेव पासंता जाणंति—एतेण असुतिणा लिप्पंति त्ति। इतरधा संका भवति—किं पात्रस्य उत पादस्य दुक्खंतस्स त्ति। '**गंतूण लिंपण**' त्ति गतं।

१. **डहेज्जा** पू० २। २. नास्ति पू० २। ३. **अतिच्छडाणं** पू० २। ४. **भिगूहिं** पू० २। ५. **व्याख्या** पा०। ६. **उद्धट्ठियतो** पा०। ७. **जाव** पू० २।

इयाणिं '**सोसण**'त्ति दारं–

**जति णेवं तो पुणरवि, आणेउं लिंपिऊण हत्थम्मि ।**
**अच्छति धारेमाणो, सद्दवणिक्खेवपरिहारी ॥४८९॥**

चोदगो भणति–जति एते दोसा तो आणेउं लिंपतु । किं पुण लिंपित्ता ? जं अहं भणामि तं कज्जउ । "**चोदेति पुण**" [१]गाधा । कंठा । [२]'**सद्दवणिक्खेवपरिहारं**' इच्छंतो एवं करेउ । आयरिओ भणति–

[३]**एवं पि हु उवघातो, आयाए संजमे पवयणे य ।**
**मुच्छादी पवडंते, तम्हा उ ण सोसए हत्थे ॥४९०॥**

"**एवं पि हु उव०**" गाथार्द्धम् । कधं आतादीणं विराधणा ? उच्यते–सो चिरं अच्छितो हत्थओ धरेंतो ताधे मुच्छाए पडितो, खाणुगादीसु आवडितस्स आतविराधणा । संजमे–जे पवडंतो विराधेति । पवयणे–पडंतो असुतियम्मि पडेज्जा । जम्हा एते दोसा तम्हा न सोसेतव्वं हत्थे । एत्थ य सव्वत्थ चोदगस्स अधाछंदो त्ति काउं चउगुरुगा आत-पवयण-संजमाणं । एवं आयरिओ सीसं पडिभणिऊणं अप्पणो जतणसामायारिं भणति–

**दुविहा य होंति पाता, जुण्णा य णवा य जे उ लिप्पंति ।**
**जुण्णे दाएऊणं, लिंपति पुच्छा य इयरेसिं ॥४९१॥**

"**दुविहा०**" गाधा । ते दुविधा पादा जे लिप्पंति जुण्णा य णवा य । तत्थ जे णवगा ते आपुच्छित्ता आयरियं अवस्सं लिंपितव्वं ति काउं लिंपति चेव । **इयरत्ति** णवा । जे पुण जुण्णा ते अवस्सं आयरियाणं दातव्वा । जधा–[४]एरिसो लेवो खमासमणो ! लिंपामि त्ति । जति ण दाएति, [५]मासलहुं । को दोसो अदाइते ? । उच्यते–

**पाडिच्छग-सेहाणं, णाऊणं कोई आगमण मायी ।**
**दढलेवे वि उ पाए, लिंपति मा तेसि दिज्जेज्जा ॥४९२॥**

**अहवा वि विभूसाए, लिंपति जा सेसगाण परिहाणी ।**
**अपडिच्छणे य दोसा, सेहे काए यतोऽदाए ॥४९३॥**

"**पाडिच्छग०**" गाधा । कंठा । "**अधवा**" गाधा । परिखुत्थएत्ति[६] जुण्णओ[७] त्ति काउं अजुण्णयं चेव लेवं विभूसाणिमित्तं लिंपंति[८] । तम्मि लित्ते भाणेण विणा जा सेसगाण साधूणं

१. गाथेयं बृ०भाष्यसत्का स्यादिति सम्भाव्यते । २. **सद्दवनिक्षेपः परि०** पू० १-२, पा० । ३. **एवं होउव०** पू० २ । ४. **एसेरिसो** पू० २ । ५. **मासं** पू० २ । ६. **परिखुड्डओ त्ति** पा० । ७. पू० १-२ नास्ति । ८. **लिंपति** पू० १-२ ।

परिहाणी तं पावति सो, जो सो मायी लिंपति। मा पडिच्छगाणं सेहाणं वा दिज्जिहिन्ति। तत्थ पादेहिं विणा जं पाडिच्छगाण पडिच्छिज्जंति तण्णिप्फण्णं, णाण-दंसण-चरित्ताण य वोच्छेओ। '**सेहे**'त्ति सेहो उवट्ठितो जा अभाणएणं विराधणा। जं सो [1]अपव्वाविज्जंतो कातविराहणं करेति, तण्णिप्फण्णं। जम्हा एते दोसा अदाइए तम्हा दाएतव्वं। दाएत्ता काए विधीए लेवो दातव्वो घेत्तव्वो वा ? उच्यते–

**पुव्वण्हे लेवगमं, लेवग्गहणं सुसंवरं काउं।**
**लेवस्स आणणा लिंपणा य जयणाएँ कायव्वा ॥४९४॥**

**पुव्वण्हें लेपगहणं, काहं ति चउत्थगं करेज्जाहि।**
**असहू वासियभत्तं, अकारऽलंभे व दिंतियरे ॥४९५॥**

'**पुव्वण्हे**' गाधा। अस्स विभासा[2]। "**पुव्वण्हे लेवगह०**" गाधा। साधुणा काउसग्गे चेव चिंतेतव्वं "किं अज्ज भाणाणि लिंपितव्वाणि ण व त्ति ?"। ताधे जति लिंपितव्वाणि ता पुव्वण्हे लेवगहणं [3]काहिति, चउत्थं करेति। अध ण सक्केति अब्भत्तट्ठं काउं तो दोसीणं गेण्हति। अध ण उवकरेति ण वा लब्भति दोसीणो तो इयरे साहुणो हिंडित्ता[4] मज्झण्हे देंति, पोरिसिं ण करेति।

**कतकितिकम्मो छंदेण छंदितो भणति लेव घिच्छामि।**
**तुब्भं वियाणिमट्ठो, आमं तं कित्तियं किं वा ॥४९६॥**

**सेसे वि पुच्छिऊणं, कयउस्सग्गो गुरूण णमिऊण।**
**मल्लग-रूए गेण्हइ, जति तेसिं कप्पितो होति ॥४९७॥**

"**कतकितिकम्मो०**" गाधाद्वयम्। आयरियाणं वंदणयं दातुं भणति–संदिसध !। आयरिया भणंति–छंदेणं। ताधे छंदिओ संतो भणति–लेवं गेण्हीहामो त्ति। आयरिए सेसे य साधुणो भणंति–तुब्भ वि अट्ठो, आणेज्जा। तत्थ जो भणति आमं, तं भणति–केत्तियं कं वा लेवं ? अट्ठतस्स इतरं चेत्यर्थः। जं भणति तं इच्छामि त्ति भणित्ता उवओगकाउसग्गं करेत्ता गुरुं [5]नमित्ता संदिसावेत्ता 'आवस्सिताए' त्ति काउं जति पात-वत्थाणं कप्पितो भवति, तओ चेव मल्लयं रूवं च गेण्हइ। अध अकप्पिओ, तो–

**गीयत्थपरिग्गहिते, अयाणओ रूय-मल्लए घेत्तुं।**
**छारं च तत्थ वच्चति, गहिए तसपाणरक्खट्ठा ॥४९८॥**

---

१. **अप्पव्वा०** पू० १-२ विना। २. **व्याख्या** पा०। ३. **काहंति** पू० २। ४. **हिंडंता** पू० २ विना। ५. **णमिउं** पू० २।

"**गीयत्थ०**" गाधा । कंठा । इदाणिं जं तं हेट्ठा भणितं '**सागारिए**'त्ति । अस्स व्याख्या–

**वच्चंतेण य दिट्ठं, सागारिदुचक्कगं तु अब्भासे ।**
**तत्थेव होइ गहणं, ण होति सो सागरियपिंडो ॥४९९॥**

"**वच्चंतेण य०**" गाधा । कंठा । '**अब्भास**' विसेसणं कीरति 'मा सागारियपिंडो'त्ति काउं वोलेहिंति[१] । '**पभु**'त्ति–

**गंतुं दुचक्कमूलं, अणुण्णविज्जा पभुं तु साहीणं ।**
**एत्थ य पभु त्ति भणिए, कोई गच्छे णिवसमीवं ॥५००॥**

**किं देमि त्ति णरवई, तुब्भं खरमक्खिया दुचक्कि त्ति ।**
**सो य पसत्थो लेवो, एत्थ य भद्देयरा दोसा ॥५०१॥**

"**गंतुं दुचक्क०**" गाहा । णाणुण्णवेति, मासं । तम्हा पच्छित्तभीरुणा अणुण्णवेत्तव्वो । को इति चेत् ? उच्यते–पहू अणुण्णवेयव्वो त्ति काउं कोति चिंतेति–रायं मोत्तुं को अण्णो पभू, तो रायं चेव अणुण्णवेमि त्ति रण्णो सगासं गंतुं धम्मलाभेति । तत्थ राया भणेज्जा–'किं देमि ?' । साधू भणति–तुब्भं सगडाणि तेल्लेण उवंगिताणि तेसिं जं होति तेण चोक्खो लेवो भवति, तं अणुजाणह मे । एत्थ '**भद्देयरा दोसा**' । इतरे त्ति पंतदोसा । भद्दओ भणेज्जा–"अहो णिम्ममत्ता भगवंतो जे एतं पि अयाचितं न गेण्हंति" । ताधे भणेज्जा–मम विसए सगडाणि तेल्लेण उवंगितव्वाणि[२] । पंतो भणेज्जा–अहो असुइणो नगरं सव्वं धरिसितं ति पदूसेज्जा घोसावेज्जा वा, जधा–मम रज्जे [३]मा कोति तेल्लेण सगडाणि उवंजउ त्ति, घयेण उवंजध । पडहओ भमितो ।

**तम्हा दुचक्कपतिणा, तस्संदिट्ठेण वा अणुण्णाते[४] ।**
**कटुगंधजाणणट्ठा, जिंघे णासं अघट्टंतो ॥५०२॥**

"**तम्हा दुच०**" पुव्वद्धं । जम्हा एते भद्द-पंतदोसा तम्हा णाणुण्णवेतव्वो राया । को अणुण्णवेतव्वो ? जो तस्स सगडस्स अधिपती, जो वा तेणं संदिट्ठतो, तमणुण्णवेत्ता । **जिंघणा य** त्ति । अस्स विभासा । कडुगंधजाणणट्ठा णासेण अच्छिवंतो ओसिंघति तेल्लस्स कडुओ गंधो ।

इदाणिं '**छक्कायजतण**'त्ति दारं ।

**हरिते बीएँ चले जुत्ते, वच्छे साणे जलट्ठिए ।**
**पुढवी संपातिमा सामा, महावाते महियाऽमिते ॥५०३॥**

१. **वोलेहिंति** पू० २ । २. **मक्खियव्वाणि** पा० । ३. **ण** पू० २ । ४. **०ण्णातो** ता० ।

"हरिते०" दारगाधा । 'हरिए बीए' त्ति । अनयोर्व्याख्या—

[१]हरिते बीएसु तहा, अणंतरे परंपरे य बिचउक्के ।
आता दुपदं च पयट्ठितं तु एत्थं तु चउभंगो ॥५०४॥

"हरिते०" गाधा । हरितेसु साधू अणंतरपतिट्ठितो णो परंपरपतिट्ठितो वा चउभंगो। एवं बीएसु वि चउभंगो । हरितेसु भंडी अणंतरपतिट्ठिता णो परंपरपतिट्ठिता चउभंगो । एवं बीएसु वि चउभंगो । **बि चउक्क** त्ति साधुम्मि हरितेसु एगो चउभंगो, बितिओ बीएसु। एवं भंडीए वि दो चउभंगा भणिता । **"आता दुपतं च पतिट्ठितं ति एत्थं पि चउभंगा"** । **दो** इति वाक्यशेषः। **'आय'**त्ति साधू । हरितेसु साधू भंडी त अणंतरपतिट्ठिताणि णो परंपरपतिट्ठिताणि चउभंगो । एवं बीएसु वि चउभंगो ॥ इदाणिं एतेसिं चेव पच्छित्तं भण्णति—

**चउरो लहुगा गुरुगा, मासो लहु गुरु य पणग लहु गुरुयं ।**
**छसु परितऽणंत मीसे, बीजे य अणंतर परे य ॥५०५॥**

"**चउरो०**" गाधा । जत्थ परित्तेसु हरितेसु साधू अणंतरपतिट्ठितो णो परंपरपतिट्ठिओ, तत्थ ह्व । जत्थ वि परंपरपइट्ठिओ णो अणंतरपतिट्ठिओ तस्स वि ह्व । ततियभंगे—[२]अणंतरपरंपरपतिट्ठितो दो चउलहूणि, चरिमो सुद्धो । एवं भंडीए वि । परित्त-हरितेसु अणंतरपइट्ठिताए परंपरपतिट्ठियाए य, आदिमभंगेसु दोसु दो[३] चउलहू । ततियभंगे दो चउ लहूणि, चरिमे सुद्धो । जत्थ परित्त-हरिएसु साधू भंडी य अणंतरपतिट्ठियाणि णो परंपरपतिट्ठिताणि, एत्थ आदिमभंगेसु दोसु दो दो चउलहूणि । तइयभंगे चत्तारि चउलहूणि। चरिमे सुद्धो। जत्थ अणंताणि हरिताणि तत्थ तिसु वि चउभंगेसु एते चेव चउगुरुगा । चरिमेसु तिण्ह वि सुद्धो । जत्थ मीसयाणि हरिताणि तत्थ एतेसु चेव ट्ठाणेसु परित्तेसु मासलहू, अणंतेसु मासगुरू। चरिमेसु तिण्ह वि सुद्धो । बितिएसु परित्तेसु सचित्तेसु मीसेसु वा तेसु चेव भंगेसु पंचरातिंदिया लहुगा । चरिमेसु तिण्ह वि सुद्धो । अणंतेसु पंचरातिंदिया गुरुगा। चरिमेसु ३ सुद्धो । छसु त्ति छसु चउभंगेसु । अधवा छसु त्ति परित्त-हरिएसु सचित्तेसु १ अणंतहरिएसु सचित्तेसु २ परित्तहरिएसु मीसेसु ३ अणंतहरिएसु मीसेसु ४ परित्तबीएसु ५ अणंतबीएसु ६ । इमं सेसदारपच्छित्तं ।

---

१. हरिते बीएँ पतिट्ठिय, अणंतर परंपरे य बोधव्वे ।
परिताणंते य तहा, चउभंगो होति नायव्वो ॥५०१॥ [ वृत्तौ स्वीकृतः पाठः ॥ ]

२. पा० प्रतौ न । ३. पू० २ नास्ति ।

**चल-जुत्त-वच्छ-महिया-तसेसु सामाएँ चेव चतुलहुगा ।**
**दव्वचल साण गुरुगा, मासो लहुओ उ अमियम्मि ॥५०६॥[१]**

"**चल-जुत्त०**" गाधा । एस वक्खाणिज्जंतेसु चेव दारेसु भण्णिहिति । तत्थ चलं दुविधं—

**दव्वे भावे य चलं, दव्वम्मी दुट्ठियं तु जं दुपयं ।**
**आयाएँ संजमम्मि य, दुविहा उ विराहणा तत्थ ॥५०७॥**

"**दव्वे भावे०**" गाधा । दव्वचलं नाम जं सगडं दुट्ठितं तहिं गेण्हति, चतुगुरू । '**आतविराहण**' त्ति काउं । आतविराहणा-सगडे [२]खुइते अभिहतो मरेज्जा । संजमविराहणा—संचालिज्जंते पाणजातितविराधणा भवति ।

**भावचल गंतुकामं, गोणाईअंतराइयं तत्थ ।**
**जुत्ते वि अंतरायं, वित्तसचलणे य आयाए ॥५०८॥**

भावचलं [३]जं गंतुकामं जोतिज्जितुकामं इत्यर्थः । तत्थ जाव लेवो घेप्पति ताव अंतराइयं होति, गोणाणं चारि-पाणियस्स निरुद्धाणं । आदिग्गहणेणं मणुस्साण वि । तम्मि भावचले गेण्हति चउलहुगा । **चले** त्ति गतं ।

इताणिं '**जुत्ते**'त्ति, दारं । '**जुत्ते**' वि 'पच्छद्धं । जुत्तं णाम जं जुत्तयं बइल्लेहिं गच्छंतं[४] वारेत्ता जति गेण्हति चउलहुगा । सो चेव अंतरायदोसो । अण्णो य इमो—तें बइल्ला वित्तसेज्जा, तत्थ भंडीए चालियाए चलणो अक्कमेज्जा, आयविराहणा संजमविराहणा य । तसातिपाते एत्थ वि ह्न ।

इताणिं वच्छ-साणा दो वि दारा एगट्ठा [५]भण्णंति । जम्मि सगडे वच्छो बद्धो जत्थ वा साणो ठिएल्लओ बद्धओ वा । एत्थ वच्छे ह्ला । साणे ह्ला । को दोसो ? उच्यते—

**वच्छो भएण णासति, भंडिक्खोभे य आयवावत्ती ।**
**आया पवयण साणे, काया य भएण णासंते ॥५०९॥**

"**वच्छो भएण०**" गाधा । कंठा ।

**जो चेव य हरिएसुं, सो चेव गमो उ उदग पुढवीए ।**

जलट्ठिए, पुढवी य, दो वि [६]दाराणि एगगाहापुव्वद्धेण भणति । '[७]**जो चेव**' पुव्वद्धं ।

---

१. गाथेयं मु० टीका प्रतौ क्र० ५०८ रूपेण दृश्यते । २. **खुत्तिए** पू० १, पा० । ३. पू० २, पा० नास्ति । ४ **०हिं गच्छति तं ठवावेत्ता ज०** पू० १-२ । ५. **भणति** पू० २ । ६. **दारे गाहद्धेणं भण०** पा० २ । ७. **सोच्चेव** पू० २ ।

जधा हरिएसु परित्तेसु सचित्तेसु मीसएसु त भंगा पच्छित्तं च भणितं, तधा एत्थ वि भाणियव्वं।

**संपातिमा तसगणा, सामाए होइ चउभंगो ॥५१०॥**

"**संपातिमा साम**"त्ति । के पुण ते संपातिमा न ज्ञायन्ते किं त्रसाः स्थावरा वेति ? [१]अत्रोच्यते–संपातिमा तसगणा न स्थावरा । तेसु संपातिमेसु पडंतेसु जति गेण्हति चउलहुगा । "**सामाए होति चउभंगो**" त्ति । सामा रत्ती । तत्थ रत्तिं गेण्हेत्ता रत्तिं देति लेवं भाणस्स चउलहुगा । दोहिं वि गुरुगं । रत्तिं गेण्हित्ता दिवसतो देति चउलहुगा । तवगुरुगा काललहू। दिवसतो गेण्हित्ता रत्तिं देति चउलहुगा ह्व ४। तवलहुगा कालगुरू । दिवसतो गेण्हित्ता दिवसतो देति सुद्धो । असुद्धे जेण असुद्धो तमावज्जति । 'महावाए महिताए अमिते य' एते दारे एगट्ठे चेव गाहाए भणति–

**वायम्मि वायमाणे, महियाए चेव पवडमाणीए ।**
**नाणुण्णायं गहणं, अमियस्स य मा विगिंचणया ॥५११॥**

वायम्मि वायमाणे संपतमाणा य वा वि महिताए [२]धूमियाए त्ति भणियं होति । ण मितो अमितो । महावाते तस-थावराणं तदुद्धुताणं वधो भवति । महावाते गेण्हति चउलहुगा । महिताए वि चउलहुगा । अमितं गेण्हति मासलहुं ।

**एतद्दोसविमुक्कं, घेत्तुं छारेण अक्कमित्ताणं ।**
**चीरेण बंधिऊणं, गुरुमूल पडिक्कमाऽऽलोए ॥५१२॥**

"**एतद्दोस०**" गाधा । जे एते हरितादयो दोसा भणिता, एतेहिं विमुक्कं 'मा संपातिमाणं वधो भविस्सति' तेण छारेण अक्कमितव्वं । सेसं कंठं ।

**दंसिय छंदिय गुरु सेसए य ओमत्थियस्स भाणस्स ।**
**काउं चीरं उवरिं, रूयं च छुभेज्ज तो लेवं ॥५१३॥**

गुरु सेसएसु त्ति, आयरियं सेसे य साहुणो, छंदेतुं ति निमंतेउं, जस्स अट्ठो तस्स दाउं, पच्छा ओमंथितस्स[३] । कंठं ।

**अंगुट्ठ-पएसिणि-मज्झिमाहिं घेत्तुं घणं ततो चीरं ।**
**आलिंपिऊण भाणं, एक्कं दो तिण्णि वा घट्टे ॥५१४॥**

**अण्णोण्णे अंकम्मि उ अण्णं घट्टेति वारवारेणं ।**
**आणेति तमेव दिणे, दवं रएउं अभत्तट्ठी ॥५१५॥**

---

१. **अत उच्यते** पू० २ । २. **भूमि०** पू० २ । ३. **ओमत्थियस्स** पू० १-२, पा० ।

अभतट्ठीणं दाउं, अण्णेसिं वा अहिंडमाणाणं ।
हिंडेज्ज असंथरणे असती घेत्तुं अरइयं तु ॥५१६॥

ण तरिज्जा जति तिण्णि उ, हिंडावेउं तओ णु छारेणं ।
ओयत्तेउं हिंडंति, अण्णे व दवं से गिण्हंति ॥५१७॥

लित्थारियाणिं जाणि उ, घट्टगमाईणि तत्थ लेवेण ।
संजमभूतिणिमित्तं, ताइं भूईएँ लिंपिज्जा ॥५१८॥

एवं लेवग्गहणं, आणयणं लिंपणा य जयणा य ।
भणियाणि अतो वोच्छं, परिकम्मविहिं तु लित्तस्स ॥५१९॥

लित्ते छाणिय छारो, घणेण चीरेण बंधिउं उण्हे ।
उव्वत्तण परियत्तण, अंछिय धोवे पुणो लेवो ॥५२०॥

काउं सरयत्ताणं, पत्ताबंधं अबंधगं कुज्जा ।
साणाइरक्खणट्ठा, पमज्ज छाउण्हसंकमणा ॥५२१॥

तद्दिवसं पडिलेहा, कुंभमुहाईण होइ कायव्वा ।
छण्णे य निसिं कुज्जा, कयकज्जाणं विवेगो उ ॥५२२॥

अट्ठगहेउं लेवाहियं तु सेसं सरूवगं पीसे ।
अधवा वि ण दायव्वो, सरूयगं छारें तो उज्झे ॥५२३॥

"अंगुट्ठ०" गाधाओ दस कंठाओ ॥

पढमचरिमाउ सिसिरे, गिम्हे अद्धं तु तासि वज्जित्ता ।
पायं ठवे सिणेहादिरक्खणट्ठा पवेसे वा ॥५२४॥

उवयोगं च अभिक्खं, करेति वासादि-साणरक्खट्ठा ।
वावारेति व अण्णे, गिलाणमादीसु कज्जेसु ॥५२५॥

एक्को य जहण्णेणं, बिय तिय चत्तारि पंच उक्कोसा ।
संजमहेउं लेवो, वज्जित्ता गारव विभूसं ॥५२६॥

अणवट्टंते तह वि उ, सव्वं अवणेत्तु तो पुणो लिंपे ।
तज्जाय सचोप्पडयं, घट्ट रएउं तु जं धोवे ॥५२७॥

"पढम-चरिमाओ०" गाधा । सिसिरो"त्ति हेमंतो । तम्मि पढमाए पोरिसीए

उग्घाडाए उण्हे दायव्वं भायणं । '**चरिमे**'त्ति चउत्थी, ताए अणोगाढाए पडिपवेसितव्वं । सेसं कंठं ॥ अण्णो तज्जातलेवो, सो केरिसो ? । उच्यते—"**तज्जात सचोप्पडगं घट्ट रएतुं [१]तु जं धोवे**"॥

**तज्जाय-जुत्तिलेवो, दुचक्कलेवो य होइ णायव्वो ।**
**मुद्दियणावाबंधो, तेणगबंधो य पडिकुट्ठो ॥५२८॥**

तज्जातलेवो णाम जं लाउयादिपादं तेल्लादिणा [२]सचोप्पडं तत्थ य धूली बहुती लग्गिता, तं घट्टेत्ता रएत्ता कप्पे कए तज्जायलेवो भवति । आह—कतिविधो लेवो ? उच्यते—तिविहो । "**तज्जातजुत्ति०**" पुव्वद्धं । अस्स विभासा—

**जुत्ती उ पत्थरायी, पडिकुट्ठा सा उ सण्णिही काउं ॥**
**दय सुकुमाल असण्णिहि, दुचक्कलेवो अतो इट्ठो ॥५२९॥**

"**जुत्ती उ०**" गाधा । आदिग्गहणेणं सक्करा [३]किट्टो केयारमट्टियादी । सव्वेसु एतेसु सगडलेवो सुंदरो । जेण तम्मि सुकुमालत्तणओ पाणजातीया दीसंति । तेसु दीसमाणेसु दया कीरति । एतेण कारणेणं सगडलेवो सुंदरो ।

**भिज्जेज्ज लिप्पमाणं, लित्तं वा असइए पुणो बंधे ।**
**मुद्दियणावाबंधे, ण तेण बंधेण बंधेज्जा ॥५३०॥**

"**भिज्जेज्ज०**" पुव्वद्धं । "**असतिए**" त्ति, जं अण्णस्स पातस्स ताधे बंधणविधिं भणति । "**मुद्दिय०**" पच्छद्धं । कंठं । आह—किं संजमणिमित्तं लेवो दिज्जति ? अह विभूसणनिमित्तं ? उच्यते—

**संजमहेउं लेवो ण विभूसाए वयंति तित्थयरा ।**
**सति-असतीदिट्ठंतो, विभूसाए होंति चउगुरुगा ॥५३१॥**

"**संजम०**" गाधा । संजमहेउं पुण लेवे दिज्जमाणे जति सोभा भवति तो वि संजमो चेव । जधा सतीए तुल्ले विभूसणे कुलायारणिमित्तं अदोसं । इयरीए जारतोसणणिमित्तं सदोसं । एवं जधा सति(ती)-असतीओ तहा साहू, जधा विभूसणं तहा लेवो । जधा कुलायारो तहा संजमो । जधा जारतोसणं तधा असंजमो । सेसं कंठं ।

**खर अयसि-कुसंभ सरिसव, कमेण उक्कोस मज्झिम जहण्णो ।**
**णवणीए सप्पि वसा, गुले य लोणे अलेवो उ ॥५३२॥**

---

१. ततो **धोवे** पा० । **धावे** पू० २ । २. **चोप्पडं** पू० २ । ३. **कुट्टो** पू० २ ।

**पढिय सुय गुणियमगुणिय, धारमधार उवउत्तो परिहरति ।**
**आलोयायरियादी, आयरिओ विसोहिकारो से ॥५३३॥**

खरसण्ह(ण्ण?)एण उक्कोसो, अतसि-कुसुंभेहिं मज्झिमो, सरिसवतेल्लेण जहण्णो, नवणीय-सप्पि-वसाहिउवग्गे[1] अलेवो । [2]गुड-लोणभरिएसु सगडेसु खरसण्होवंगेसु वि अलेवो । ण घेत्तव्वो त्ति भणितं होति । सेस कंठं । **लेवकप्पिओ समत्तो** ॥छ॥

इदाणिं पिंडकप्पितो । चिरं **आयारग्गपिंडेसणातो** । इदाणिं **दसवेतालित-पिंडेसणा**ओ । सुत्तं एतं—

**अप्पत्ते अकहेत्ता, अणहिगयऽपरिच्छणे य चउगुरुगा ।**
**दोहिं गुरू तवगुरुगा, कालगुरू दोहि वी लहुगा ॥५३४॥**

**पढिए य कहिय अहिगय, परिहरती पिंडकप्पितो एसो ।**
**तिविहं तीहिँ विसुद्धं, परिहर णवगेण भेदेण ॥५३५॥**

"**अप्पत्ते०**" गाधा । विभासितव्वा पिंडाहिगारेणं । "**तिविधं**" ति उग्गमअसुद्धं । उप्पादणअसुद्धं । एसणाअसुद्धं । एतं तिविहं तीहिं मणेण ण गेण्हति ण गेण्हावेति गेण्हंतं णाणुजाणति । एवं वायाए वि, काएण वि । एते तिण्णि तिया णव । एत्थ **पिंडणिज्जुत्ती** सव्वा विभासितव्वा । सा सट्ठाणे च्चेव विभासिज्जिहिति । इहं पुण॰ पच्छित्तं भण्णति उग्गमदोसाणं सोलसण्हं, सोलसण्ह य उप्पायणादोसाणं, दसण्ह य एसणादोसाणं । तत्थ ताव सोलसण्हं उग्गमदोसाणं भण्णति—

**गुरुगा अहे य चरमतिग मीस बायर सपच्चवायहडे ।**
**कड पूइए य गुरुगो, अज्झोयरए य चरमदुगे ॥५३६॥**

"**गुरुगा०**" गाधा । आधाकम्मं गेण्हति चउगुरुगा ॥ '**चरिम तिय**'त्ति, उद्देसियं दुविधं—ओहेण विभागेण य । विभागो बारसविधो । तं जधा—उद्देसितं, कडं, कम्मं । उद्देसितं चउव्विधं । तं जधा—उद्देसितं समुद्देसितं आदेसितं समादेसितं । कडं पि चतुव्विधं । तं जधा—उद्देसकडं समुद्देसकडं आदेसकडं समादेसकडं ति । कम्मं पि चउव्विधं । तं जधा—उद्देसकम्मं समुद्देसकम्मं आदेसकम्मं समाएसकम्मं ति । एते तिण्णि चउक्कया बारस । एतेसु पुण जं जावंतियं तं उद्देसं भण्णति । जं पासंडाणं तं समुद्देसं भण्णति । जं समणाणं तं आदेसं भण्णति । जं [3]णिग्गंथाणं उद्दिस्स कीरति तं समादेसितं भण्णति । एतम्मि बारसविधे विभागुद्देसिए जं चरिमं तिगं समुद्देसकम्मं आदेसकम्मं समादेसकम्मं, एतम्मि चउगुरुगा तव-कालविसेसिया ह्वा । ह्वा । ह्वा ।[4] '**मीस**'त्ति, मीसजातं । तं तिविधं । जावंतियमीसं,

१. **०उवम्मि अले०** पू० १ । **०हि उवंगिते अ०** पा० । **०हि उवंजे** पू० २। २. **गुल०** पू० २। ३. **निग्गंथे** पा० । ४. ह्वी ह्वी ह्वी पू० २ ।

पासंडियमीसं, सघरमीसं। एत्थ पासंडिमीसजाते सघरमीसजाते गुरुगा[१] । '**बादर**'त्ति, पाहुडिता दुविधा–सुहुमा बादरा य। एत्थ बादराए गुरुगा ह्वा । '**सपच्चवाताहडे**' त्ति । अभिहडे जत्थ जत्थ सपच्चवायाभिहडं तत्थ तत्थ चउगुरुगा । एते ताव जेसु जेसु गुरुगा ते ते उग्गमभेदा भणिता ।

इदाणिं जेसु जेसु मासगुरुं ते ते भणति । कडे चउव्विधे वि मासगुरू तवकाल विसेसितं :· । :· । :· । :· । '**पूतिए य**'त्ति, भावपूतियं दुविधं–सुहुमं बादरं च । सुहुमे णत्थि पच्छित्तं । बादरं दुविधं–उवकरणे भत्ते य । एत्थ भत्त-पाणपूतीए मासगुरुं । **अज्झोवरए य चरिमदुए** त्ति । अज्झोयरयं तिविधं–जावंतियअज्झोयरयं पासंडअज्झोयरयं सघर–अज्झोयरयं। एत्थ पासंडअज्झोयरए सघरअज्झोयरए य मासगुरुं :· । :·। एते ताव गुरुगा पच्छित्ता गता ।

इदाणिं **लहुगपच्छित्ता** जत्थ जत्थ तं भण्णति–

**ओह-विभागुद्देसे, चिरठविए पागडे य उवगरणे ।**
**लोगुत्तर पामिच्चे, परियट्टिय कीय परभावे ॥५३७॥**

**सग्गामभिहडि गंठी, जहण्ण जावंति ओयरे लहुओ ।**
**इत्तरठविए सुहुमा, पणगं लहुगा य सेसेसु ॥५३८॥**

"**ओह-विभागु०**" गाधाद्वयम् । ओहुद्देसिए मासलहुं । विभागुद्देसिए उद्देसिए समुद्देसिए आदेसिए समादेसिए य मासलहुं, तवकालविसेसियं । मासलहुं :· । :· । :· । :· । ठवितं[२] दुविधं–चिरठवितं, इत्तरठवितं च । एत्थ चिरठविए मासलहुं । पागडकरणं[३] दुविधं–पागडकरणं, पगासकरणं च । तत्थ पागडकरणे मासलहुं । उवगरणपूतीए मासलहुं । पामिच्चं दुविधं–लोइयं लोगुत्तरं च । तत्थ लोउत्तरियपामिच्चे मासलहुं । परियट्टियमवि दुविहं–लोइयं लोउत्तरं च । तत्थ लोउत्तरपरियट्टिए मासलहुं । कीतं पि दुविधं–दव्वकीतं भावकीतं च । दव्वकीतं दुविधं–

आतदव्वकीतं परदव्वकीतं च । एवं भावे वि । एत्थ परभावकीते मासलहुं । '**सग्गाम अभिहडे**' त्ति, सग्गामाभिहडे मासलहुं । '**गंठि**' त्ति पिहिदुब्भिण्णं–जत्थ गुल-घतादिभायणस्स पोत्तेण वा चम्मेण वा ओहाडेत्ता दोरेणं गंठी दिण्णेल्लिया गंठिमुद्दा वा । एत्थ मासलहुं। मालोहडं दुविधं–जहण्णयं उक्कोसयं च । एत्थ जहण्णमालोहडे मासलहुं, जावंतिए-अज्झोवरए मासलहुं । एतं ताव जत्थ जत्थ मासलहुं तं तं भणितं ।

इदाणिं जत्थ जत्थ पंचरातिंदिया तं तं भण्णति–इत्तरठविते पंचरातिंदिया । '**सुहुमे**'त्ति सुहुमपाहुडियाए पंचरातिंदिया । "**लहुगा य सेसेसु**" त्ति, जे अण्णे उग्गमदोसा तेसु सव्वेसु

१. ॐ ॐ पू० २ । २. **ठविकं** पू० २ । ३. **पादोकरणं** पा० । **पाओकरणं** पू० १-२ ।

चउलहुगा । तं जधा—१ उद्देसियकम्मे २ जावंतियमीसजाए ३ पगासकरणे ४ आतदव्वकीते ५ परदव्वकीते ६ आतभावकीते ७ पामिच्चे लोतिए, ८ परियट्टिते लोतिए ९ परगाममभिहडे णिप्पच्चवाए १० पिहिओभिण्णे ११ कवाडुब्भिण्णे १२ उक्कोसमालोहडे १३ अच्छिज्जे १४ [१]अणिसिट्ठे । एतेसु सव्वेसु चउलहुगा । **उग्गमो समत्तो** । छ ॥

इदाणिं **उप्पादणा**दोसेसु सोलससु पच्छित्तं भण्णति—

**दुविह णिमित्ते लोभे, गुरुगा मायाएँ मासियं गुरुयं ।**
**सुहुमे वयणे लहुओ, सेसे लहुगा य मूलं च ॥५३९॥**

"**दुविह णिमित्ते०**" गाधा । निमित्तं तिविधं—तीयं, पडुप्पण्णं, अणागतं च । एत्थ पडुप्पण्णे अणागते य निमित्ते लोभे य चउगुरुगा । मायाए मासगुरुं । '**सुहुमे**' त्ति सुहुमतेगिच्छे वयणसंथवे य मासलहुं । जे अण्णे उप्पायणदोसा तेसु चउलहुगा । णवरं मूलकम्मे मूलं ।

इदाणिं दससु एसणादोसेसु पच्छित्तं भण्णति । संकिए पणुवीसाए दोसाणं जं संकइ तमावज्जति ।—

**मक्खिते[२] ससिणिद्धे, पणगं लहुगा दुगुंछ संसत्ते ।**
**उक्कुट्टऽणंते गुरुगो, सेसे सव्वेसु मासलहू ॥५४०॥**

"**मक्खिते ससि०**" गाधा । तत्थ ताव पुढविकाइयससरक्खमक्खितेणं हत्थेणं मत्तेण वा गेण्हति पंचरातिंदिया । आउक्काएणं ससिणिद्धेणं हत्थेणं गेण्हति पंचरातिंदिया । अचित्त-मक्खितेणं विष्ठा-मूत्र-मद्य-मांस-लसुन-पलंडुमादीहिं दुगुंछिएहिं मक्खिएणं गेण्हति चउलहुगा। अचित्तेहिं गुल-घय-तेल्लादीहिं कीडियासंसत्तेहिं मक्खितेणं हत्थेणं [३]मत्तेण वा गेण्हति चउलहुगा । पुरेकम्म-पच्छकम्मेहिं चउलहुं । उक्कुट्टकतेण अणंतेणं मासगुरू । एवं सण्णिरे वि अणंते मासगुरू । '**सेसेसु**' त्ति, परित्तउक्कुट्ट-सण्णिरेसु मासलहुं । मीसएणं सव्वत्थ मासलहुं । [४]परित्तेणं अणंतेणं मासगुरुं । **सव्वेसु मासलहुं** ति मट्टियालित्तहत्थाणं जत्तिया भेदा सेडियादि तेसु सव्वेसु मासलहुं । णिक्खित्ते इमा गाधा—

**चउलहुगा चउगुरुगा, मासो लहु गुरु य पणग लहु गुरुगं ।**
**छसु परितऽणंत मीसे, बीए य अणंतर परे य ॥५४१॥**

**चउलहुगा०** गाहा । परित्तसचित्तअणंतरपतिट्ठियं[५] गेण्हति ह्व । परंपरपतिट्ठितं गेण्हति ०।, मीसते अणंतरे ०।, परंपरे पंचरातिंदिया लहुगा, अणंते एते च्चेव पच्छित्ता गुरुगा । बीएसु परित्तेसुं अणंतरे परंपरे वा पंचरातिंदिया लहुगा । अणंतेसु गुरुगा । तसकाए अणंतरपतिट्ठिते ह्व।

१. **अणिसट्ठे** पू० २. । २. **ससरक्खे ससि०** वृत्त्याम् । ३. पू० २ न । ४. **परित्ते अ०** पू० २ । ५. ०**परिट्ठियं** पू० २ । - **मिश्रे परीत्ते सर्वत्र मासलघु, अनन्ते मासगुरु** बृ० क० वृत्तौ । पृ० १५६॥

परंपरपतिट्ठिते. ०। **अण्णे** भणंति-सचित्तअणंतरपतिट्ठियाओ गेण्हति चउलहुगा । परंपरे वि चउलहुगा । एवं परित्ते अणंते अणंतराओ वा परंपराओ वा गेण्हति चउगुरुगा । जत्थ मीसए पतिट्ठियं तत्थ परित्ते मास ०।।, अणंते [१]मासगुरू । एवं परंपरे वि । बीएसु तहेव। पिहिय-साहरणाणि दो वि एगगाहापुव्वद्धेण भण्णति–

**एमेव य पिहियम्मी, लहुगा दव्वम्मि चेव अपरिणए ।**
**वीसुम्मीसे पणगं, अणंतबीए य पणग गुरू ।।५४२।।**

"**एमेव०**" पुव्वद्धं । जधा णिक्खित्ते पच्छित्तं भणितं एवं जेणं दव्वेणं सचित्ताचित्तमीसएणं पिहितं, तधा एत्थ वि पच्छित्तं । णवरि अचित्तेण गुरुगेण [२]पिहिते चतुगुरुगा । साहरणं णाम जेण मत्तेण भिक्खं दातुकामो तत्थ जति किंचि छूढयं, तं अण्णत्थ साहरित्ता तेण देति । एत्थ जं दव्वं साहरिज्जति तं जं अपरिणतं तम्मि तं चेव (ह्व) पच्छित्तं, कायनिप्फण्णं वा । गुरुगे अचित्ते ते चेव चउगुरुगा । आयविराधणत्ति काउं दायए पगलिते णपुंसगे य चउगुरुगा । उम्मीसे सचित्तअणंतमीसे ह्व । मीसुम्मीसे मासो त्ति अणंते चेव ।। सचित्तपरित्तमीसे ह्व । परित्त-मीसुम्मीसे ।।०।। बीयुम्मीसे पणगं, परित्ते अणंतबीए य पणगं गुरुं। पुढविकातियादीहिं तिहिं उम्मीसे जधा णिक्खित्ते पच्छित्तं । [३]दव्वापरिणए कायनिप्फण्णं, भावापरिणते वि तं चेव । "**दोण्हं तु भुंजमाणाणं एगो तत्थ णिमंतए**" (दश० अ० ५ गा० ३७) एत्थ लित्ते तिसु भंगेसु सट्ठाणपच्छित्तं । चरिमभंगे अणेसणाए चउगुरुगा। छड्डिए तिसु भंगेसु सट्ठाणपच्छित्तं, चरिमे अणाइण्णं ति चउलहुगा ।

**संजोग सइंगाले, अणंतमीसे वि चउगुरू होंति ।**
**वीसुम्मीसे मासो, सेस लघुका उ सव्वेसु ।।५४३।।**

संजोयणाए अंतो बाहिं च चउगुरुगा । अधवा बाहिं ह्व । पमाणातिरित्तं आहारेति ह्व। सइंगाले ह्वा । सधूमे ह्वा । णिक्कारणे आहारेति ।।०। '**सेसे लहुगा उ सव्वेसु**' त्ति गहणेसणाए घासेसणाए च इत्यर्थः । **पिंडकप्पिओ** गतो ।।छ।।

इदाणिं **सेज्जाकप्पितो** । एत्थ वि 'अप्पत्ते अकज्जे(हे)त्ता' सुत्तं । **ओहणिज्जुत्तीए केसिं** चि णत्थि, तीए । सा य–

**दुविहा [ य ] होति[४] सेज्जा, दव्वे भावे य दव्व खायाती ।**
**साहूहिँ परिग्गहिया, ते च्चेव उ भावओ सेज्जा ।।५४४।।**

"**दुविहा [ य ] होति[५] सेज्जा०**" गाधा । कंठा । तीए भावसेज्जाए ।

१. **मास ।।०।।** पू० २ । २. **पिहितेण** पू० २ विना। ३. **दव्वादप०** पू० २ । ४-५. **हवंति** पू० २ विना।

**रक्खण गहणे तु तहा, सेज्जाकप्पो उ होइ दुविहो उ ।**
**सुण्णे बाल गिलाणे, अव्वत्ताऽऽरोवणा भणिया ॥५४५॥**

"**रक्खण०**" गाधा । सेज्जाकप्पिओ दुविहो–रक्खणे गहणे य । तत्थ **रक्खणं** ति वसधी रक्खितव्वा । भिक्खादीणं गच्छंतेहिं जइ सुण्णं करेंति, बालं वा गिलाणं वा अव्वत्तं[१] वा ठवेंति वसहीपालं तो, **आरोवण** त्ति पच्छित्तं । तं च इमं–

**पढमम्मि य चउलहुया, सेसेसुं मासियं मुणेयव्वं ।**
**दोहि गुरू इक्केणं, चउत्थपए दोहि वी लहुयं ॥५४६॥**

"**पढमम्मि**" गाधा । '**पढमं**' ति सुत्तकमपामण्णातो [२]सुण्णं भण्णति । सुण्णं[३] जति वसधिं करेंति चउलहुगा । दोहिं वि गुरुगा । बालं ठवेंति मासलहुं । तवगुरु काललहुं । गिलाणं ठवेंति मासलहुं । तवलहुं कालगुरु । '**अव्वत्तो**' त्ति अगीतत्थो । तं जइ ठवेंति मासलहुं । दोहि वि लहुगं, एतं[४] ताव पच्छित्तं भणियं ।

इदाणिं एतेसिं चेव दोसे भणति[५] । तत्थ पढमं ताव सुण्णे दोसा भण्णंति–

**मिच्छत्त बडुग चारण भडाण मरणं तिरिक्ख-मणुयाणं ।**
**आदेस वाल निक्केयणे य सुण्णे भवे दोसा ॥५४७॥**

"**मिच्छत्त बडुग०**" दारगाधा । '**मिच्छत्त**'त्ति । अस्स विभासा–

**सोच्चा पत्तिमपत्तिय, अकयण्णु अदक्खिणा दुविह छेदो ।**
**भरियभरागमणिच्छुभ, गरिहा ण लभंति वऽण्णत्थ ॥५४८॥**

**भेदो य मासकप्पे, जदलंभे विहारादि पावते अण्णं ।**
**बहिभुत्त णिसागमणे, गरिह विणासा य सविसेसा ॥५४९॥**

"**सोच्चा पत्ति०**" गाधाद्वयम् । ते साधू सुण्णं वसधिं काउं गता सव्वभंडगमाताए । सागारिएणं सुण्णा वसधी दिट्ठा । सो पुच्छति–कहिं साधू ? घरेल्लिया भणंति–अवस्स गता । तेसिं सोच्चा जति तस्स पत्तियं भवति जधा–जति गता णाम, तो चउलहुगा । अध से अपत्तियं भवति यथा–'अकृतज्ञा'स्ते निस्नेहा, तो अणापुच्छाए गता । अथवा अदाक्षिण्यास्ते एवं उवयारं चेव ण याणंति जधा आपुच्छितव्वयं, तो चउगुरुगा । दुविधच्छेदो नाम-सो पदुट्ठो तेसिं अण्णेसिं वा साधूणं तद्दव्व–अण्णदव्व–वोच्छेदं वा करेज्जा । ताधे भरिएहिं भाणेहिं आगता सेज्जातरो ण देति ठाउं कसाइतओ, दिया णिछुब्भति ह्व । तेहिं भाणेहिं भरिएहिं ओगलंत–

१. **असुत्तं वा** पू० १ । २. पू० २ प्रतौ न । ३. **सुण्णा** पू० १-२ । ४. **एवं** पा० । ५. **दोसा भण्णंति** पा० ।

गलंतेहिं अण्णं वसधिं मग्गमाणा आगाढादिपरितावणानिप्फण्णं, ह्व । गरहिज्जंति य, किं [1]तुब्भेहि भुज्जएहिं कम्मेहिं णिच्छूढा ? । ताधे अण्णत्थ वि ण लब्भंति। ताधे वसधिं अलभमाणा अण्णत्थ वच्चंति । एवं मासकप्पभेदो भवति । तत्थ जा विराधणा तण्णिप्फण्णं। अण्णे य साधू विहारादिणिग्गता, तत्थ य अण्णा वसधी णत्थि । सो य सागारिओ तेसिंचएण्णं अण्णेसिं पि न देति । तत्थ जं ते सावय-तेणादीहिं पावंति तण्णिप्फण्णं। एते ताव भिक्खं हिंडितमेत्ताणं दोसा । अध बाहिं चेव भोत्तुं रत्तिं आगता ण लभंति ह्व । सविसेसतरा य दोसा गरहादिणो, विणासो सावयादीहिं । अधवा सो सम्मदिट्ठीभूतओ पच्छा 'अणापुच्छा गत'त्ति मिच्छत्तं जाएज्जा ।

इदाणिं **बडुय** त्ति दारं—

**सुण्णं दट्ठुं बडुगा, उभासिते ठाह जइ गया समणा ।**
**आगम पवेसऽसंखड, सागरि दिण्णं ति य दियाणं ॥५५०॥**

**संभिच्चेण व अच्छह, अलियं न करेमऽहं तु अप्पाणं ।**
**उडुंचग अहिगरणं, उभयपयोसं च णिच्छूढा ॥५५१॥**

**सागरिय-संजयाणं, णिच्छूढा तेण-अगणिमाईहिं ।**
**जं काहिंति पदुट्ठा, उभयस्स वि ते तमावज्जे ॥५५२॥**

"**सुण्णं दट्ठुं०**" गाधात्रयम् । बडुएहिं सुण्णं वसहिं दट्ठुं सागारितो मग्गितो, भणति— समणा ठित त्ति । तेहिं [2]सिट्ठं—गता ते । सो इतरो भणति—ठाह, जति गता ते समणा । साधू य आगता। आढत्ता पविसिउं जाव रुद्धया । तत्थ असंखडं होज्जा । बडुगा भणंति—अम्हं वसधी सामिणा दिण्णा । इयरे वि भणंति—अम्हं दिण्ण त्ति । ताधे साधू सागारियसगासं गता। सो भणति—तुब्भे अणापुच्छाए सुण्णं च काउं गता । मए णातं—गता तुब्भे, जेण सुण्णा कता। मए बडुगाणं दिण्णा । '**दिय**'त्ति—बडुगा । तो संभिच्चेणं अच्छध एगट्ठा, णाहं अलियं अप्पाणं करेमि। तत्थ जति संभिच्चेणं अच्छंति तो पढंतपडिलेहेन्ताणं संजयभासाहिं य उडुंचए करेंति। तत्थ '**अधिकरण**' त्ति असंखडं होज्जा। अधवा सो सेज्जातरो भद्दओ ते बडुए णिच्छुब्भेज्जा। ताधे अधिकरणं संजतपओगेणं, "**तहेवासंजतं धीरो आस**" सिलोगो (दशवै० ७।४७) । **उभयपदोसं**[3] ति णिच्छूढा समाणा सागारितस्स संजताणं य जं काहिंति तेणागणिमादीहिं, '**ते**' त्ति संजता जे सुण्णं करेंति तमावज्जंति ।

इदाणिं **चारण-भडे** दो दारे एगट्ठे चेव भणति ।

---

१. **तुब्भे गुत्ते एहिं कम्मेहिं णि०** पा० । **तुब्भेहिं भुग्गएहिं क०** पू० १ । २. **ते भणंति** पू० १, पा० । ३. **०पदोसोति** पू० २ ।

**एमेव चारण-भडे, चारण उड्डुंचगा उ अहिगतरा ।**
**णिच्छूढा व पदोसं, तेणाऽगणिमाइ जह बडुया ॥५५३॥**

"**एमेव चा०**" गाधा । '**एमेव**' त्ति बडुएहिं जे दोसा ते चारण-भडेहिं वि । णवरं चारणेसु इमे अहिययरा दोसा, ते पवंचहेउं संजएहिंतो उड्डुंचए मग्गंति चेव, तेण ते चियत्ते ण चेव एगतओ अच्छेज्जा । सेसं कंठं ।

इदाणिं **मरणं** च **तिरिय-मणुयाणं** च **आएसा** य, एते दारे एगट्ठे भणति—

**छड्डुणे काउड्डाहो, घाणारिस सुत्तऽवण्ण अच्छंते ।**
**इति उभयमरणदोसा, आएस जहा बडुगमाई ॥५५४॥**

"**छड्डुणे काउ०**" गाधा । सुण्णं वसहिं पासित्ता तिरिओ गोण-सुणगादी अणाह-मणूसो वा पविसित्ता मरेज्जा । तं जति असंजतेणं छड्डावेंति तो छज्जीवणिकायविराधणा । अह अप्पणा छड्डेंति तो उड्डाहो । कोति जाणेज्जा एतेहिं चेव मारिओ त्ति । दुगुंछा वा भवेज्जा— 'असुइणो'त्ति । अह एतेसिं दोसाणं भीता णवि छड्डेंति, णावि छड्डावेंति, तो रुहिरगंधेणं णासाऽरिसाओ जायंति संजयाणं । अहवा वि असज्झातियं ति काउं सुत्तपोरुसिं ण करेंति ह्व। अत्थपोरुसिं न करेंति ह्व[१] । सुत्त-अत्थपोरुसिं अकरेंताणं सुत्तं णासति ह्व ।४, अत्थो नासति ।४, अवण्णो य भवति—'सुसाणे अच्छंति' त्ति, 'इति' उपप्रदर्शनार्थे । एते अच्छंते य छड्डिज्जंते य दोसा भवंति । '**उभय**' तिरिय-मणुयमरणे । "**आएस**"त्ति पाहुणता, तेसु जे बडुग-चारण-भडाणं दोसा ते, मरणं च तिरिय-मणुयाणं । **आदेस** त्ति य गतं ।

इदाणिं **वाल-णिकेयणे** य दो दारा एगट्ठा भण्णंति—

**अधिगरण मारणाऽणीणियम्मि अच्छंते वालि आतवहो ।**
**तिरितीय जहा वाले, सूतिमणुस्सीएँ उड्डाहो ॥५५५॥**

"**अधिगरण०**" गाधा । वालो नाम सप्पो । सुण्णं दट्टुं सो पविट्ठो होज्जा, ताधे आगता समणा । जति णीणेंति तो अधिकरणं । कधं ? हरितादीणं मज्झेणं जाति, सुण्णे वा गिहे पविट्ठो डसेज्जा तप्पयोगेणं । अधवा मारिज्जेज्जा । अध एअदोसभीता[२] न णीणेंति तो खतिए आतविराधणाऽणागाढादि तण्णिप्फण्णं पच्छित्तं । एते ताव वाले दोसा । अध णिक्केयणे—जति तिरिक्खी णिक्केतिज्जति सा, णियमादितो जे वाले दोसा, अधिकरणं, [३]बिल्लगमारणा आत-विराधणा भवति ।

अध "**मणुस्सी**" सूतित्ति पसूता, तो एतेसिं चेव एतं ति काउं उड्डाहो, णिक्कालिज्जं-

---

१. ॥०॥ पू० २ । २. **अध एयभीया** पा० । ३. **चिक्खल्लगसारणत्ति आयवि०** पू० १।

तीए य अधिकरणं । लोगो वा भणेज्जा निरणुकंपा । चेडरूवं वा मरेज्जा छायाघातं[१] वा पदुट्ठा देज्जा ।।छा।

**छड्डेऊण व जइ गया, उज्झमणुज्झंति होंति दोसा उ ।**
**एवं ता सुण्णाए, बाले ठविते इमे दोसा ।।५५६।।**

"**छड्डेऊण व०**" गाधा । अधवा सा तत्थ विताइत्ता तं चेडरूवं छड्डेत्ता गच्छेज्जा, तं जति उज्झंति णिरणुकंप त्ति, अध ण उज्झंति उड्डाहो । एते ताव सुण्णाए दोसा । जति पुण एतेसिं दोसाणं भीया 'असुण्णं करेमो'त्ति बालं ठवेन्ति, तो इमे दोसा—

**बलि धम्मकहा किड्डा, पमज्जणाऽऽवरिसणा य पाहुडिया ।**
**खंधार अगणि भंगे, मालव-तेणा य णाती य ।।५५७।।**

"**बलिधम्म०**" दारगाधा । '**बलि**' त्ति ते साधुणो कारणे सपाहुडियाए सेज्जाए ठिता होज्जा । ताधे—

**साभाविता तण्णीसाएँ, आगया भंडगं अवहरंति ।**
**णीणेमि त्ति व बाहिं, जा पविसइ ता हरंतऽण्णे ।।५५८।।**

"**साभाविता०**" गाधा । जे ते बलिकारया एन्ति ते साभावेण वा एज्जा, कइतवेण वा एज्जा । 'एतेण उवाएण उवगरणं हरामो'त्ति काउं एन्ति । एत्थ जे सभावेण चेव बलिकारया आगता ण वि उवगरणहरणणिमित्तं तेसिं बलिं करेमाणाणं बालं विरहं पासित्ता हरणबुद्धी जाता होज्जा, ताधे हरंति । अधवा बलीए उवकरणं लेवाडिज्जति ताधे बालो भणति—बाहिं णीणेमि । ताधे सो णिग्गओ ताव अब्भंतरे उवहिं हरिज्जा । '**साभाविय**'त्ति गतं ।

**एमेव कइयवा ते, णिच्छूढं तं हरंति से उवहिं ।**
**बाहिं च तुमं अच्छसु, अवणेहुवहिं व जा कुणिमो ।।५५९।।**

"**एमेव०**" गाधा । अण्णे पुण धुत्ता उवहिं हरितुकामा[३] भणंति—खुड्डुया ! एस बली एति तो तुमं बाहिं णिग्गच्छ । एवं णिच्छोढुं ते[२] हरंति से उवहिं । अधवा भणंति—अम्हे बलिं करेमो, तो तुमं ताव बाहिं चिट्ठ, मा कूरेण भरिज्जिहिसि । ताधे ते तं उवधिं हरंति । अधवा भणंति—अवणेहि उवधिं अब्भितरातो, जा अम्हे बलिं कुणिमो । सो य बालो तं कज्जं अयाणमाणो बहुं च उवगरणं अचएमाणो एक्कसराते णीणेतुं, थेवं घेत्तुं णिग्गंतुं ठवेतुं, जाव अण्णस्स पविसति ताव से तं तेहिं धुत्तेहिं अवहरितं । एवं ताव '**बलि**'त्ति गयं ।

इदाणिं '**धम्मकध**'त्ति दारं ।

---

१. **छोभतं वा** पू० १-२, पा० विना । २. **तं** पू० २ । ३. **उवकरणं** पा० ।

**कतिएण सभावेण व, कहापमत्ते हरंति से अण्णे ।**
**किड्डा सयं व रिंखा, पासति व तहेव किड्डुदुगं ॥५६०॥**

एत्थं पि कइतवेण वा ते एज्जा सभावेण वा, 'धम्मं सुणिमो'त्ति । "**कतितवेण**[1] **सभावेण व**" पुव्वद्धं कंठं । '**धम्मकध**'त्ति गतं ।

इदाणिं '**किड्ड**' त्ति दारं ।

किड्डति सयं वा रिंखाओ वा करेति, पासति वा कोउगेण [2]किड्डंते । तधेव **किड्डुदुगं** ति। जधा—बलीए सभावेण वा कतितवेण वा [3]ते एंति, तहेव किड्डाणिमित्तमवि सभावेण वा कइतवेण वा एन्ति । एतं दुगं । **रिंखा**ओ त्ति, कयाइ खुड्डुओ भणेज्जा—ण वट्टए अम्हं किड्डिउं, तो खाइं तुमं रिंखाओ करेहि जो अम्हं जत्तिए वारे जिज्जति[4] । शेषं उक्तार्थं । तत्थ वक्खित्तस्स हरंति । '**किड्ड**'त्ति दारं गतं ।

इदाणिं **पमज्जणा-आवरिसणा** य दो वि दारे गाहद्धेणं भणति—

**जो चेव बलीएँ गमो, पमज्जणाऽऽवरिसणे वि सो चेव ।**

"**जो चेव०**" कंठं । इदाणिं '**पाहुडिया**'—

**पाहुडियं वा गेण्हसु, परिसाडणियं व जा कुणिमो ॥५६१॥**

"**पाहुडिय०**" पच्छद्धं । तं पि कइतवेण वा सभावेण वा भणेज्जा—'भिक्खं [5]गेण्हह खुड्डुया ! दारे वा णिग्गतओ होहि, जाव वयं '**परिसाडणिय**'त्ति अच्चणियं करेमो । एत्थ जाव सो भिक्खस्स जाति णिक्कलति वा ताव हरंति । भिक्खा वि पाहुडिता भण्णति अच्चणिया वि। तेन सादृश्यादुभयग्रहणं कृतं । '**पाहुडिय**'त्ति दारं गतं ।

इयाणिं **खंधावार-अगणी य** दो वि दारे एगट्ठे भणति—

**खंधारभए णासति, एस व एइ त्ति कइयवे णस्स ।**
**अगणिभया व पलायति, णस्ससु अगणी व एति त्ति ॥५६२॥**

"**खंधारभए०**" गाधा । तं पुण कतितवेण वा सभावेण वा भणेज्जा जधा—एस सरायओ खंधावारो एति त्ति । तत्थ जति सभावेणं तो णसति । नस्संतो सो बालो तेणेहिं हीरेज्जा । कइतवेणं भणेज्जा—एस एति खंधावारो खुड्डुया ! णस्स, ताधे सो णस्सति । इयरे उवहिं हरंति । अगणीए सभावेणं भणेज्जा—एस अगणी एति । अप्पणा वा सो खुड्डुओ पासेज्जा अगणिं, ताधे नासति । अध कइतवेणं भणेज्जा—मंदभग्गा ! णस्ससु, अगणी एस

१. **कतिएण** पू० २, पा० । २. **किड्डंतो** पू० २ । ३. पू० २ नास्ति । ४. **गिण्ह** पू० २ । ५. **जिप्पति** पू० १ ।

एति त्ति। एवं सभावेण वा अग्गिउट्ठाणे कतिवएण वा भणिते को दोसो बालस्स ? उच्यते—

**उवहीलोभ भया वा, ण णीति ण य तत्थ किंचि णीणेइ ।**
**गुत्तो व सयं डज्झइ, उवहिं च विणा उ जा हाणी ॥५६३॥**

"**उवहीलोभ०**" गाधा। कंठा। '**गुत्तो**'त्ति सण्णद्धो। **खंधावार अगणी** य दारा गता।

इदाणिं '**मालवतेण**'त्ति दारं—

**मालवतेणा पडिया, इयरे वा णासती जणेण समं ।**
**ण य गेण्हइ सारुवहिं, तप्पडिबद्धो व हीरेज्जा ॥५६४॥**

"**मालव-तेणा**" गाधा । मालवा एव तेणा मालवतेणा । '**इतरे**'त्ति अण्णे तेणा उवधितेणा इत्यर्थः । एत्थ वि सभाव-कतितवं वक्तव्यम् । '**णासति जणेण समं**'ति कइतवकते भंगे । पच्छा इतरे उवहिं हरंति । साभाविते भंगे '**ण य गे०** पच्छद्धं । कंठं । '**मालवतेण**'त्ति दारं गतं ।

इदाणिं '**ग्राति**' त्ति दारं । तं पि सभावेण वा कइयवेण वा ।

**सण्णायगेहि णीतें, एंति व णीय त्ति णट्ठे जं उवहिं ।**
**कहिँ णीय त्ति कइयवे, कहिए अण्णस्स सो कहए ॥५६५॥**

**चिंधेहिँ आगमेउं, सो वि य साहेइ तुह णिया पत्ता ।**
**णेमो उवहिग्गहणं, तेहिँ व हं पेसितो हरइ ॥५६६॥**

"**सण्णात०**" गाधाद्वयम् । सण्णातएहिं आगंतुं एक्कओ दिट्ठो, ताधे णीओ । ते अण्णे उवहिं हरेज्जा, तण्णिप्फण्णं । अधवा अण्णेण केणति ते एंतता दिट्ठा, तेण से कधितं—'खुड्डय ! तव णियया आगच्छंति, ताधे सो पलाएज्जा । णट्ठे जं जघण्णाइ उवधिं हरंति तेणा, तण्णिप्फण्णं। एवं ताव सहावेणं। अध कइतवेणं वि। कधं ? कोति धुत्तो भणेज्जा—'खुड्डया ! कधि ते णीय त्ति ? अमुगत्थ त्ति कहिते, सो वि अण्णस्स कधेति 'मा अप्पणा भणंतो उड्डुज्झिहिति' । ताधे जस्स तेण कधितं अण्णस्स सो धुत्तो तेसिं सण्णाताणं चिंधे णामे य आगमेत्ता तस्स खुड्डयस्स सगासं गंतुं भणति—तुमं सो अमुगिच्चयाणं णियल्लओ । खुड्डल्लओ भणति—कतो तुमं जाणसि ? त्ति । इयरो भणति, किं ण जाणामि ? मातुं ते अमुगी णामं, पितुं ते अमुगं, एरिसा वण्णरूवेणं ति । एवं संवातिते सो वि खुड्डगो भणति—सच्चयं, अहं तेसिं णिएल्लओ । ताधे सो धुत्तो भणेज्जा,—ते आगता तव कतेणं अमुगत्थ मए दिट्ठ त्ति, एत्ताहे पविसंति । ताधे सो पलाति, इतरे उवहिं हरंति । अधवा भणेज्जा—तेहिं अहं तव उदंतवाहओ पेसवितो । ताधे सो वीसंभं गच्छति । वीसत्थस्स उवहिं हरेज्जा । अधवा भणेज्जा—तव चेव आणणाणिमित्तं पेसवितो हं, ताधे पलाणे उवहिं हरंति ।

**एते पदे ण रक्खति, बाल गिलाणे तहेव अव्वत्ते ।**
**णिद्दा-कहापमत्ते, वत्ते वि य जे भवे भिक्खू ॥५६७॥**

'**एते पदे ण रक्खति बालो**'। '**एते**'त्ति बलिमादिणो '**पदे**' त्ति ठाणे '**ण रक्खति**' त्ति साभाविय-कइतवे अयाणंतो छलिज्जति इत्यर्थः । '**बाले**'त्ति गतं ।

इदाणिं **गिलाण-अव्वत्ता** एगट्ठा भण्णन्ति—

**एमेव गिलाणे वी, सयकिड्ड-कहा-पलायणे मोत्तुं ।**
**अव्वत्तो उ अगीतो, रक्खणकप्पे परोक्खो उ ॥५६८॥**

"**एमेव गि०**" गाधा । '**एमेव**'त्ति, जे बाले दोसा ते गिलाणे वि । णवरं जो तस्स आतसमुत्थो किड्डादोसो कहादोसो पलायणदोसो य भएणं सो णत्थि, किंतु सो असमत्थो वारेतव्वस्स, न वा कोति तं गणेति गिलाणं ति(णत्ति?) काउं । सो य तत्थ परिकूजंतो[1] अच्छति। लोगो भणति—अहो णिरणुकंपा छड्डेउं हिंडंति । अप्पछंदा वा अकप्पितं पडिसेवेज्जा। '**अव्वत्तो**'त्ति अगीतो। सो विधिं ण याणेति, बलिधम्मकधादीहिं[2] साभाविय-कतितवेसु कधं उवगरणं रक्खितव्वं ? कधं वा अगणिमादीसु साभाविएसु अप्पा णित्थारेयव्वो ? उवगरणं वा ?

"**एते पदे ण रक्खति०**" (५६७) गाहा । बलिधम्मकहादीणि पदाणि । वत्तो नाम वएण गीतत्थत्तणेण य । सो वि जति णिद्दा-कहादि[3]—पमायं करेति तो एते पए ण रक्खति । कथाः **तरंगवत्याद्याः** । जम्हा एते दोसा बालादीणं—

**तम्हा खलु अब्बाले, अगिलाणे वत्तमप्पमत्ते य ।**
**कप्पइ य वसहिपालो, धिइमं तह वीरियसमत्थो ॥५६९॥**

"**तम्हा खलु**" गाधा । धितिमं जो तण्हाए छुहाए वा परितावितो वि वसहिं सुण्णं काउं ण भत्त-पाणट्ठाए णिग्गच्छति । '**वीरियसंपण्णो**' बलवानित्यर्थः । सो तेण प्रमर्दमाणे निरुंभितुं समर्थः । अगणिमादिसंभवेसु य उवधिं अप्पाणयं च नित्थारयति । ते पुण केत्तिलया वसधिपाला ठवेयव्वा ? उच्यते—

**सति लंभम्मि अणियया, पणगं जा ताव होति अच्छित्ती ।**
**जहणेण गुरू चिट्ठइ, तस्संदिट्ठो विमा जयणा ॥५७०॥**

"**सति लंभम्मि**" गाधा । विज्जमाणे लंभे भिक्खस्स जत्थ संघाडओ तिण्हं चउण्हं वा अण्णेसिं अप्पणो य पज्जत्तं भिक्खं आणेति, तत्थ जत्तिएहिं अच्छंतेहिं वि गच्छस्स पज्जत्तं भवति तत्तिया अच्छंति । अधवा पंचयं आयरियादीयं जेण गच्छो संगहितो सो अच्छति । अधवा जो णज्जति एस गहण-धारणसमत्थो सुत्तत्थाणं अव्वोच्छित्तिं काधिति सो आयरियस्स सहाओ

१. ०**कूवंतो** पू० २ । २. पू० २ नास्ति । ३. **कहाहिं** पू० २ ।

अच्छति । अध न संथरंति तो आयरिओ एक्कओ अच्छति । सेसा सव्वे हिंडंति । अध आयरियस्स कुलादिकज्जेहिं णिग्गमणं होज्जा, ताधे जो आयरिएणं संदिट्ठओ 'मए णिग्गए अमुतस्स सव्वं आलोयणादि करेज्जाध' सो अच्छति । ताधे जत्थ ते बलिमादिणो पदा सभावेण वा कतितवेण वा पत्ता भवंति, ताधे वसहिपालेण इमा जतणा कातव्वा । बलीए ताव—

**कारण सपाहुडि ठिया, वासे वि करेंति एगमायोगं ।**
**सण्णाविय दिट्ठा वा, भणाइ जा सारवेमुवहिं ॥५७१॥**

"**कारण सपा०**" गाधा । ते साधुणो कारणेणं केणति सपाहुडियाए सेज्जाए ठिता होज्जा । तत्थ साधूणं सामायारी—उडुबद्धे बद्धओ उवधी अच्छति, वासासु अबद्धओ । तत्थ पुण सपाहुडियाए वासासु वि एगायोगं भंडयं करेंति । ताधे जति बलिकारा होज्जा, ते कहं नायव्वा 'होउकाम' त्ति ? उच्यते—

**अपुव्वमतिहिकरणे, गाहा ण य अण्णभंडगं छिविमो ।**
**भणइ व अठायमाणे, जं णासइ तुज्झ तं उवरिं ॥५७२॥**

"**अपुव्वमति०**" गाधा । अप्पुव्वे दट्ठुं जे अपुव्वा ते तेणा, जे वा अतिहिम्मि बलिं करेंति, ते जदि भणेज्जा 'णीध, बलिं करेमो' । ताधे गाधा वत्तव्वा—

**[1]ण वि लोणं लोणिज्जइ, ण वि तुप्पिज्जइ घयं व तेल्लं वा ।**
**किह नाम लोगडंभग ! वट्टम्मि ठविज्जए वट्टो ? ॥**
**अण्णं भंडेहि वणं, वणकुट्टग ! जत्थ ते वहइ चंचू ।**
**भंगुरवणवुग्गाहित ! इमे हु खदिरा बइरसारा ॥**

ताधे ते जाणंति 'अम्हे पच्चभिण्णाय'त्ति ठंति । अधवा भणंति—जेसिं एतं उवगरणं ते भिक्खस्स गता । अम्हे परातंत उवगरणं ण छिवामो । ताधे जति ण ठाइंति तो भणति—'सुणेध, मम वारिता ण ठातंति । जं एत्थं णासति तं तुब्भं उवरिं, जति ण ठातह' । अध साभावितं चेव बलिं करेंति, दिट्ठेल्लया य अण्णइता वि करेंतया वि, विस्ससति, ताधे भणति, जाव सारवेमि[2] ताव पडिक्खह । ताहे—

**उव्वरए कोणे वा, काऊण भणाति मा हु लेवाडे ।**
**बहु पेल्लणऽसारविए, तहेव जं णासती तुज्झं ॥५७३॥**

"**उव्वरए०**" गाधा । जइ अत्थि कोइ उव्वरओ तत्थ [3]संच्छुभंति । अध णत्थि ताधे एगम्मि कोणे थलीकरेति । भणति य—सणियं करेध, जधा ण णित्थारेह उवगरणं । अध ते बहवे अगारा [4]उम्मत्तसामला सहस त्ति पेल्लणएण पविट्ठा होज्जा, ण चेव सारविज्जंति उवहिं

१. न वि लोणं लोणिज्जति० गाहा । ताधे ते० पू० १-२, पा० । २. सारवेमिं पू० २ । ३. संबुज्झति पा० । ४. उम्मत्ता सामला पा० ।

पडिक्खेज्जा, ताधे भणति–जं एत्थं णासति तं तुज्झं उवरिं । जत्थ धम्मकधा तत्थ इमं भणति–

**णत्थि कहालद्धी मे, पुव्वं दिट्ठे व बेति गेलण्णं ।**
**दाणादि असंकाण व, आउज्जंतो परिकहेइ ॥५७४॥**

"**णत्थि कहालद्धी०**" गाधा । '**पुव्विं दिट्ठो**' त्ति धम्मं कधितओ । जाधे ते भणेज्जा,-ताधे भणियव्वं–दुक्खति मे सीसं गलओ वा । अध ते दाणसड्ढा, आदिग्गहणेणं अभिगमसम्मत्तादिणो, तो दारमूले ठाउं उवगरणे उवओगं देंतो कधेति–मा खणेणं कोति [१]हरेहिति ।

किड्डाए इमं भणति–

**दट्ठुं पि णे न लब्भामों, मा किड्डह मा हरिज्जिहं को वि।**
**संमज्जणाऽऽवरिसणे, पाहुडिया चेव बलिसरिसा ॥५७५॥**

"**दट्ठुं पि णे०**" गाधा । कंठा । [२]संमज्जणा–आवरिसीयण–पाहुडियासु जधा बलीए जतणा तधा कायव्वा । जत्थ भिक्खाए णिमंतिज्जति तत्थ भणति–

**खमणं णिमंतिते ऊ, खंधारे कइयवे इमं भणति ।**
**किं णे णिरागसाणं, गुत्तिकरो काहिई राया ॥५७६॥**

खमणं ममं अज्ज । **खंधावारे कइतवे** । कंठं । जत्थ साभावियं चेव खंधावारो एति तत्थ–

**पभु अणुपभु [ णो व ] णिवेयणं तु पेल्लंति जाव णीणेमि ।**
**तह वि य अठायमाणे, पासे जं वा तरति णेउं ॥५७७॥**

"**पभु०**" गाधा । '**पभु**' त्ति राया, **अणुपभु** सेणावतिमादि, तें धम्मलाभिज्जंति । जधा–पइरित्तं करेध । ताधे ते मणूसं देंति । **पेल्लेंते जाव णीणेमि** त्ति । कयाति सो खंधावारो ण चेव वच्चेज्जा । एवं चेव [३]ओयातेल्लउ, तत्थ य कोति वसधिं ठाणणिमित्तं पेल्लेज्जा । एत्थ वि–पभु–अणुपभुणो णिवेदणं कातव्वं । जति वारेंति जाव णीणेमि, **तधवि य अट्ठातमाणे** त्ति जति पभु–अणुपभुणो ण वारेंति, असाधीणा वा, तो भणति–जाव उवगरणं णीणेमि ताव पडिक्खध। ताधे उवगरणं कप्पं पत्थरेत्ता सव्वं बंधित्ता णीणेति । अह ण चएति, बहुं च उवगरणं, ताधे तिसु चउसु वा कप्पेसु बंधित्ता कोल्लुगपरंपरएणं णीणेति । '**कोल्लुग**'त्ति कोल्लुगचक्कं **मरहट्ठविसए** । अध ण ट्ठंति हरंति य, ताधे जं से पासे सारभंडं अक्खाती जत्तियं वा तरति णीणेउं तं णीणेति । जत्थ अग्गी साभाविओ तत्थ–

१. **हाहिति** पू० १-२ । २. **पमज्जणा** पू० २ । ३. **अढितेल्लउ** पू० १-२, पा० विना ।

**कोल्लुगपरंपर संकलि, आगासं णेइ वायपडिलोमं ।**
**अच्छुल्लूढा जलणे, अक्खाई सारभंडं तु ॥५७८॥**

"**कोल्लुगपरंपर०**" गाहा । कंठा । संकली नाम ते पोट्टलए दोरेणं एगट्ठेणं बंधति ।

मालवतेणेसु असरीरतेणेसु य भंगे य—

**असरीरतेणभंगे, पवलाए जणे उ जं तरति णेउं ।**

"**असरीर०**" पुव्वद्धं । कंठं । [१]एतं साभाविए । जत्थ कतितवेण [२]अगणितेणे दुविधे भंगा वा धुत्ता भणेज्जा । तत्थ ते वत्तव्वा ।

**ण वि धूमो न वि बोलो, न द्दवति जणो कइयवेसुं ॥५७९॥**

"**ण वि धूमो०**" पच्छद्धं । कंठं ।

जत्थ सण्णायगो एज्जा तत्थ—

**अण्णकुल-गोत्तकहणं, पत्तेसु वि भीयपरिस पेल्लेइ ।**
**पुव्वं अभीयपरिसे, भणाति लज्जाएँ न भणामि ॥५८०॥**
**जा ताव ठवेमि वए, पत्ते कुड्डादिछेय संगारो ।**
**मा सिं हीरे उवहिं, अच्छह जा सिं णिवेएमि ॥५८१॥**

"**अण्णकुल०**" गाधाद्वयम् । अण्णो सो तुब्भं णीतो । अहं अमुगणामगोत्त ति । जत्थ पुण ते च्चेव संजाणंतया आगया, तत्थ जति भीतपरिसो सो आसि तो ते पेल्लेति अंबाडेति—एरिसया तारिसया बंधावेमि भे राउलेणं । अध अभीतपरिसो आसी तो णं भणति—'मम वि चियत्तं चेव उण्णिक्खमितव्वं । किं पुण ? अहं लज्जाए ण सक्केमि तुब्भे भणिउं जधा—उण्णिक्खमामि त्ति । ण वा सक्केमि लज्जाए चेव आगंतुं तुब्भं सगासं, तो सुंदरं भे कतं जं आगता । किं पुण अच्छध ? जाव साधुणो एंति तेसिं सगासे वते णिक्खिवामि । मा वा तेसिं भट्टारगाणं उवगरणं हीरिहिति सुण्णए उवस्सए, एतेण उवाएणं ताव अच्छावेति जाव साहुणो पत्ता भवंति । ताधे उवस्सयस्स कुड्डं च्छेत्तुं णासति, संगारं च करेति—अमुगत्थ मए गवेसेज्जह मिलेज्जह वा ।

**खंधारादी णाउं, इयरे वि तहिं दुयं समभिएंति ।**
**अप्पाहेई तेसिं, अमुगं कज्जं दुयं एह ॥५८२॥**

"**खंधारादी०**" गाधा । कंठा । '**रक्खण**'त्ति दारं गतं ।

इदाणिं **गहणकप्पं** भणति—

---

१. एवं पू० १ पा० । २. **अगणिं तेणदुविधभंगा वा** पा० । **अगणिं तेणे दुविहे भंगे वा** पू० २ ।

**दुविहकरणोवघाया, संसत्ता पच्चवाय सिज्जविही ।**
**जो जाणति परिहरिउं, सो गहणे कप्पितो होति ॥५८३॥**

"**दुविहकरण०**" गाधा । '**दुविधकरणोवघात**' त्ति, दुविधं करणं वसधीए । मूलकरणं च उत्तरकरणं च । एतेण दुविधेण करणेणं उवहता वसधी भवति । 'अकप्पिय'त्ति भणितं होति ।

**सत्तेव य मूलगुणे, सोही सत्तेव उत्तरगुणेसु ।**
**संसत्तम्मि य छक्कं, लहु-गुरु-लहुगा चरम जाव ॥५८४॥**

"**सत्तेव य०**" पुव्वद्धं । मूलगुणकरणं सत्तविधं, सोहेतव्वं साहुणा वसहीए । उत्तरगुणकरणं पि सत्तविधं ।

**पट्ठीवंसो दो धारणाउ चत्तारि मूलवेलीतो ।**
**मूलगुणेहिँ उवहया, जा सा आहाकडा वसही ॥५८५॥**

"**पट्ठीवंसो०**" गाधा । एते मूलगुणा । एतेहिं उवहता वसधी आधाकम्मा भवति । साधुमाधाय एभिः कृतैरित्यर्थः । उत्तरगुणकरणं सत्तविहं–

**वंसग कडणोक्कंचण, छावण लेवण दुवार भूमी य ।**
**सप्परिकम्मा वसही, एसा मूलोत्तरगुणेसु ॥५८६॥**

"**वंसग०**" गाधा । **वंसग** त्ति जं ओडंडइज्जति, **कडणं** कडगादीहिं पासाणि छातिज्जंति, **उक्कंचणं**[1] ओलवणं[2] '**छावणं**' दब्भादीहिं छयणं, '**लेवणं**' चिक्खल्लेणं लिंपणं कुड्डाणं कज्जए संजतट्ठाए, अण्णओ **दुवारकरणं** संजतट्ठाए **भूमिकम्मकरणं** । एते उत्तरगुणा वसधीए । '**मूल**'त्ति, अविसोधिकोडी । पुण अण्णे वि इमे उत्तरगुणा वसहीए । विसोहिकोडी पुण–

**दूमिय धूविय वासिय, उज्जोविय बलिकडा अवत्ता य ।**
**सित्ता सम्मट्ठा वि य, विसोहिकोडी कया वसही ॥५८७॥**

"**दूमित**" गाधा । **दूमितं** नाम सुकुमालियालेवेणं सुकुमालीकतं कुड्डं उल्लातितं वा । **धूवितं** [3]अगुलुमादीहिं धूविता वसही । **वासिता** पडवासकुसुमादीहिं । **उज्जोविता** अगणिकाएणं अंधकारे उज्जोतो कतो । **बलिकडा** नाम संजतट्ठाए बली कडा । **अवत्ता**[4] णाम उवलित्ता भूमी । **सित्ता** संजतट्ठाए आवरिसीकरणं । **सम्मट्ठा** णाम वोहारिया संजतट्ठाए वसही ।

---

१. **ओकंपणं** पू० २ पा० । **ओकंचणं** पू० १ । २. **ओचलणं** पा० । ३. **गुगलु०** पा० । ४. **अव्वत्ता** पू० १, पा० ।

विसोधिकोडी[1] ।

**अप्फासुएण देसे, सव्वे वा दूमियादि चउलहुगा ।**
**अप्फासु धूमजोती, देसम्मि वि चउलहू होंति ॥५८८॥**

"**अप्फासुएण०**" गाधा । जत्थ अप्फासुएणं दूमिज्जइ । आदिग्गहणेणं सव्वे पता गहिता । तेसु देसे वा सव्वे वा चउलहुगा । जत्थ धूमिज्जति उज्जोविज्जति वा तत्थ णियमा अगणी सचित्तो अप्फासुतो त्ति काउं देसे वि चउलहुगा । किमुत सव्वे ? ।

**सेसेसु फासुएणं, देसे लहु सव्वहिं भवे लहुगा ।**
**सम्मज्जण साह-कुसादि छिण्णमेत्तं तु सच्चित्तं ॥५८९॥**

"**सेसेसु०**" गाधा । '**सेसेसु**'त्ति धूवितं उज्जोवितं च मोत्तुं दूमित-वासित-बलिकड-अवत्त-सित्त-सम्मट्ठ एतेसु फासुएणं देसे मासलहुं । सव्वे चउलहुं । जं सम्मज्जिज्जति तत्थ अफासुगं, साहा दब्भा वा छिण्णमेत्तया । एतेसु वि देसे[2] सव्वे वा चउलहुं ।

**मूलुत्तरचउभंगो, पढमे बीए य गुरुग सविसेसा ।**
**तइयम्मि होइ भयणा, अत्तट्ठकडो चरम सुद्धो ॥५९०॥**

"**मूलुत्तर०**" गाधा । मूलगुणा जे पट्टीवंसादिणो ते संजतट्ठाए, उत्तरगुणा जे वंसादिणो अविसोधिकोडीए ते वि संजतट्ठाए, एत्थ चउगुरुगा, दोहिं वि गुरुगा । मूलगुणा संजतट्ठाए उत्तरगुणा स-अट्ठाए । एत्थ वि चउगुरुगा । तवगुरुगा काललहू ।२ '**तइयम्मि होति भयण**'त्ति । मूलगुणा स-अट्ठाए, उत्तरगुणा संजतट्ठाए । एस ततिओ । एत्थ जे उत्तरगुणा ते जति अविसोहिकोडीए तो चउगुरुगा । तव-कालगुरू । अह विसोहीकोडीए ते उत्तरगुणा तो अफासुएणं देसे सव्वे वा चउलहुगा । फासुएणं देसे मासलहुं । सव्वे चउलहुं । **चरिमो सुद्धो** त्ति, आतट्ठाए मूलगुणा, आतट्ठाए उत्तरगुणा । एत्थ ठायंतो सुद्धो ।

इदाणिं **संसत्तं** ति द्वारं । "**संसत्तम्मि य छक्कं । [3]लहु-गुरु लहुगा चरिम जाव**" (गा० ५८४) । सा पुण केण संसत्ता होज्जा ? उच्यते–'**छक्केणं**'ति छहिं काएहिं । तं जधा–

**पुढवि दग अगणि हरियग, तसपाण सागारियादि संसत्ता ।**
**बंभवय आदि-दंसणविराहिगा पच्चवाया उ ॥५९१॥**

"**पुढवि-दग०**" पुव्वद्धं । अस्स विभासा–

**काएसु उ संसत्ते, सचित्त-मीसेसु होइ सट्ठाणं ।**
**सागारियसंसत्ते, लहुगा गुरुगा य जे जत्थ ॥५९२॥**

१. एस वसही वि० पू० २ विना । २. वि देसे वि चउ० पू० २ । ३. चउगुरु-लहुगा० पू० २ ।

"**काएसु तु संसत्ते, सचित्त-मीसेसु होति सट्ठाणं**" । काएसु पुढविमादीहिं संसत्ताए ठाति ह्व । हरितेहिं अणंतेहिं ह्वा । बीएहिं परित्तेहिं तृ । अणंतेहिं ना । मीसेसु पुढवीमादीसुं ॥०॥, अणंतहरितेहिं ।०। तसेसु ह्व । एवं ठायंतस्स पच्छित्तं, ठितो संघट्टणादि जति करेति तो '**लहुगुरुलहुगा चरिम जाव**'त्ति । अस्स विभासा–

"[1]**छक्काय चउसु लहुगा**" गाधा अणुसज्झियव्वा । '**सागारिय**' पच्छद्धं । निग्गंथाणं पुरिससंसत्ते ४। इत्थिसंसत्ते ४॥ निग्गंथीणं थीसंसत्ते ४। पुरिससंसत्ते ४॥ आणादिणो दोसा ।

इदाणिं '**पच्चवात**'त्ति दारं । '**बंभव्वय**' (गा० ५९१) पच्छद्धं । एतेसिं जा विराधणा भवति सा सपच्चवाता सेज्जा । तत्थ पच्छित्तं भण्णति[2] ।

**गुरुगा बंभावाए, आयाए चेव दंसणे लहुगा ।**
**आणादिणो विराहण, भवंति एक्केक्कगपदातो ॥५९३॥**

"**गुरुगा०**" गाधा । बंभावायं गेण्हमाणस्स ४।, [3]आयाए चेव ४॥ '**एक्केक्कग-पदातो**'त्ति । दुविधकरणोवघातादिसु सव्वपएसु । सेसं कंठं ।

इयाणिं न ज्ञायते केरिसता बंभवतपच्चवाता, आयपच्चवाता, दंसणपच्चवाता वा ? । अत उच्यते–

**तिरिय-मणुइत्थियातो, बंभावातो उ तिविह पडिमातो ।**
**अहिबिल-चलंतकुड्डादि एवमादी उ आयाए ॥५९४॥**

**आगाढमिच्छदिट्ठी, सव्वातिहि मरुग बहुजणट्ठाणा ।**
**पासंडा य बहुविहा, एसा खलु दंसणावाया ॥५९५॥**

"**तिरिय०**" गाधाद्वयम् । कंठं । तिविधपडिमाओ य । **जत्थ** त्ति वाक्यशेषः । '**सव्वातिधि**'त्ति सत्रम् । '**मरुग**'त्ति चट्टसाला । बहुजणट्ठाणं आगंतुकाणं ।

इदाणिं **सेज्जाविधि** त्ति दारं । विधिर्विधानं भेदः प्रकारः–इत्यनर्थान्तरम् । सा सेज्जा णवविधा ।

**कालातिक्कंतोवट्ठाण अभिकंत अणभिकंता य ।**
**वज्जा य महावज्जा, सावज्ज महऽप्पकिरिया य ॥५९६॥**

"**कालातिक्कंत०**" गाधा । एतासिं पच्छित्तं भण्णति–

---

१. **छक्काय चउसु लहुगा, परित्त लहुगा य गुरुग साधरणे ।**
**संघट्टण परितावण, लहु-गुरु अतिवायणे मूलं ॥** [ निशी० ११७ ]

२. भवति पू० २ । ३. आए पू० २ ।

**[1]कालाइक्कंते लहु, चउरो लहुगा य चतुसु ठाणेसु ।**
**गुरुगा तिसु जमलपदा, अप्पकिरियाते सुद्धो उ ।।५९७।।**

"**कालाइक्कंते ल०**" गाधा । कालातिक्कंतं अच्छति ०। मासलहुं । वासावासे अतिरेगं [2]गच्छति ४। उवट्ठाणाए ४। अभिक्कंताए ४। अणभिक्कंताए ४। वज्जाए ४। एतासु चतुसु वि जति ठाति चउलहुगा ४।। महावज्जाए सावज्जाए महासावज्जाए, एतासु तिसु वि चउगुरुगा तवकालविसेसिता । '**जमलपदं**' ति तवकालाणं सण्णा ।

इदाणिं एतेसिं वक्खाणं भण्णति—जा जारिसा—

**उडु-वासा समतीता, कालातीया उ सा भवे सेज्जा ।**
**स च्चेव उवट्ठाणा, दुगुणा दुगुणं अवज्जेत्ता ।।५९८।।**

"**उडुवासा०**" गाधा । [3]उडुबद्धे वासावासे वा जत्थ ठिता तीए मासे पुण्णे चाउम्मासिए वा जं अच्छंति सा कालातिक्कंता भवति । '**स च्चेव**' पच्छद्धं । '**स च्चेव**' त्ति, जा कालमज्जाता भणिता—उडुबद्धे मासो, वासासु चत्तारि मासा, एवं दुगुणा दुगुणं अपरिहरंता जत्थ पुणो एति सा उवट्ठाणसेज्जा भवति । यदुक्तम्—"[4]**उउबद्धे दो मासे वासासु अट्ठमासे अवज्जेत्ता एति ।**" **अण्णे** भणंति—जत्थ वासावासं ठिता तीए दो वासारत्ते अण्णत्थ काउं जंति एंति[5] तो उवट्ठाणा न भवंति[6] ।

**जावंतिया उ सेज्जा, अण्णेहिँ णिसेविया अभिक्कंता ।**
**अण्णेहिँ अपरिभुत्ता, अणभिक्कंता उ पविसंते ।।५९९।।**

"**जावंतिया०**" गाधा । जा जावंतिया सेज्जा आचाण्डालेभ्यः सा जाधे अन्नेहिं चरगादीहिं पासंडत्थेहिं घरत्थेहिं वा णिसेविता पच्छा संजया ठायंति एस अभिक्कंता । सच्चेव '**अण्णेहिं०**' पच्छद्धं । कंठं ।

**अत्तट्ठकडं दाउं, जतीण अण्णं करेंति वज्जा उ ।**
**जम्हा तं पुव्वकयं, वज्जंति ततो भवे वज्जा ।।६००।।**

"**अत्तट्ठ०**" गाधा । **वज्जा** णाम पच्छाकम्मं '**अण्णं करेंति**' **सअट्ठाए** इति वाक्यशेषः । '**वज्जंति**'ते गृहस्था इत्यर्थः ।

**पासंडकारणा खलु, आरंभो अभिणवो महावज्जा ।**
**समणट्ठा सावज्जा, महसावज्जा उ साहूणं ।।६०१।।**

"**पासंडिया०**" गाधा । '**महावज्जा**'—बहूणं समणमाहणाणं अट्ठाए कता । **सावज्जा**

१. **कालातीते लहुगो** मु०वृ० । २. **अच्छति** पू० २ । ३-४. **ओबद्धे** पू० २ । ५. **एति** पू० २ । ६. **भवंति** पा० । पू० १+२ । **भणति** पा० ।

पंचण्हं समणाणं अट्ठाए कया । **महासावज्जा** जा इमेसिं चेव समणाणं कता ।

**जा खलु जहुत्तदोसेहिँ वज्जिया कारिया सअट्ठाए ।**
**परिकम्मविप्पमुक्का, सा वसही अप्पकिरिया उ ॥६०२॥**

"जा खलु०" गाधा । कंठा । इदाणिं **जयणं** दरिसेउकामो इमं आह–

**हेट्ठिल्ला उवरिल्लाहि बाहिया ण उ लभंति पाहण्णं ।**
**पुव्वाणुण्णाऽभिणवं, च चउसु भय पच्छिमाऽभिणवा ॥६०३॥**

"**हेट्ठिल्ला०**" गाधा । अप्पकिरिया कालातीया उवट्ठाणा अभिक्कंता अणभिक्कंता जाव महासावज्जा । अप्पकिरिया णिद्दोस त्ति कातुं आदीए ठविज्जति । ततो कालादीयादयो जाव महासावज्ज त्ति । तत्थ हेट्ठिल्ला अप्पकिरिया भवति । तत्थ जति अतिरित्तं कालं अच्छंति, ततो सा कालातिक्कंताए बाधिया भवति । कालातिक्कंतं जति दुगुणा दुगुणं अपरिहरित्ता उवागच्छति ततो सा उवट्ठाणाए बाधिता भवति । एवं जधासंभवं णेतव्वं । '**पुव्वाणुण्ण**'त्ति, पुव्वा अप्पकिरिया तीसे अणुण्णा जं भणितं सा अणुण्णाता पढमं । तीसे अभावे सेसाणं पुव्वा कालातीता तीसे अणुण्णा । तीसे अभावे सेसाणं पुव्वं उवट्ठाणा, तीसे अणुण्णा । एवं जा जा पुव्वा तीसे तीसे अणुण्णा जाव सावज्ज–महासावज्जाणं पुव्वा सावज्जा तीसे अणुण्णा। एवं पुव्वाए पुव्वाए अभावे पराए वि अणुण्णा भवति । '**अभिणवं च चउसु भय**'त्ति, अभिणवो त्ति दोसो अभिसंबज्झति । कालातीतोवट्ठाणाभिक्कंतासु पुव्वपरिभुत्तत्तणातो अभिणवदोसो ण भवति । सेसासु अणभिक्कंत-वज्ज-महावज्ज-सावज्जासु चउसु कयमेत्तासु अभिणवदोसो भवति । चिरकयासु अभिणवदोसो न भवति । तेण '**अभिणवं च**' । च शब्दात् अणभिनवं च। **चउसु भय, भय**त्ति वियारेहिं जं भणियं होति। अणभिक्कंताए अपरिभुत्त त्ति काउं चिरकयाए वि अभिणवदोसो भवति । वज्जादिसु जाओ परिभुत्ताओ तासु अभिणवदोसो ण होज्जा । एस विचारणा । '**पच्छिमे( मा? )ऽभिणव**'त्ति, पच्छिमो महासावज्जोवस्सओ तम्मि अभिणवकए वा, चिरकते वा, परिभुत्ते वा, अपरिभुत्ते वा अभिणवदोसा चेव भवंति एगपक्खणिद्धारणातो । एतेहिं मूलगुणादीहिं दोसेहिं जो जाणति परिहरिउं सो गहणे कप्पिओ होति । तं पुण कधं जो जाणति परिहरिउं ? उच्यते–

**उग्गम-उप्पायण-एसणाहिँ सुद्धं गवेसए वसहिं ।**
**तिविहं तीहिँ विसुद्धं, परिहर णवगेण भेदेणं ॥६०४॥**

"**उग्गम०**" गाधा । उग्गमेण सुद्धं । उप्पादणाए सुद्धं । एसणाए सुद्धं । **गवेसए** त्ति वसधिं, अट्ठ भंगा । एवं जो जाणति असुद्धं सत्तसु उवरिमभंगेसु परिहरिउं सो गहणे कप्पितो होति । **तिविधं** ति, खातादी । **तीहिं** ति मणादीहिं । खातादिता तिण्णि वसधीतो उग्गमादि–

असुद्धातो मणेण परिहरति, पूर्ववत् नवको भेदः । **विसुद्धं** ति भावतो, न परानुवृत्त्या ।

**पढिय सुय गुणियमगुणिय, धारमधार उवउत्तो परिहरति ।**
**आलोयणमायरिये, आयरिओ विसोहिकारो से ॥६०५॥**

"**पढिय०**" गाधा । पूर्वोक्ता । **सेज्जाए कप्पितो** त्ति दारं गतं ॥छ॥

इदाणिं '**वत्थकप्पितो**'त्ति दारं । **अप्पत्ते अकहेत्ता** सुत्तं, **वत्थेसणा** । शेषं पूर्ववत् । तं च वत्थं चउव्विधं–

**णामं ठवणा वत्थं, दव्वे भावे य होइ णायव्वं ।**
**एसो खलु वत्थस्स उ, णिक्खेवो चउव्विहो होइ ॥६०६॥**

"**णामं ठवणा**" गाधा । णाम-ठवणाओ गताओ । **दव्ववत्थं**–

**दव्वे तिविहं एगिंदि-विगल-पंचेंदियेहिं णिप्फण्णं ।**
**सीलंगाइँ भावे, दव्वे पगयं तदट्ठाए ॥६०७॥**

"**दव्वे**" गाधा । एगेंदियनिप्फण्णं कप्पासादि । विगलिंदियनिप्फण्णं कोसेज्जयादी । पंचिंदियणिप्फण्णं उण्णिय-उट्टियादी । भाववत्थं–अट्ठारससीलंगसहस्साइं । कयरे पुण ते अट्ठारस सीलंगसहस्सा ? । तत्थिमा गाहा–

**करणे जोगे सण्णा, इंदिय भोमादि समणधम्मे य ।**
**सीलंगसहस्साणं, एत्तो उ भवे समुप्पत्ती ॥**

करणं तिविधं–करणं[1] करावणं अणुमोयणंति । जोगो वि तिविधो–मणजोगो वतिजोगो कायजोगो । सण्णा चत्तारि–आहारसण्णा, भयसण्णा, मेधुणसण्णा, परिग्गहसण्णा । इंदियाणि पंच–सोइंदियादीणि । 'भोमादि'त्ति–पुढविकायसमारंभो आउक्कायसमारंभो तेउ-कायसमारंभो वाउकायसमारंभो वणस्सइकायसमारंभो, बेइंदियसमारंभो, तेइंदियसमारंभो, चउरिंदियसमारंभो, पंचेंदियसमारंभो, अजीवकायसमारंभो । समणधम्मो–खंती, मद्दवे, अज्जवे, मुत्ती, तवे, संजमे, सच्चं, सोयं, आकिंचणया, बंभचेरे । एतेहिं ठाणेहिं णिप्फत्ती सीलंगाणं भवति । तं जधा–

ण करेति मणेणं आहारसण्णोवयुत्तो, सोइंदियसंवुडे, पुढविकायसमारंभवज्जए, खंतिसमायुत्ते, एस एगो । ण करेति मणेणं आहारसण्णोवउत्ते, सोइंदियसंवुडे, पुढविकाय-समारंभवज्जए, मद्दवसंपयुत्ते, मुत्तिसंपयुत्ते, एवं जाव बंभचेरसंपउत्ते । एवं आउक्काय-समारंभवज्जए जाव अज्जीवकायसमारंभवज्जए । एवं सोइंदिएण सतं । सेसेहिं वि इंदिएहिं सतं सतं । एवं इंदियेसु पंचसता । एते आहारसण्णोवउत्तेणं पंच सता । एवं सेसाहिं वि तिहिं सण्णाहिं पंच पंच सता । एते दो सहस्सा चउहिं सण्णाहिं ण करेति एतेण लद्धा । ण कारवेति

---

१. **कारणं** पू० २ ।

एतेण वि दो सहस्सा। करंतं णाणुजाणति एतेण वि दो सहस्सा। एते मणजोगेण छ स्सहस्सा। वइजोगेण वि छ स्सहस्सा। कायजोगेण वि छ स्सहस्सा। तिण्णि छक्का अट्ठारस। एतेहिं अट्ठारसहिं सीलंगसहस्सेहिं पाउता साहुणो णिच्चपाउता चेव भवंति। **दविए पगयं तदट्ठाए** त्ति। एत्थ दव्ववत्थेण अधीगारो। जम्हा भाववत्थस्स उवग्गहं करेति अतोऽर्थम्।

**पुणरवि दव्वे तिविहं, जहण्णगं मज्झिमं च उक्कोसं।**
**एक्केक्कं तत्थ तिहा, अहाकडऽप्पं-सपरिकम्मं ॥६०८॥**

"**पुणरवि०**" गाधा। जं दव्ववत्थं एगिंदियादिणिप्फण्णं तिविधं भणितं। तं पुणो तिधा भिज्जति—जहण्णयं मज्झिमयं उक्कोसं ति। जहण्णयं मुहणंतगादि, मज्झिमं पडलादि, उक्कोसं वासकप्पादि। एतेसिं एक्केक्कं तिविधं—अधाकडं अप्पपरिकम्मं सपरिकम्मं च।

**चाउम्मासुक्कोसे, मासिय मज्झे य पंच य जहण्णे।**
**वोच्चत्थगहण-करणे, तत्थ वि सट्ठाणपच्छित्तं ॥६०९॥**

"**चातुम्मासु०**" गाधा। अस्स विभासा।

**जोगमकाउमहागडे, जो गिण्हइ दोण्णि तेसु वा चरिमं।**
**लहुगा उ तिण्णि मज्झम्मि मासिआ अंतिमे पंच ॥६१०॥**

"**जोगमकातु०**" गाधा। उक्कोसयस्स वत्थस्स अधाकडस्स णिग्गतो, तस्स जोगमकाउं अप्पपरिकम्मं उक्कोसयं गेण्हति ४। अह उक्कोसयं चेव सपरिकम्मं गेण्हति ४। जदा अधाकडं ण लब्भति तदा अप्पपरिकम्मं मग्गियव्वं। तस्स णिग्गओ, तस्स जोगमकाउं सपरिकम्मं उक्कोसयं चेव गेण्हति ४। मज्झिमस्स अधाकडस्स णिग्गतो, तस्स जोगमकाउं अप्पपरिकम्मं मज्झिमयं गेण्हइ ।०। अह सपरिकम्मं मज्झिमं चेव गेण्हति ।०। जता अहाकडं न लब्भति तया अप्पपरिकम्मं मज्झिमं चेव मग्गियव्वं। तस्स णिग्गतो, तस्स जोगमकाउं सपरिकम्मं मज्झिमयं चेव गेण्हति ।०।, जहण्णयस्स अहागडस्स णिग्गओ, तस्स जोगमकाउं अप्पपरिकम्मं जहण्णयं गेण्हइ ।०। अह सपरिकम्मं मज्झिमयं चेव गेण्हति ना। जता अहाकडं न लब्भति तया अप्पपरिकम्मं मग्गियव्वं। तस्स णिग्गतो, तस्स जोगमकाउं सपरिकम्मं जहण्णयं चेव गेण्हति। ना। अर्थात् प्राप्तम्। अधाकडस्स निग्गतो जोगे कए अलब्भमाणे अप्पपरिकम्मं गेण्हमाणो सुद्धो। अप्पपरिकम्मस्स वा णिग्गतो जोगे कते अलब्भमाणे सपरिकम्मं गेण्हमाणो सुद्धो ॥ **वोच्चत्थगहणे** त्ति। अस्स विभासा—

**एगयरणिग्गओ वा, अण्णं गेण्हिज्ज तत्थ सट्ठाणं।**
**छेत्तूण सिव्विऊण व, जं कुणइ तगं ण जं छिंदे ॥६११॥**

"**एगयर०**" पुव्वद्धं। उक्कोसणिग्गतो मज्झिमयं गेण्हति ॥०॥ [मासिकं]; जहण्णयं

गेण्हति । ना [पंचकं] । मज्झिमयस्स णिग्गओ उक्कोसं चेव गेण्हति ४ [चतुर्लघु] । जहण्णयं चेव गेण्हइ ॥ ना [पंचकं] । जहण्णयस्स निग्गओ उक्कोसं गेण्हति ४ [चतुर्लघु] । मज्झिमयं गेण्हइ ०। [मासलहु] । आणादी दोसा । तं कज्जं तेण चेव न पडिपूरति, अइरेगदोसा य। **वोच्चत्थगहणे** त्ति गतं ॥ इयाणिं **करणं**–

"**छेत्तूण सिव्विऊण०**" पच्छद्धं । उक्कोसं छिंदित्ता सिव्वित्ता वा मज्झिमयं करेति ०। [मासलघु] जहण्णयं करेति ना[पंचकं] । जहण्णयं छिंदित्ता सिव्वित्ता वा उक्कोसयं करेति ४। [चतुर्लघु] जहण्णयं करेति ना [पंचकं] । जहण्णयं छिंदित्ता सिव्वित्ता वा उक्कोसयं करेति ४। [चतुर्लघु] । मज्झिमयं करेति ।०। [मासिकं] । जं कीरति तस्स जं पच्छित्तं तं भवति, न वि जं छिज्जति । आणादी । संजमे छप्पदियविराहणा, आताए हत्थोवघातो पलिमंथो य सुत्तत्थाणं । तम्हा पायच्छित्तं परियाणामि । आणा अणवत्था मिच्छत्तविराहणा य परिहरिता भवति । ण कप्पति णिक्कारणे, दप्पेण वा । वोच्चत्थकरणं गयं । तं च वत्थं इमाहिं चउहिं पडिमाहिं गवेसितव्वं । तं जधा–

**उद्दिसिय पेह अंतर, उज्झियधम्मे चउत्थए होइ ।**
**चउपडिमा गच्छ जिणे, दोण्हऽग्गहऽभिग्गहऽण्णयरा ॥६१२॥**

"**उद्दिसिय०**" गाधा । 'अत्र तिसृणां व्याख्या–

**उद्दिट्ठ तिगेगयरं, पेहा पुण दट्ठु एरिसं भणइ ।**
**अण्ण णियत्थऽत्थुरिए, इतरऽवणितो उ तइयाए ॥६१३॥**

"**उद्दिट्ठ ति०**" गाधा । '**उद्दिसिय**'त्ति अदट्ठुं ओभासति–देहि मे तिण्हं वत्थाणं जहण्णयादीणं एगिंदियादिणिप्फण्णाण[१] वा । **एगतर** त्ति अमुगं । पेहा णाम वत्थं दट्ठूणं भणति–हे सावया ! एरिसं मे वत्थं देहि, जारिसं एयं दीसति । तं हत्थेणं दाएति, अंतरिज्जयं उत्तरिज्जयं वा । अंतरिज्जयं नाम णियंसणियं, उत्तरिज्जयं पाउरणं । अधवा अंतरिज्जयं जं सेज्जाए हेट्ठिल्लयं पोत्तं । उत्तरिज्जयं उवरिल्लयं । तं अंतरिज्जयं वा, उत्तरिज्जयं वा, अण्णं णियंसेउं पाउणितुं वा इतरं ठवेतुकामं अंतरा जातति । एसा ततिया पडिमा भवति ।

इताणिं **उज्झितधम्मिया** चउत्था पडिमा । तं भणति–

**दव्वाइ उज्झियं दव्वओ उ थूलं मए ण घेतव्वं ।**
**दोहि वि भावणिसिट्ठं तमुज्झिओभट्ठऽणोभट्ठं ॥६१४॥**

"**दव्वादि०**" गाधा । आदिग्गहणेणं चउव्विधं भवति । तं जधा–दव्वुज्झितं, खेत्तुज्झितं, कालुज्झितं, भावुज्झितं । जस्स अगारस्स एवं पतिण्णा भवति । जधा–'मए थूलं न घेत्तव्वं ण परिभोत्तव्वं ।' तं च से केणति उवणीतं तं च तेण पडिसेहितं 'अलं मम

१. ०णिप्फण्णेण पू० २ ।

एतेणं'ति। इतरो भणति—'ममं पि अलं, दिण्णं मए तुज्झं ।' एतम्मि देसकाले जं लब्भति ओभट्टं अणोभट्टं वा, एरिसं वत्थं दव्वुज्झियं भवति ।

**खेत्तुज्झियं—**

**अमुगिच्चगं ण भुंजे, उवणीयं तं च केणई तस्स ।**
**जं वुज्झे कप्पडिया, सदेस बहुवत्थदेसे वा ॥६१५॥**

"**अमुगिच्चगं**" गाधा । जधा—'लाडविसतिच्चयं[1] वत्थं मए ण घेतव्वं न परिभोत्तव्वं ।' अधवा खेत्तुज्झियं तं जं कप्पडिता उज्झंति सदेसं गता देसंतरं वा संकमंता 'किं चोराणं कते वहामो' त्ति । बहुवत्थदेसे वा अण्णं चोक्खतरयं लद्धुं इयरं छड्डेंति ।

**कालुज्झियं—**

**कासातिमाति जं पुव्वकालजोग्गं तदण्णहिं उज्झे ।**
**होहिइ व एस्सकाले, अजोग्गयमणागयं उज्झे ॥६१६॥**

"**कासातिमाति०**" गाधा । कसाएण रत्ता कासातीतं । गिम्हे [2]कइयं वासासु अजोग्गं परिभोगस्स त्ति काउं छड्डेज्जा कोति अड्ढओ, आदिग्गहणेणं अकसायं पि । अधवा अणागए चेव कासाति—अजोग्गकाले अण्णं चोक्खतरं कासाइतं लद्धुं छड्डेंति इतरं ।

**भावुज्झितं—**

**लद्धूण अण्ण वत्थे, पोराणे सो उ देइ अण्णस्स ।**
**सो वि अ णिच्छइ ताइं, भावुज्झियमेवमाईयं ॥६१७॥**

"**लद्धूण०**" गाधा । कंठा । '**चउपडिमा गच्छ**'त्ति (गा० ६१२) । एताहिं चउहिं वि पडिमाहिं गच्छवासिणो गेण्हंति । **जिणे दोण्ह गहभिग्गहण्णयरं** ति । जिणकप्पियाणं उवरिल्लाणं दोण्हं आग्रहो । आङ् मर्यादायां, ग्रह उपादाने, मर्यादया ग्रहः आग्रहः । उपरिमाभ्यामेव द्वाभ्यां ग्रहणं नाऽऽदिमाभ्यामित्यर्थः । ताभ्यामपि अभिग्गहो अण्णतरियाए, न युगपद् द्वाभ्यामपीत्यर्थः । किं तर्हि ? अन्यतरया ग्रहणं । तत्थ गच्छवासीणं विधी—

**जं जस्स णत्थि वत्थं, सो उ णिवेएइ तं पवित्तिस्स ।**
**सो वि गुरूणं साहइ, णिवेइ वावारए वा वि ॥६१८॥**

"**जं जस्स०**" गाधा । जं जस्स साधुणो वासकप्पं अंतरकप्पादी वत्थं णत्थि, सो तं पवित्तिणो साहति । जधा—मम अमुगं नाम वत्थं णत्थि । ताधे सो पवत्ती गुरूणं ति आयरियाणं साहेति । जधा—खमासमणो ! अमुगस्स साधुस्स अमुगं वत्थं णत्थि । गच्छे य सामायारी चेव

१. **लाडविसयोब्भवं** पू० १-२, पा० विना । २. **गिम्हे गतेति जं वासा०** पू० १-२ ।

एसा जं आभिग्गहिया भवंति—अम्हेहिं वत्थाणि वा पाताणि वा आणेतव्वाणि अण्णेण वा जेण पओयणं साधूणं ? ताधे सो आयरिओ तेसिं आभिग्गहियाणं णिवेदेति । जधा—अज्जो ! अमुगस्स साधुस्स अमुगं वत्थं णत्थि । अध दुविधाए असतीए णत्थि आभिग्गहिया । जति सो असमत्थो अप्पणा[1] वत्थं उप्पादेउं, तो जो अण्णो साधू समत्थो तं वावारेति । जधा—वत्थाणि मग्गसु त्ति । जो सो आभिग्गहितो, जो वा सो वावारितो, ते काए विधीए उप्पाएंति ? उच्यते—

**भिक्खं चिय हिंडंता, उप्पायंतऽसइ बिइअ पढमासु ।**
**एवं पि अलब्भंते, संघाडेक्केक्क वावारे ॥६१९॥**

**एवं पि अलब्भंते, मुत्तूण गणिं तु सेसगा हिंडे ।**
**गुरुगमणे गुरुग ओहामऽभियोगो सेहहीला य ॥६२०॥**

"**भिक्खं चिय०**" गाथाद्वयम् । सुत्तपोरुसिं अत्थपोरुसिं च काउं **भिक्खं चिय हिंडंता उप्पादेंति** । अध भिक्खं हिंडंतेहिं ण लभेज्जा, ताधे **बितियं** ति अत्थपोरुसीए उप्पादेंति। असति सुत्तपोरुसीए, दोहिं वा पोरुसीहिं उप्पाएंति । जति एक्को ण लभेज्जा, संघाडओ बहूणं वा उप्पातेतव्वं । ताधे एक्केक्कयं संघाडगं वावारेति गुरू । ते वि तधेव मग्गंति। **भिक्खं चिय हिंडंता** इत्यादि॰। अध तध वि ण लभेज्जा ताधे 'वृन्दसाध्यानि कार्याणि' इति कृत्वा पिंडएणं सव्वे उट्ठेंति, आयरियं एक्कं मोत्तूणं । आयरिया जति अप्पणा हिंडंति, चउगुरुगा, ओभावणादोसा । आयरिओ होंतओ अप्पणा हिंडति त्ति नूणं एतस्स आयरियत्तणं पि एरिसयं चेव, जो चीराणं पि णाढाति । कमणिज्जरूवं वा दट्ठुं काति इत्थिया आभिओएज्जा । अण्णउत्थिया वा विसं देज्जा । ओभासिए वा अलद्धे सेहाणं हीलणिज्जो होज्जा—आयरियाणं दिट्ठं माहप्पं । जम्हा एते दोसा तम्हा आयरिओ ण हिंडावेतव्वो । तं मोत्तूणं जे अण्णे सेसा तेहिं सव्वेहिं हिंडितव्वं । ते पुण—

**सव्वे वा गीयत्था, मीसा व जहण्ण एक्कु गीयत्थो ।**
**इक्कस्स वि असईए, करिंति तो कप्पियं एक्कं ॥६२१॥**

"**सव्वे वा०**" गाधा । कंठा । असति एक्कं कप्पियं करेंति जो पडू पगब्भो । तत्थ आयरिया वत्थेसणं सउस्सग्गाऽववातं कहेंति ।

**आवाससोहि अखलंत समग उस्सग्ग दंडग ण भूमी ।**
**पुच्छा देवयलंभे, ण किं पमाणं धुवं दाहि ॥६२२॥**

"**आवास०**" गाधा । तेहिं य साधूहिं अणागतं चेव काइयसण्णाओ आणक्खे-

१. अप्पणो पू० १ ।

तव्वाओ, चीराणं गताणं होज्जा ण व त्ति । एस **आवाससोही** । उट्टेंतेहिं ण खलितव्वं पक्खुलितव्वं वा । अधवा **अक्खलंत**त्ति अविकूडेंतेहिं य उट्टेतव्वं । सव्वेहिं [१]य '**समगं**' उट्टेतव्वं, ण वि अण्णे उट्ठितया पडिक्खंति अण्णे उवेट्ठता । अधवा समगं काउस्सग्गो कायव्वो उवओगस्स । दंडया काउस्सग्गमादिं करेत्ता जाव न पडुप्पज्जंति[२] वत्थाणि ताव भूमीए न पइट्ठावेतव्वा । **केइ** भणंति—जाव पडिआगया, '**पुच्छ**' त्ति सीसो पुच्छति—किंणिमित्तं काउसग्गं करेंति ? किं देवताराहणणिमित्तं जा वत्थाणि उप्पाएति आराधिया समाणी ? उदाहु लंभो भविस्सति ? त्ति । आयरिओ भणति—ण होइ देवताराधणणिमित्तं लाभणिमित्तं वा, किंतु उवओगणिमित्तं काउस्सग्गो कीरति । किं पमाणं घेत्तव्वं ? उक्कोसं मज्झिमं जहण्णं वा । '**धुवं दाहि**' त्ति को वा पढमं ओभासिओ अवस्सं दाहिति ? । जो णज्जइ 'एस अवस्सं दाहिति' सो पढमं ओभासितव्वो । काउसग्गे कते केण पढमं उस्सारेतव्वं ? किं रातिणिएणं ओमराति-णिएणं ? । उच्यते—

**रातिणिओ उस्सारे, तस्सऽसतोमो वि गीतो लद्धीओ ।**
**अग्गीतो वि सलद्धी, मग्गइ इअरे परिच्छंति ॥६२३॥**

"**रातिणिओ०**" गाधा । जो रातिणियो सो त जति सलद्धीओ तो तेण उस्सारेतव्वं । '**तस्स असति**' त्ति, अह तस्स रातिणियस्स असइ, लद्धी णत्थि त्ति भणितं होति, अगीतत्थो वा सो, तो ओमरातिणिओ वि जो गीतत्थो सलद्धीओ सो उस्सारेति । अध अलद्धीओ, ताधे जो अगीतत्थो वि सलद्धीओ सो उस्सारेति ओभासति य, [३]पाकड्डित्तणं च करेति । '**इयरे**'त्ति जे गीतत्था ते परिच्छंति जा वत्थस्स विही भणिता ताए, कप्पति ण वा ? । इयाणिं पच्छित्तं भण्णति—

**उस्सग्गाई वितहं, खलंत अण्णोण्णओ अ लहुओ उ ।**
**उग्गम विप्परिणामो, ओभावण सावगं ण तओ ॥६२४॥**

**दाउं व उड्डुरुस्से, फासुव्वरियं तु सो सयं देइ ।**
**भावियकुलओभासण, णीणिइ कस्सेअ किं आसी ॥६२५॥**

"**उस्सग्गाइ०**" गाधाद्वयम् । काउस्सग्गमादी काउं सव्वेसु पदेसु । काउसग्गं ण करेंति ०। आवासयं न सोधिंति ०। खलंति ०। समयं वा ण करेंति ०। दंडए भूमीं छिवावेंति ०। पादं वा ०। अण्णण्णओ जंति ण वि पिंडएणं काउस्सग्गं काउं संदिसावेंति, अण्णो वि जुयओ संदिसावेंति, अण्णो वि जुयओ चेव ०। संदिसध त्ति ण भणंति, ०। आयरिया लाभोत्ति[४] ण भणंति, ०। किध गिण्हामो त्ति न भणंति, ०। आवस्सिया जधा संदिट्ठेल्लयं ति ण भणंति ०। आवस्सियं ण करेंति ना । जस्स य जोगं ण भणंति ०। एवं करेत्ता णिग्गता जति सावयं

१. वि पा० । २. **पडुपज्जंति** पू० १, पा० । ३. प्राकर्षिकत्वं—अग्रणीत्वमित्यर्थः । ४. **लाहए** पू० १ ।

[1]ओभासंति °०। उग्गमदोसा—तेण [2]मंतक्खेण सव्वाणि दिण्णाणि, ताधे अण्णाणि करेज्जा । विप्परिणामो—सो णवधम्मो ताहे चिंतेज्जा—जो एतेसिं सावओ भवति, तं चड्डेंति । ओभावणा तस्स कयाति ण होज्जा ताधे मिच्छादिट्ठिणो भणेज्जा—'अहो खरंटो ! एते से देवता तो वि ण देति । लोगो वा भणेज्जा—एतेसिं सावगा वि ण देंति, अण्णो को दाहिति ? । उड्डुरुस्सेज्जा वा लोगलज्जाए दातुं । जम्हा एते दोसा तम्हा सावतो ण भासितव्वो । सावगस्स मज्जाया चेव—जं फासुयं तेण जइणो णिमंतेयव्वा । एवं सो देति चेव, किं तेण ओभासितेणं ?। तम्हा जे अण्णे भाविता कुला तेसु ओभासितव्वं । कधं ? गंतुं । जो पभूतं धम्मलाभेउं भणति—सावता ! साधुणो तव सगासं आगता । [3]एतेसिं चीरेहिं कज्जं । ओहासणता उच्छाह दाणफलं गुणवयणं वा न [4]कड्डियव्वं, अध कड्डंति[5] ०। [मासलहुं] । मग्गिते सो भणेज्जा—'अणुग्गहो। ताधे णीणिते भाणितव्वं—कस्सेतं ? किं आसि ? किं होहिति ? कत्थासि ? । कस्सेयं ? ति जइ न भणंति ०। [[6]मासिकं] । को दोष: ? उच्यते—

**कासत्तऽपुच्छियम्मी, उग्गम-पक्खेवगाइणो दोसा ।**
**किं आसऽपुच्छियम्मी, पच्छाकम्मं पवहणं व ॥६२६॥**

"**कासत्त०**" गाधा । उग्गमदोसा ताव कहं होज्जा ? उच्यते—कस्सेतं ति पुच्छितो समाणो भणेज्जा—

**कीस ण णाहिह तुब्भे, तुब्भट्ठ कयं व कीय-धोयाई ।**
**अमुएण व तुब्भट्ठा, ठवियं गेहे ण गिण्हह से ॥६२७॥**

"**कीस ण०**" गाहार्द्धम् । कंठं ।

"**तुब्भट्ठा कतं ति**" मूलगुणेहिं उत्तरगुणेहिं वा कतं ?। अनयोर्विभागार्थमिदमुच्यते—

**तण विणण संजयट्ठा, मूलगुणा उत्तरा उ पज्जणया ।**
**गुरुगा गुरुगा लहुगा, विसेसिया चरिमए सुद्धो ॥६२८॥**

"**तण विणण०**" गाधा । 'ततं विततं च संजतट्ठा, पज्जितं पि संजतट्ठा । एवं चउभंगो । अस्य प्रायश्चित्तं—**गुरुगा** पच्छद्धं । कंठं । पक्खेवगदोसा । कधं ? उच्यते—'**अमुगेण**' पच्छद्धं । कंठं । तं पुण केण ठवितेल्लतं होज्जा ? उच्यते—

**समणे समणी सावग, साविग संबंधि इड्ढि मामाए ।**
**राया तेणे पक्खेवए अ णिक्खेवगं जाणे ॥६२९॥**

"**समणे०**" गाधा । समणेण वा, समणीए वा, सावए वा, सावियाए वा, संबंधिएण

१. **भासंति** पू० २ । २. मन्दाक्षेण-लज्जया । ३. **एरिसेहिं** पू० १-२ । ४. **कित्तितव्वं** पू० १-२, पा० विना । ५. **कित्तीति** पू० १-२, पा० विना । ६. [] एतदन्तर्गतं मु० वृत्तौ दृश्यते ।

वा, [१]संबंधियाए वा, इड्ढिमंतेण वा, मामाएण वा, रायाएण वा, तेणएण वा । **पक्खेवय** त्ति एतेहिं पक्खित्तयं होज्जा । एस पक्खेवओ भवति । **णिक्खेवयं जाणे**त्ति, णिक्खेवओ वि एतेसु चेव ठाणेसु भवति । एतेसिं पदाणं इमाओ विभासगाधाओ । जेण कारणेणं ते अण्णत्थ पक्खिवंति ।

**लिंगत्थेसु अकप्पं, सावग-णीएसु उग्गमासंका ।**
**इड्ढि अपवेस साविग, इड्ढिस्स व उग्गमासंका ॥६३०॥**

**एमेव मामगस्स वि, सड्ढी भज्जा उ अण्णहिं ठवए ।**
**निव तप्पिंडविवज्जी, मा होज्ज तदाहडं तेणे ॥६३१॥**

**एए उ अघिप्पंते, अण्णहिँ सण्णिक्खिवंति समणट्ठा ।**
**णिक्खेवओ वि एवं, छिण्णमछिण्णो उ कालेण ॥६३२॥**

**अमुगं कालमणागएँ, दिज्जह समणाण कप्पई छिण्णे ।**
**पुण्ण समकाल कप्पइ, ठवियगदोसा अईअम्मि ॥६३३॥**

**असिवाइकारणेहिँ पुण्णाईए मणुण्णणिक्खेवे ।**
**परिभुंजंति ठविंति व, छड्डिंति व ते गए णाउं ॥६३४॥**

"**लिंगत्थेसु**" गाधापंचकं । तत्थ जे ते समणा वा समणीतो वा ते लिंगत्थया होज्जा । तेसिं हत्थातो ण कप्पति घेत्तूणं । ते उग्गमादीहिं असुद्धाणि वत्थाणि गेण्हंति, सयं च समुच्छावेंति । ते लिंगतो वि पवयणतो वि साहम्मिय त्ति काउं ण वट्टति तेसिं हत्थाओ घेत्तुं । ताधे 'अम्हं न गेण्हंति' त्ति अण्णत्थ पक्खिवंति एते । 'जाधे साधुणो तुब्भे चीराणि मग्गेज्जा ताधे इमाणि देज्जह' त्ति सावओ साविया वा णीओ वा कोति । साधूणं एतेसिं तिण्ह वि उग्गमादिसु संकाए साहुणो 'अम्हं ते ण गेण्हंति' त्ति अणत्थ पक्खिवंति । इड्ढिमंतस्स साविता भज्जा तत्थ पवेसो ण लब्भति ताधे सा अण्णत्थ पक्खिवति । अधवा इड्ढिमंतो को वि पासंडाण चीराणि देति तस्स य ण घेप्पंति, तेण सो पक्खेवयं[२] करेज्जा । इड्ढिमंतो त्ति ईसरो । मामओ णाम ण कस्स वि घरे पवेसं देति, [३]पंतत्ताए वा इस्सालुयाए वा । तस्स भज्जा साविता । सा अण्णत्थ पक्खिवेज्जा । कीतं-कडं वा काउं अविदिण्णदोसं ति वा ण घेप्पति । णिवो णाम राया, तस्स पिंडो न कप्पति । ताधे सो जधा तधा 'लाभं लभामि'त्ति अण्णत्थ पक्खिवेज्जा । तेणयस्स वि य ण कप्पति घेत्तुं, मा 'तेणाहडं' होज्ज त्ति । सो वि 'मम ण गेण्हंति' त्ति अण्णत्थ पक्खिवति । एवं ताव पक्खेवओ, एवं चेव णिक्खेवओ वि । णवरं सो छिण्णो अच्छिण्णो य । 'छिण्णो' णाम ते णिक्खिवित्ता जति भणंति— 'अमुगं कालं जइ अम्हे ण एज्जामो तो तुब्भे समणाणं देज्जह ।' एवं जइ छिंदंति तो कप्पति । सो

१. पू० २ नास्ति । २. **निक्खेवयं** पू० २ । ३. **पण्णताए** पू० २ ।

पुण्णकालसमयमेव कप्पति, अतीते ण कप्पति 'ठवियग'दोस त्ति काउं। जे पुण साधू संभोइया तेहिं जं णिक्खित्तं असिवादिकारणेहिं देसंतरं वच्चंतेहिं पडिबंधट्ठिताणं सकासे तं ते पडिबंधट्ठिता पुण्णे वा काले अतीते वा गेण्हंति। जति [1]चीरासती तेसिं ताधे परिभुंजंति। अध णत्थि असती ताधे ठवेंति, तेसिं चेव दाहामो त्ति काउं। अह जाणंति ते ततो वि अण्णं विसयं गता अप्पणो य [2]असती नत्थि ताधे छड्डेंति।

**दमए दूभगे भट्ठे, समणच्छण्णे अ तेणए।**
**ण य णाम ण वत्तव्वं, पुट्ठे रुट्ठे जहावयणं ॥६३५॥**

"दमए०" गाधा। अधवा सो कस्सेतं ति पुच्छिओ भणेज्जा—

**किं दमओ हं भंते ! दमगस्स वि किं मे चीवरा णत्थी।**
**दमएण वि कायव्वो, धम्मो मा एरिसं पावे ॥६३६॥**

"**किं दमओ**" गाधा। कंठा। तो मं पुच्छध, कस्सेतं ति ? **दमए** त्ति गतं।

इदाणिं **दूभए** त्ति दारं, **दूभए** त्ति कस्सेतं ति पुच्छिओ भणेज्जा, अहं।

**जति रण्णो भज्जाए, व दूभगो दूभगा व जइ पइणो।**
**किं दूभगो मि तुब्भ वि, वत्था वि ण दूभगा किं मे ॥६३७॥**

"**जति रण्णो०**" गाधा कंठा। '**दूभए**'त्ति गतं। '**भट्ठे**'त्ति—रज्जाओ भट्ठो भणेज्ज।

**जति रज्जाओ भट्ठो, किं चीरेहिं पि पिच्छहेयाणि।**
**अत्थि महं साभरगा, मा हीरेज्ज त्ति पव्वइओ ॥६३८॥**

"**जति रज्जाओ०**" गाधा। कंठा। '**एताणि**'त्ति इमाणि पासध। णाहं चीराणं[3] [4]णाहामि, '**समणच्छण्णे य**' त्ति, कोइ इड्ढिमंतो समणत्तणेण छण्णो अच्छति। सो भणेज्जा— अत्थि ममं '**साभरग**[5]' त्ति। केवतिता ते ? **मा हीरेज्ज त्ति** तो **पव्वइतो**। सक्क—तावस-गेरुय-आजीवगा समणा-एतेहिं छण्णो अच्छति।

इदाणिं '**तेणय**' त्ति दारं। सो भणेज्जा—

**अत्थि मे घरे वि वत्था, णाहं वत्थाइँ साहु ! चोरेमि।**
**सुट्ठु मुणिअं च तुब्भे, किं पुच्छह किं व हं तेणो ॥६३९॥**

"**अत्थि मे०**" गाधा। कंठा। '**ण य नाम ण वत्तव्वं। पुट्ठे रुट्ठे जहा वयणं**' (गा० ६३५) ति। स्पृ(पृ)ष्टे साधुभिः कस्यैतदिति ? रुषिते तस्मिन् दायके किं द्रमकोऽहमिति ?

१. **चीरासंतो** पू० २। २. **सती** पू० २। ३. **चीराणि** पू० २। ४. **ण होमि त्ति** पा०। ५. साभरग त्ति देशीवचनात् रूपकाः।

इत्यादि ब्रुवन्[१] । रुषितेन न वक्तव्यं । यथार्हवचनं वक्तव्यमित्यर्थः । **नाम** शब्दो अवधारणे । किं च तद्यथार्हवचनं यद्वक्तव्यं रुषिते ? उच्यते—न वि अम्हे पुच्छामो जधा—तुमं दूहओ[२] ? त्ति । अम्हे पुच्छामो—मा एतं तव णीयस्स परियणस्स वा होज्जा, तेसिं च अण्णं नत्थि(ण) होज्जा । ताधे ते अण्णं संमुच्छावेज्जा । एवं सव्वे वि दूभगादिणो वि पदा विभासितव्वा । अंतेऽभिहितं प्रतिपदमुपतिष्ठतीति कृत्वा ।

"**समणे समणी वा**" [गाथा० ६२९] गाहा । एसा विभासितव्वा जधासंभवं । अधवा इमं तं वयणं जधारिहं जं वत्तव्वं—

**इत्थी पुरिस णपुंसग, धाई सुण्हा य होइ बोधव्वा ।**
**बाले अ वुड्ढयुगले, तालायर सेवए तेणे ॥६४०॥**

"**इत्थी-पुरिस०**" गाधा । '**इत्थि**'त्ति । अस्स विभासा—

**तिविहित्थि तत्थ थेरिं, भणंति मा होज्ज तुज्झ जायाणं ।**
**मज्झिम मा पइ-देवर, कण्णं मा थेर-भाईणं ॥६४१॥**

"**तिविधित्थि०**" गाधा । कयाति अविरतिया देंतिया होज्जा । सा तिविधा—थेरी मज्झिमा तरुणी । ए(त)त्थ **थेरिं भणंति** । कंठं ।

इयाणिं पुरिस-णपुंसग-धाई-सुण्हाणं व्याख्या—

**एमेव य पुरिसाण वि, पंडगऽपडिसेवि मा णिआणं ते ।**
**सामियकुलस्स धाई, सुण्हं जह मज्झिमा इत्थी ॥६४२॥**

"**एमेव०**" गाधा । कंठा । जधासंभवं थेरो भण्णति—'मा होज्ज तुज्झ जाताणं' । मज्झिमो—'मा ते महिलाए' । तरुणो—'मा ते पिउणो माऊए भातीण वा' । नपुंसओ जो ण पडिसेवावेति तस्स घेप्पति, तस्स य जधासंभवं जधारिहं वयणं वत्तव्वं । जो पुण पडिसेवावेति तस्स जति गेण्हति ह्व । आणादी । जा धाती सा भण्णति 'मा ते सामिकुलस्स होज्जा' । जा सुण्हा सा जधा मज्झिमा इत्थी तधा भण्णति । बालजुयलं-बालो बाली वा । वुड्ढजुयलं—वुड्ढो वुड्ढी वा । एतेसिं—

**दोण्हं पि अ जुयलाणं, जहारियं पुच्छिऊण जइ पहुणो ।**
**गेण्हंति तओ तेसिं, पुच्छासुद्धे अणुण्णायं ॥६४३॥**

"**दोण्हं पि०**" गाधा । जति पभुणो एते जुयलया तो घेप्पति । अपभूणं पभु—अणुण्णाताणं पुच्छिउं घेप्पति । '**तालायर**'त्ति, [६४०] जति तालायरो देति सो तूरपती वा

१. **ब्रुवति** पू० १ । २. **दमगो** पा० ।

कुशीलओ वा । ते इमं भणंति–

**तूरपइ दिंति मा ते, कुशीलवे तेसु तूरिए मा ते ।**
**एमेव भोगि सेवग, तेणो उ चउव्विहो इणमो ॥६४४॥**

"**तूरपइ०**" गाधा । कंठा । '**एमेव**'त्ति सेवओ जइ देति तो भण्णति–मा भोइयस्स होज्जा । **भोइओ** मा सेवगस्स ते होज्जा । **तेणो**, इमो चउव्विहो–

**सग्गाम परग्गामे, सदेस परदेसे होइ उड्डाहो ।**
**मूलं छेओ छम्मासमेव गुरुगा य चत्तारि ॥६४५॥**

"**सग्गाम०**" गाधा । कंठा । यथासंख्यं '**उड्डाहो**'त्ति '**तेणो कस्स**' त्ति गतं ।

**एवं पुच्छासुद्धे, किं आसि इमं तु जं तु परिभुत्तं ।**
**किं होहिइ त्ति अहतं, कत्थाऽऽसि अपुच्छणे लहुगा ॥६४६॥**

"**एवं पुच्छा०**" गाधा । जत्थ दोसा णत्थि पुच्छिते समणादतो, एवं पुच्छाए सुद्धं । जं परिभुत्तेल्लयं तं भणंति–किं एतं आसि ? जं एवं ण पुच्छति तो **किं आस** ? अपुच्छितम्मि पच्छाकम्मं पवहणं वा भवतीति वाक्यशेषः । जं पुण '**अहयं**' ण ताव परिभुज्जति तं भणति[१]– किं एयं होहिति ? भण्णति यं–कत्थ एतं आसि ? [२]पेल्लाए कोट्ठियातो वा उब्भिदित्ता वा मालोहडं होज्जा । चउसु वि चउलहुगं पच्छित्तं ।

**णिच्चणियंसण मज्जण, छणूसवे रायदारिए चेव ।**
**सुत्तत्थजाणएणं, चउपरियट्टे तओ गहणं ॥६४७॥**

**णिच्चणियंसणियं ति य अण्णासइ पच्छकम्म-वहणाई ।**
**अत्थि वहंते घिप्पइ, इयरय फुस-धोय-पगयाई ॥६४८॥**

"**णिच्चणितंसणितं**" गाधा । जं परिभुत्तं तं किं आसि त्ति पुच्छिते ते गिहत्था भणेज्जा–णिच्चणियंसणियं आसि । अधवा '**मज्जणियं**' अधवा **छणूसवियं** अधवा **रायद्दारियं । णिच्चणि**'० पुव्वद्धं । जति भणेज्जा णिच्चणियंसणियं, ताधे जति तस्स णिच्चणियंसणियं अण्णं णत्थि तो न घेप्पति । को दोसो ? उच्यते–पच्छाकम्मं करेज्जा । अण्णं समुच्छावेज्ज इत्यर्थः । किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा । **चउपरियट्टे ततो गहणं** ति । चउण्हं पि णिच्चणियंसणियादीणं परियट्टयाणं जं देति [३]परियट्टणं तस्स जइ अण्णो परियट्टओ अत्थि वहति य, तो घेप्पति । अध अत्थि अण्णो तं ण ताव [४]पवाहेइ, तो ण घेप्पति । **इयरे** त्ति अवहंते उप्फोसेज्ज वा धोवेज्ज वा एगंतं वा करेज्जा । आदिग्गहणेणं धूवेज्जा वा, अप्पणा य ण्हाएज्जा

१. **भण्णति** पू० १-२ । २. **पेलाए** पू० २ । ३. **परियट्टियं** पा० । ४. **वाहेति** पा० ।

णवयं णियंसेमित्ति काउं ।

**होहिइ व णियंसणियं, अण्णासइ गहण पच्छकम्माई ।**
**अत्थि णवे वि उ गिण्हइ, तहिँ तुल्ल पवाहणादोसा ॥६४९॥**

"**होहिति व०**" गाधा । अध कतादि तं अहतं होज्जा ताधे किं होहिति त्ति ? पुच्छिते से गिही भणेज्जा-णिच्चणियंसणियं एतं होहिति । ताधे जति अण्णं णत्थि, ण कप्पति । एत्थ वि ते चेव पच्छाकम्मादिणो दोसा । एत्थ वि जति अण्णो परियट्टओ अत्थि तो कप्पति । अध एगतरं देति, न परियट्टयं, तो जति अण्णं तण्णिभं अत्थि तो कप्पति । किंनिमित्तं ? **तुल्ला** तत्थ **पवाहणादयो दोसा** । तुल्ला णाम जति गेण्हति जति य न गेण्हति तहा वि सो अप्पप्पयोगेण चेव अण्णं पवाधेउकामो काहिति पवाहणादयो दोसा एगस्स वा बितियस्स वा वत्थस्स ।

**एमेव मज्जणाई, पुच्छासुद्धं तु सव्वओ पेहे ।**
**मणिमाई दाइंति व, असिट्ठे मा सेहुवादाणं ॥६५०॥**

"**एमेव०**" गाधा । जधा णिच्चणियंसणियं भणितं—कप्पति वा ण वा ? तधा—मज्जणिय—छणूसविय—रायद्दारियाणि वि वत्तव्वाणि । एताणि वि चत्तारि वि जाधे पुच्छा-सुद्धाणि कप्पणिज्जाइं णिद्धारिउं, ताधे अंतेसु दोसु घेत्तूणं, सव्वतो समंता जोएतव्वं । मा तत्थ गिहत्थाणं मणी वा हिरण्णं वा तंबं वा अण्णं वा किंचि उवणिबद्धे होज्जा । ताधे ते गिहत्था भण्णंति—जोएह [१]सव्वं सव्वओ समंता । जति तेहिं गिहत्थेहिं दिट्ठं, दिट्ठं णाम । अध ण पेच्छेज्जा, ताधे साधुणो दाएंति, एतं फेडेह त्ति । आह—कहं पुण कहियं नवि तं अहिकरणं भवति ? उच्यते—थोवतरो से दोसो, अकधिते पुण से सेहोवादाणं होज्जा । सो तं घेत्तुं उप्पव्वएज्जा । गिहत्थाणि वा उड्डाहं करेज्जा 'पोत्तेण समं मम समणेहिं हडं'ति ।

**एवं तु गविट्ठेसुं, आयरिया दिंति जस्स जं णत्थि ।**
**समभागेसु कएसु व, जहरायणिया भवे बीओ ॥६५१॥**

"**एवं तु०**" गाधा । कंठा । '**बितिउ**' त्ति दानप्रकारः । **वत्थकप्पिओ** त्ति दारं गतं । ॥छ॥ इदाणिं '**पातकप्पितो**' त्ति दारम् । एत्थ वि—

**अप्पत्ते अकहेत्ता, अणहिगयऽपरिच्छणे य चउगुरुगा ।**
**दोहि गुरू तवगुरुगा, कालगुरू दोहि वी लहुगा ॥६५२॥**

"**अप्पत्ते अक०**" गाधा । पादेसणासुत्तं । तं च पादं चउव्विहं—

**णामं ठवणा दविए, भावम्मि चउव्विहं भवे पायं ।**
**एसो खलु पायस्सा, णिक्खेवो चउव्विहो होइ ॥६५३॥**

---

१. सव्वे पू० २ ।

"**णामं ठवणा०**" गाधा । कंठा । नाम-स्थापने पूर्ववत् ।

**दव्वे तिविहं एगिंदि-विगल-पंचिंदिएहिं णिप्फण्णं ।**
**भावे आया पत्तं, जो सीलंगाण आहारो ।।६५४।।**

"**दव्वे तिविहं०**" गाधा । एगिंदियणिप्फण्णं लाउगादि । विगलिंदियणिप्फण्णं सुत्ति-संखमादी । पंचिंदियणिप्फण्णं कुतुव-दंतय-संगपादादी । "**भावे०**" पच्छद्धं । कंठं । एत्थ दव्वपादेण अधिकारो, तं तिविधं—

**लाउय दारुय मट्टिय, तिविहं उक्कोस मज्झिम जहण्णं ।**
**एक्केक्कं पुण तिविहं, अहागड-ऽप्पं-सपरिकम्मं ।।६५५।।**

"**लाउय०**" गाहा । एक्केक्कं तिविधं—उक्कोसादि । उक्कोसं पडिग्गहो, मज्झिमं मत्तओ, जहण्णं [१]उल्लुंकगादि । पुणो एक्केक्कं तिविधं—अधागडं अप्पपरिकम्मं सपरिकम्मं ।

**वोच्चत्थे चउलहुगा, आणाइ विराहणा य दुविहा उ ।**
**छेयण-भेयणकरणे, जा जहिँ आरोवणा भणिया ।।६५६।।**

"**वोच्चत्थे०**" गाधा । वोच्चत्थे गहणे करणे वा चउलहुगा उक्कोसो । इयरेसु दोसु ना । '**आणादि**'त्ति आणा अणवत्थं मिच्छत्तं । **विराहणा य दुविधा**—आताए[२] संजमे य । एतासिं दोण्हं विराधणाणं **छेदण—भेदणकरणे** जा जहिं आरोवणा भणित त्ति । आताए छिंदंतस्स भिंदंतस्स वा—

**परिताव महादुक्खे, मुच्छामुच्छे य किच्छपाणगते ।**
**किच्छुस्सासे य तहा, समुघाए चेव कालगते ।। [ १८९९।। ][३]**

"**परिताव महादुक्खे०**" गाधा । जधासंखं—

**चउरो लहुगा गुरुगा, छम्मासा होंति लहुग गुरुगा य ।**
**छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य पारंची ।। [ १९९३।। ][४]**

"**चउरो लहुगा गुरुगा**" गाधा । अणागाढादि संजमे घुणादि ।

**छक्काय चउसु लहुगा, परित्त लहुगा य गुरुग साहारे ।**
**संघट्टण परितावण, लहु गुरुगऽतिवायणे मूलं ।। [ ४६५ ][५]**

"**छक्काय चउसु**" गाधा । तंपि चउहिं चेव पडिमाहिं गवेसितव्वं । तं जहा—

१. ओलंकादि पू० १ । उलंकगादि पू० २ । २. आता य संजमेण य पू० १-२, पा० विना । ३. बृ०क०मु०वृ० विभाग २ पृ० ५५४ । ४. विभाग २ पृ० ५७९ । ५. पृ० १२२ गा० ४६५, अत्रैव पुस्तके ।

**उद्दिसिय पेह संगय, उज्झियधम्मे चउत्थए होइ ।**
**सव्वे जहण्ण एक्को, उस्सग्गाई जयं पुच्छे ॥६५७॥**

"**उद्दिसिय०**" गाहा ।

**उद्दिट्ठ तिगेगयरं, पेहा पुण दट्ठु एरिसं भणइ ।**

"**उद्दिट्ठ०**" पुव्वद्धं । कंठं । "अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण पायं जाणेज्जा, तं जहा—संगइयं वा वेजयंतियं वा" (आचारा० २।६।१) । किमुक्तं भवति ? उच्यते—

**दोण्हेगयरं संगइ, वाहयई वारएणं तु ॥६५८॥**

"**दोण्हेगयरं०**" पच्छद्धं । जस्स गिहत्थस्स दो पादाणि सो दिणे दिणे तेसिं वारएणं एगतरं वाहेति । जत्थ जं वाहिज्जति तं संगतियं । जं धरिज्जति[1] तं वेजयंतियं । एरिसं कोइ साधू मग्गेज्जा अभिग्गहविसेसेण उज्झितं—

**दव्वाइ दव्व हीणाहियं तु अमुगं च मे ण घेत्तव्वं ।**
**दोहि वि भावणिसिट्ठं, तमुज्झिओ भट्ठऽणोभट्ठं ॥६५९॥**

**अमुइच्चगं ण धारे, उवणीयं तं च केणई तस्स ।**
**जं वुज्झे भरहाई, सदेस बहुपायदेसे वा ॥६६०॥**

**दगदोद्धिगाइ जं पुव्वकाल जुग्गं तदण्णहिं उज्झे ।**
**होहिइ व एस्सकाले, अजोग्गयमणागयं उज्झे ॥६६१॥**

**लद्धूण अण्णपाए, पोराणे सो उ देइ अण्णस्स ।**
**सो वि अ णिच्छइ ताइं, भावुज्झिय एवमाईयं ॥६६२॥**

**ओभासणा य पुच्छा, दिट्ठे रिक्के मुहे वहंते य ।**
**संसट्ठे उक्खित्ते, सुक्के अ पगासे दट्ठूणं ॥६६३॥**

"**दव्वादि**" गाधा । कासइ गिहिणो दव्वाभिग्गहो । जधा—इमातो पमाणातो[2] हीणं अधियं वा मए ण घेत्तव्वं । अधवा **अमुगं** ति चड्डुओ ओलंबियापडिग्गहो वा मए ण [3]घेतव्वो, तं च उवणीयं, वस्त्रवच्चर्चा, जाव **भावुज्झितमेवमादीयं** । एत्थ वि चउपडिमा । 'गच्छ—जिणे दोण्हग्गहभिग्गहणंतरा' इत्याद्यारभ्य । तहेव गच्छवासीणं 'जं जस्स नत्थि पादं' एत्तो आरब्भ जधा वत्थं, जाव **सव्वे** त्ति गीतत्था । जहण्णेणं **एगो** गीयत्थो अवस्स भवति जो परिच्छति । **उस्सग्गादि**

१. **जं अच्छति तं** पू० १-२ । २. **पडिमातो ही०** पू० २ । ३. **घेत्तव्वं** पू० २ ।

त्ति। आवासस्रोधि अखलंत तधेव से पायच्छित्तं। **जतं** ति। सावएसु पुणो न ओभासणा। किं तर्हि? भावितकुलओभासणा। एतदुक्तं भवति '**ओभासणा य। पुच्छे** ति। णीणीते कस्सेतं? किं वाऽऽसि? एत्तो आरब्भ। सेसं जधा वत्थे भणितं, तधा पादे वि वत्तव्वं जधासंभवं, जाव—

"**एवं तु गविट्ठेसु आयरिया देंति जस्स जं णत्थि।**
**समभागेसु कतेसु वि जहरातिणिता [1]भवे बितिओ ॥ [ ६५१ ] ॥**"

"**पुच्छा दिट्ठे रिक्के मुहे**" दारगाधा—(६६३)। पुच्छा—**दिट्ठे** त्ति।

**दिट्ठमदिट्ठे दिट्ठं, खमतरमियरे ण दिस्सए काया।**
**दहिमाईहि अरिक्कं, वरं तु इयरे सिया पाणा ॥६६४॥**

'**दिट्ठमदिट्ठे**', सीसो पुच्छति—दिट्ठमदिट्ठाणं कतरं खमतरं जं घेप्पति? आयरिओ भणति—**दिट्ठं खमतरं इतरे ण दिस्सते काया**। दृष्टादृष्टयोर्दृष्टं क्षमतरं भवति, वरतरं ति वा, जोग्गतरं ति वा एगट्ठं। कस्मात् कारणात्? उच्यते—'**इतरे ण दीसए काय**' त्ति। इतरं णाम अदिट्ठं। तम्मि च्छक्काया ण दीसंति। किं रिक्कं घेप्पतु अरिक्कं? उच्यते—जं **दधिमादीहिं अरिक्कं** तं घेप्पतु। **इतरं** ति रिक्कं, आउक्कायादीहिं य जं रिक्कं तं **वरं**। किं कतमुहं घेप्पतु अकयमुहं?, वहंतयं घेप्पतु अवहंतयं? उच्यते—

**अकयमुहे दुप्पस्सा, बीयाई छेयणाइ दोसा वा।**
**कुंथूमादवहंते, फासुवहंतं अओ धण्णं ॥६६५॥**

"**अकयमुह०**" गाधा। कंठा। एतेण कारणेणं जं फासुएणं वहंतयं तं चोक्खयं। ण वि जं आउक्कायादिणा। किं संसट्ठं घेप्पतु, असंसट्ठं?, णिक्खित्तं गेण्हतु, उक्खित्तं?, सुक्खं गेण्हतु उल्लं?, पगासमुहं गेण्हतु अप्पगासमुहं? एवं पुच्छिते आयरिओ आह—

***एमेव य संसट्ठं, फासुय अप्फासुएण पडिकुट्ठं।***
**उक्खित्तं च खमतरं, जं चोल्लं फासुदव्वेण ॥६६६॥**

**जं होइ पगासमुहं, जोग्गयरं तं तु अप्पगासाओ।**
**तस-बीयाइ अदट्ठुं, इमं तु जयणं पुणो कुणइ ॥६६७॥**

"**एमेव०**" गाहाद्वयम्। '**एमेव**'त्ति, पुच्छिते समाणे जं **फासुय**दव्वेणं संसट्ठं तं चोक्खं। अफासुतेण जं तं पडिकुट्ठं ति ण वट्टति, जं च असंसट्ठं। सेसं कंठं। '**दट्ठूणं**' ति, [गा० ६६३] एवं दिट्ठादीहिं सुद्धं समाणं घेत्तुं चक्खुणा पडिलेहिउं ति भणितं होति। जति[2] किंचि न पेच्छति तसादिं ताधे '**तस-बीयादिं अदट्ठुं इमं तु जतणं पुणो कुणति**'।

१. बहवे पू० २। २. जं पू० २।

**ओमंथ पाणमाई, पुच्छा मूलगुण उत्तरगुणे य ।**
**तिट्ठाणे तिक्खुत्तो, सुद्धो ससिणिद्धमाईसु ॥६६८॥**

"**ओमंथ०**" गाधा । '**ओमंथ**'त्ति अस्स विभासा–

**दाहिणकरेण कोणं, घेत्तुत्ताणेण वाममणिबंधे ।**
**खोडेइ तिण्णि वारे, तिण्णि तले तिण्णि भूमीए ॥६६९॥**

"**दाहिणकरेण०**" गाधा । कंठा । **पाणमादि** त्ति [६६५] अस्स विभासा । खोडिते समाणे ।

**तस-बीतादि व दिट्ठे, ण गेण्हई गेण्हई उ अदिट्ठे ।**
**गहणम्मि उ परिसुद्धे, कप्पइ दिट्ठेहिँ वि बहूहिं ॥६७०॥**

"**तस-बीतादि व दिट्ठे०**" गाधा । **वा** ग्रहणं खोडिते समाणे दिट्ठं वा होज्जा ण दिट्ठं वा । जति दिट्ठं, ण गेण्हति । अध ण दिट्ठं, तो गेण्हति । गहणे परिसुद्धे पच्छा जति बीयादी दिट्ठा होज्जा ताधे वि गेण्हति चेव ण परिट्ठवेति वा, [१]पडिअल्लीवेइ वा सणियं जयणाए फेडेति जत्थ न उद्दाइयंति । **पुच्छा मूलगुण उत्तरगुणे य** [६६५] त्ति । सीसो पुच्छति–पादस्स के मूलगुणा के उत्तरगुणा ? । उच्यते–

**मुहकरणं मूलगुणा, पाए णिक्कोरणं च इअरे उ ।**
**गुरुगा गुरुगा लहुगा, विसेसिया चरिमए सुद्धो ॥६७१॥**

"**मुहकरणं०**" गाधा । संजतट्ठाए मुहं कतं, संजयट्ठाए णिक्कोरितं, एत्थ चउगुरुगा । दोहि वि गुरुगा । संजयट्ठाए मुहं कतं आयट्ठाए णिक्कोरितं चउगुरुगा, तवगुरुगा काललहू । आतट्ठाए मुहं कतं संजयट्ठाए णिक्कोरितं चउलहुगा, तवलहु कालगुरु । चउत्थो सुद्धो । मुहकरणं मूलगुणा, णिक्कोरणं उत्तरगुणा । विसोधिकोडी य **तिट्ठाणे तिक्खुत्तो** त्ति [६६५] जं दाहिणकरेण कोणे घेत्तुं वामहत्थमणिबंधे तिण्णि वारे खोडेति, तिण्णि तले, ताधे तिण्णि भूमीए । एतेसु तिसु ठाणेसु एक्केक्के तिक्खुत्तो खोडेति । जं एतदुक्तं भवति–'तिट्ठाणे तिक्खुत्तो'त्ति । एवं कते पच्छा **सुद्धो ससिणिद्धमादीसु** । जत्थ आउक्कायवहंतयं अहुणोवणीय-आउक्कायससिणिद्धं होज्जा । तं च न णेण विभावितं तिट्ठाणादिविधिं करेंतेणं । तत्थ य सुयणाणपमाणतो सुद्धो । आदिग्गहणेणं बीयादिसु सुद्धो । **पादकप्पितो** त्ति गतं ॥छ॥

इदाणिं **उग्गहकप्पितो** त्ति दारं । एत्थ वि अप्पत्ते अकहित्ता [गा० ४७५] सुत्तं ।

**उग्गहपडिमा–**

**देविंद-राय-गहवइ-उग्गहो सागारिए अ साहम्मी ।**
**पंचविहम्मि परूविएँ, णायव्वो जो जहिं कमइ ॥६७२॥**

१. पडियल्लेति पा० ।

"**देविंदराय०**" गाधा। एस पंचविहो उग्गहो। तत्थ '**देविंदोग्गहो**' णाम जत्तियस्स[१] सक्को ईसाणो वा पभवति। राओग्गहो चक्कवट्टिमादिणो रायाणो जत्तियस्स पभवंति। एवं सेसा वि।

**हेट्ठिल्ला उवरिल्लेहिँ बाहिया ण उ लहंति पाहण्णं।**
**पुव्वाणुण्णाऽभिणवं च चउसु भय पच्छिमेऽभिणवा ॥६७३॥**

"**हेट्ठिल्ला०**" गाधा। हेट्ठिल्लो देविंदोग्गहो। तस्स उवरिल्लो राओग्गहो। सो देविंदोग्गहं बाहति, तेण देविंदोग्गहो बाधितो पाधण्णं ण लब्भति। जं भणितं होति—राउग्गहे राया चेव पभवति ण देविंदो। तेण तत्थ राया चेव अणुजाणावेतव्वो। तं पि गाधापतिउग्गहो बाहति। तं पि सागारिओग्गहो बाधति। तं पि साहम्मिओग्गहो बाधति। '**पुव्वाणुण्णा**' णाम जो अण्णेहिं [२]पुव्वएहिं साहूहिं उग्गहो अणुजाणावितो पच्छा अण्णेहिं परिभुज्जति सा पुव्वाणुण्णा भवति। जधा पुरा साधूहिं देविंदो अणुजाणावितो संपयं पि सा चेव पुव्वाणुण्णा अणुसज्जति। अभिणवा अणुण्णा णाम जता अण्णो देविंदो उववण्णो भवति, तदा सो अणुजाणाविज्जति। सा तेसिं चेव साधूणं अभिणवा अणुण्णा भवति। अण्णेसिं पुव्वाणुण्णा चेव। एवं रायादीणं पि। **पुव्वाणुण्णाभिनवं च चउसु भय** त्ति गतं। '**पच्छिमेऽभिणव**'त्ति। पच्छिमो साधम्मिउग्गहो। तत्थ अभिणवाणुण्णा चेव भवति, [३]ण पुव्वाणुण्णा। जेणं जो जं जाधे उवसंपज्जति साधम्मिओ साहम्मियं सो तं ताधे चेव अणुजाणावेति। जं पुण पुव्वाणुण्णा तं साधुणो साधू वत्थाति परिभुंजति तत्रात्मीयोपचार एव भवति। तेण सा पुव्वाणुण्णा भवतीति, **पंचविधम्मि परूविए**। कधं ? उच्यते—

**दव्वादी एक्केक्को, चउहा खित्तं तु तत्थ पाहण्णे।**
**तत्थेव य जे दव्वा, कालो भावो अ सामित्ते ॥६७४॥**

"**दव्वादी०**" गाधा। देविंदोग्गहो चउव्विहो। तं जधा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ। एवं सेसा वि दव्वादीया चउव्विधा भाणितव्वा। एत्थ पढमं खेत्तोवग्गहो परूविज्जति। किंनिमित्तं ? उच्यते—

क्षेत्रं प्राधान्ये वर्तते। अस्मिन्नेव क्षेत्रे यतो यद् द्रव्यं कालो भावश्च आधेयः अतस्तदाधारभूतं स्वामित्वे वर्तते द्रव्यादीनां क्षेत्रं। तस्मिंश्च प्रथमं प्ररूपिते द्रव्यादयः प्ररूपिता एव [४]भवन्ति। अतः क्षेत्रमेव प्रथमं प्ररूप्यते। आह—पेशलमपदिष्टं, स प्ररूप्यतां क्षेत्रावग्रहः इदानीम्। [५]श्रूयतां, ब्रूमः—

**पुव्वावरायया खलु, सेढी लोगस्स मज्झयारम्मि।**
**जा कुणइ दुहा लोगं, दाहिण तह उत्तरद्धं च ॥६७५॥**

१. **जतिल्लयस्स** पू० १। २. **पुव्वसाहूहिं** पा०। ३. **जधा पुव्वा०** पू० २। ४. **एव इत्यतः क्षेत्र०** पू० २। ५. **उच्यते** पू० १-२।

**साधारण आवलिया, मज्झम्मि अबद्धचंदकप्पाणं ।**
**अद्धं च परक्खित्ते, तेसिं अद्धं च सक्खित्ते ॥६७६॥**

"**पुव्वावर०**" गाधा । जा इमा लोगस्स मज्झे मंदरस्स पव्वयस्स उप्पिं सेढी एगपएसा ताए लोगो दुधा कतो । दाहिणड्ढं च उत्तरड्ढं च । तत्थ दाहिणड्ढस्स सक्को व[1]सायति । उत्तरड्ढस्स ईसाणो । ताए मज्झिमसेढीए जा विमाणावलिता ठिता सा तेसिं दुण्ह वि देविंदाणं साधारणा । **मज्झम्मि अबद्धचंदकप्पाणं** ति, या मध्ये स्थिता अर्द्धचन्द्राकृतयोः कल्पयोः सौधर्मेशानयोरित्यर्थः, सा साधारणा । कथं ? जे वट्टविमाणा ता एते सक्कस्स, तंस-चउरंसाणं [2]एगंतरं ईसाणस्स । ते य जे ताए आवलियाए विमाणा तेसिं अद्धं सखेत्ते पतिट्ठियं, अद्धं परखेत्ते । तत्थ—

**सेढीए दाहिणेणं, जा लोगो उड्ढमो सकविमाणा ।**
**हेट्ठा वि य लोगंतो, खित्तं सोहम्मरायस्स ॥६७७॥**

"**सेढीए०**" गाधा । कंठा । एतस्स सव्वस्स सक्को पभवति । एस देविंदोग्गहो ।

इदाणिं **राओग्गहो**—

**सरगोयरो अ तिरियं, बावत्तरि जोयणाइँ उड्ढं तु ।**
**अहलोगगाम-अघमाइ हेट्ठओ चक्किणो खित्तं ॥६७८॥**

"**सरगोयरो०**" गाधा । तिरियं जाव चक्कवट्टिस्स सरो वच्चति मागहादिसु । उड्ढं जाव सरो चेव चुल्लहिमवंतकुमारस्स मेराए वच्चति चउसट्ठी जोयणाणि, सुत्तादेसेण वा बावत्तरिं । अधे जाव अधोलोइया गामा, अधवा **अघ** त्ति अघा णाम गड्डाओ । आदिशब्दाद् अगडादयः एवतियस्स खेत्तस्स चक्कवट्टी [3]वसयति । राओग्गहो गतो ।

इदाणिं [4]**गाधावतिउग्गहो**—

**गहवइणो आहारो, चउद्दिसिं सारियस्स घरवगडा ।**
**हेट्ठा अघाऽगडाई, उड्ढं गिरि-गेह धय-रुक्खा ॥६७९॥**

"[5]**गाधावतिणो०**" गाधा । आधारो णाम विसओ जत्तिओ जस्स स गहवतिउग्गहो उक्कोसओ । **सागारियस्स घरवगड** त्ति । सागारियउग्गहो उक्कोसतो जाव घरस्स वगडा । वगडा णाम पलिहतं वतिपरिक्खेव इत्यनर्थान्तरं । एस ताव तिरियं भणितो ।

इदाणिं दोण्ह वि अधे उड्ढं च भणति । **हेट्ठा अघागडादि** । अघा गड्डा दहो वा, अगडो

---

१. **वसयति** पू० २ । २. **एगतरं** पू० १-२, पा० विना । ३. **वसायति** पू० १, पा० । ४-५. **गहवति०** पू० २ ।

कूवो । आदिशब्दात् वाविमादि । उड्ढं पव्वया जोयणियादी । घरोवरिं वा चढितव्वयं होज्जा झया वा, जधा—हत्थिज्झयो इत्यादि । रुक्खे वा तम्मि चढियव्वयं होज्जा । एस सागारिय-गहवतीणं[१] होज्जा । एस उक्कोसतो भणितो ।

**अजहण्णमणुक्कोसो, पढमो जो आवि चक्कवट्टीणं ।**
**सेसणिव रोहगाइसु, जहण्णओ गहवईणं च ॥६८०॥**

**णगराइ णिरुद्ध घरे, जा याऽणुण्णा उ दुचरिम जहण्णो ।**
**उक्कोसो उ अणियओ, अचक्किमाई चउण्हं पि ॥६८१॥**

"**अजहण्णमणु०**" गाधा । पढमो णाम देविंदोग्गहो, राओग्गहो य जो चक्कवट्टिस्स । एतेसिं दोण्ह वि जहण्णयं उक्कोसयं वा णत्थि । णियमा एते अजहण्णुक्कोसया । **सेसणिव** त्ति, चक्कवट्टि मोत्तुं जे अण्णे निवा तेसिं [२]जहण्णओ उग्गहो भवति । '**णगरादि णिरुद्ध०**' जत्थ णगरं णिरोहितं अण्णेण रण्णा । आदिशब्दात् खेडादि । तत्थ णगरमज्जाता जहण्णओ उग्गहो भवति। गहवतिउग्गहो वि जहण्णओ णगररोहए चेव भवति । जत्तियं से [३]अपेल्लियं लोएणं रण्णा वा बलवाहणेणं अमायमाणे घरे जाताणुण्णाओ । '**दुचरिम जहण्णो**'त्ति दो चरिमा उग्गहा दुचरिमा सागारियउग्गहो, साहम्मिउग्गहो य। एते णगरादिरोहए जाहे[४] घरं पेल्लितं भवति लोएणं, ताधे जा अणुण्णा 'एतं तुब्भं इमं अम्हं' ति । जेहिं य समणेहिं जा **घरे** त्ति उवस्सए मेरा कता, एस जहण्णओ सागारिउग्गहो, साहम्मिउग्गहो य भवति । "**उक्कोस०**"त्ति पच्छद्धं । जो चक्कवट्टी ण भवति राया तस्स गहवतिउग्गहो सागारिउग्गहो साहम्मिउग्गहो एतेसिं उक्कोसओ उग्गहो अणियतो । जं भणितं होति अण्णस्स बहुओ अण्णस्स थोवओ ।

**अणुण्णाए वि सव्वम्मी, उग्गहे घरसामिणा ।**
**तहा वि सीमं छिंदंति, साहू तप्पियकारिणो ॥६८२॥**

**झाणट्ठया भायणधोवणाई, दोण्हऽट्ठया अच्छणहेउगं च ।**
**मिउग्गहं चेव अहिट्ठयंते मा सो व अण्णो व करेज्ज मण्णुं ॥६८३॥**

"**अणुण्णाए०**" सिलोगो । जति वि सागारिएणं सव्वं अणुण्णातं । तं जधा—जत्थ जत्थ रुच्चति तत्थ तत्थ अच्छध, भायणे धोवेध, वोसिरध कायियादि । सज्झायं वा करेध। तध वि मा सबाल-वुड्ढाकुलेणं गच्छेणं अतिबहुए अक्कंते काइयादिणा भग्गे मा 'मण्णुं' ति दुक्खं करेहिति । वरं च चिंतेंतो एत्तिया साधू तह वि णज्जति—एत्थ कोइ ण वसति, ताधे तस्य प्रियोत्पादननिमित्तं मेरं थावेंति । हे सावत ! एत्थं अम्हे झाणं झाइस्सामो, एत्तो परं ण वि, एत्थ भायणे धोविस्सामो, एत्थ ण वि । **दोण्हट्ठय** त्ति उच्चारस्स य पासवणस्स य । एत्थ उच्चारं

१. ०गाधावतीण पा० । २. **अजह०** पू० २ । ३. **अप्पेल्लियं** पू० १-२ विना । ४. **जाव** पू० १-२ ।

जति नाम कस्सइ रत्तिं होज्जा । एत्थ पासवणं, अण्णत्थ ण वि । एत्थ अच्छीहामो काएइ वेलाए लिहंता वा, रंगेंता वा भाणे । एवं ठविते मितोग्गहं चेव अधिट्ठितं । ते जा कता मेरा तं चेव अधिट्ठयंति । अकए पुण अण्णे वि जे तं ओगासं भंजंति सण्णादीहि तं पि समणाणं चेव उवरिएणं [1]एति । '**सो**' त्ति सागारिओ, **अण्णो** णाम जो तस्स णिएल्लओ। एस **खेत्तोग्गहो** गओ ।

इदाणिं **दव्वोग्गहो**–

**चेयणमचित्त मीसग, दव्वा खलु उग्गहेसु एएसु ।**
**जो जेण परिग्गहिओ, सो दव्वे उग्गहो होइ ॥६८४॥**

"**चेयणमचित्त०**" गाधा । कंठा । '**एतेसु**'त्ति देविंदोग्गहादिसु । इदाणिं **कालोग्गहो** ।

**दो सागरा उ पढमो, चक्की सत्त सय पुव्व चुलसीई ।**
**सेसणिवम्मि मुहुत्तं, जहण्णमुक्कोसए भयणा ॥६८५॥**

"**दो सागरा०**" गाधा । पढमो णाम देविंदोग्गहो । चक्कवट्टिउग्गहो जहण्णेणं सत्तवाससता **बंभदत्तस्स** । उक्कोसेणं चउरासीतिं पुव्वसतसहस्साइं **भरहस्स** । '**सेसणिव**'त्ति चक्कवट्टिं मोत्तुं जे अण्णे रायाणो तेसिं जहण्णओ कालोग्गहो अंतोमुहुत्तं, एत्तियं से आउयं होज्जा। अधवा एत्तिएणं कालेणं फेडितो होज्जा। '**उक्कोसए भयणा**'त्ति । अंतोमुहुत्तओ परेणं समयाधियातो ठितीतो जाव चउरासीतिं पुव्वसयसहस्साइं । एत्थंतरे जेणं रण्णा जं आउयं णिव्वत्तितं, जो वा जत्तियं कालं रज्जाधिवच्चं करेति, तस्स तस्स सो उक्कोसओ कालोग्गहो भवति । एतेण कारणेणं भयणा भवति ।

**एवं गहवइ-सागारिए वि चरिमे जहण्णओ मासो ।**
**उक्कोसो चउमासा, दोहि वि भयणा उ कज्जम्मि ॥६८६॥**

"**एवं०**" गाधा । एवं गहवइ-सागारियाण वि कालोग्गहो जहण्णओ उक्कोसओ य जहा सेसनृपस्येति । चरिमो नाम साहम्मिओग्गहो सो जहण्णेणं एक्को मासो उडुबद्धे मासकप्पेणं वसमाणाणं । चत्तारि मासा वासासु[2] वसमाणाणं । **दोसु वि भयणा ओ कज्जम्मि** त्ति जहण्णए य उक्कोसए य । साहम्मिउग्गहे असिवादीहिं कारणेहिं कयाइ मासो चउमासो वा ण चेव पूरिज्जेज्जा, अइरित्तो वा होज्जा । गओ **कालोग्गहो** ।

इयाणिं **भावोग्गहो** ।

---

१. ०**एणं** ति पू० २ । २. **वासावासेसु** पू० १ ।

**चउरो ओदइअम्मी, खओवसमियम्मि पच्छिमो होइ ।**
**मणसीकरणमणुण्णं, च जाण जं जत्थ ऊ कमइ ॥६८७॥**

"**चउरो०**" गाहा । चत्तारि आदिल्ला उग्गहा ओदइए भावे वट्टंति । साधम्मिउग्गहो खओवसमिते भावे वट्टति । जं तं दारगाधाए भणितं—"**पंचविहम्मि परूविए, णातव्वं जो जहिं कमति**" (गा० ६७२) एस सो पंचविधो परूवितो । एतम्मि[१] पंचविधे परूविते किं ज्ञातव्यं "**जं जहिं कमइ**" ? उच्यते—"**मणसीकरणमणुण्णं च जाण जं जत्थ ऊ कमति**" जाणित्ता कस्सेसो उग्गहो, देविंदस्स रण्णो गहवइस्स वा सागारियस्स साहम्मियस्स वा ? ताधे देविंद-रायाणो मणसा चेव भणति—'अणुजाणतु जस्स उग्गहो'त्ति । सेसे अणुण्णवेति । देविंद-राईसु मणसीकरणं कमति । सेसेसु अणुण्णा कमति ।

**भावोग्गहो अहव दुहा, मइ-गहणे अत्थ-वंजणे उ मई ।**
**गहणे जत्थ उ गिण्हे, 'मणसीकर' अकरणे तिविहं ॥६८८॥**

"**भावोग्गहो०**" गाधा । कंठा । **तिविधं** ति पच्छित्तं उक्कोसादिसु सचित्तादिसु वा ३।

**पंचविधम्मि परूविएँ, स उग्गहो जाणएण घेत्तव्वो ।**
**अण्णाए उग्गहिए, पायच्छित्तं भवे तिविहं ॥६८९॥**

"**पंचविधम्मि०**" गाधा । जो एस हेट्ठा परूवितो एतस्सिं पंचविधे परूविते, जो जाणओ उग्गहस्स सो गेण्हति । '**अण्णाते**'त्ति जो अजाणओ सो मणसीकरणमणुण्णाणविधिं न याणति अतो ण गेण्हति, जति ओगेण्हति तो पायच्छित्तं इमं तिविधं—

**इक्कड-कढिणे मासो, चाउम्मासो अ पीढ-फलएसु ।**
**कट्ठ-कलिंचे पणगं, छारे तह मल्लगाईसु ॥६९०॥**

"**इक्कड०**" गाधा । कंठा । '**कढिणो**'त्ति सरो । **उग्गहो** त्ति दारं गतं ।

इदाणिं **विहारकप्पिओ** । सो विहारो दुविधो—

**गीयत्थो य विहारो, बीओ गीयत्थणिस्सिओ भणिओ ।**
**इत्तो तइय विहारो, नाणुण्णाओ जिणवरेहिं ॥६९१॥**

"**गीयत्थो य०**" गाधा । आह, किमुक्तं भवति गीतार्थः इति ? उच्यते—

**गीतं मुणितेगट्ठं विदियत्थं खलु वयंति गीयत्थं ।**
**गीएण य अत्थेण, गीयत्थो वा सुयं गीयं ॥६९२॥**

---

१. एतस्स पू० २ ।

"**गीतं मुणिते०**" गाधा । पच्छद्धस्स [१]व्याख्या–

**गीतेण होइ गीई, अत्थी अत्थेण होइ णायव्वो ।**
**गीतेण य अत्थेण य, गीयत्थं तं विजाणाहि ॥६९३॥**

"**गीतेण०**" गाधा । कंठा । आह, को गीतत्थो ? उच्यते–

**जिणकप्पिओ गीयत्थो, परिहारविसुद्धिओ वि गीयत्थो ।**
**गीयत्थे इड्डिदुगं, सेसा गीयत्थणीसाए ॥६९४॥**

"**जिणकप्पिओ०**" गाधा । अपि शब्दात् प्रतिमाप्रतिपन्नको अधालंदिकश्च गीतार्थ एव । एते गीतार्था भवन्ति । इड्डिदुगं च गीतार्थम् । आह, किमिड्डिदुगं ? उच्यते–

**आयरिय गणी इड्डी, सेसा गीता वि होंति तण्णीसा ।**
**गच्छगय णिग्गया वा, थाणणिउत्ताऽणिउत्ता वा ॥६९५॥**

"**आयरिय०**" गाहा । कंठा । के य ते सेसा ? उच्यते–गच्छगता णिग्गता त गच्छातो असिवादीहिं, [२]उल्मुकदृष्टान्तात् । अधवा **सेस** त्ति, थाणणिउत्ता य थाणअणिउत्ता य, ठाणणिउत्ता पवित्तिमादी । तव्वतिरित्ता अणिउत्ता ।

**आयारपकप्पधरा, चउदसपुव्वी अ जे अ तम्मज्झा ।**
**तण्णीसाएँ विहारो, सबाल-वुड्ढस्स गच्छस्स ॥६९६॥**

"**आयारपकप्प०**" गाधा । आयारपकप्पधरो जहण्णओ गीतत्थो । चोद्दसपुव्वी उक्कोसओ, मज्झे मज्झिमओ । सेसं कंठं । एते गीयत्थे मोत्तुं एतण्णिस्सं च, सेसस्स न वट्टति । जो पुण–

**एगविहारी अ अजायकप्पिओ जो भवे चवणकप्पे ।**
**उवसंपण्णो मंदो, होहिइ वोसट्ठतिट्ठाणो ॥६९७॥**

"**एगविहारी०**" गाधा । जो एगागी विहरति सो एगविहारी । सो पुण जातकप्पिओ वा होज्जा, अजातकप्पिओ वा । जातकप्पिओ णाम गीतत्थो, अजातकप्पिओ अगीतत्थो । चवणकप्पो नाम पासत्थादिविहारो । एतेसिं इमं पच्छित्तं–

**मोत्तूणं गच्छणिग्गते, गीयस्स वि एक्कगस्स मासो उ ।**
**अविगीए चउगुरुगा, चवणे लहुगा य भंगट्ठा ॥६९८॥**

"**मोत्तूण**" गाधा । गच्छणिग्गते जिणकप्पियादिणो मोत्तुं जो अण्णो गीतत्थो वि

१. **वक्खाणिज्जइ** पू० १-२, पा० विना । २. **उलुमुक०** पू० २ ।

एगल्लओ विहरति तस्स मासलहू । अगीतत्थो जो एगागी विहरइ तस्स ४l। चवणकप्पेणं विहरति चउलहुगा । मनसा इत्यर्थः । **च** शब्दाद् यच्चापद्यते । **'भंगट्ठ'**त्ति । एगविहारी अजातकप्पिओ चवणकप्पेणं विहरति । अण्णो एगविहारी अजातकप्पिओ वि णो चवणकप्पेण। एवं अट्ठ भंगा कातव्वा[१] । सव्वत्थ संजोगपच्छित्तं । चरिमो सुद्धो । एस सत्तविहो । **उवसंपण्णो** त्ति ।

**एगागित्तमणट्ठा-उवसंपज्जइ चुओ व जो कप्पा ।**
**सो खलु सोच्चो मंदो, मंदो पुण दव्व-भावेणं ॥६९९॥**

"**एगागित्त०**" गाधा । कल्पादिति संविग्नकल्पात् प्रच्युतः, शोचनीयः-शोच्यः मंदश्चासौ । मंदो दुविधो—दव्वमंदो भावमंदो य ।

**एक्केक्को पुण उवचय-अवचय भावे उ अवचए पगयं ।**
**तलिना बुद्धी सेट्ठा, उभयमओ केइ इच्छन्ति ॥७००॥**

"**एक्केक्को०**" गाधा । दव्वमंदो दुविधो—उवचए अवचए य । भावमंदो वि दुविधो उवचए अवचए य । एत्थ पुण भावावचयमंदेणं पगतं । सेसा [२]विगोवणनिमित्तं उच्चारियसरिस त्ति काउं परूविया । तत्थ दव्वमंदो उपचए जो थूलसरीरो, अवचए जो किससरीसो । उवचए भावमंदो जो बुद्धिमंतो । अवचए जो [३]णिब्बुद्धी । अधवा '**तलिना**[४]' बुद्धिः, श्रेष्ठा इति कृत्वा, सा यस्य स एवोपचयमंदो भवति, यस्य स्थूला सो अवचयमंदो भवति । अतः उभयथाप्यपचयमंदं **केचिदाचार्याः** इच्छन्ति । वोसट्ठाणि तिण्णि ठाणाणि जेण सो **वोसट्ठतिट्ठाणो** (गा० ६९७) । कयराणि पुनस्तानि त्रीणि स्थानानि यानि तेन व्युत्सृष्टानि ? उच्यते—

**णाणादी तिट्ठाणा, अहवण चरणऽप्पओ पवयणं च ।**
**सुत्तऽत्थ-तदुभयाणि व, उग्गम उप्पायणाओ वा ॥७०१॥**

"**णाणादी०**" गाधा । कंठा । वा शब्दादेषणा य । कथं पुनरसौ ज्ञानं व्युत्सृजते ? उच्यते—एगागिस्स ।

**अप्पुव्वस्स अगहणं, ण य संकिय पुच्छणा ण सारणया ।**
***गुणयंते अ अदट्ठुं, सीदइ एगस्स उच्छाहो ॥७०२॥***

---

१. अष्टौ भंगाः—१. एकाकी अजातकल्पिकश्च्यवनकल्पिकः २. एकाकी अजातकल्पिको न च्यवनकल्पिकः ३. एकाकी जातकल्पिकश्च्यवनकल्पिकः ४. एकाकी जातकल्पिको न च्यवनकल्पिकः । एकमेकाकिपदेन चत्वारो भङ्गा लब्धाः, अनेकाकिपदेनापि चत्वारो भंगा लभ्यन्ते । सर्वसंख्यया अष्टौ भंगाः । (बृ०वृ०१ पृ० २०९) । २. **विकोवण०** पू० २ । ३. **अबुद्धी** पा० । ४. **तालिका** पू० २ ।

"**अप्पुव्वस्स०**" गाधा । कंठा । दंसणे चरणे य ।

**चरगाई वुग्गाहण, ण य वच्छल्लाइ दंसणे संका ।**
**थी सोहि अणुज्जमया, णिप्पग्गहया य चरणम्मि ॥७०३॥**

"**चरगाई०**" गाहा । कंठा । स्त्रीप्रसंगः स्यात् । '**सोही**'णाम पच्छित्तं । तं से खलियस्स को देउ ? अणुज्जमंतस्स सारणं को करेउ ? "**णिप्पग्गहता य**" त्ति, ण कस्स वि संकितव्वं, ताधे जं से रुच्चति तं करेइ । किञ्च–

**सामण्णाजोगाणं, बज्झो गिहिसण्णसंथुओ होइ ।**
**दंसण-णाण-चरित्ताण मइलणं पावई एक्को ॥७०४॥**

"**सामण्ण०**" गाधा । [1]श्रमणभावे ये योगा वैयावृत्त्यादयः, तेषां बाह्यः–अनाभागी भवतीत्यर्थः । **गिहिसण्णसंथुतो** कधं होति ? उच्यते–

**कतमकते गिहिकज्जे, संतप्पइ पुच्छई तहिं वसइ ।**
**संथव-सिणेहदोसा, भासा हिय णट्ठ सोगो अ ॥७०५॥**

"**कतमकते०**" गाधा । कंठा । '**भास**'त्ति सावज्जा । दंसणमइलणा चरगादीहिं । णाणमइलणा पावसुताणुरागतो उम्मग्गपण्णवणाए वा । चरणं एगाणितस्स विद्दाति चेव । विहार इति वर्तते । गच्छो त णियमा विहरति, तस्स य आतरियो अधिपती । तो इच्छामो णाउं केरिसस्स गच्छो दिज्जति ? । अणरिहस्स य देंतो, अणरिहो त धरेमाणो, एते किं पच्छित्तं पावंति ? एतेण अभिसम्बन्धेण इमा गाधा–

**अबहुस्सुए अगीयत्थे णिसिरए वा वि धारए व गणं ।**
**तद्देवसियं तस्सा, मासा चत्तारि भारिया ॥७०६॥**

"**अबहुस्सुते**" बहुस्सुत–अबहुस्सुत गीत–मगीता पुव्वं भणिता । **अबहुस्सुते अगीतत्थे निसिरए वा वि** । अस्स विभासा–

**अबहुस्सुअस्स देइ व, जो वा अबहुस्सुओ गणं धरए ।**
**भंगतिगम्मि वि गुरुगा, चरिमे भंगे अणुण्णाओ ॥७०७॥**

अबहुस्सुतस्स देति ह्व। अबहुस्सुतस्स अगीतत्थस्स जो देति ४l । अबहुस्सुतस्स गीतत्थस्स देति जो तस्स वि ४l । एतस्स **आचारपगप्पो** सुत्तओ [2]नट्ठो, अत्थं संभरति । अधवा आणा-धारणाहिं गीतत्थो, बहुस्सुतस्स अगीतत्थस्स देति ४l । बहुस्सुतस्स गीतत्थस्स देति एत्थ सुद्धो । **अबहुस्सुते अगीतत्थे धारए व गणं** । अस्स विभासा । **जो वा अबहुस्सुतो तु गणं धरए** ।

१. श्रामणभवा पू० २ । २. णट्ठं पू० २ ।

अबहुस्सुतो अगीतत्थो जति दिण्णं गणं धरेइ ४ी। अबहुस्सुतो गीतत्थो धरेइ ४ी। बहुस्सुओऽगीतत्थो धरेइ ४ी। बहुस्सुओ गीतत्थो धरेइ एत्थ सुद्धो। **चरिमे भंगे अणुण्णाओ** त्ति। जो बहुस्सुतस्स गीतत्थस्स देति, एतं अणुण्णातं। जो य एतेण दिण्णं बहुस्सुतो गीतत्थो धरेति, एस वि अणुण्णातो। आह, जं एतं देंतय–धरेंताणं तिसु भंगेसु चउगुरुगं पच्छित्तं भणितं एत्तिएण गतं ? उच्यते–ण वि '**तद्देवसितं**' (गा० ७०६) पच्छद्धं। अस्स विभासा–

**सत्तरत्तं तवो होति, तओ छेओ पहावई।**
**छेएणऽच्छिण्णपरियाए, तओ मूलं तओ दुगं ॥७०८॥**

"**सत्तरत्तं तवो होति**"। अस्यापि व्याख्या–

**एक्केक्कं सत्त दिणे, दाऊण अइच्छियम्मि उ तवम्मि।**
**पंचाइ होइ छेदो, केसिंचि जहा कडो तत्तो ॥७०९॥**

"**एक्केक्कं सत्त दिणे**" पुव्वद्धं। सत्त दिवसे[१] चउगुरुगं २ पच्छित्तं भवति। ताधे जति एत्तिए अपुणक्कारेण ठिता तो एत्तियं चेव पच्छित्तं। अध ण ठायंति तो अण्णे सत्तदिवसे दिणे दिणे छल्लहुगं दिज्जति। जति ट्ठिता सुंदरं, अह ण उवसमंति तो अण्णे सत्तदिवसे दिवसे[२] छगुरुगं २ दिज्जति। जति उवरता, ठितं पच्छित्तं ति। अह ण उवरमंति ताधे छेदो पधावति। सो पुण च्छेदो **केई** भणंति–पंचरातिंदियातो आढवेति। **अण्णे** भणंति–जतो तवो कडो त्ति आरद्धो, तओ छेओ वि आढवेति चउगुरुगादित्यर्थः। जधा छेदस्स पंचराइंदिया आढवणाए चउगुरुगा आढवणाए एते दो आदेसा दिट्ठा तधा लहु गुरुए वि दो आदेसा। **केइ** भणंति–लहुएहिंतो पंचराइंदिएहिंतो आढवेति। **केई** भणंति–गुरुएहिंतो पंचरातिंदिएहिंतो आढवेति। तत्थ लहुआढवणा सत्तदिवसाणि, पणगलहुओ २ छेओ। तओ अन्नाणि [३]सत्त पणगगुरुओ छेओ, तओ अण्णाणि सत्त दसलहुओ छेदो, ततो अण्णाणि सत्त दिणाणि दसगुरुगो छेदो, [४]ततो अण्णाणि सत्त पण्णरसलहुगो छेदो, ततो अण्णाणि सत्त पण्णरसगुरुगो छेदो, तओ अण्णाणि सत्तवीसलहुओ छेओ, तओ अण्णाणि सत्तवीसगुरुगो छेओ, ततो अण्णाणि सत्त पंचवीसलहुओ छेदो। ततो अण्णाणि सत्त पंचवीसगुरुगो छेदो। ततो मासा ।०।, ततो मासा ॥०॥, ततो ह्व। तओ अण्णाणि सत्त ४ी छेदो, ततो अण्णाणि सत्त ६ छेदो। ततो अण्णाणि सत्त ६ी छेदो। गुरुआढवणा इमा। छग्गुरुगातो तवातो उवरिं अण्णाणि सत्तदिवसाणि [५]पणगगुरुओ छेदो। ततो अण्णाणि सत्त दसलहुतो छेदो। ततो अण्णाणि सत्त दसगुरुओ छेदो। एवं जाव ततो अण्णाणि सत्त पंचवीसलहुओ छेदो, ततो अण्णाणि सत्त पणुवीसगुरुओ छेदो[६]। तओ

---

१. **सत्तदिवसे २ चउगुरुगं प०** पू० २। २. **दिवसे २ छगुरुगं दि०** पू० २। ३. **सत्तदिणे गु०** पू० ४. **अबहुस्सुए ततो** पू० २। ५. **पंच** पा०। ६. **एवं जाव ततो अन्नाणि सत्त छलहु छेदो, ततो अन्नाणि सत्त छगुरुओ छेदो। जति एत्तिएणं०** पा०।

अण्णाणि सत्त मासलहुओ छेदो, तओ अण्णाणि सत्त मासगुरुओ छेदो, ततो अण्णाणि सत्त ह्व छेदो, ततो अण्णाणि सत्त ४ी छेदो, तओ अण्णाणि सत्त ६ छेदो। ततो अण्णाणि सत्त ६ी छेदो। जइ एत्तिएणं छिण्णो परियायो भवति, गतं चेव। एत्तो परं जति वि देसूणा पुव्वकोडी परियातो सेसा सव्वा [1]एगतराए छिज्जति, एतं मूलं **छेदेणं छिण्णपरियाए** त्ति। एत्थ अकारलोपो द्रष्टव्यः। यदुक्तं भवति–छेदेन यदा न छिद्यते पर्यायस्तदा मूलं भवति। **दुगं** नाम ततो परं एगदिवसं अणवठप्पो, बितितदिवसं पारंचिओ। एत्थ च–

**तुल्ला चेव उ ठाणा, तव-छेयाणं हवंति दोण्हं पि।**
**पणगाइ पणगवुड्ढी, दोण्ह वि छम्मास णिट्ठवणा ॥७१०॥**

"**तुल्ला चेव०**" गाधा। तव–छेदाणं तुल्ला चेव ठाणा भवंति। जत्तिया तवाणं ठाणा तत्तिया छेताणं वि। ततो पंचरातिंदिओ लहुओ, तओ गुरुओ, तओ दसरातिंदिओ लहुओ, ततो गुरुगो। एवं च पंच पंच विलइंतो जाव मासिओ तवो लहुओ। ततो गुरुओ। ततो ह्व। ततो ४ी। ततो ६। ततो ६ी। छेदो वि एतेहिं चेव ठाणेहिं–

**पढिय सुय गुणिय धारिय, करणे उवउत्तो छहिं वि ठाणेहिं।**
**छट्ठाणसंपउत्तो, गणपरियट्टी अणुण्णाओ ॥७११॥**

"**पढिय सुय०**" गाधा। पढितं णा(णे?)णं[2], पढित्ता अत्थो सुतो, सुणेत्ता सव्वोऽणेणं[3] सुगुणितो कतो। धरेति य तं सव्वं। तस्स य सुतस्स आणं करेति। उवउत्तो णाम ण पमादं करेति णिच्चोवउत्तो। कुत्र?उच्यते–**छहिं ठाणेहिं** महव्वएहिं ति भणितं होति। एतेहिं पढितादीहिं छहिं ठाणेहिं संपउत्तो, समण्णागतो त्ति भणितं होति। सो गणपरियट्टी अणुण्णातो तित्थगरेहिं।

**सत्तऽट्ठ णवग दसगं, परिहरई जो विहारकप्पी सो।**
**तिविहं तीहिँ विसुद्धं, परिहर णवएण भेएण ॥७१२॥**

"**सत्त-ट्ठणवग०**" गाधा। अधवा सत्तविधं वा अट्ठविधं वा णवविधं वा दसविधं वा पच्छित्तं परिहरति जो। कधं ? उच्यते–**तिविधं** ति दाणपच्छित्तं, तवपच्छित्तं, कालपच्छित्तं। मणेण परिहरइ। णवगो भेदो पूर्ववत्। जोगे पडिसेवणाए तिविधं पच्छित्तं भवति, ताए परिहरिताए तिविधं पच्छित्तं परिहरितं चेव भवतीत्येषोऽर्थः। स्यान्मतिः, कधं सत्तविधं पच्छित्तं भवति ? उच्यते–१ आलोयणारिहं, २ पडिक्कमणारिहं ३ तदुभयारिहं ४ विवेगारिहं ५ विउसग्गारिहं, ६ तवारिहं, ७ छेदारिहं, एयं सत्तविहं। आह, मूलाणवट्ठचरिमा कहिं पविट्ठा ?। उच्यते–

**दुविहो अ होइ छेदो, देसच्छेदो अ सव्वछेदो अ।**
**मूला-ऽणवट्ठ-चरिमा, सव्वच्छेओ अतो सत्त ॥७१३॥**

१. एगसा( स )रा चेव पा० । २. पढियं तेणं प० पू० १ । ३. सत्तोणेणं पू० १ ।

"**दुविहो अ०**" गाधा । सो सत्तमतो छेदो दुविधो भवति । तं जधा–देसछेदो य सव्वछेदो य । देसं परियागस्स छिंदतीति देसच्छेदो, पणगादी जाव छम्मासा, एस देसछेदो। सव्वच्छेदो जति वि देसूणा पुव्वकोडी परियागस्स तं सव्वं एगसराए च्चेव छिंदति । सो पुण मूलाणवट्ठपारंचिया तिण्णि वि एक्को च्चेव सव्वछेदो भवति । एतेण कारणेणं सत्तविधं पच्छित्तं। अट्ठविधं कधं भवति ? छेदो सत्तमओ, अट्ठमयं मूलं ।

**छिज्जंते वि ण पावेज्ज कोइ मूलं अओ भवे अट्ठ ।**
**चिरघाई वा छेदो, मूलं पुण सज्जघाई उ ॥७१४॥**

"**छिज्जंते०**" गाधा । देसछेदेणं जाधे छिज्जंते वि परियाए चिरपव्वाइत्तणेणं मूलं ण चेव पावति, ताधे मूलं से दिज्जति अट्ठमयं । आह, तो वि विसेसो णत्थि । [१]सव्वछेदे चेव मूलं पडति । उच्यते–देसच्छेदो चिरेणं छिंदति, इतरो खिप्पं छिंदति, एस विसेसो । णवविधं कधं ? एतं च अट्ठविधं, णवमं[२] अणवट्ठारिहं ।

**वूढे पायच्छित्ते, ठविज्जई जेण तेण णव होंति ।**
**जं वसइ खित्तबाहिं, चरिमं तम्हा दस हवंति ॥७१५॥**

"**वूढे०**" पुव्वद्धं । कुत्र स्थाप्यते ? व्रतेषु । एवं णवविधं । दसविधं कधं ? एय हेट्ठिल्ला णव, दसमं पारंचियं । एत्थ गाहार्द्धं "**जं वसति०**" । कंठं । चरिमं णाम सर्वप्रायश्चित्तानामन्ते वर्तत इति चरिमं भवति ।

**एयं दुवालसविहं, जिणोवइट्ठं जहोवएसेणं ।**
**जो जाणिऊण कप्पं, सद्दहणाऽऽयरणयं कुणइ ॥७१६॥**

"**एयं दुवालस०**" गाधा । दुवालसविधं णाम दुवालस एते दारा सुत्ते अत्थे तदुभय जाव विहारकप्पे य त्ति । ज्ञात्वा किं करोति ? उच्यते–जति सद्दहति 'एवमेयं, नान्यथावादिनो जिनाः', सद्दहित्ता जति आयरति । किं भवति ? उच्यते–

**सो भविय सुलभबोही, परित्तसंसारिओ पयणुकम्मो ।**
**अचिरेण उ कालेणं, गच्छइ सिद्धिं धुयकिलेसो ॥७१७॥**

"**सो भविय०**" गाधा । कंठा । **कप्पिओ** त्ति दारं, दुवालसविधं गतं भवति ।

**चोयग पुच्छा उस्सारकप्पिओ णत्थि तस्स किह णामं ।**
**उस्सारे चउगुरुगा, तत्थ वि आणाइणो दोसा ॥७१८॥**

"**चोयग पुच्छा०**" गाधा । एतस्मिन् द्वादशप्रकारे कल्पिकद्वारे अपदिष्टे अवसर-

१. सव्वछेदेण मूलं पू० २ । २. णवमं से अ० पा० ।

प्राप्तमाह चोदकः—भगवं ! उस्सारकप्पिओ अत्थि ? आयरिओ भणइ, णत्थि । आह—तो तस्स कतो णामं ? आयरिओ भणति—जो उस्सारेति तस्स ह्वा । आणादीया दोसा । आदिग्गहणेणं—

**आणाऽणवत्थ मिच्छा विराहणा संजमे य जोगे य ।**
**अप्पा परो पवयणं, जीवणिकाया परिच्चत्ता ॥७१९॥**

"**आणा-ऽणवत्था०**" गाधा । **आणा** सामिणो ण कता, **अणवत्था** तं पासित्ता अण्णे वि उस्सारेहिंति उस्सारावेहिंति य । **मिच्छत्तं** कधं ? उच्यते—

**[1]पुव्विं मलिया उस्सारवायए आगए पडिमिलिंति ।**
**पडिलेह पुग्गलिंदिय, बहुजण ओभावणा तित्थे ॥७२०॥**

"**[2]पुव्विं मलिया०**" गाधा । केयि वायगा । सावगगामं गता विहरंता । तत्थ तेहिं अण्णउत्थिता णीसट्ठं चमढिया । ते य ततो वायगा विहरंता अण्णत्थ कत्थ वि गता । तेसु गएसु वायगेसु ते अण्णउत्थिया ते सावए वायं मग्गेंति । सावएहिं भणितं—जाव वायगा एंति गणिणो वा । अध अण्णया उस्सारकप्पियवायगो आगतो सीसपरिवारो अत्तसमुक्कसेण फुट्टमाणो । ताधे ते सावगा ते अण्णउत्थिए गंतुं भणंति—तुब्भेहिं तदा वादो मग्गितो । अम्हेहिं य भणितं—जाव वायगा एंति । ते आगता, करेह वादं । ताधे तेर्धि अण्णउत्थिएहिं एगो पडिलेहगो पत्थवितो । किं पडू वायगो ण व त्ति ? तेण आगंतु वायगो भण्णति—परमाणुपोग्गलस्स कति इंदियाणि ? ताधे वायगो चिंतेति—जो[3] लोगचरिमंताओ लोगचरिमंतं एगसमएणं [4]गच्छति अवस्स सो पंचिंदियो त्ति । भणति—पंच इंदियाणि । तेण गंतुं कधितं तेसिं अण्णउत्थियाणं । ताधे तेहिं आगंतुं णीसट्ठं बहुजणमज्झे चमढितो । एवं तित्थोभावणा भवति। तत्थ णवधम्माणं विकप्पो उप्पज्जति—जति वायओ तेसिं सव्वबहुस्सुओ वि ण सक्केति उत्तरं पयच्छिउं, नूणं एतेसिं तित्थगरेण चेव ण णातं । एवं मिच्छत्तं भवति । **संजमस्स जोगस्स** य कधं विराधणा भवति ? । उच्यते—

**जीवा-ऽजीवे ण मुणइ, अलियभया साहए दग-मिताई ।**
**करणे अ विवच्चासं, करेइ आगाढऽणागाढे ॥७२१॥**

**तुरियं णाहिज्जंते, णेव चिरं जोगजंतिता होंति ।**
**लद्धो महंतसद्दो त्ति केइ पासाइँ गेण्हंति ॥७२२॥**

**कमजोगं ण वि जाणइ, विगईओ का य कत्थ जोगम्मि ।**
**अण्णस्स वि दिंति तहा, परंपरा घंटदिट्ठंतो ॥७२३॥**

१-२. **पुव्वं** पू० २ । ३. जे पू० २ विना । ४. **गच्छंति** पू० २ विना ।

"**जीवाजीवे०**" गाथात्रयं । कंठं प्रायशः । **करणे** त्ति । चरणे उस्सग्गाववाते अयाणंतो आगाढे अणागाढं करेंति, अणागाढे य आगाढं करेति, पडिसेवति त्ति भणितं होति णिप्फण्णं । '**कमजोगं**'ति । जधा–एत्तिया आयंबिला [1]विसज्जिज्जंति, [2]एवं वा उद्देससमुद्देसा कीरंति[3] । '**विगतीओ का य कत्थ जोगम्मि**'त्ति । जधा **कप्पिताऽकप्पिय-णिसीधादीणं** विगतीओ ण विसज्जिज्जंति, **पण्णत्तीए** ओगाहिमगविगती विसज्जिज्जति, **दिट्ठीवाते** मोदको । घंटदिट्ठंतो इमो–

**उच्छुकरणो व कोट्ठगपडणं घंटा सियालणासणया ।**
**विगमाई पुच्छ परंपराएँ, णासंति जा सीहो ॥७२४॥**

**पडियरिउं सीहेणं, स हओ आसासिया मिगगणा य ।**
**इय कइवयाइँ जाणइ, पयाणि पढमिल्लुगुस्सारी ॥७२५॥**

**किं पि त्ति अण्णपुट्ठो, पच्चंतुस्सारणे अवोच्छित्ती ।**
**गीताऽऽगमण खरंटण, पच्छित्तं कित्तिया चेव ॥७२६॥**

"**उच्छुकरणोव**" गाधाद्वयम् । एगस्स उच्छुकरणं ति उच्छुवाडं सियाला [4]पइसरंति । ताधे तेण उच्छुकरणसामिएण सियालगहणनिमित्तं ओवओ कओ । तम्मि य ओवए कए कोट्ठग त्ति सियालो पडितो । सो वरागो गिण्हित्ता दीवियचम्मेण वेढित्ता घंटं [5]आविंधित्ता विसज्जितो । सो णासंतो सियालेहिं दिट्ठो दूरतो । ते सियाला 'अण्णारिसो' त्ति काउं भएण पलाया । ते [6]विरूएहिं दिट्ठा । पुच्छिता–किं नासह ? त्ति । तेहिं कधितं–अपुव्वं सरं करेमाणं किंपि अपुव्वं भूतं एति । ते वि भएण पलायंता वरक्खूहिं दिट्ठा, पुच्छिता । तेहिं कधितं–किंपि किर एति, सिग्घं णासध । ते पलायंता चित्तएहिं दिट्ठा, पुच्छिता । कधितं–किंपि किर एति, तुरियं पलायध[7] । ते वि पलायंता सीहेहिं पुच्छिता । कधितं तेहिं । सीहो चिंतेति–मा पाणियसद्देण उवाहणाओ मुयामि, गवेसामि ताव । तेण सणियं पडियरित्ता 'सियालो' त्ति हतो घंटासियालो 'कीस आउलीकया मो ?' त्ति रोसेणं । ते अणेणं सियालादयो मिया आसासिता–मा भायह, हतो सो वराओ मए दीवियचम्मोणद्धो घंटासियालो । केण वि अवराहे घेत्तुं तधा कतो । एस दिट्ठंतो । अयमत्थोवणओ–जस्स तं उस्सारिज्जति सो जावतिएहिं दिवसेहिं जोगो समप्पति [8]तावतिएहिं दिवसेहिं कतिवयाणं आलावगाणं किंचि वि सुत्तफासियं सिक्खित्ता पच्चंतं गंतूणं गच्छपागड्ढित्तणं करेति, अण्णेसिं च उस्सारेति । ते वि उस्सारावेत्ता पत्तेयं पत्तेयं गच्छपागड्ढित्तणेणं ठाएत्ता सिस्साणं पडिच्छयाण य उस्सारकप्पं

१. **विभज्जि०** पा० । २. **पदं वा** पा० । ३. **०द्देसो कीरइ** पू० १-२ । ४. **खायंति** पा० । ५. **आविद्धिता** पा० । 'आबंधित्ता' इति स्यात् । ६. **वूएहिं** पू० २ । ७. **सिग्घं नासध** पू० १-२, पा० विना । ८. **तावतिए दिवसे** पू० १-२ ।

करेंति—अम्हे किर सुत्तत्थाणं अव्वोच्छित्तिं करेमो । तत्थ जो सो पढमिल्लुगउस्सारी सो जहा ते सियाला, तस्स य घंटासियालस्स आकितिं घंटासद्दं च जाणंति, ण पुण णिच्छएणं जाणंति—को एस ?। किं वा एयस्स गलए ? कस्स वा एस सद्दो ?। एवं सो पढमिल्लुगुस्सारी किंचि जाणति ण सव्वं सब्भावं । जो एयस्स पासे उस्सारकप्पं करेति, सो कति वि आलावए जाणेति न पुण अत्थं । सो सिस्सेणं पुच्छितो भणति—किं पि केरिसो वि अत्थि एयस्स अत्थो । सेसा कतिवए वि आलावए ण कड्ढंति। ते सिस्सेहिं पुच्छिज्जंता भणंति—न याणामो । अत्थि पुण किं पि एतं तस्स तुब्भे जोगं वहह । एवं ते अप्पाणं च परं च णासेंता विहरंति । अह अण्णया कयाइ गीतत्था आयरिया आगता, तेहिं ते उवालद्धा । गच्छा य अच्छिण्णा । गच्छेसु य पवेसिया सव्वे । जम्हा एते दोसा तम्हा न उस्सारेयव्वं । केत्तिया ते भविस्संति, जे एवं निहोडेहिंति ? । एवं संजमस्स जोगस्स य विराधणा भवति । अप्पा परो य कधं चत्तो भवति ? उच्यते—

**अप्पत्ताण उ दिंतेण अप्पओ इह परत्थ विं य चत्तो ।**
**सो वि अ हु तेण चत्तो, जं ण पढइ तेण गव्वेणं ॥७२७॥**

"**अप्पत्ताण०**" गाधा । कंठा । अपात्राणामित्यर्थः । पवयणं कधं परिच्चत्तं ?। सो भण्णति वायओ । ताधे केयि पडुणो पुरिसा एंति—पुच्छामो वायगं सिद्धंतं । पुच्छिओ ण किंचि जाणति । ताधे ते जाणंति—णूणं सव्वं पवयणं णिस्सारं जत्थेरिसो आयरिओ वायगो । तत्थ केयि देसविरतिं सव्वविरतिं वा पडिवज्जितुकामा विप्परिणमंति । एवं पवयणं परिच्चत्तं । किञ्च—

**अज्जस्स हीलणा लज्जणा य गारविअकारणमणज्जे ।**
**आयरिए परिवाओ, वोच्छेदो सुतस्स तित्थस्स ॥७२८॥**

"**अज्जस्स**" गाधा । यो ह्यार्यो जनो भवत्यसौ हि 'वाचक' इत्यपदिश्यमानो लज्जते—'हीलेयं मम यदहं नाम वाचको वाचकेति [1]अपदिश्या(शा)मि' । अथवा अन्यैः पृष्टः 'कथमयमालापक' इति, भृशं लज्जापरो भवत्यव्याकुर्वाणः[2] । अनार्यस्य पुनस्तदेव गारवकारणं भवति । यथा "ऽहं 'वाचक' इति अपदिश्ये[3] इति कोऽन्यो मया तुल्यः ?" । आयरियपरिवादो कथं भवति ?

'केणेरिसो अज्झाविओ ? हया से[4] वायगत्तणस्स कारगा' । सो य बहुस्सुयस्स आयरियस्स [5]पासातो गतो उस्सारितूणं । अण्णेहिं पुच्छितो—'कधं एस आलावगो ? किंचि वा वागरणं ?।' जाव ण किंचि जाणति, ताधे ते भणंति—"नूणं सो वि एरिसो चेव आयरिओ,

---

१. **अपदिश्य इति** पा० । २. **भवत्यव्याकरयमाणः** पू० २ । ३. **अपदिश्यामि** पू० २ । **अपदिश्यामः** पू० १ । ४. **हतासेण वायगत्तणस्स कारको** पा० । ५. **पासाणागतो** पू० २ ।

जारिसो चेव सो गामो।" गाहा (?) । णामट्टयं[1] पुस्सालंबं सुत्तवोच्छेदो । सो अण्णस्स उस्सारेति, सो वि अण्णस्स। एवं अपढिज्जंतं सुत्तं वोच्छिज्जति । सुत्तवोच्छेदेणं तित्थमवि वोच्छिज्जति। तं च पवयणं। एवं सो–

**पवयणवोच्छेए वट्टमाणो जिणवयणबाहिरमईओ ।**
**बंधइ कम्मरय-मलं, जरमरणमणंतयं घोरं ।।७२९।।**

"**पवयणवोच्छे०**" गाधा । कंठा । जम्हा एते दोसा तम्हा ण उस्सारेतव्वं । कमेणं पढंतस्स एते दोसा न संभवंति । इमे य से गुणा भवंति–

**आणा विकोवणा बुज्झणा य उवओग णिज्जरा गहणं ।**
**गुरुवास जोग सुस्सूसणा य कमसो अहिज्जंते ।।७३०।।**

"**आणा०**" गाधा । आणा तित्थगराणं कता भवति । विकोविज्जति पढंतो गच्छे सामायारीए जोगे वा । गच्छे य अवस्समेव अत्थपोरुसी भवति, तेण संबुज्झति । पढंतस्स य णिच्चकालं सुतोवयोगो भवति । सुतोवउत्तस्स य महती णिज्जरा भवति । उक्तं च–

"**बारसविहम्मि वि तवे**" गाहा[2] । णिच्चोवउत्तो य लहुं गेण्हति । गुरुकुलवासो य अज्झवसितो भवति । उक्तं च–

"**णाणस्स होति०**" गाहा[3] । आयरियादीण य सुस्सूसा कता भवति ।

**इति दोस-गुणे णाउं, उक्कम-कमओ अहिज्जमाणाणं ।**
**उभयविसेसविहण्णू, को वंचणमब्भुवेज्जाहि ।।७३१।।**

"**इति दोस०**" गाहा । कंठा । एवमपदिष्टे आचार्येण चोदक आह–

**जइ णत्थि कओ णामं, असइ हु अत्थे ण होइ अभिहाणं ।**
**तम्हा तस्स पसिद्धी, अभिहाणपसिद्धिओ सिद्धा ।।७३२।।**

"**जइ णत्थि०**" गाधा । यदि उत्सारकल्पिको न विद्यते, कुत इदमायातं नाम उत्सारकल्पिक इति ? । कथम् ? इह हि सत्यर्थेऽभिधानं भवति, न ह्यसति । यतश्चैवमतः उत्सारकल्पिक इति अभिधानमस्तीति कृत्वाऽर्थे प्रसिद्धिरिष्टा । एवमपदिष्टे चोदकेन, आह सूरिः–

---

१. नाम उट्टयं पू० १-२, पा० विना । णामड्डयं पू० २ ।
२. बारसविहम्मि वि तवे, सब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे ।
न वि अत्थि न वि अ होही, सज्झायसमं तवोकम्मं ।। [ भा० ११६९ ]
३. णाणस्स होति भागी, थिरयरओ दंसणे चरित्ते य ।
धन्ना गुरुकुलवासं, आवकहाए न मुंचंति ।। [ भा० ५७१३ ]

**जति सव्वं चिय णामं, सअत्थगं होज्ज तो भवे दोसो ।**
**जम्हा सअत्थगत्ते, भजियं तम्हा अणेगंतो ॥७३३॥**

"**जति सव्वं०**" गाधा । यदि सर्वमेव नाम सार्थकं स्यात्, स्यादयं दोषः उत्सारकल्पिको अस्ति इति । [१]यस्माच्चाऽभिधानस्य सार्थकत्वे निरर्थकत्वे वा अस्तु [२]आत्मादि खरविषाणा-ऽऽकाशपुष्प-कूर्मरोम-वन्ध्यापुत्रादीन् भावान् प्रतीत्य भजना भवति । स्यात् सार्थकं, स्यात् निरर्थकमिति । तस्माद् अनेकान्तोऽयं यथा-सत्यर्थेऽभिधानं भवति नहि असति इति । आह—पेशलमपदिष्टं, निश्चय उच्यताम्—किं सार्थकमेतदभिधानमुत निरर्थकमिति ? उच्यते—

**णिक्कारणम्मि णामं, पि णिच्छिमो इच्छिमो अ कज्जम्मि ।**
**उस्सारकप्पियस्स उ, चोयग ! सुण कारणं तं तु ॥७३४॥**

"**णिक्कारणम्मि०**" गाधा । अविद्यमाने कारणे नामापि नेच्छामः, कुतः तदर्थं ? कारणे तु प्राप्ते इच्छामो वयं 'उत्सारकल्पिक' इति । पुनरप्याह रुषितः शिष्यः—'किं निरर्थकं कारणं यन्नोच्यते ? । उच्यतां यदि किञ्चित् कारणमस्तीति ।' उच्यते—तिष्ठतु तावत्कारणं, उत्सारकं तावद् ब्रूमः—

**आयार-दिट्ठिवायत्थजाणए पुरिस-कारणविहिण्णू ।**
**संविग्गमपरितंते, अरिहइ उस्सारणं काउं ॥७३५॥**

"**आयारदिट्ठि०**" गाधा । जो उस्सारेति सो जति पंचविधस्स आयारस्स अत्थं जाणति दिट्ठिवातस्स य । जति य पुरिसं जाणति—'किं एसो अरहति उस्सारकप्पं ण व' त्ति । कारणं च जो जाणति—जारिसे कारणा(णे) उस्सारिज्जति । सो य जति संविग्गो उस्सारेंतओ अपरितंतो य । जति सो गाहेस्सति [३]रत्तिं विरत्तिं । जस्स तं उस्सारिज्जति सो जति इमेहिं गुणेहिं उववेतो भवति—

**अभिगते पडिबद्धे, संविग्गे अ सलद्धिए ।**
**अवट्ठिए अ मेहावी, पडिबुज्झी जोअकारए ॥७३६॥**

"**अभिगते०**" गाधा । अस्स विभासा—

**सम्मत्तम्मि अभिगओ, विजाणओ वा वि अब्भुवगओ वा ।**
**सज्झाए पडिबद्धो, गुरूसु णीएल्लएसुं वा ॥७३७॥**

"**सम्मत्तम्मि०**" गाधा । अभिगओ णाम सम्मत्ते थिरो । जो य जीवाजीवादिपदत्थ-

१. यस्मात्त्वभि० पू० २ । २. अम्वा (स्वा ?) दि पू० २ । ३. रत्तिविरत्तिं पू० २ ।

जाणओ सो अभिगओ भवति। जो वा अब्भुवगतो आयरियाणं [१]अमुयी इत्यर्थः। पडिबद्धो सज्झाए गुरूहिं वा, णिएल्लगा वा से पव्वतियगा, तेसु पडिबद्धो। **संविग्गे य सलद्धिए** [गा० ७३६] त्ति। अनयोर्व्याख्या—

**संविग्गो दव्व मिओ, भावे मूलुत्तरेसु उ जयंतो।**
**लद्धी आहाराइसु, अणुओगे धम्मकहणे य ॥७३८॥**

"**संविग्गो०**" गाधा। कंठा। **अवट्ठिते य** [७३६] पच्छद्धस्स विभासा—

**लिंग विहारेऽवट्ठिओ मेरामेहावि गहणओ भइओ।**
**पडिबुज्झइ जं कत्थइ, कुणइ अ जोगं तदट्ठस्स ॥७३९॥**

"**लिंग विहारे०**" गाधा। अवट्ठितो णाम जो लिंगे विहारे य अवस्थितो नाऽनवस्थितः स्थिर इत्यर्थः। **मेधावी** दुविधो—मेरामेधावी य, गहणमेधावी य। मेरामेधाविस्स उस्सारिज्जति। सो पुण गहणमेधावी वा होज्जा इतरो वा, एस भयणा। दुविधस्स वि एतस्स उस्सारिज्जति कारणे। **पडिबुज्झी** नाम जं से कहिज्जति तं सव्वं परियच्छति। **जोगकारओ** नाम तस्मिन्नेव सूत्रार्थे गृहीतव्ये जोगं करेति ण वि पमादेति। इमा अण्णपरिवाडिए गाधा[२] – "**पुव्वभणितं तु जं भणति**" कारग गाहा। **अभिगंय** गाधा [७३६] (?)।

**अभिगय थिर संविग्गे, गुरुअमुई जोगकारए चेव।**
**दुम्मेहसलद्धीए, पडिबुज्झी परिणय विणीए ॥७४०॥**

"**अभिगय०**" गाधा। जो वा दुम्मेहो वि सलद्धितो परिणओ वएण परिणामओ वा तस्स उस्सारिज्जति।

**आयरियवण्णवादी, अणुकूले धम्मसड्ढिए चेव।**
**एतारिसे महाभागे, उस्सारं काउमरिहइ ॥७४१॥**

"**आयरिय०**" गाधा। आयरियाणं वण्णं वयति। अणुकूलो य आयरियाणं चेव। जे वा पूयणिज्जा। सेसं कंठं। एरिसाणं उस्सारेतव्वं।

**अणभिगतमाइआणं, उस्सारिंतस्स चउगुरू होंति।**
**उग्गहणम्मि वि गुरुगाऽकालमसज्झायऽवक्खेवे ॥७४२॥**

"**अणभिगत०**" गाधा। आदिग्गहणेणं सव्वे पदा गहिता। तं जधा—अणभिगए अप्पडिबद्धे असंविग्गे अलद्धिते य अणवट्ठिए अमेधावी अपडिबुज्झी अजोगकारए अपरिणते अविणीए आयरियाणं अवण्णं वदति अणणुकूले णवि धम्मसद्धीए। एतारिसाणं जो उस्सारेति

१. **सम्मत** पा०। २. **गाधा। अभिगय गाधा। पुव्वभणितं०** पा०।

तस्स ४ी । '**ओग्गहणम्मि वि गुरुग**'त्ति । जति उग्गहणसमत्थस्स वि मेधाविस्स णिक्कारणे उस्सारेति तो वि ४ी । किं कारणं ? सो मेधावी आणुपुव्वीए चेव पढिहिति । अहवा '**उग्गहणम्मि वि गुरुग**' त्ति जस्स जोग्गस्स कारणे उस्सारिज्जति सो जति वि उस्सारकप्पे समयं सुत्तं अत्थं च ओगिण्हति । अपि शब्दात् जति वि ण ओगिण्हति दुम्मेहत्तणेण, तो वि अकालो असज्झाइयं वक्खेवो वा ण कातव्वो । जति करेति ४ी । '**ऽकालमसज्झाय ऽवक्खेवे**'त्ति , तं उवरिं भण्णिहिति । अधवा '**उग्गहणम्मि वि गुरुग**'त्ति, जो ओग्गहणसमत्थो उत्तममेधावी, अपि: पदार्थसम्भावने । जावतियं उद्दिसति तं सव्वं सुत्तं समं अत्थेण उट्ठवेति, पदाणुसारी वा बहुविधमवि अणुसरति, तस्स उस्सारेतव्वं । जति ण उस्सारेति ४ी । जं तं पुव्वभणितं तं चिट्ठतु कारणं । तं इदाणिं भण्णति–

**गच्छो अ अलद्धीओ, ओमाणं चेव अणहियासा य ।**
**गिहिणो अ मंदधम्मा, सुद्धं च गवेसए उवहिं ॥७४३॥**

"**गच्छो०**" गाधा । गच्छो अलद्धीतो आहारोवहि-सेज्जासु, ओमाणं च सपक्ख-परपक्खओ, ते य साहुणो ण सक्केंति सीतं छुहादीणि वा अधियासित्तए । गिहत्था य मंद-धम्मा अपण्णविता ण देंति । सुद्धो य उवही गवेसियव्वो । एरिसे वि कज्जे–

**हिंडतु गीयसहाओ, सलद्धि अह ते हणंति से लद्धिं ।**
**तो एक्कओ वि हिंडति, आयारुस्सारियसुअत्थो ॥७४४॥**

"**हिंडतु०**" गाधा । '**ते**' त्ति गीतत्था जति तस्स लद्धिं उवहणंति तो उस्सारितसुत्तत्थो एक्कओ हिंडति । आह–तो किं कोइ अण्णस्स पुण्णे उवहणति ? उच्यते–आमं । किं ते ण सुओ पंचसतभिक्खू ?।

**भिक्खु विह तण्ह वद्दल, अभागधेज्जो जहिं तहिं ण पडे ।**
**दुग-तिगमाईभेदे, पडइ तहिं जत्थ सो णत्थि ॥७४५॥**

"**भिक्खु**" गाधा । कोइ किर पंचसतिओ सत्थो अडविं पवण्णो । तत्थ य एगो रत्तपडो पंचण्ह वि सयाणं भग्गे उवहणति । सो य सत्थो तण्हाए परद्धो। दूरे य अब्भवद्दलयं वासति, तेसिं उवरिं ण पडति । ते दुधा भिण्णा । इतरेसिं पुव्विल्लाणं मज्झे [१]मिलिओ । सव्वत्थ पडति, जत्थ सो तत्थ ण पडति । जाव णिव्वेडितो एक्कओ जाओ । जत्थ सो तत्थ ण पडति। एवं परस्स भग्गे उवहणंति। सो पुण कधं उप्पाएति ? । उच्यते–

**भिक्खं वा वि अडंतो, बिईय पढमाएँ अहव सव्वासु ।**
**सहिओ व असहिओ वा, उप्पाए वा पभावे वा ॥७४६॥**

१. मिलिया पू० २ ।

"**भिक्खं०**" गाधा । भिक्खं हिंडंतो उप्पाएति । वा विभाषायाम् । जति ण सक्केति भिक्खं हिंडिउं, चीराणि वि मग्गेउं, उस्सूरो वा जायति भिक्खस्स, न वा लब्भति भिक्खं हिंडंतेहिं, ताधे बीतियाए पोरुसीए हिंडिउं चीराणं अत्थपोरिसिं[१] परिहावेउं[२] मा य सुत्तपोरिसिं। अध न संभाइज्जेज्जा बहुगा हिंडी, ताधे पढमाए वि पोरिसीए हिंडउ । अह बहू पेच्छितव्वया, दुक्खं च लब्भति, ताधे दोहि वि पोरिसीहिं सव्वाहिं वा मग्गति । सो पुण जति से लद्धी ण उवहम्मति, तो सबितिओ हिंडति । [३]पभावेति वा दाणधम्मं—'एरिसो वा साहूणं धम्मो' । ताधे णिज्जरावेति । अह से हणंति लद्धिं [४]असहिए वि उप्पाएउ वा पभावेउ वा । एवं ताव वत्थाईणं कप्पिओ भवतु त्ति । जेणेव कप्पिओ भवति तं उस्सारिज्जति । आयार इत्यर्थः । दिट्ठिवातो केण कारणेणं उस्सारिज्जइ ? । उच्यते—

**कालियसुआणुओगम्मि, गंडियाणं समोयरणहेउं ।**
**उस्सारिंति सुविहिया, भूयावायं ण अण्णेणं ॥७४७॥**

"**कालियसुआ०**" गाधा । जो दिट्ठिवातं अपत्तो पढिउं धम्मकधालद्धिसंप्पण्णो पुण, तस्स कालियाणुओगेण[५] धम्मं कहेंतस्स गंडियाओ उवयुज्जंति त्ति काउं, तासिं समोतरण-णिमित्तं अपढिते अणुद्दिट्ठे य ण वट्टंति ताओ अज्झातिउं । एतेण कारणेणं दिट्ठिवातो उस्सारिज्जति, ण वि 'वरं वायगो होंतो' त्ति ।

इदाणिं जं तं हेट्ठा भणितं—"**ऽकालं असज्झायऽवक्खेवे** [गा० ७४२] एतं उवरिं भणीहामि" त्ति, तं एत्ताहे भण्णति—

**सज्झायमसज्झाए, सुद्धासुद्धे व उद्दिसे काले ।**
**दो दो अ अणोएसुं, ओएसु उ अंतिमं एक्कं ॥७४८॥**

**एगंतरमायंबिल, विगईए मक्खियं पि वज्जेति ।**
**जावइअं च अहिज्जइ, तावइयं उद्दिसे केइ ॥७४९॥**

"**सज्झायमस०**" गाधाद्वयम् । कंठं । किंचि वि भणामि । '**दो दो अ अणोएसुं**ति । अणोया णाम समा उद्देसया जधा **कप्पस्स** । तस्स दिणे दिणे दो दो उद्देसया उद्दिस्संति । पढम पोरिसीए एगो उद्दिट्ठो य समुद्दिट्ठो य, ताधे बितियं उद्दिसति । बितियपोरुसीए । एतेसिं चेव सअत्थो कधिज्जति । चरिमपोरुसीए तं पढमं अणुजाणित्ता बितियं समुद्दिसति, अणुजाणति य । ओया णाम विसमा । जधा '**सत्थपरिण्णाए**' । तीए दो दो उद्दिसित्ता तिहिं दिवसेहिं, चउत्थे दिवसे एगो चेव । तं पढमपोरिसीए उद्दिट्ठसमुद्दिट्ठं करेत्ता चरमाए अणुयाणति । **केई**

१. **अद्धपोरिसिं** पू० १ । २. **परिहवेउ** पा० । **पहावेउ** पू० २ । ३. **पट्ठावेति** पू० २। ४. **असहिओ** पा० । **तो असहिए** पू० १ । ५. **कालियाणुगओ गणहरधम्मं** पू० १।

भणंति—जावतियं अधिज्जति तावतियं उद्दिसति । जति वि अज्झयणाणि दो तिण्णि चत्तारि परेण वा उट्ठवेति तो वि उद्दिसिज्जेज्जा । '**ऽकाल-असज्झायं**' ति गयं ।

इदाणिं [१]'**अवक्खेवे**' त्ति । तं भणणति—

**आहारे उवगरणे, पडिलेहण लेव खेत्तपडिलेहा ।**
**अप्पाहारो परिहार मोअ जह अप्पणिद्दो अ ॥७५०॥**

"**आहारे०**" गाधा । आहारे त्ति, अस्स विभासा—

**हिंडाविंति ण वा णं, अहवा अण्णट्ठया ण सो अडइ ।**
**पेहिंति व से उवहिं, पेहेइ व सो ण अण्णेसिं ॥७५१॥**

"**हिंडाविंति०**" पुव्वद्धं । जति असंथरणं तो अण्णेसिं [२]ण आणेति । सो अप्पणा जं भुंजति तत्तियमेत्तं अडति । **उवगरणे पडिलेहगे**त्ति । '**पेहिंति**' पच्छद्धं । कंठं । **लेव** त्ति । अस्स विभासा—

**एमेव लेवगहणं, लिंपइ वा अप्पणो ण अण्णस्स ।**
**खेत्तं च ण पेहावे, ण यावि तेसोवहिं पेहे ॥७५२॥**

"**एमेव०**" पुव्वद्धं । कंठं । '**खेत्तं च**' पच्छद्धं । कंठं । **तेसिं** ति खेत्तपडिलेहगाणं । **अप्पाहारो** त्ति—

**देंति पणीयाहारं ण य बहुगं मा हु जग्गतोऽजिण्णं ।**
**मोआइणिसग्गेसु अ, बहुसो मा होज्ज पलिमंथो ॥७५३॥**

**देंति पणीया०** पुव्वद्धं । कंठं । **परिहारे**त्ति सण्णा, **मोय**त्ति काइयं । **मोयादि** पच्छद्धं । कंठं । **जध अप्पणिद्दो य** होति पणीताहारादिणा तधा कातव्वं । एवं उस्सारिते जं तं कज्जं तं कारविज्जति । एवं द्वादशप्रकारे कल्पिकद्वारे अपदिष्टे तदनुषंगाच्च चोदकेन चोइए **उस्सार-कप्पिए** त्ति गतं । '**कप्पिए**' त्ति दारं गतं ॥

इदाणिं **अचंचले** य त्ति दारं । चंचलो जो सो णारिहति अणुओगं सोउं । सो चंचलो चउव्विहो । तं जहा—

**गति-ठाण-भास-भावे, लहुओ मासो उ होइ एक्केक्के ।**
**आणाइणो य दोसा, विराहणा संजमाऽऽयाए ॥७५४॥**

"**गति-ठाण**" गाधा । चउण्ह वि मासलहुं पच्छित्तं । आणादी । संजमविराधणा ।

---

१. **अव्वक्खेवे०** पा० । २. पा० प्रतौ नास्ति ।

गतिचंचलस्स दवद्दवाए वच्चंतस्स आतविराधणा—पडेज्जा । देवता वा छलेज्जा । पडिचोयणातो वा असंखडे अट्ठिभंगादी । एवं सेसेसु वि आत-संजमाणं विराधणा वत्तव्वा ।

**गति-ठाणचंचलाणं** इमा विभासा—

**दावद्दविओ गइचंचलो उ ठाणचवलो इमो तिविहो ।**
**कुड्डादऽसइं फुसइ व, भमइ व पाए व विच्छुभइ ॥७५५॥**

"**दावद्दविओ०**" गाधा । कंठा ।

**भासाचपलो चउहा, अस त्ति अलियं असोहणं वा वि ।**
**असभाजोग्गमसब्भं, अणूहिउं तं तु असमिक्खं ॥७५६॥**

"**भासाचपलो**" गाधा । [1]भासाचवलो चतुद्धा । तं जधा—असप्पलावी, असब्भप्पलावी, असमिक्खियप्पलावी, अदेसकालप्पलावी । आदिल्लाणं तिण्हं विभासा—**अस त्तीत्यादि**, गाधा—कंठा । ऊहितं जं—

**पुव्वं बुद्धीए पासित्ता, तओ वक्कमुदाहरे ।**
**अचक्खुओ व्व णेयारं, बुद्धिमण्णेउ ते गिरा ॥१॥**

एतवतिरित्तं अणूहितं, तं असमिक्खं पलविउं सीलं जस्स सो असमिक्खिय-पलावी । अदेसकालप्पलावी इमो—

**कज्जविवत्तिं दट्ठुं, भणाइ पुव्विं मए उ विण्णायं ।**
**एवमिदं तु भविस्सइ, अदेसकालप्पलावी उ ॥७५७॥**

"**कज्जविवत्तिं०**" गाधा । कंठा । **भावचवलो** इमो—

**जं जं सुयमत्थो वा, उद्दिट्ठं तस्स पारमप्पत्तो ।**
**अण्णण्णसुयदुमाणं, पल्लवगाही उ भावचलो ॥७५८॥**

"**जं जं सुय०**" गाधा । कंठा । भवे कारणं चंचलत्तणं पि करेज्जा—

**तेणे सावय ओसह, खित्ताई वाइ सेहवोसिरणे ।**
**आयरिय-बालमाई, तदुभयछेए य बिइयपयं ॥७५९॥**

"**तेणे०**" गाधा । तेण-भएणं सावय-भएणं वा दवद्दवाए गच्छेज्जा ओसहहेउं वा । ण य पच्छित्तं । [2]ठाणचंचलत्तणं पि करेज्जा खित्तचित्तो, आदिग्गहणेणं दित्तचित्तो जक्खाइट्ठो उम्मायपत्तो वा । न य पच्छित्तं । भासाचंचलत्तणं पि करेज्जा । वातिस्स बुद्धिं परिभूय अस त्ति अलियंपि भणेज्जा । सेहो वा पंडगादि वोसिरियव्वो । सो असभा[3]जोग्गादिणा खरफरुसेहिं य

१. **भासाचंचलो** पा० । २. **ठाणे चं०** पू० १ । **ठाणं चं०** पा० । ३. **सो असब्भवातिजोगादिणा** पू० १ ।

णिब्भच्छिज्जति, वरं णासंतो। आयरिया वा दोसेसु ण उवरमंति । पच्छा अदेसकाल-पलावित्तणं पि करेज्जा । जहा—अमुगो अमुगो अमुगं भणति तुब्भं, तेणं तो मए तुब्भं कहितं जहा—अयसो होहिति । पच्छा ते तेण [१]भएण उवरमंति । बालो वा ण ठाति वारिज्जंतो, ताधे अणूहिउं खरेहिं पि [२]भासिज्जंति। आदिग्गहणेणं पडिणीओ व समणादिसु भावचंचलत्तणं पि करेज्जा । किंचि सुत्तं अत्थो वा वोच्छिज्जति ताधे अण्णं अद्धपढियं मोत्तुं तं गेण्हेज्जा ।

इदाणिं '**अवट्ठिते य**' त्ति दारं । अवट्ठितो जो सो अणुयोगं सोउं अरिहति, अणवट्ठितस्स ण दातव्वं । सो—

**दुविधो लिंग विहारे, एक्केक्को चेव होइ दुविहो उ ।**
**चउरो य अणुग्घाया, तत्थ वि आणाइणो दोसा ॥७६०॥**
**गिहिलिंग अण्णलिंगं, जो उ करेई स लिंगओ दुविहो ।**
**चरणे गणे अ अथिरो, विहारअणवट्ठिओ एस ॥७६१॥**

"**दुविधो लिंग०**" गाधा । सो दुविधो लिंगे विहारे य । **एक्केक्को चेव होति दुविधो उ** त्ति। तत्थ [३]लिंगाणवट्ठिओ दुविधो इमो—कंदप्पेण वि । '**गिहिलिंगं**' पुव्वद्धं । गिहिलिंगं वा करेइ परलिंगं वा करेइ मूलं । **चउरो य अणुग्घात** त्ति । चोलपट्टयं बंधति ४ी । गरुलपक्खियं करेइ ४ी । अद्धंसकडाए ४ी । संजतिपाउरणे ४ी । सीसदुवारे गोपुच्छए य ।०। एवं लिंगे । विहाराणवट्ठिओ इमो दुविधो । '**चरणे**' पच्छद्धं । [४]चरणाणवट्ठितो पुणो पुणो चरणाओ पडति। एरिसस्स सुत्तं देति ह्व । अत्थं देति ह्वा । गणाणवट्ठिओ गाणंगणिओ । सो उवरिं सपच्छित्तो भण्णिहित्ति । तम्हा एतद्दोसविमुक्कस्स अवट्ठितस्स दायव्वं । ण देइ, तं चेव पच्छित्तं। **अवट्ठिते** त्ति दारं गतं ।

इदाणिं **मेहावि** त्ति दारं । जो मेहावी तस्स दायव्वं । सो तिविहो—

**उग्गहण धारणाए, मेराए चेव होइ मेधावी ।**
**तिविहम्मि अहीकारो, मेरासंजुत्तो मेहावी ॥७६२॥**

"**उग्गहण**" गाधा । एत्थ अट्ठ भंगा[५] । जत्थ जत्थ मेरामेहावी ण भवति तत्थ तत्थ ण दायव्वं । जइ देइ [६]पासत्थादीणं ४। अहाछंदे ४। सेसाण य अदाणे सुत्तस्स ४। अत्थस्स ह्वा। को पुण मेरामेहावी ? उच्यते—मेरासंजुत्तो । मेरा सीमा मर्यादा चारित्रमित्यनर्थान्तरं । त्रिविधेनाप्यधिकारो दाने चादाने च ।

इयाणिं **अपरिस्सावी य** त्ति, दारं। अपरिस्साविय[७]स्स दायव्वं परिस्साविय[८]स्स न वि।

---

१. **भणंतेण** पा० । २. **हाविज्जति** पा० । ३. **लिंगाणव०** पू० १-२ । ४. **चरणेऽण०** पू० १ । ५. ग्रहणमेधावी धारणामेधावी मर्यादामेधावी, ग्रहणमेधावी धारणामेधावी अमर्यादामेधावी इत्यादिभिस्त्रिभिः पदैरष्टौ भेदाः । टी० । ६. **पासत्थाणं** पू० १ । ७-८. **०स्साइ०** पू० २ ।

**परिसाइ अपरिसाई, दव्वे भावे य लोग उत्तरिए ।**
**एक्केक्को वि य दुविहो, अमच्च बड्डुईएँ दिट्ठंतो ॥७६३॥**

"**परिसाइ अपरिसा०**" गाधा । सो परिस्साई अपरिस्साई य दुविधो–दव्वे य भावे य । [1]दव्वे परिस्साई घडादिणो । अपरिस्साई दोद्धियादीणि । भावे वि परिस्साई य अपरिस्साई य दुविधा–लोइया लोउत्तरिया य । **एक्केक्को वि य दुविध** त्ति । लोइया परिस्साई य अपरिस्साई य, एवं लोगुत्तरिया वि । तत्थ लोइए परिस्साइम्मि इमो अमच्चदिट्ठंतो–

एगो राया । तस्स कन्ना गद्दभस्स जारिसा । सो णिच्चं खोलाए अमुक्कियाए अच्छति । सो अमच्चेण पुच्छिओ–किं तुब्भे भट्टारयपादा णिच्चं खोलाए आविद्धियाए अच्छध ? ण. [2]कस्सइ सीसं कण्णा य दरिसेध ? । रण्णा सिट्ठं । रहस्सभेदो न कातव्वो । तेण अणहिया-समाणेणं अडविं गंतुं रुक्खढोड्डरे[3] मुहं छोढूणं भणितं–गद्दभकण्णो राया गद्दभकण्णो राया । तं रुक्खं अण्णेण छेत्तुं वादित्रं कतं । संपत्तीए य रण्णो पुरतो पढमं पवाइतं । तं वज्जंतं भणति–गद्दभकण्णो राया, गद्दभकण्णो राया । रण्णा अमच्चो पुच्छितो–तुमे परं एयं रहस्सं णायं, कस्स ते कधितं ? । अमच्चेण सब्भावं सिट्ठं । एस लोइओ परिस्साई ।

लोउत्तरिओ जो अणधियासेमाणे पुच्छितो वा अपुच्छितो वा अपरिणताणं अववाद-पदाणि कधेति । एरिसस्स सुत्तं देइ ह्व । अत्थं देति ४ी । इमं लोइए अपरिस्साइम्मि उदाहरणं–

राया सेट्ठी अमच्चो आरक्खिओ मूलदेवो य एगाए पुरोहियभज्जाए बड्डुणीए[4] अज्झोववन्ना । ताए सव्वेसिं संकेतओ दिण्णो । ते आगता । दारे ठिता । ताए भण्णंति–जति महिलारहस्सं जाणध तो पविसह । ते भणंति–ण याणामो । मूलदेवेण भणितं–अहं जाणामि । ताए भणितं–पविसह त्ति । पविट्ठो । पुच्छितो–किं महिलारहस्सं ? तेण भणितं–मारिज्जंतेहिं वि अण्णस्स न कधेतव्वं । त्वं विदग्धः कामुकः । तुट्ठाए सव्वरत्तिं रमितो । कल्ले रण्णा पुच्छितो मूलदेवो–किं तं महिलारहस्सं ? मूलदेवो भणति–अहं एतं उल्लावं पि ण याणामि । 'अवलवति'त्ति वज्झो आणत्तो, तध वि ण कधेति । धिज्जातिणीए आगंतु रण्णो कधितं जधा–एतं चेव महिलारहस्सं, जं सरीरच्चाए वि ण कस्सई सीसति । एस लोइओ अपरिस्साई ।

लोउत्तरिओ सुणेत्ता उद्दितं संतं जइ कोइ पुच्छति–किं एतं रहस्सितं कहिज्जति ? । भणति–चरणकरणं साधूणं वण्णिज्जति[5] । एरिसो अपरिस्सावी । एतस्स सुत्तं ण देति ४। अत्थं ण देति ४ी । **अपरिस्साई** त्ति दारं गतम् । **जे विदु** त्ति–

**विदु जाणए विणीए, उववाए जो उ वट्टए गुरूणं ।**
**तव्विवरीयऽविणीए, अदिंत दिंते अ लहु-गुरुगा ॥७६४॥**

---

१. दव्वपरि० पू० १-२ । २. **कासइ** पू० २ । ३. **०ढोड्डरमुहं** पू० । ४. **वट्टईए** पू० २। ५. **कहिज्जइ** पू० २ ।

"**विदु जाण०**" गाधा । विदू नाम जाणओ । विणयस्स जाणित्ता य जो विणीतो । को विणीतो ? उच्यते–[1]"**उववाए**"त्ति णिद्देसे जो उवचिट्ठति गुरूणं एतस्स सुत्त–अत्थ-अदाणे ह्व, ह्वा । अविदू णाम '**तव्विवरीतो**' त्ति । जो विणयं ण जाणति, जाणित्ता वा अविणीतो । एतस्स सुत्त-अत्थदाणे ह्व, ह्व । '**जे विदु**'त्ति गतं ।

इदाणिं '**पत्ते य**' त्ति दारं । पात्रस्य प्राप्तस्य व्यक्तस्य च दातव्वं । एयपडिपक्खाणं ण दातव्वं । तत्राऽपात्रा:–

**तिंतिणिए चलचित्ते, गाणंगणिए अ दुब्बलचरित्ते ।**
**आयरियपारिभासी, वामावट्टे य पिसुणे य ॥७६५॥**

"**तिंतिणिए**" गाहा । अप्राप्ता अव्यक्ताश्च ।

**आदीअदिट्ठभावे, अकडसमायारि तरुणधम्मे य ।**
**गव्विय पइण्ण णिण्हइ, छेअसुए वज्जए अत्थं ॥७६६॥**

"**आदी अदिट्ठ भावे०**" गाधा । अंतिमा तिण्णि अपात्रा एव । तिंतिणिओ दुविहो– दव्वतिंतिणो भावतिंतिणो य ।

**डज्झंतं तिंबुरुदारुयं व दिवसं पि जो तिडितिडेइ ।**
**अह दव्वतिंतिणो भावओ उ आहारुवहि-सेज्जा ॥७६७॥**

"**डज्झंतं०**" गाधा । तत्थ दव्वतिंतिणो जधा–[2]**तिंबुरुगकट्ठं** अग्गिम्मि छूढं [3]तिडितिडंतं अच्छति । एवं जो किंचि भणितो समाणो दिवसमपि [4]कडु रडंतो अच्छति । एस दव्वतिंतिणो भणितो । भावतिंतिणो तिविधो–आहारे उवधिम्मि सेज्जाए य । एक्केक्को दुविधो– अंतो बाहिं च । तत्थ आहारे ताव–

**अंतो-बहिसंजोअण, आहार बाहि खीर-दधिमाई ।**
**अंतो उ होइ तिविहा, भायण हत्थे मुहे चेव ॥७६८॥**

"**अंतो०**" गाधा । संजोयणा णामं भिक्खायरियाए च्चेव गततो खीरं [5]लद्धूणं शाल्योदनं मग्गति । शाल्योदनं लद्धूणं दधिमादीणि मग्गति । एसा बाहिं संजोयणा । अंतो-संजोयणा णाम पडिस्सए आगतो समाणो करेति । सा तिविधा-भायणे हत्थे मुहे । तत्थ भायणे मज्जियं करेति । अधवा खीरं जावेति । हत्थे चिब्भिडादीणि उगाहिमगेणं वेढेत्ता वदणे च्छुभति । मुहे ओगाहिमगं छोढुं कुसणगंडूसं करेति । एस ताव आहारे ।

---

१. **उवातित्ति** पा० । **उवाउत्ति** पू० १ । २. **तेंडुरुग०** पू० २ । ३. **अतिभणिएणं दिवसमवि तिडि०** पू० २ । ४. **रुडुरुडेंतो** पू० २ । ५. **दट्ठूणं** पा० ।

**एमेव उवहि सेज्जा, गुणोवगारी उ जस्स जं होइ ।**
**सो तेण जोययंतो, तदभावे तिंतिणो होइ ॥७६९॥**

"**एमेव०**" गाधा । '**एमेव**'त्ति उवधि–सेज्जासंजोयणा वि एवं चेव दुविधा–अंतो बाहिं च । उवधीए बाहिं संजोयणा–अंतरकप्पं सुंदरं लद्धुं अणुरूवं से उण्णियं कप्पं मग्गति । अंतोसंजोयणा-कृष्णकंबलीए पंडरे सरडे देति । सेज्जाए बाहिं संजोयणा-सुंदरं पडिस्सयं लभेत्ता मीरं(?सीरं?) मग्गति वरं ताए अड्डितियाए सोभंतो उवस्सयो । अंतोसंजोयणा–लिंपइ, सेडियाए य उल्लाएति । संथारयं पि लभित्ता सुंदरं तयणुरूवं अत्थुरणयं मग्गति । एस बाहिं संजोयणा। अंतोसंजोयणा–सुंदरं पत्थरेति, सोभति त्ति काउं । एरिसं जति आहारादी ण लब्भति, ताधे तिडतिडेति–हा ! णत्थि, इत्यादि । **तिंतिणिए** त्ति गतं ।

इदाणिं **चलचित्ते** त्ति दारं ।

**चलचित्तो भावचलो, उस्सग्गऽववायतो उ जो पुव्विं ।**
**भणितो सो चेव इहं, गाणंगणियं अतो वोच्छं ॥७७०॥**

"**चलचित्तो०**" गाधा । कंठा । इदाणिं **गाणंगणिए** त्ति दारं ।

**छम्मास अपूरित्ता, गुरुगा बारससमासु चउलहुगा ।**
**तेण परं मासलहू, गाणंगणि कारणे भइतो ॥७७१॥**

"**छम्मास०**" गाधा । छम्मासे अपूरेत्ता गणातो गणं संकमति ४ी । परेणं छण्हं मासाणं, जाव बारसवासाणि, एत्थंतरे संकमति चउलहुगा । परेणं बारसण्हं वासाणं णिक्कारणं संकमइ ०। **गाणंगणि कारणे भतितो** त्ति सेवितो साधुणा । जं भणियं कारणे अंतोछण्हं [१]वासाणं परेण वा गणातो गणं संकमति अपायच्छित्ती भवति ।

इदाणिं **दुब्बलचरित्ते** त्ति दारं ।

**मूलगुण उत्तरगुणे, पडिसेवइ पणगमाइ जा चरिमं ।**
**धिति-वीरियपरिहीणो, दुब्बलचरणो अणट्ठाए ॥७७२॥**

"**मूलगुण**" गाधा । कंठा । को दोषः ईदृशस्य [२]दाने ? । उच्यते–

**पंचमहव्वयभेदो, छक्कायवहो अ तेणऽणुण्णाओ ।**
**सुहसील-ऽवियत्ताणं, कहेइ जो पवयणरहस्सं ॥७७३॥**

"**पंचमहव्वय०**" गाधा । सुखं शीलं भजतीति सुखशीलं, कांक्षतीत्यर्थः । न व्यक्तोऽव्यक्तः । श्रुतेन वयसा चेत्यर्थः । कधं पुनस्तेन पञ्चमहाव्रतभेदः षट्कायवधश्चानुज्ञातो

१. **मासाणं** पू० १ विना । २. **दीपयंते** पू० १-२ ।

भवति ? । उच्यते–

**णिस्साणपदं पीहइ, अणिस्साणविहारयं ण रोएइ ।**
**तं जाण मंदधम्मं, इहलोगगवेसगं समणं ॥७७४॥**

"**णिस्साण०**" गाधा । सो सुहसीलो एरिसो मंदधम्मो भवति । '**दुब्बलचरित्ते**'त्ति गतं । इदाणिं '**आयरियपारिभासि**'त्ति दारं ।

**डहरो अकुलीणो त्ति य, दुम्मेहो दमग मंदबुद्धि त्ति ।**
**अवि अप्पलाभलद्धी, सीसो परिभवइ आयरियं ॥७७५॥**

"**डहरो**" गाधा । अपि शब्दात् कदाचित् स आचार्यः डहरो वा सिया, अकुलीणो वा, दुम्मेधो वा, दमगो वा, मंदबुद्धी वा, अप्पलद्धी वा, अलद्धी वा । ताधे सो सीसो एतेहिं कारणेहिं परिभवति तं आयरियं, ण बहुमाणीकरेति । '**सीसो**'त्ति । अस्य व्याख्या–

**सो वि य सीसो दुविहो, पव्वावियगो अ सिक्खओ चेव ।**
**सो सिक्खओ अ तिविहो, सुत्ते अत्थे तदुभए य ॥७७६॥**

"**सो वि य०**" गाधा । कंठा । **आयरियपारिभासि** त्ति दारं गतं ।

इदाणिं '**वामावट्टे**'त्ति दारं ।

**एहि भणिओ उ वच्चइ, वच्चसु भणिओ दुतं समल्लियइ ।**
**जं जह भण्णति तं तह, अकरेंतो वामवट्टो उ ॥७७७॥**

"**एहि भणिओ०**" गाधा । कंठा । **पिसुणे य** त्ति दारं–

**पीतीसुण्णणण पिसुणो, गुरुगाइ चउण्ह जाव लहुओ उ ।**
**अहव असंतासंते, लहुगा लहुगो गिही गुरुगा ॥७७८॥**

"**पीतीसुण्णण०**" गाधा । प्रीतिं शून्यां करोतीति पिशुनः । आयरियस्स जति करेति तो ह्वा । वसभस्स ह्व । भिक्खुस्स ।०। खुड्डगस्स ०। अथवा अन्यो विकल्पः । संजतस्स असंतेणं पीतिं सुन्नीकरेति ४। संतेण ०। गिहत्थस्स असंतेण ४। संतेण ०। एतं जो करेति तस्स पच्छित्तं । एरिसस्स जो सुत्तत्थे देइ तस्स उवरिं पच्छित्तं भण्णिहिति । '**पिसुणे**'त्ति गतं । इदाणिं [1]**आदिमदिट्ठभावे** त्ति दारं–

**आवासगमाईया, सूयगडा जाव आइमा भावा ।**
**ते उ ण दिट्ठा जेणं, अदिट्ठभावो हवइ एसो ॥७७९॥**

---

१. आदी आदिट्ठ० पू० २ ।

"**आवास**" गाधा । कंठा । इदाणिं **अकडसामायारी**–

**दुविधा सामायारी, उवसंपद मंडलीएँ बोधव्वा ।**
**अणालोइयम्मि गुरुगा, मंडलिमेरं अतो वोच्छं ॥७८०॥**

**सुत्तम्मि होइ भयणा, पमाणतो यावि होइ भयणा उ ।**
**अत्थम्मि उ जावइया, सुणेंति थेवेसु अण्णे वि ॥७८१॥**

"**दुविधा सामायारी०**" गाधाद्वयम् । अकडसामायारी दुविधा । उवसंपदसामायारीए उवसंपण्णं जो अणालोइयगुणदोसं परिभुंजति तस्स ४ी । '**सुत्तम्मि होइ भयणा** । सुत्त पोरिसीए णिसज्जा कज्जेज्ज वा ण वा । कधं ? जति तरुणो णीरोगो आयरिओ अप्पणो य से पडिभाति तो अप्पणिज्जयाए रयहरणणिसेज्जाए उवेट्ठओ सुत्तं [1]वाएतु । अहवा कारवेति, थेरो वा, रोगी वा जस्स तस्स साधुस्स कप्पे, **पमाणतो यावि** त्ति, एगम्मि वा दोसु वा, जत्तिएहिं वा कप्पेहिं [2]उवेट्ठओ सुहं वायणं देति, तत्तिएहिं कप्पेहिं णिसेज्जा कीरति, एस भयणा। अत्थमंडलीए पुण जावतिया सुणेंति तेहिं सव्वेहिं एक्केक्को कप्पो दातव्वो । अध थोवा चेव सुणेंति तो अण्णे वि कप्पे देंति असुणेंतगा, जत्तिएहिं णिसज्जा भवति ।

**मज्जण णिसिज्ज अक्खा, किइकम्मुस्सग्ग वंदणग जेट्ठे ।**
**परियाग जाइ सुअ सुणण समत्ते भासई जो उ ॥७८२॥**

"**मज्जण**" गाधा । "**मज्जणं**"ति मंडलीभूमीं ण पमज्जंति ०। णिसेज्जातो दो ण करेंति ह्व। अक्खे ण पमज्जंति ह्व। कितिकम्मं न करेंति गुरुणो ।०। सम्मं पट्ठवणकाउसग्गं न करेंति ।०। खेलमत्तयं ण ढोएंति ।०। **वंदणग जेट्ठे** त्ति । णंदीए कड्ढियाए जेट्ठस्स पणामं ण करेंति ।०। आह–किं जो परियायेण जेट्ठो सो जेट्ठो, अध जो जातीए, अध बहुसुयत्तणेणं, अध जस्स बहुगीओ परिवाडीओ गताओ ? । आयरिओ भणति–एतेसिं एगो वि ण भवति । जो समत्ते[3] वक्खाणे उट्ठिताणं अणुभासति सो जेट्ठो ।

**अवितधकरणे सुद्धो, वितह करेंतस्स मासियं लहुगं ।**
**अक्ख णिसज्जा लहुगा, सेसेसु वि मासियं लहुगं ॥७८३॥**

"**अवितध०**" गाधा । एतेहिं सव्वेहिं पमज्जणादीहिं पदेहिं अवितधं करेंतो सुद्धो। **वितहं करेंतस्स** त्ति, कंठं । '**अकडसामायारि**'त्ति गतं ।

इदाणिं '**तरुणधम्मे**'त्ति दारं ।

---

१. **वायतु** पू० २ । २. **उवट्ठिओ** पा० । ३. **त्ते प्रपाठके** उ० पू० २ ।

**तिण्हाऽऽरेण समाणं, होइ पकप्पम्मि तरुणधम्मो उ ।**
**पंचण्ह दसाकप्पे, जस्स व जो जत्तिओ कालो ॥७८४॥**

"**तिण्हाऽऽरेण०**" गाधा । **आयारपकप्पस्स** तिवरिस-परियागस्स आरतो तरुणधम्मो भवति । **कप्प-ववहार-दसाणं** पंचण्हं संवच्छराणं आरतो तरुणधम्मो भवति । '**तरुणधम्मे**'ति गतं ।

इदाणिं '**गव्विगे**' त्ति दारं ।

**पुरिसम्मि दुव्विणीए, विणयविहाणं ण किंचि आइक्खे ।**
**ण वि दिज्जइ आभरणं, पलियत्तियकण्ण-हत्थस्स ॥७८५॥**

"**पुरिसम्मि०**" गाधा । अविणीतत्तणेणं दूसितो विणतो जस्स स भवति दुव्विणीतो । सो गव्वेणं णेच्छति अत्थमंडलीए सोउं 'कधमहं एतस्स णीयतरए उवविसिस्सामि ?' जो वा सुणेत्ता अविणीतो भविस्सति, तस्स वि ण वट्टति कधेतुं । '**विणयविधाणं**'ति, सुतणाण-[१]विणयभेदं । किं कारणमिति चेदुच्यते—जहा हत्थ-कण्णच्छिण्णगस्स आभरणं णाविज्झति, ण सोभति त्ति काउं एवं ।

**मद्दवकरणं णाणं, तेणेव उ जे मदं समुवहंति ।**
**ऊणगभायणसरिसा, अगदो वि विसायते तेसिं ॥७८६॥**

"**मद्दवकरण०**" गाधा । जधा चुल्लुच्छुलेति जं होति ऊणयं । एवं जे किंचिमवि जाणित्ता गव्वायंति ते अपात्रा । ण कप्पंति सुणावेतुं, तेसिं अगदो विषायते—विषतया परिणमतीत्यर्थः । '**गव्विए**'त्ति गतं ।

इदाणिं '**पइण्ण**'त्ति दारं । सो दुविधो पतिण्णपण्हो य पतिण्णविज्जो य ।

**सोउं अणभिगताणं, कहेइ अमुगं कहिज्जई इत्थं ।**
**एस उ पइण्णपण्णो, पइण्णविज्जो उ सव्वं पि ॥७८७॥**

"**सोउं अणभिगताण०**" गाधा । तत्थ मंडलीए सुणेत्ता उट्ठितो अणभिगताणं अयोग्यानामित्यर्थः, पुच्छितो अपुच्छितो वा कधेति—एयं एत्थ कधिज्जति । जधा—पुढवीकायादी वि छक्काया कप्पंति । पंचमहव्वयाइं वितधं करेज्जा । '**एस पतिण्णपण्हो**'। **पइण्णविज्जो** णाम जो **सव्वं** चेव विज्जं ति सुत्तं उस्सग्गाववादेहिं अपात्राणां अप्राप्तानां अव्यक्तानां च कधेति । को पुण दोसो दुविधस्स वि पइण्णस्स ? । उच्यते—

---

१. ०णाणं विणयहेउं पू० २ ।

**अप्पच्चओ अकित्ती, जिणाण ओहाव मइलणा चेव ।**

**दुल्लहबोहीअत्तं, पावंति पइण्णवागरणा ॥७८८॥**

"**अप्पच्चओ०**" गाधा । अप्पच्चयो—पुव्वावरविरुद्धं, ण कप्पति त्ति भणित्ता पच्छा कप्पति त्ति अणुण्णातं । जधा एतं अलियं तधा सव्वं चेव जिणवयणं । ते विपरिणता समाणा **अकित्ति** त्ति अवण्णं तित्थगराणं भासंति—'कतो तेसिं सव्वण्णुत्तणं जेहिं एरिसं भासितं ?' । '**ओधाए**'त्ति एवं ते विपरिणता उप्पव्वएज्जा । **मइलण** त्ति । तस्याप्रायोग्यस्यापवादं सोतुं अपरिणामगत्तणेणं अतिपरिणामगत्तणेण वा संकितस्स णाणादीणि मइलियाणि भवंति । सेसं कंठं । इदाणिं **णिण्हग** त्ति—

**सुत्तऽत्थ-तदुभयाइं, जो घेत्तुं णिण्हवे तमायरियं ।**

**लहुया गुरुया अत्थे, गेरुयणायं अबोही य ॥७८९॥**

"**सुत्तत्थ०**" गाधा । जस्स सगासे सुत्तत्थाणि गहिताणि तं णिण्हवेति अपलव-तीत्यर्थः । अण्णं वड्डुयरं आयरियं उद्दिसति । अधवा भणति—मए सयं चेव [१]उक्केल्लियं । णवरं तेहिं दिसा दिण्णा । सुत्तायरियं णिण्हवति ह्व । अत्थायरियं णिण्हवइ ४ी । एरिसस्स ण कधेतव्वं । किं कारणं ? । उच्यते—

**उवहयमइ-विण्णाणे, ण कहेयव्वं सुयं व अत्थो वा ।**

**ण मणी सयसाहस्सो, आविज्झइ कोत्थु भासस्स ॥७९०॥**

"**उवहय-मइ विण्णाणे**" गाधा । कधं सो उवहतमति-विण्णाणो ? । जेण गिहिणो वि ताव मिच्छदिट्ठीहोंतया इहलोगणिमित्तं जस्स सगासे सिक्खिता तं जावज्जीवं गुरुं मण्णमाणा सलाहंति । किमंग पुण धम्मं जाणंतेणं वायणारिओ अवलवितव्वो ? । एवं जस्स उवहता मती विण्णाणे तस्स ण कधेतव्वं । जधा [२]कोत्थुभमणी भासस्स अजोगो त्ति काउं णाविज्झति । '**भासो**' मीढसउणतो[३] । एवं सो वि सुतरतणस्स अजोग्गो ।

इदाणिं एतेसिं चेव दाराणं पच्छित्तं भण्णति—

**अव्वत्ते अ अपत्ते, लहुगा लहुगा य होंति अप्पत्ते ।**

**लहुगा य दव्वतितिणि, रसतितिणि होंति चतुगुरुगा ॥७९१॥**

**अंतो बहिं च गुरुगा, आयरिय-गिलाण-बाल बिइअपयं ।**

**आयरियपारिभासिस्स होंति चउरो अणुग्घाया ॥७९२॥**

"**अव्वत्ते०**" गाधाद्वयम् । अव्वत्तो नाम तरुणधम्मो, तस्स देति ह्व । अपात्रा णाम

१. **उक्को०** पू० १ । २. **गोत्थुभ०** पू० १-२ । ३. शकुन्तपक्षिणः । **मीढसउंतो** पू० १-२ ।

चलचित्त–गाणंगणिय–दुब्बलचरित्त–वामावट्ट–पिसुण–गव्वित–पइण्ण–णिण्हग–अकड–सामायारिया, एतेसिं देति ह्व । अप्पत्तो णाम आदीअदिट्ठभावो तस्स देति ह्व । दव्वतिंतिणस्स देति ह्व । रसतिंतिणो त्ति भावतिंतिणो तस्स देति ४ी । तिंतिणियत्तकरणे एतं । जं पुण अंतो बाहिं वा संजोएति तत्थ ४ी । आयरिय–गिलाण–बालमादीणं अट्ठाए संजोइंतो विसुद्धो । आयरिअपारिभासिस्स ४ी । जम्हा पच्छित्तं परिजाणामि–

**तम्हा ण कहेयव्वं, आयरिएणं तु पवयणरहस्सं ।**
**खेत्तं कालं पुरिसं, णाऊण पगासए गुज्झं ॥७९३॥**

"**तम्हा ण कहेयव्वं आयरिएण०**" गाधा । खेत्तं अद्धाणं पवज्जितुकामेणं अद्धाणकप्पो कहेतव्वो । ताधे ते पुव्वं कहितेणं पलंबगहणं सद्दहिस्संति । एतं दव्वं खेत्तं च गतं । काले वि दुब्भिक्खे आधाकम्मादिग्गहणं । पुरिसो जति परिणामओ तस्स कधिज्जति चेव अववातो ।

इयाणिं जं तं हेट्ठा सूतियं आयरिय–गिलाण–बालाण बितियपदं, तं वित्थरेण भण्णति– दव्वतिंतिणियत्तं पि करेज्जा । आयरियस्स सीसा आणं न करेंति, ते चोएमाणा भावतिंतिणिअत्तं पि करेज्जा । आयरितो खीरेणं वोसिराविज्जति ताधे संजोएज्जा । एवं अण्णो वि साधू । उवधिम्मि य आयरियस्स अंतरकप्पाणुरूवा सामली मेलेज्जेज्जा । संथारओ य से अत्थुरेज्जा । गिलाणो वा दव्वतिंतिणियत्तं करेज्जा । [2]भेसयनिमित्तं दव्वाणि वा संजोएज्जा । एतेहिं कारणेहिं वट्टमाणाणं कधिज्जति । एवं **पत्तेय** त्ति दारं गतं ।

इदाणिं अणुण्णाए त्ति दारं–

**चउभंगो अणुण्णाए, अणणुण्णाए अ पढमतो सुद्धो ।**
**सेसाणं मासलहू, अविणयमाई भवे दोसा ॥७९४॥**

"**चउभंगो०**" गाधा । कोइ पाडिच्छिओ आगतो [3]सुत्तत्थणिमित्तं, उवसंपण्णो । आयरिएहिं अणुण्णाओ–उवज्झायस्स सगासे पढाहि । उवज्झाएणं आयरिओ पुच्छियव्वो– 'पाढेमि खमासमणो ! ?' आमं ति भणिते पाढेंतो सुद्धो । एस अणुण्णातो अणुण्णातस्स । इदाणिं बितिओ–अणुण्णातं अणणुण्णातो वाएति । आयरिएहिं भणितो–उवज्झायस्स सगासे पढाहि । उवट्ठिए जति उवज्झाओ आयरियं अपुच्छिउं पाढेति मासलहुं । ततितो–अणणुण्णातं अणुण्णातो वातेति । तस्स समक्खं आयरिएहिं उवज्झातो भणितो–'पाढेज्जासि' । इतरो असंदिट्ठो । उवज्झायस्स उवट्ठितो । उवज्झाएणं पुच्छियव्वो–'तुमं खमासमणेणं संदिट्ठतो ण व त्ति ?' । भणति–'मए सुयं खमासमणेहिं तुब्भे [4]संदिट्ठा जधा मए पाढेज्जाह' । जति पाढेति ०।

---

१. **तम्हा ण कहे०** पू० १, पा० । २. **तेयनि०** पू० १-२, पा० । ३. **सुत्तणिमित्तं** पू० १ । ४. **संदिट्ठिता** पू० २ । **संदिट्ठया** पू० १ । **संदिट्ठाय** पा० ।

दोण्ह वि जणाणं। अध ण पाढेति तो उवज्झाओ सुद्धो। चउत्थो—अणणुण्णातं अणणुण्णातो वाएति। दोण्ह वि मासलहुं। अविणयो भवति। आदिग्गहणेणं अणवत्थादओ दोसा। **अणुण्णाए** त्ति दारं गतं।

इदाणिं **भावतो परिणामए** त्ति दारं। भावग्रहणात् शेषग्रहणं।

**परिणाम अपरिणामे, अइपरिणाम पडिसेह चरिमदुए।**
**अंबाईदिट्ठंतो, कहणा य इमेहिँ ठाणेहिं ॥७९५॥**

"**परिणाम अपरिणामे**" गाधा। परिणामग्रहणात् परिणामए अपरिणामए अति-परिणामए तिण्णि पुरिसा परूविज्जंति। तत्थ परिणामओ—

**जो दव्व-खेत्तकय-काल-भावओ जं जहा जिणक्खायं।**
**तं तह सद्दहमाणं, जाणसु परिणामयं साधुं ॥७९६॥**

"**जो दव्वखेत्त०**" गाधा। जो दव्वकतं खेत्तकतं कालकतं भावकतं जं जेण प्रकारेण जिणेहिं कधितं तं सद्दहति सो परिणामगो णातव्वो। दव्वतो सचित्ताचित्त-मीसए दव्वे सद्दहति। जारिसे कज्जे कप्पंति वा ण वा ?। खेत्ततो-अद्धाणे जणवते वा आयरियव्वं तं सद्दहति। कालओ—दुब्भिक्ख-सुभिक्खेसु जो कप्पो.। भावतो—गिलाणस्स आगाढाणागाढेसु जो कप्पो तं सद्दहति। एरिसो जो सो परिणामतो भवति णातव्वो य।

इमो **अपरिणामओ**—

**जो दव्व-खेत्त-कय-काल-भावओ जं जहा जिणक्खायं।**
**ते तह असद्दहंतं, जाण अपरिणामयं साहुं ॥७९७॥**

"**जो दव्व०**" गाधा। एते चेव दव्व-खेत्त-काल-भावे जहा भणिए जो ण सद्दहति, सो अपरिणामओ। इमो **अइपरिणामओ**—

**जो दव्व-खेत्तकय-काल-भावओ जं जहिं जया काले।**
**तल्लेसुस्सुत्तमई, अइपरिणामं वियाणाहि ॥७९८॥**

"**जो दव्व**" गाहा। एतेसु चेव पुव्वपरूवितेसु दव्वादिसु जो तल्लेस्सो—अच्छति। पेच्छामि ताव एत्थ किंचि णिस्साणपदं तो तं धणितमवलंबिस्सामि। उस्सुत्तमती णाम *अववातसुत्तातो अतिरेगा मती जस्स सो उस्सुत्तमती।* अपरितुस्समाणो आयरिओ पुणो लक्खणगाधं पढति—

**परिणमति जहत्थेणं, मई उ परिणामगस्स कज्जेसु।**
**बिइए ण उ परिणमई, अहिगं मइ परिणमे तइओ ॥७९९॥**

"**परिणमति०**" गाहा । कंठा । अधवा इमो अण्णो पगारो–

**दोसु वि परिणमइ मई, उस्सग्गऽववायओ उ पढमस्स ।**
**बिइतस्स उ उस्सग्गे, अइअववाए य तइयस्स ॥८००॥**

"**दोसु वि**" गाधा । जो परिणामओ भवति तस्स उस्सग्गे पत्ते उस्सग्गे परिणमति मई। अववादे पत्ते अववादे परिणमति मती । जत्थुस्सग्गो बलिओ तत्थ उस्सग्गं आचरति। जत्थ अववातो बलिओ तत्थाववातं चेव गेण्हति । बितिओ नाम अपरिणामओ । तस्स उस्सग्गे चेव एगम्मि परिणमति मती । अववादं ण सद्दहति । ततिओ णाम अतिपरिणामओ। तस्स अतिअपवादे परिणमति मती । सो दव्वादिसु अणुण्णं सुणेत्ता ण किंचि परिहरति । चिंतेति–अतिचिरस्स सुतं, वंचिया मो पुव्वं । **पडिसेह चरिमदुगे,** (गा० ७९५) त्ति पडिसेधो छेयसुत्तदाणस्स अपरिणामग-अतिपरिणामगदुगस्स । **अंबादी दिट्ठंतो** त्ति । एतेसिं तिण्ह वि जाणणानिमित्तं आयरिया सीसे भणंति–अंबेहिं अज्जो ! कज्जं ति । तत्थ जो परिणामओ सो भणति–

**चेयणमचेयण भाविय, केद्दह छिण्णे अ केत्तिया वा वि ।**
**लद्धा पुणो व वोच्छं, वीमंसत्थं व वुत्तो सि ॥८०१॥**

"**चेयणमचे०**" गाधा । किं सचित्ताणि अचित्ताणि सुत्तादीहिं वा भाविताणि ? । '**केद्दह**' त्ति किं वड्डुलयाणि खुड्डुलयाणि प्रमाणेन ?। **छिण्णं**ति किं पुव्वछिण्णाणि आणेमि छिंदित्ता इदाणिं ?। अधवा किं गंडियाओ कतयं, उत सगलं ?। **केत्तिया** वा ?। वा विभाषायाम्। किं बद्धट्ठियाणि आणेमि अबद्धट्ठिताणि ?। तरुणं जरढं वेति ?। एवं उक्ते शिष्येण आचार्येण वक्तव्यं–अलाहि लद्धाणि । अधवा भुज्जो[1] भणीहामि जारिसाणि आणेतव्वाणि । अधवा किं अंबेहिं ममं ? विण्णासणा(वीमंसणा?)णिमित्तं मए वुत्तोऽसि–किं तुमं परिणामओ ण वा, विणीतो ण व त्ति वा ?। जो अपरिणामओ सो भणति–

**किं ते पित्तपलावो, मा बीयं एरिसाइं जंपाहि ।**
**मा णं परो वि सोच्छिहि, कहं पि णेच्छामो एयस्स ॥८०२॥**

"**किं ते पित्त०**" गाधा । सो णातव्वो अपरिणामओ । जो अतिपरिणामओ सो भणति–

**कालो सिं अइवत्तइ, अम्ह वि इच्छा ण भाणिउं तरिमो ।**
**किं एच्चिरस्स वुत्तं, अण्णाणि वि किं व आणेमि ॥८०३॥**

"**कालो सिं०**" गाधा । एत्ताहे चेव आणेमि, अण्णेहिं दिवसेहिं जरठीभवंति ।

१. वा पुणो भ० पू० १-२ ।

'**अण्णाणि वि**' त्ति माउलिंगादीणि [१]आणेमि ।। एतेसिं अपरिणामग-अतिपरिणामगाणं आयरिएणं इमं उत्तरं दातव्वं—

**णाभिप्पायं गेण्हसि, असमत्ते चेव भाससी वयणे ।**
**सुक्कंबिल-लोणकए भिण्णे अहवा वि दोच्चंगे ।।८०४।।**

"**णाभिप्पायं०**" गाधा । न[२] त्वयाऽभिप्रायो मम [३]गृहीत इति । यावन्न तावन् मे वाणी समाप्यते तावदेव त्वया ईदृशं समयविरुद्धं निर्घृणं वचनं उक्तम् । मए भणितं—सुत्तभाविताणि लोणभाविताणि वा दव्वतो भावतो य भिण्णाणि दोच्चंगाणि वा [४]आम्राणि आणेहि । मए भणितं, आदिग्गहणेणं भणिता—रुक्खेहिं अज्जो ! कज्जं, बीएहिं वा । एत्थ वि तधेव अपरिणामग-अतिपरिणामगेहिं भणिए, आयरिएणं [५]भणितव्वं—

**णिप्फाव-कोद्दवाईणि बेमि रुक्खाणि ण हरिएँ रुक्खे ।**
**अंबिल विद्धत्थाणि अ, भणामि ण विरोहणसमत्थे ।।८०५।।**

"**णिप्फाव०**" गाधा । णिप्फाव—कोद्दवा णिज्जीवा जे रुक्खा ते मए भणिता, ण वि हरिया रुक्खा । बीयाणि अंबिलबीयाणि विद्धत्थाणि वा मए भणिताणि ण वि रोहणसमत्थाणि । एस अंबादी दिट्ठंतो गतो । **कहणा य इमेहिं ठाणेहिं** ति (गा० ७९५) । जं एयं आयरिएणं पडिभणितं एसा कधणा, उत्तरं ति भणितं होति । अधवा कधणा य अत्थस्स इमेहिं ठाणेहिं वट्टंतस्स इत्यर्थः । तद्यथा—

**णिद्दा-विगहापरिवज्जिएण, गुत्तिंदिएण पंजलिणा ।**
**भत्ती बहुमाणेण य, उवउत्तेणं सुणेयव्वं ।।८०६।।**

"**णिद्दा-विगहा**" गाधा । ण णिद्दाइतव्वं सुणितेणं । णिद्दायंतो ण किंचि गेण्हति । विकहाहिं वाघातो भवति । गुत्तिंदिएण सोतव्वं । श्रोत्रादीनामिन्द्रियाणां स्वं स्वं अर्थं प्राप्य निग्रहः करणीयः । अत्थपोरुसीए निच्चमेव अंजली कया अच्छति । भत्तीए बहुमाणेण य सुणेयव्वं । भक्तिर्नाम सेवा, इतिकर्तव्ये आचार्यस्य बाहिरा चेष्टा, बहुमानस्तु भावाभिष्वंगः । यस्य बहुमानस्तस्य भक्तिः स्याद् वा न वा । यस्यापि भक्तिः तस्यापि बहुमानः स्याद् वा न वा । एत्थ भत्तीए बहुमाणेण य इमं उदाहरणं ।

एगस्स गिरिस्स णिज्झरे वाणमंतरं । तत्थ सिवस्स पडिमा । तं एगो धम्मितो सुस्सूसति । भत्तीए पत्तामोडं[६] गुग्गुलुं च देति । [७]आवरिसणोवलेवणं च । अण्णो य एगो पुलिंदओ । सो जे जम्मि उदुम्मि सुंदरा पुप्फा ते आणेत्ता गल्लोदएणं ण्हाणेत्ता अच्चेतुं सुतुट्ठो

१. **आणेति** पू० १ । २. **न त्वभि०** पू० २ । ३. **गृहीतस्ते** पू० १-२ । ४. **अंबाणि** पा० । **आम्राणि** पू० १-२ । ५. **वत्तव्वं** पू० १ । ६. **पत्तामोदं गु०** पू० २ । ७. **आवरिसणा लेवणं** पू० १-२ ।

णच्चति । णच्चित्ता य गच्छति । अण्णता सो वाणमंतरो पुलिंदेण समं बोल्लेति । धम्मितो य आगतो । रुट्ठो चिंतेति–अहं सुइएण अच्चणं करेमि, एस असुइणा, तह वि एस जहण्णो एतेण समं बोल्लेति । णूणं एस वि असूइओ चेव । वाणमंतरेण भणितं–सच्चं, तुमं ममं सेवसि। जारिसो उण एतस्स ममोवरि बहुमाणो तारिसो तुधं[1] णत्थि । कधं ? कल्ले पेच्छाहि। पभाताए रतणीए वाणमंतरेणं एक्कं अप्पणो अच्छि णिद्धारितं[2] । पुलिंदेण दिट्ठं । रुट्ठो 'केणं ?' ति । ताधे चिंतेति–मम सामिस्स एगं अच्छि, मम दोण्णि, ण जुत्तं । अप्पणयंऽणेण अच्छि [3]णिड्डारित्ता लातियं । वाणमंतरेण धम्मिओ भण्णति–किध ? पेच्छसि एतस्स बहुमाणं ? ताधे णेण पडिलाइयं पुलिंदस्स । धम्मितस्स भत्ती, पुलिंदस्स बहुमाणो । एस भत्ति-बहुमाणाणं विसेसो। दोसु वि एत्थ अधिकारो । भत्तिबहुमाणे ण करेति ह्व। उवउत्तो अणण्णमणसो सो उग्गिण्हति। किं चान्यत्–

**अभिकंखंतेण सुभासियाइँ वयणाइँ अत्थमहुराइं ।**
**विम्हियमुहेण हरिसागएण हरिसं जणंतेण ॥८०७॥**

"**अभिकंखंतेण०**" गाधा । केरिसाणि सुभासिताणि ?। उच्यते–वयणाणि अत्थ[4] महुराणि । एतेण उवदेसेण सुणमाणस्स विम्हय-हरिसा जायंति । ते य तस्स सोतारस्स णयण-मुहेसु पासति कधओ, तं च पासित्ता आयरियस्स हरिसो जायति । एरिसगुणजुत्तस्स सीसस्स–

**आधारित सुत्तत्थो, सविसेसो दिज्जए परिणयस्स ।**
**सुपरिच्छित्ता य सुणिच्छियस्स इच्छागए पच्छा ॥८०८॥**

"**आधारित**" गाधा । जो जेहिं आयरिएहिं **आधारितो** । **सविसेसो** णाम सापवादो। सुट्ठु परिच्छित्ता सापवादो सूत्रस्य अर्थो दीयते । **सुणिच्छितस्स** त्ति सुत्तत्थे घेत्तव्वे **भद्रबाहोर**पि। णाणादीणं च अविराधणाए सुट्ठु णिच्छितो जो, तस्स सविसेसो दातव्वो । '**इच्छागए पच्छ**' त्ति। अपरिणामग-अतिपरिणामगदुगस्स पुण [5]जता सा अप्पणिता '**इच्छागत**' त्ति नट्ठा भवति, तदा छेदसुत्ताणि दिज्जंति । '**परिसा य**'त्ति दारं गतं । एवं णिक्खेवाणुओगद्दारस्स लक्खण–तदरिहपरिस त्ति तिण्णि पसंगदाराणि समत्ताणि । से तं **णिक्खेव**त्ति ।

**कल्पचूर्ण्यां पीठिका परिसमाप्ता ।**

---

१. तव पू० १-२ । २. **०च्छि निड्डोरितं** पू० १ । **णिड्डोलितं** पू० २ । ३. **णिड्डोरेत्ता** पू० १-२ । ४. **अत्थसाराणि** पू० १ । ५. **जाता** या० पा० ।

# बृहत्कल्पसूत्र-चूर्णि-पीठिकाविभागसत्क-गाथानां अनुक्रमणिका ॥

## ( तैयार करनारः मुनि त्रैलोक्यमण्डनविजय )

(नोंध : प्रथम गाथानुं आदि-चरण आपवामां आव्युं छे. पछी चूर्णिपुस्तकगत-गाथा-क्रमाङ्क छे; त्यारबाद प्रस्तुत पुस्तकनो पृष्ठाङ्क छे; छेल्ले बृ.क. वृत्तिना मुद्रित पीठिका (प्रथम) विभागमां स्वीकारवामां आवेल गाथाक्रमाङ्क आपेल छे. जे गाथा बे पैकी जेमां न होय ते स्थले —— आम लीटी करेल छे.)


| गाथा | चूर्णिक्रमाङ्कः | पृष्ठाङ्कः | वृत्तिक्रमाङ्कः |
|---|---|---|---|
| **अ** | | | |
| अकयमुहे दुप्पस्सा | ६६५ | १६९ | ६६२ |
| अक्खरतिगरूवणया | ४३ | १५ | ४३ |
| अक्खरपयाइएहिं | २९२ | ७९ | २९० |
| अक्खरसण्णीसम्मं | ४२ | १५ | ४२ |
| अक्खेवो सुत्तदोसा | ३३० | ९१ | ३२८ |
| अग्गी बाल गिलाणे | २२५ | ६० | २२४ |
| अच्चंतमणुवलद्धा | ३१ | १२ | ३३ |
| अच्चंता सामण्णा | ४६ | १६ | ४६ |
| अच्चित्तेण अचित्तं | ४२० | ११३ | ४१८ |
| अच्चित्तेणं मीसं | ४७२ | १२४ | ४६८ |
| अच्चित्तेण सचित्तं | ४७३ | १२४ | ४६९ |
| अजहण्णमणुक्कोसो | ६८० | १७३ | ६७७ |
| अज्जकालिय लेवं | ४७६ | १२५ | ४७२ |
| अज्जस्स हीलणा ल० | ७२८ | १८४ | ७२५ |
| अज्जुयलिया अतुरिया | ४४६ | ११७ | ४४१ |
| अट्टगहेउं लेवा | ५२३ | १३४ | ५२० |
| अणभिगतमाइआणं | ७४२ | १८७ | ७३९ |
| अणवट्ठंते तह वि उ | ५२७ | १३४ | ५२४ |
| अणावातमसंलोए | ४२१ | ११३ | ४१९ |
| अणावायमसंलोए | ४४८ | ११८ | ४४३ |
| अणिउत्तो अणिउत्ता | २३५ | ६२ | २३४ |
| अणुओगम्मि य पुच्छा | २५१ | ६७ | २५० |
| अणुणा जोगो अणुयोगो | १९० | ५३ | १९० |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अणुण्णाए वि सव्वम्मी | ६८२ | १७३ | ६७९ |
| अणुपुव्वी परिवाडी | २०९ | ५८ | २०८ |
| अणु बादरे य उंडिय | १८९ | ५३ | १८९ |
| अणुयोगो य णियोगो | १८७ | ५२ | १८७ |
| अण्णकुलगोत्तकहणं | ५८० | १४९ | ५७७ |
| अण्णाण मती मिच्छे | १३१ | ३३ | १२६ |
| अण्णोण्णे अंकम्मि | ५१५ | १३३ | ५१२ |
| अण्णो दुज्झिहि कल्लं | ३५५ | ९८ | ३५३ |
| अतिरेगगहणमुग्गा | ४४४ | ११७ | ४३९ |
| अत्तट्ठकडं दाउं | ६०० | १५३ | ५९७ |
| अत्तागमप्पमाणेण | ५३ | १७ | ५३ |
| अत्ताभिप्पायकया | १२ | ६ | १२ |
| अत्थं भासति अरहा | १९३ | ५४ | १९३ |
| अत्थवसा हवति पदं | ३३१ | ९१ | ३२९ |
| अत्थस्स उग्गहम्मि वि | ४८ | १६ | ४८ |
| अत्थस्स कप्पितो खलु | ४१० | ११३ | ४०८ |
| अत्थस्स दरिसणम्मि वि | ४७ | १६ | ४७ |
| अत्थस्स वि उवलंभे | ४९ | १६ | ४९ |
| अत्थाभिवंजगं वं० | ५५ | १७ | ५५ |
| अत्थाणंतरचारिं | ४० | १४ | ४० |
| अत्तित्ते संबद्धा | ६१ | १९ | ६१ |
| अत्थि मे घरे वि वत्था | ६३९ | १६३ | ६३६ |
| अत्थेसु दोसु तीसु व | २८८ | ७८ | २८६ |
| अद्दारगं अनगरं | २५९ | ६८ | २५७ |
| अधभावेण पसरिया | १०१ | २८ | १०० |
| अधवा अणिच्छमाण | २३९ | ६३ | २३८ |
| अधवा आयारादिसु | १६८ | ४१ | १६८ |
| अधवा मुच्छित्त मत्ते | ८३ | २४ | ८२ |
| अधिगरण मारणाऽणी० | ५५५ | १४२ | ५५२ |
| अधिगो जोगो निओगो | १९५ | ५४ | १९४ |
| अपमज्जणा अपडि० | ४५९ | १२१ | ४५४ |
| अपरायत्तं णाणं | २९ | १२ | २९ |
| अपुव्वमतिहिकरणे | ५७२ | १४७ | ५६८ |
| अपुव्वेण तिपुंजं | १०९ | २९ | १०८ |
| अप्पक्खरमसंदिद्धं | २८७ | ७७ | २८५ |
| अप्पगंथ महत्थं | २७९ | ७५ | २७७ |
| अप्पच्चओ अकित्ती | ७८८ | १९९ | ७८५ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अप्पणहुया य गोणी | २३७ | ६३ | २३६ |
| अप्पत्ताण उ दिंतेण | ७२७ | १८४ | ७२४ |
| अप्पत्ते अकधेत्ता | ४१३ | १११ | ४११ |
| अप्पत्ते अकहेत्ता | ४१७ | ११२ | ४१५ |
| अप्पत्ते अकहेत्ता | ४७५ | १२५ | ४७१ |
| अप्पत्ते अकहेत्ता | ५३४ | १३६ | ५३१ |
| अप्पत्ते अकहेत्ता | ६५२ | १६६ | ६४९ |
| अप्पुव्वस्स अगहणं | ७०२ | १७७ | ६९९ |
| अप्फासुएण देसे | ५८८ | १५१ | ५८५ |
| अबहुस्सुअस्स देइ व | ७०७ | १७८ | ७०४ |
| अबहुस्सुए अगीय० | ७०६ | १७८ | ७०३ |
| अभतट्ठीणं दाउं | ५१६ | १३४ | ५१३ |
| अभिकंखंतेण सुभा० | ८०७ | २०४ | ८०४ |
| अभिगते पडिबद्धे | ७३६ | १८६ | ७३३ |
| अभिगय थिर संविग्गे | ७४० | १८७ | ७३७ |
| अभिणवणगरणिवेसे | ३३३ | ९२ | ३३१ |
| अमणुण्णेतरगमणे | ४३५ | ११५ | ४३० |
| अमुइच्चगं ण धारे | ६६० | १६८ | ६५७ |
| अमुगं कालमणागए | ६३३ | १६२ | ६३० |
| अमुगिच्चगं न भुंजे | ६१५ | १५८ | ६१२ |
| अलियमुवघायजणयं | २८० | ७५ | २७८ |
| अवि गोपयम्मि वि पिबे | ३५१ | ९७ | ३४९ |
| अवितधकरणे सुद्धो | ७८३ | १९७ | ७८० |
| अविभागेहिं अणंतेहिं | ७३ | २२ | — |
| अव्वत्तमक्खरं पुण | ७६ | २३ | ७५ |
| अव्वत्ते अ अपत्ते | ७९१ | १९९ | ७८८ |
| अव्वोच्छित्तिनयट्ठा | १३५ | ३४ | १३५ |
| असरीरतेणभंगे | ५७९ | १४९ | ५७६ |
| असिवाइकारणेहिँ | ६३४ | १६२ | ६३१ |
| अहवा वि विभूसाए | ४९३ | १२८ | ४९० |
| अहीणक्खरं अणहिय० | २९० | ७८ | २८८ |
| अंगाणंगपविट्ठं | ८९ | २६ | ८८ |
| अंगुट्ठपएसिणि मज्झि० | ५१४ | १३३ | ५११ |
| अंतिमकोडाकोडी | ९४ | २७ | ९३ |
| अंतो बहिं च गुरुगा | ७९२ | १९९ | ७८९ |
| अंतो बहिं संजोअण | ७६८ | १९४ | ७६५ |
| अंबत्तणेण जीहाइ | ३४९ | ९६ | ३४७ |

आ


| | | | |
|---|---|---|---|
| आउयवज्जा उ ठिई | ९३ | २७ | ९२ |
| आगंतु वाधिखोभो | ३६१ | ९९ | ३५९ |
| आगमतो सुतणाणी | १७६ | ४९ | १७६ |
| आगाढमिच्छदिट्ठी | ५९५ | १५२ | ५९२ |
| आगारिंगितकुसलं | २६६ | ७१ | २६४ |
| आणाणवत्थ मिच्छा | ७१९ | १८२ | ७१६ |
| आणा विकोवणा बुज्झ० | ७३० | १८५ | ७२७ |
| आत पर तदुभए वा | ४३७ | ११५ | ४३२ |
| आता पवयण संजम | ४५१ | ११९ | ४४६ |
| आता पवयण संजम | ४७७ | १२५ | ४७३ |
| आदिल्लाणं दुण्ह वि | २५५ | ६८ | २५४ |
| आदीअदिट्ठभावे | ७६६ | १९४ | ७६३ |
| आधारितसुत्तत्थो | ८०८ | २०४ | ८०५ |
| आधारो आधेयं | १७० | ४२ | १७० |
| आभिणिबोहमवायं | ९० | २६ | ८९ |
| आयरिए सुत्तम्मि य | ३३९ | ९३ | ३३७ |
| आयरिय गणी इड्ढी | ६९५ | १७६ | ६९२ |
| आयरियत्तणतुरितो | ३७५ | १०३ | ३७३ |
| आयरियवण्णवादी | ७४१ | १८७ | ७३८ |
| आयारदिट्ठिवाय० | ७३५ | १८६ | ७३२ |
| आयारपकप्पधरा | ६९६ | १७६ | ६९३ |
| आयसमुत्था तिरिए | ४४१ | ११६ | ४३६ |
| आलंबणमलहंती | ११९ | ३१ | १२० |
| आलोयणं पउंजइ | ३९७ | १०७ | ३९५ |
| आलोयणं पउंजति | ३९४ | १०७ | ३९२ |
| आलोयणं पउंजति | ३९६ | १०७ | ३९४ |
| आलोयणं पउंजति | ३९९ | १०८ | ३९७ |
| आवातदोस तइए | ४४२ | ११६ | ४३७ |
| आवासगमाईया | ७७९ | १९६ | ७७६ |
| आवासगमादी या | ३८६ | १०५ | ३८४ |
| आवाससोहि अखलं० | ६२२ | १५९ | ६१९ |
| आलोएउ य दिसा | ४४७ | ११८ | ४४२ |
| आलोगं पि य तिविहं | — | — | ४६० |
| आसण्णपतीभत्तं | ३८८ | १०६ | ३८६ |
| आसादेउं व गुलं | १२१ | ३१ | १२८ |
| आहणणादी दित्ते | ४३८ | ११५ | ४३३ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| आहारे उवगरणे | ७५० | १९० | ७४७ |
| **इ** | | | |
| इक्कडकढिणे मासो | ६९० | १७५ | ६८७ |
| इति दोसगुणे णाउं | ७३१ | १८५ | ७२८ |
| इति पोग्गलकायम्मी | ६९ | २१ | ६७ |
| इत्थं पुण अहिगारो | १४८ | ३७ | १४८ |
| इत्थिणपुंसावाए | ४५८ | १२० | ४५३ |
| इत्थिणपुंसावाते | ४७१ | १२४ | ४६७ |
| इत्थी पुरिस णपुंसग | ६४० | १६४ | ६३७ |
| **उ** | | | |
| उग्गमउप्पायणए० | ६०४ | १५४ | ६०१ |
| उग्गहणधारणाए | ७६२ | १९२ | ७५९ |
| उच्छुकरणो व कोट्ठग० | ७२४ | १८३ | ७२१ |
| उज्जयसग्गुस्सग्गो | ३२१ | ८९ | ३१९ |
| उडुवासा समतीता | ५९८ | १५३ | ५९५ |
| उड्डादीणि उ विरसम्मि | ४८१ | १२६ | ४७७ |
| उण्णतमविक्ख णिण्णस्स | ३२३ | ८९ | ३२१ |
| उत्तरगुणणिप्फण्णा | ९ | ५ | ९ |
| उत्तर पुव्वा पुज्जा | ४६२ | १२१ | ४५७ |
| उत्तरिए जध दुमादी | ३१० | ८५ | ३०७ |
| उद्दिट्ठ तिगेगयरं | ६१३ | १५७ | ६१० |
| उद्दिट्ठ तिगेगयरं | ६५८ | १६८ | ६५५ |
| उद्दिसिय पेह अंतर | ६१२ | १५७ | ६०९ |
| उद्दिसिय पेह संगय | ६५७ | १६८ | ६५४ |
| उय वइकारो ह च्चि य | २८९ | ७८ | २८७ |
| उल्लेऊण न सक्का | ३३७ | ९३ | ३३५ |
| उवगरणं वामग० | ४६४ | १२२ | ४५९ |
| उवदेसेण सयं वा | ९९ | २८ | ९८ |
| उवमाइ अलंकारो | २८६ | ७७ | २८४ |
| उवमारूवगदोसो | २८३ | ७५ | २८१ |
| उवयार अणिट्ठुरया | ३१८ | ८८ | ३१६ |
| उवयोगं च अभिक्खं | ५२५ | १३४ | ५२२ |
| उवयोग सरपयत्ता | १४१ | ३५ | १४१ |
| उवलद्धी अगुरुलहू | ७२ | २२ | ७१ |
| उववाएण व सायं | ११७ | ३१ | १२४ |
| उवसमसम्मा पडमा० | १२० | ३१ | १२७ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| उवसामग सासाणं | ९१ | २६ | ९० |
| उवसामगसेढिगयस्स | ११३ | ३० | ११८ |
| उवहयमइविण्णाणे | ७९० | १९९ | ७८७ |
| उवहीलोभ भया वा | ५६३ | १४५ | ५६० |
| उव्वरए कोणे वा | ५७३ | १४७ | ५७० |
| उस्सग्गाई वितहं | ६२४ | १६० | ६२१ |
| उस्सण्णं सव्वसुयं | २७१ | ७३ | २६९ |
| उस्सण्णेणं असण्णी | ५४ | १७ | ५४ |
| उंडिय भूमी पेढिय | ३३२ | ९२ | ३३० |
| **ऊ** | | | |
| ऊसरदेसं दड्ढे० | ११५ | ३० | १२२ |
| ऊससियं णीससियं | ७७ | २३ | ७६ |
| **ए** | | | |
| एए उ अघिप्पंते | ६३२ | १६२ | ६२९ |
| एक्केक्कं तं चउहा | २७४ | ७३ | २७२ |
| एक्केक्कं सत्त दिणे | ७०९ | १७९ | ७०६ |
| एक्केक्कमक्खरस्स उ | ६० | १९ | ६० |
| एक्केक्को जियदेसो | — | — | ७३ |
| एक्केक्को पुण उवचय० | ७०० | १७७ | ६९७ |
| एक्केणं एक्कदलं | १९८ | ५५ | १९७ |
| एक्को य जहण्णेणं | ५२६ | १३४ | ५२३ |
| एगंतरमायंबिल | ७४९ | १८९ | ७४६ |
| एगं वा अत्थपदं | १९२ | ५४ | १९२ |
| एगत्थे उवलद्धे | ५१ | १७ | ५१ |
| एगदुतीचउपंचग | ४५० | ११८ | ४४५ |
| एगपदे दुतिगादी | १९९ | ५५ | १९८ |
| एगम्मि अणेगेसु व | ६ | ५ | ६ |
| एगयरणिग्गओ वा | ६११ | १५६ | ६०८ |
| एगविहारी अ अजाय० | ६९७ | १७६ | ६९४ |
| एगागित्तमणट्ठा | ६९९ | १७७ | ६९६ |
| एगेण विसति बीएण | ३४६ | ९५ | ३४४ |
| एतद्दोसविमुक्कं | ५१२ | १३३ | ५०९ |
| एते पदे ण रक्खति | ५६७ | १४६ | ५६४ |
| एमेव अजीवस्स वि | १५५ | ३९ | १५५ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| एमेव अधाउं उज्झि० | २१९ | ६० | २१८ |
| एमेव असंता वि उ | ६२ | १९ | ६२ |
| एमेव उवहि सेज्जा | ७६९ | १९५ | ७६६ |
| एमेव कइयवा ते | ५५९ | १४३ | ५५६ |
| एमेव गिलाणे वी | ५६८ | १४६ | ५६५ |
| एमेव गोणि भेरी | ३६५ | १०१ | ३६३ |
| एमेव चारण भडे | ५५३ | १४२ | ५५० |
| एमेव मज्जणाई | ६५० | १६६ | ६४७ |
| एमेव मामगस्स वि | ६३१ | १६२ | ६२८ |
| एमेव य पिहियम्मी | ५४२ | १३९ | ५३९ |
| एमेव य पुरिसाण वि | ६४२ | १६४ | ६३९ |
| एमेव य संसट्ठं | ६६६ | १६९ | ६६३ |
| एमेव लेवगहणं | ७५२ | १९० | ७४९ |
| एयं दुवालसविहं | ७१६ | १८१ | ७१३ |
| एवं अप्पडिवडिए | १०८ | २९ | १०७ |
| एवं खओवसमिए | ८८ | २५ | ८७ |
| एवं खु थूलबुद्धी | २२७ | ६० | २२६ |
| एवं गहवइसागा० | ६८६ | १७४ | ६८३ |
| एवं तु अणंतेहिं | ७१ | २२ | ७० |
| एवं तु गविट्ठेसुं | ६५१ | १६६ | ६४८ |
| एवं पि अलब्भंते | ६२० | १५९ | ६१७ |
| एवं पि भाणभेदो | ४८८ | १२७ | ४८४ |
| एवं पि हु उवघातो | ४९० | १२८ | ४८७ |
| एवं पुच्छासुद्धे | ६४६ | १६५ | ६४३ |
| एवं मणविसत्तीणं | ८५ | ८५ | ८४ |
| एवं लेवग्गहणं | ५१९ | १३४ | ५१६ |
| एवं संसारीणं | १०५ | २९ | १०४ |
| एवमेग तूभयतो वी | १९४ | ५४ | — |
| एसुस्सग्गठियप्पा | २४९ | ६७ | २४८ |
| एसेव य दिट्ठंतो | ८२ | २४ | ८१ |
| एहि भणिओ उ वुच्चइ | ७७७ | १९६ | ७७४ |
| **ओ** | | | |
| ओभासणा य पुच्छा | ६६३ | १६८ | ६६० |
| ओमंथपाणमाई | ६६८ | १७० | ६६५ |
| ओहविभागुद्देसे | ५३७ | १३७ | ५३४ |
| ओहि मणपज्जवे या | ३० | १२ | ३० |

**क**


| | | | |
|---|---|---|---|
| कज्जविवत्तिं दट्ठुं | ७५७ | १९१ | ७५४ |
| कडकरणं दव्वे सा० | १८४ | ५१ | १८४ |
| कतकितिकम्मो छंदेण | ४९६ | १२९ | ४९३ |
| कतमकते गिहिकज्जे | ७०५ | १७८ | ७०२ |
| कतिएण सभावेण व | ५६० | १४४ | ५५७ |
| कप्पव्ववहाराणं | २५७ | ६८ | — |
| कप्पेऊणं पाए | ४४५ | ११७ | ४४० |
| कमजोगं ण वि जाणइ | ७२३ | १८२ | ७२० |
| कमभिण्ण वयणभिण्णं | २८१ | ७५ | २७९ |
| कलुस दवे असती य | ४४० | ११६ | ४३५ |
| कंकडए को दोसो | २२२ | ६० | २२१ |
| काउं सरयत्ताणं | ५२१ | १३४ | ५१८ |
| काऊण णमोक्कारं | १ | २ | १ |
| काएसु उ संसत्ते | ५९२ | १५१ | ५८९ |
| कारकगतो चउत्थे | ३२९ | ९१ | ३२७ |
| कारणणिसेवि लहुसग | ३७९ | १०४ | ३७७ |
| कारणे सपाहुडि ठिया | ५७१ | १४७ | ५६९ |
| कालजइच्छविदोसो | २८२ | ७५ | २८० |
| कालमकाले सण्णा | ४४३ | ११६ | ४३८ |
| कालम्मि बितितपोरिसि | १६४ | ४० | १६४ |
| कालस्स समयरूवण | १६३ | ४० | १६३ |
| कालाइक्कंते लहु० | ५९७ | १५३ | ५९४ |
| | | ( कालातीते लहुगो ) । | |
| कालातिक्कंतोवट्ठाण | ५९६ | १५२ | ५९३ |
| कालियसुआणुओगम्मि | ७४७ | १८९ | ७४४ |
| कालेणुवक्कमेण व | १११ | ३० | ११० |
| कालो सिं अइवत्तइ | ८०३ | २०२ | ८०० |
| कास त्तऽपुच्छियम्मी | ६२६ | १६१ | ६२३ |
| कासातिमाति जं पुव्व० | ६१६ | १५८ | ६१३ |
| किंचिम्मत्तग्गाही | ३७१ | १०२ | ३६९ |
| किं ते पित्तपलावो | ८०२ | २०२ | ७९९ |
| किं दमओ हं भंते ! | ६३६ | १६३ | ६३३ |
| किं दोमि त्ति णरवई | ५०१ | १३० | ४९८ |
| किं पि त्ति अण्णपुट्ठो | ७२६ | १८३ | ७२३ |
| कीस ण णाहिह तुब्भे | ६२७ | १६१ | ६२४ |
| कुप्पवयणओसण्णेहिँ | ३४३ | ९४ | ३४१ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुविया तोसेतव्वा | ३८५ | १०५ | ३८३ |
| केण हवेज्ज णिरोहो | ७० | २१ | ६९ |
| केसिंचि इंदियाइं | २६ | ११ | २६ |
| को कल्लाणं णेच्छति | २४८ | ६६ | २४७ |
| को दोसो एरंडे | २१७ | ५९ | २१६ |
| कोमुदिया संगामिया | ३५८ | ९८ | ३५६ |
| कोल्लुगपरंपर संकं० | ५७८ | १४९ | ५७५ |
| **ख** | | | |
| खणणं कोट्टण ठवणं | ३३४ | ९२ | ३३२ |
| खमणं णिमंतिते ऊ | ५७६ | १४८ | ५७३ |
| खर अयसिकुसंभ सरिसव | ५३२ | १३५ | ५२९ |
| खलिते पत्थरसीया | २९९ | ८२ | २९७ |
| खलिय मिलिय वाइद्धं | ३०१ | ८३ | २९९ |
| खंडम्मि मग्गियम्मी | ४८३ | १२६ | ४७९ |
| खंधारभए णासति | ५६२ | १४४ | ५५९ |
| खंधारादी णाउं | ५८२ | १४९ | ५७९ |
| खंधेऽणंतपएसे | ८० | २४ | ७९ |
| खित्तम्मि उ जावतिए | ३४ | १२ | ३४ |
| खीणम्मि उदिण्णम्मि तु | ११४ | ३० | १२१ |
| खीरमिउपोग्गलेहिं | २२९ | ६१ | २२८ |
| खीरमिव रायहंसा | ३६८ | १०१ | ३६६ |
| खुड्डो धावण झुसिरे | ४६० | १२१ | ४५५ |
| खुरअग्गिमोयगोच्चा० | ५८ | १८ | ५८ |
| खेत्तम्मि उ अणुयोगो | १६२ | ४० | १६२ |
| खेत्ते भरहेरवए | १४० | ३५ | १४० |
| खेत्तेहिं बहू दीवे | १६१ | ४० | १६१ |
| **ग** | | | |
| गच्छो अ अलद्धीओ | ७४३ | १८८ | ७४० |
| गणधरथेरकयं वा | १४४ | ३६ | १४४ |
| गणिया मरुगीऽमच्चे | २६४ | ७० | २६२ |
| गतिठाणभासभावे | ७५४ | १९० | ७५१ |
| गमणागमणे गहणे | ४७९ | १२५ | ४७५ |
| गहवइणो आहारो | ६७९ | १७२ | ६७६ |
| गंतुं दुचक्कमूलं | ५०० | १३० | ४९७ |
| गिरिसरियपत्थरेहिं | ९८ | २८ | ९७ |
| गिहवासे अत्थसत्थेहिं | ३९० | १०६ | ३८८ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| गिहिलिंग अण्णलिंगं | ७६१ | १९२ | ७५८ |
| गीतं मुणितेगट्ठं | ६९२ | १७५ | ६८९ |
| गीतेण होइ गीई | ६९३ | १७६ | ६९० |
| गीयत्थ परिग्गहिते | ४९८ | १२९ | ४९५ |
| गीयत्थो य विहारो | ६९१ | १७५ | ६८८ |
| गुणदोसविसेसण्णू | ३६७ | १०१ | ३६५ |
| गुणसुट्ठितस्स वयणं | २४६ | ६६ | २४५ |
| गुरुगा अहे य चरमति० | ५३६ | १३६ | ५३३ |
| गुरुगा बंभावाए | ५९३ | १५२ | ५९० |
| गेण्हंतगाहगाणं | २३४ | ६२ | २३३ |
| **घ** | | | |
| घडसद्दे घडकारा | ६३ | १९ | ६३ |
| **च** | | | |
| चउदसपुव्वी मणुओ | १३८ | ३५ | १३८ |
| चउभंगो अणुण्णाए | ७९४ | २०० | ७९१ |
| चउरो ओदइअम्मी | ६८७ | १७५ | ६८४ |
| चउरो लहुगा गुरुगा | ५०५ | १३१ | ५०२ |
| चउलहुगा चउगुरुगा | ५४१ | १३८ | ५३८ |
| चत्तारि दुवाराइं | २५८ | ६८ | २५६ |
| चरगाई वुग्गाहण | ७०३ | १७८ | ७०० |
| चलचित्तो भावचलो | ७७० | १९५ | ७६७ |
| चलजुत्तवच्छमहिया | ५०६ | १३२ | ५०८ |
| चंदगुत्तपपुत्तो तु | २९६ | ७९ | २९४ |
| चाउम्मासुक्कोसे | ६०९ | १५६ | ६०६ |
| चिंधेहिँ आगमेउं | ५६६ | १४५ | ५६३ |
| चिरपव्वतितो तिविधो | ४०५ | १०९ | ४०३ |
| चेयणमचित्त मीसग | ६८४ | १७४ | ६८१ |
| चेयणमचेयण भाविय | ८०१ | २०२ | ७९८ |
| चेयण्णस्स उ जीवा | १८ | ७ | १८ |
| चोदेति रागदोसे | २२१ | ५८ | २११ |
| चोद्दस दस य अभिण्णे | १३२ | ३३ | १३२ |
| चोयग पुच्छा उस्सा० | ७१८ | १८१ | ७१५ |
| चोयगवयणं गंतूण | ४८७ | १२७ | ४८३ |
| **छ** | | | |
| छक्काय चउसु लहुगा | ४६५ | १२२ | ४६१ |
| छड्डुणे काउड्डाहो | ५५४ | १४२ | ५५१ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| छड्डेउं भूमीए | ३५३ | ९७ | ३५१ |
| छड्डेऊण व जइ गया | ५५६ | १४३ | ५५३ |
| छण्णालयम्मि काऊण | ३७६ | १०३ | ३७४ |
| छत्तंतियाए पगतं | ४०१ | १०८ | ३९९ |
| छम्मास अपूरित्ता | ७७१ | १९५ | ७६८ |
| छव्विह सत्तविहे या | २७६ | ७४ | २७४ |
| छायाए णालियाइ व | २६३ | ७० | २६१ |
| छिज्जंते वि ण पावेज्ज | ७१४ | १८१ | ७११ |
| **ज** | | | |
| जइ णत्थि कओ णामं | ७३२ | १८५ | ७२९ |
| जइ वा हत्थुवघाओ | — | — | ४८५ |
| जइ वि य तिट्ठाण कयं | २२ | ९ | २२ |
| जति एव सुत्तसोवीर० | ३०८ | ८५ | ३०५ |
| जति कप्पादणुयोगो | २५२ | ६७ | २५१ |
| जति णेवं तो पुणरवि | ४८९ | १२८ | ४८६ |
| जति पवयणस्स सारो | २४७ | ६६ | २४६ |
| जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज | ७५ | २३ | ७४ |
| जति रज्जाओ भट्ठो | ६३८ | १६३ | ६३५ |
| जति रण्णो भज्जाए | ६३७ | १६३ | ६३४ |
| जति वि य भूतावादे | १४५ | ३७ | १४५ |
| जति वि य वत्थू हीणा | २०७ | ५७ | २०६ |
| जति सव्वं चिय णामं | ७३३ | १८६ | ७३० |
| जत्थ मती ओगाहति | २३२ | ६१ | २३२ |
| जत्थऽम्हे पासामो | ४३९ | ११६ | ४३४ |
| जध अरणी णिम्मवितो | २२६ | ६० | २२५ |
| जध सव्वजणवएसुं | २०६ | ५७ | २०५ |
| जमिदं पगयं इंदो | १७ | ७ | १७ |
| जम्हा उ मोयगे अभि० | ५९ | १८ | ५९ |
| जह इंदो त्ति य एत्थं | ११ | ६ | ११ |
| जह ठवणिंदो थुव्वइ | १९ | ८ | १९ |
| जह मयणकोद्दवा ऊ | ११० | ३० | १०९ |
| जह वा तिण्णि मणूसा | १०३ | २९ | १०२ |
| जं अब्भुविच्च कीरइ | १८३ | ५१ | १८३ |
| जं जं सुयमत्थो वा | ७५८ | १९१ | ७५५ |
| जं जस्स णत्थि वत्थं | ६१८ | १५८ | ६१५ |
| जं तं दुसत्तगविधं | १७७ | ४९ | १७७ |
| जं तु निरंतरदाणं | ३०२ | ८३ | ३०० |

| | | | |
|---|---|---|---|
| जं पि य दारुं जोग्गं | २१८ | ५९ | २१७ |
| जंबुद्दीवपमाणं | १६० | ४० | १६० |
| जं होइ पगासमुहं | ६६७ | १६९ | ६६४ |
| जा खलु जहुत्तदोसे० | ६०२ | १५४ | ५९९ |
| जा गंठी ता पढमं | ९६ | २७ | ९५ |
| जाणंतिया अजाणं० | ३६६ | १०१ | ३६४ |
| जाणति य पिहुजणो वि हु | ३६ | १३ | ३६ |
| जा ताव ठवेमि वए | ५८१ | १४९ | ५७८ |
| जा मंगल त्ति ठवणा | ७ | ५ | ७ |
| जावंतिया उ सेज्जा | ५९९ | १५३ | ५९६ |
| जावतिया उस्सग्गा | ३२४ | ९० | ३२२ |
| जिणकप्पिओ गीयत्थो | ६९४ | १७६ | ६९१ |
| जितपरिसो जितणिद्दो | २४३ | ६५ | २४२ |
| जीवाजीवाभिगमो | ४१६ | ११२ | ४१२ |
| जीवाजीवे ण मुणइ | ७२१ | १८२ | ७१८ |
| जीवो अक्खो तं पइ | २५ | ११ | २५ |
| जुत्ति उ पत्थरायी | ५२९ | १३५ | ५२६ |
| जे उ अलक्खणजुत्ता | २२३ | ६० | २२२ |
| जे खलु अभाविता कुस्सु० | ३७० | १०१ | ३६८ |
| जे चित्तभित्तिविहिया | ८ | ५ | ८ |
| जे जम्मि उउम्मि कया | ४५३ | ११९ | ४४८ |
| जे जम्मि जुगे पवरा | २०१ | ५६ | २०१ |
| जेण उ सिद्धं अत्थं | १७९ | ५० | १७९ |
| जेण विसिस्सति रूवं | २६१ | ६९ | २५९ |
| जे पुण अभाविता ते | ३४४ | ९४ | ३४२ |
| जे रायसत्थकुसला | ३८४ | १०५ | ३८२ |
| जे लोगवेदसमए० | ३८३ | १०४ | ३८१ |
| जेसि पवित्तिणिवित्ती | ८६ | २५ | ८५ |
| जे होंति पगतिमुद्धा | ३६९ | १०१ | ३६७ |
| जे उ उदिण्णे खीणे | १२२ | ३२ | १२९ |
| जो उत्तमेहिँ पहओ | २५० | ६७ | २४९ |
| जो खलु सतंतसिद्धो | १८१ | ५० | १८१ |
| जोगमकाउमहागडे | ६१० | १५६ | ६०७ |
| जो चरिमपोग्गले पुण | १२३ | ३२ | १३० |
| जो चेव बलीएँ गमो | ५६१ | १४४ | ५५८ |
| जो चेव य हरिएसुं | ५१० | १३२ | ५०६ |
| जो जधा वट्टए कालो | २९७ | ८१ | २९५ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| जो जह कहेइ सुमिणं | २२४ | ६० | २२३ |
| जो जेण पगारेणं | २६५ | ७१ | २६३ |
| जो जेण विणा अत्थो | २१ | ९ | २१ |
| जो दव्वखेत्तकयका० | ७९६ | २०१ | ७९३ |
| जो दव्वखेत्तकयका० | ७९७ | २०१ | ७९४ |
| जो दव्वखेत्तकयका० | ७९८ | २०१ | ७९५ |
| जो पुण जहत्थजुत्तो | १५ | ७ | १५ |
| **झ** | | | |
| झाणट्टया भायण० | ६८३ | १७३ | ६८० |
| झीमीभवंति उदया | ११६ | ३० | १२३ |
| **ड** | | | |
| डज्झंतं तिंबुरुदा० | ७६७ | १९४ | ७६४ |
| डहरो अकुलीणो त्ति य | ७७५ | १९६ | ७७२ |
| **ण** | | | |
| णइ पह जर वत्थ जले | ९७ | २७ | ९६ |
| णगराइ णिरुद्ध घरे | ६८१ | १७३ | ६७८ |
| ण तरिज्जा जति तिण्णि उ | ५१७ | १३४ | ५१४ |
| णत्थि कहालद्धी मे | ५७४ | १४८ | ५७१ |
| ण य कत्थइ णिम्मातो | ३७३ | १०२ | ३७१ |
| ण वि इंदियाइँ उवल० | २७ | ११ | २७ |
| ण वि य हु होयऽणवत्था | २३ | १० | २३ |
| ण हि जो घडं वियाणइ | १६ | ७ | १६ |
| णंतपएसाणं पि य | ६७ | २१ | — |
| णंदी चतुक्क दव्वे | २४ | १० | २४ |
| णंदी मंगलहेउं | ४ | ४ | ४ |
| णंदी य मंगलट्ठा | ३ | ४ | ३ |
| णाऊण किंचि अण्णस्स | ३७२ | १०२ | ३७० |
| णाणं तु अक्खरं जेण | ७४ | २२ | ७२ |
| णाणदंसणसंपण्णा | ३९८ | १०७ | ३९६ |
| णाणादी तिट्ठाणा | ७०१ | १७७ | ६९८ |
| णाणेण दंसणेण य | ४०० | १०८ | ३९८ |
| णाभिप्पायं गेण्हसि | ८०४ | २०३ | ८०१ |
| णामं ठवणा दविए | ५ | ५ | ५ |
| णामं ठवणा दविए | १५१ | ३८ | १५१ |
| णामं ठवणा दविए | ६५३ | १६६ | ६५० |
| णामं ठवणा वत्थं | ६०६ | १५५ | ६०३ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| णाम णिवाउवसग्गं | ३२७ | ९० | ३२५ |
| णामसुय ठवणसुयं | २५६ | ६८ | २५५ |
| णामे छव्विध कप्पो | २७५ | ७३ | २७३ |
| णायज्झयणाहरणा | २०५ | ५७ | २०४ |
| णावाति उवक्कमणं | २६२ | ७० | २६० |
| णिउणे णिउणं अत्थं | २३३ | ६२ | २३० |
| णिउत्ता अणिउत्ताणं | २३६ | ६२ | २३५ |
| णिउत्तो उभयकालं | २४१ | ६४ | २४० |
| णिक्कारणम्मि णामं | ७३४ | १८६ | ७३१ |
| णिक्खेवा य णिरुत्ता० | २०३ | ५६ | २०२ |
| णिक्खेवेगट्ठ णिरुत्त | १४९ | ३८ | १४९ |
| णिक्खेवो णासो त्ति य | १५० | ३८ | १५० |
| णिक्खेवो होइ तिहा | २७३ | ७३ | २७१ |
| णिग्गंथाणं पढमं | ४३६ | ११५ | ४३१ |
| णिच्चणियंसण मज्जण | ६४७ | १६५ | ६४४ |
| णिच्चणियंसणियं ति य | ६४८ | १६५ | ६४५ |
| णिच्छयतो सव्वगुरुं | ६५ | २० | ६५ |
| णिच्छियमुत्त निरुत्तं | १८८ | ५३ | १८८ |
| णिद्दाविगहापरिवज्जि० | ८०६ | २०३ | ८०३ |
| णिद्दोसं सारवंतं च | २८४ | ७७ | २८२ |
| णिप्फाव कोद्दवाईणि | ८०५ | २०३ | ८०२ |
| णियमा सुयं तु जीवो | १३९ | ३५ | १३९ |
| णिरवयवो ण हु सक्को | २१४ | ५९ | २१३ |
| णिस्साणपदं पीहइ | ७७४ | १९६ | ७७१ |
| णीहम्मियम्मि पूरति | ३८२ | १०४ | ३८० |
| णेगंतियं अणच्चं० | १० | ६ | १० |
| णेरुत्तियाइँ तस्स उ | ३१४ | ८७ | ३११ |
| णेहि जितो मित्ति अहं | ३६० | ९९ | ३५८ |
| **त** | | | |
| तज्जाय जुत्तिलेवो | ५२८ | १३५ | ५२५ |
| तण विणण संजयट्ठा | ६२८ | १६१ | ६२५ |
| तत्तो इत्थिणपुंसा | ४७० | १२४ | ४६६ |
| तत्तो य वग्गणाओ | ६८ | २१ | ६६ |
| तत्थावायं दुविहं | ४२२ | ११३ | ४२० |
| तत्थेगो उ नियत्तो | १०४ | २९ | १०३ |
| तदभावे न दुमु त्तिय | ३११ | ८५ | ३०८ |
| तदुभयकप्पिय जुत्तो | ४११ | ११० | ४०९ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| तद्दिवसं पडिलेहा | ५२२ | १३४ | ५१९ |
| तम्हा उ णिक्खिविस्सं | २५४ | ६७ | २५३ |
| तम्हीं खलु अब्बाले | ५६९ | १४६ | ५६६ |
| तम्हा दुचक्क पतिणा | ५०२ | १३० | ४९९ |
| तम्हा न कहेयव्वं | ७९३ | २०० | ७९० |
| तवकाले आसज्ज व | ३०३ | ८४ | ३०१ |
| तसबीतादि व दिट्ठे | ६७० | १७० | ६६७ |
| तं पुण चेतियणासे | ३९१ | १०६ | ३८९ |
| तं पुण जहत्थणियतं | ५६ | १८ | ५६ |
| तं मणपज्जवणाणं | ३५ | १३ | ३५ |
| तावसखउरकढिणयं | ३४७ | ९५ | ३४५ |
| तिट्टि त्ति णंदगोवस्स | ७८ | २३ | ७७ |
| तिण्हारेण समाणं | ७८४ | १९८ | ७८१ |
| तित्तकडुओसहाइं | २९१ | ७८ | २८९ |
| तिपयं जह ओवम्मे | ३०७ | ८५ | ३०४ |
| तिरिएसु वि एवं चिय | ४३३ | ११५ | ४२८ |
| तिरियमणुइत्थियातो | ५९४ | १५२ | ५९१ |
| तिविधो बहुस्सुतो खलु | ४०४ | १०८ | ४०२ |
| तिविहं च होइ करणं | ९५ | २७ | ९४ |
| तिविहित्थि तत्थ थेरिं | ७४१ | १६४ | ६३८ |
| तिंतिणिए चलचित्ते | ७६५ | १९४ | ७६२ |
| तुच्छा गारवबहुला | १४६ | ३७ | १४६ |
| तुरियं णाहिज्जंते | ७२२ | १८२ | ७१९ |
| तुल्ला चेव उ ठाणा | ७१० | १८० | ७०७ |
| तुल्ले च्छेयणभावे | ८४ | २५ | ८३ |
| तूरपइ दिंति मा ते | ६४४ | १६५ | ६४१ |
| तेगिच्छमते पुच्छा | ३७८ | १०३ | ३७६ |
| ते गुरुलहुपज्जाया | ६६ | २१ | ६८ |
| ते चेव विवड्ढंता | २३० | ६१ | २२९ |
| ते च्चिय लहु कालगुरु | ४३१ | ११४ | — |
| तेण परं आवातं | ४६९ | १२३ | ४६५ |
| तेण परं पुरिसाणं | ४६८ | १२३ | ४६४ |
| तेणे सावय ओसह | ७५९ | १९१ | ७५६ |

द

| | | | |
|---|---|---|---|
| दगदोद्धिगाइ जं पुव्व० | ६६१ | १६८ | ६५८ |
| दट्ठुं पि णे न लब्भामो | ५७५ | १४८ | ५७२ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| दट्ठूण जिणवराणं | १०६ | २९ | १०५ |
| दमए दूभगे भट्टे | ६३५ | १६३ | ६३२ |
| दव्ववती दव्वाइं | १८५ | ५२ | १८५ |
| दव्वसुतं पत्तगपुत्थ० | १७५ | ४९ | १७५ |
| दव्वस्स उ अणुओगो | १५३ | ३८ | १५३ |
| दव्वाइ उज्झियं दव्व० | ६१४ | १५७ | ६११ |
| दव्वाइचउक्कं वा | १३६ | ३४ | १३६ |
| दव्वाइ दव्व हीणा० | ६५९ | १६८ | ६५६ |
| दव्वाणं अणुयोगो | १५७ | ३९ | १५७ |
| दव्वाण दव्वभूतो | १८६ | ५२ | १८६ |
| दव्वादिकसिणविसयं | ३८ | १३ | ३८ |
| दव्वादी एक्केक्को | ६७४ | १७१ | ६७१ |
| दव्वासण्णं भवणा० | ४५५ | ११९ | ४५० |
| दव्वे णियमा भावो | १६९ | ४२ | १६९ |
| दव्वेणेगं दव्वं | १५४ | ३८ | १५४ |
| दव्वे तिविहं एगिंदि | ६०७ | १५५ | ६०४ |
| दव्वे तिविहं एगिंदि० | ६५४ | १६७ | ६५१ |
| दव्वे नाणापुरिसे | १४२ | ३६ | १४२ |
| दव्वे पुण तल्लद्धी | १४ | ७ | १४ |
| दव्वे भावे य चलं | ५०७ | १३२ | ५०३ |
| दंडिय असोव तिच्चिय | ४३२ | ११४ | — |
| दंसणमोग्गह ईहा | १३३ | ३४ | १३३ |
| दंसणमोहे खीणे | १२४ | ३२ | १३१ |
| दंसिय छंदिय गुरु से० | ५१३ | १३३ | ५१० |
| दाउं व उड्डुरुस्से | ६२५ | १६० | ६२२ |
| दारुं धातुं वाही | २१६ | ५९ | २१५ |
| दावद्दविओ गइ चं० | ७५५ | १९१ | ७५२ |
| दाहिणकरेण कोणं | ६६९ | १७० | ६६६ |
| दिट्ठंतो घडकारो | ३०९ | ८५ | ३०६ |
| दिट्ठमदिट्ठे दिट्ठं | ६६४ | १६९ | ६६१ |
| दित्तमदित्ता तिरिया | ४२६ | ११४ | ४२४ |
| दिसपवणगामसूरिय | ४६१ | १२१ | ४५६ |
| दुरधितविज्जो पच्चं० | ३७४ | १०२ | ३७२ |
| दुविधा सामायारी | ७८० | १९७ | ७७७ |
| दुविधो लिंग विहारे | ७६० | १९२ | ७५७ |
| दुविहकरणोवघाया | ५८३ | १५० | ५८० |

| | | | |
|---|---|---|---|
| दुविह णिमित्ते लोभे | ५३९ | १३८ | ५३६ |
| दुविहा य होंति पाता | ४९१ | १२८ | ४८८ |
| दुविहा य होति सेज्जा | ५४४ | १३९ | ५४१ |
| दुविहो अ होइ छेदो | ७१३ | १८० | ७१० |
| *दूमिय धूविय वासिय* | ५८७ | १५० | ५८४ |
| देंति पणीयाहारं | ७५३ | १९० | ७५० |
| देविंदरायगहवइ० | ६७२ | १७० | ६६९ |
| देसकुलजाइरूवी | २४२ | ६५ | २४१ |
| देहे अभिवड्ढंते | २२८ | ६१ | २२७ |
| दोण्हं अणाणुपुव्वी | २६८ | ७२ | २६६ |
| दोण्हं पि अ जुयलाणं | ६४३ | १६४ | ६४० |
| दोसा खलु अलियादी | २८५ | ७७ | २८३ |
| दो सागरा उ पढमो | ६८५ | १७४ | ६८२ |
| दोसाणं परिहारो | ४८० | १२६ | ४७६ |
| दोसु वि परिणमइ मई | ८०० | २०२ | ७९७ |
| **ध** | | | |
| धावंतो उव्वाओ | ३२२ | ८९ | ३२० |
| धितिसंघयणे तुल्ला | २०४ | ५७ | २०३ |
| धूमनिमित्तं णाणं | २८ | ११ | २८ |
| **प** | | | |
| पगरणतो पुण सुत्तं | ३२० | ८८ | ३१८ |
| पच्चक्ख परोक्खं वा | ३९ | १४ | ३९ |
| पच्चोरुहणट्ठा खा० | १०२ | २८ | १०१ |
| पज्जव पुव्वुद्दिट्ठा | २७० | ७२ | २६८ |
| पट्टीवंसो दो धा० | ५८५ | १५० | ५८२ |
| पडियरिउं सीहेणं | ७२५ | १८३ | ७२२ |
| पडिसद्दगस्स सरिसं | १९७ | ५५ | १९६ |
| पढमचरिमाउ सिसिरे | ५२४ | १३४ | ५२१ |
| पढमम्मि य चउलहुया | ५४६ | १४० | ५४३ |
| पढमासति वाघाए | ४६७ | १२३ | ४६३ |
| पढमिल्लुगस्स असती | ४६६ | १२२ | ४६२ |
| पढिए य कहिय अहिगय | ५३५ | १३६ | ५३२ |
| पढितसुतगुणियमगुणिय | ४७४ | १२४ | ४७० |
| पढिते य कहिय अहिगय | ४१४ | १११ | ४१४ |
| *पढिते य कहिय अहिगय* | ४१८ | ११३ | ४१६ |
| पढियसुयगुणियधारिय | ७११ | १८० | ७०८ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| पढियसुयगुणियमगुणिय | ५३३ | १३६ | ५३० |
| पढियसुयगुणियमगुणिय | ६०५ | १५५ | ६०२ |
| पणगं खलु पडिवाए | १३७ | ३४ | १३७ |
| पण्णत्ति जंबुदीवे | १५९ | ४० | १५९ |
| पत्ते य अणुण्णाते | ४०३ | १०८ | ४०१ |
| पत्तो वि न णिक्खिप्पइ | २७७ | ७४ | २७५ |
| पभु अणुपभुणो व निवे० | ५७७ | १४८ | ५७४ |
| परपक्खं दूसित्ता | २७२ | ७३ | २७० |
| परपक्खे वि य दुविहं | ४२४ | ११४ | ४२२ |
| परिणमति जहत्थेणं | ७९९ | २०१ | ७९६ |
| परिणामअपरिणामे | ७९५ | २०१ | ७९२ |
| परिसाइ अपरिसाई | ७६३ | १९३ | ७६० |
| पवयणवोच्छेए वट्ट० | ७२९ | १८५ | ७२६ |
| पवयणोवघाता अण्णे | ४८२ | १२६ | ४७८ |
| पव्वावण मुंडावण | ४१५ | १११ | ४१३ |
| पंकसलिले पसाओ | ३७ | १३ | ३७ |
| पंचमहव्वयभेदो | ७७३ | १९५ | ७७० |
| पंचविधं पुण दव्वे | १७८ | ५० | १७८ |
| पंचविधम्मि परूविए | ६८९ | १७५ | ६८६ |
| पंचविधे आयारे | २४४ | ६५ | २४३ |
| पंथम्मि य आलोए | ४५७ | १२० | ४५२ |
| पाउं थोवं थोवं | ३५४ | ९७ | ३५२ |
| पागइयऽसोयवादी | ४३० | ११४ | — |
| पागयकोडुंबिय दं० | ४२९ | ११४ | ४२७ |
| पाडलऽसोग कुणाले | २९४ | ७९ | २९२ |
| पाडिच्छगसेहाणं | ४९२ | १२८ | ४८९ |
| पातग्गहणम्मि उ दे० | ४८५ | १२७ | ४८१ |
| पासंडकारणा खळु | ६०१ | १५३ | ५९८ |
| पासुत्तसमं सुत्तं | ३१३ | ८६ | ३१२ |
| पीतीसुण्णण पिसुणो | ७७८ | १९६ | ७७५ |
| पुढवि दग अगणि हरियग | ५९१ | १५१ | ५८८ |
| पुढवीइ तरुगिरिया | ३३ | १२ | ३२ |
| पुणरवि दव्वे तिविहं | ६०८ | १५६ | ६०५ |
| पुरिमेहिं जति वि हीणा | २०८ | ५८ | २०७ |
| पुरिसम्मि दुव्विणीए | ७८५ | १९८ | ७८२ |
| पुरिसावायं तिविहं | ४२५ | ११४ | ४२३ |
| पुव्वं पच्छा जेहिं | ३८९ | १०६ | ३८७ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| पुव्वं पि अणुवलद्धो | ५२ | १७ | ५२ |
| पुव्वं मलिया उस्सा० | ७२० | १८२ | ७१७ |
| पुव्वं सुत्तं पच्छा | १९१ | ५३ | १९१ |
| पुव्वभवे वि अहीयं | ४१२ | ११० | ४१० |
| पुव्वण्हे लेपगहणं | ४९५ | १२९ | ४९२ |
| पुव्वण्हे लेवगमं | ४९४ | १२९ | ४९१ |
| पुव्वावरायया खलु | ६७५ | १७१ | ६७२ |
| पूतलियलग्ग अगणी | ४८४ | १२६ | ४८० |
| पूरंतिया महाणो | ३८१ | १०४ | ३७९ |
| पूरंती छत्तंतिय | ३८० | १०४ | ३७८ |
| **फ** | | | |
| फलएणेक्को गहाय | २०२ | ५६ | २०० |
| **ब** | | | |
| बलि धम्मकहा किड्डा | ५५७ | १४३ | ५५४ |
| बहुसुत चिरपव्वइओ | ४०६ | १०९ | ४०४ |
| बहुस्सुते चिरपव्वतिर्ते | ४०२ | १०८ | ४०० |
| बंधट्ठिती पमाणं | ९२ | २७ | ९१ |
| बंधाणुलोमता खलु | १७३ | ४९ | १७३ |
| बीए वि णत्थि खीरं | २३८ | ६३ | २३७ |
| बीयमबीयं णाउं | २२१ | ६० | २२० |
| **भ** | | | |
| भद्द तिरी पासंडे | ४३४ | ११५ | ४२९ |
| भंगगणियादि गमियं | १४३ | ३६ | १४३ |
| भावचलगंतुकामं | ५०८ | १३२ | ५०४ |
| भावस्सेगतरस्स उ | १६६ | ४१ | १६६ |
| भाविय इयरे य कुडा | ३४१ | ९४ | ३३९ |
| भावे उवक्कमं वा | २६७ | ७२ | २६५ |
| भावेण संगहादी० | १६७ | ४१ | १६७ |
| भावोग्गहो अहव दुहा | ६८८ | १७५ | ६८५ |
| भासाचपलो चउहा | ७५६ | १९१ | ७५३ |
| भिक्खं चिय हिंडंता | ६१९ | १५९ | ६१६ |
| भिक्खं वा वि अडंतो | ७४६ | १८८ | ७४३ |
| भिक्खु विह तणह वद्दल | ७४५ | १८८ | ७४२ |
| भिज्जेज्ज लिप्पमाणं | ५३० | १३५ | ५२८ |
| भेदा सोहि अवाया | ४१९ | ११३ | ४१७ |
| भेदो य मासकप्पे | ५४९ | १४० | ५४६ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **म** | | | |
| मइल दरसुद्ध सुद्धं | १०० | २८ | ९९ |
| मक्खित्ते ससिणिद्धे | ५४० | १३८ | — |
| मच्छरता अविमुत्ती | २१३ | ५९ | २१२ |
| मज्जण णिसिज्ज अक्खा | ७८२ | १९७ | ७७९ |
| मणुयतिरिएसु लहुगा | ४२७ | ११४ | ४२५ |
| मणुयतिरियपुंसेसुं | ४२८ | ११४ | ४२६ |
| मतिविसयं मतिणाणं | ४१ | १४ | ४१ |
| मद्दवकरणं णाणं | ७८६ | १९८ | ७८३ |
| मसगो व्व तुदं जच्चा | ३५२ | ९७ | ३५० |
| मा णिण्हव इय दाउं | ३६३ | १०० | ३६१ |
| मा णे हुज्ज अवण्णो | ३५६ | ९८ | ३५४ |
| मालवतेणा पडिया | ५६४ | १४५ | ५६१ |
| मिच्छत्त बडुग चारण | ५४७ | १४० | ५४४ |
| मिच्छत्तम्मि अखीणे | — | — | ११७ |
| मिच्छत्ताओ अहवा | १२६ | ३२ | ११३ |
| मिच्छत्ताओ मीसे | १२५ | ३२ | ११२ |
| मिच्छत्ता संकंती | १२७ | ३३ | ११४ |
| मुक्कं तया अगहिते | ३६२ | १०० | ३६० |
| मुरियाण अप्पडिहया | २९५ | ७९ | २९३ |
| मुहकरणं मूलगुणा | ६७१ | १७० | ६६८ |
| मूतं हुंकारं वा | २११ | ५८ | २१० |
| मूलगुणउत्तरगुणे | ७७२ | १९५ | ७६९ |
| मूलुत्तरचउभंगो | ५९० | १५१ | ५८७ |
| मोत्तूणं गच्छणिग्गते | ६९८ | १७६ | ६९५ |
| मोत्तूण पढमबीए | ३०० | ८२ | २९८ |
| **र** | | | |
| रक्खण गहणे तु तहा | ५४५ | १४० | ५४२ |
| रधपडण उत्तमंगा० | ४७८ | १२५ | ४७४ |
| रवितु त्ति ठितो मेहो | ३३८ | ९३ | ३३६ |
| रातिणिओ उस्सारे | ६२३ | १६० | ६२० |
| रूवे होउवलद्धी | ८१ | २४ | ८० |
| **ल** | | | |
| लक्खणतो खलु सिद्धी | २७८ | ७४ | २७६ |
| लद्धूण अण्णपाए | ६६२ | १६८ | ६५९ |
| लद्धूण अण्ण वत्थे | ६१७ | १५८ | ६१४ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| लाउय दारुय मट्टिय | ६५५ | १६७ | ६५२ |
| लित्ते छाणिय छारो | ५२० | १३४ | ५१७ |
| लित्थारियाणि जाणि उ | ५१८ | १३४ | ५१५ |
| लिंगत्थेसु अकप्पं | ६३० | १६२ | ६२७ |
| लिंगविहारेऽवट्ठिओ | ७३९ | १८७ | ७३६ |
| लोइय वेइय सामा० | ३८७ | १०५ | ३८५ |
| **व** | | | |
| वच्चंतेण य दिट्ठं | ४९९ | १३० | ४९६ |
| वच्छग गोणी खुज्जा | १७१ | ४२ | १७१ |
| वच्छणियोगे खीरं | १९६ | ५४ | १९५ |
| वच्छे भएण णासति | ५०९ | १३२ | ५०५ |
| वत्तीए अक्खेण व | १५८ | ३९ | १५८ |
| वम्मा य अवम्मा वि य | ३४२ | ९४ | ३४० |
| वय इट्टगठवण णिभा | ३३५ | ९२ | ३३३ |
| वयणेणायरियादी | १६५ | ४१ | १६५ |
| वंसग कडणोक्कंचण | ५८६ | १५० | ५८३ |
| वायम्मि वायमाणे | ५११ | १३३ | ५०७ |
| वाही असव्वछिण्णो | ११८ | ३१ | ११९ |
| विग्घोवसमो सद्धा | २० | ८ | २० |
| विच्चामेलण अण्णुण्ण | २९८ | ८१ | २९६ |
| विच्छिण्णे दूरमोगाढे | ४४९ | ११८ | ४४४ |
| विज्जाहररायगिहे | २९३ | ७९ | २९१ |
| वितधं ववहरमाणं | ३९२ | १०६ | ३९० |
| विदु जाणए विणीए | ७६४ | १९३ | ७६१ |
| विब्भंगी उ परिणमं | १३० | ३३ | १२५ |
| विरहम्मि दिसाभिग्गह | ३९५ | १०७ | ३९३ |
| विवरीयवेसधारी | ३२ | १२ | ३१ |
| विसम पल्लोट्टणे आ० | ४५२ | ११९ | ४४७ |
| वुड्ढे वि दोणमेहे | ३४० | ९३ | ३३८ |
| वूढे पायच्छित्ते | ७१५ | १८१ | ७१२ |
| वोच्चत्थे चउलहुगा | ६५६ | १६७ | ६५३ |
| **स** | | | |
| सक्कतपागतवयणा | २ | २ | २ |
| सक्कपसंसा गुणगा० | ३५९ | ९८ | ३५७ |
| सक्कयपाययभासा० | ५७ | १८ | ५७ |
| सग्गामं परग्गामे | ६४५ | १६५ | ६४२ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सग्गामभिहडि गंठी | ५३८ | १३७ | ५३५ |
| सच्चित्तादी तिविहो | २६० | ६९ | २५८ |
| सज्झायमसज्झाए | ७४८ | १८९ | ७४५ |
| सट्ठाणे सट्ठाणे | ३२५ | ९० | ३२३ |
| सण्णाय कारगे पक० | ३१७ | ८७ | ३१५ |
| सण्णायगेहि णीते | ५६५ | १४५ | ५६२ |
| सण्णिकरिसो परो हो० | ३०६ | ८४ | ३०३ |
| सत्तट्ठ णवग दसगं | ७१२ | १८० | ७०९ |
| सत्तरत्तं तवो होति | ७०८ | १७९ | ७०५ |
| सत्तेव य मूलगुणे | ५८४ | १५० | ५८१ |
| सब्भावमसब्भावे | १३ | ६ | १३ |
| समणे समणी सावग | ६२९ | १६१ | ६२६ |
| समयाइ ठिति असंखा | १५६ | ३९ | १५६ |
| सम्मत्तपोग्गलाणं | १२९ | ३३ | ११६ |
| सम्मत्तम्मि अभिगओ | ७३७ | १८६ | ७३४ |
| सम्मत्ते पुण लद्धे | १०७ | २९ | १०६ |
| सयमवि ण पितति महिसो | ३५० | ९६ | ३४८ |
| सरगोयरो अ तिरियं | ६७८ | १७२ | ६७५ |
| सल्लुद्धरणे समणस्स | ३९३ | १०६ | ३९१ |
| सव्वज्झयणा णामे | २६९ | ७२ | २६७ |
| सव्वण्णुप्पमाणाओ | ३१९ | ८८ | ३१७ |
| सव्वण्णुप्पामण्णा | ३४८ | ९६ | ३४६ |
| सव्वे वा गीयत्था | ६२१ | १५९ | ६१८ |
| ससमयपरसमयविऊ | २४५ | ६६ | २४४ |
| ससरक्खे ससिणिद्धे | — | — | ५३७ |
| संघिया य पयं चेव | ३०५ | ८४ | ३०२ |
| संजमहेउं लेवो | ५३१ | १३५ | ५२७ |
| संजाणणेण सण्णी | ७९ | २४ | ७८ |
| संजुत्तासंजुत्तं | ६४ | २० | ६४ |
| संजोग सइंगाले | ५४३ | १३९ | ५४० |
| संठाणमगाराई | ४४ | १५ | ४४ |
| संति पमाणार्ति पमे० | १८० | ५० | १८० |
| संति लंभम्मि अणियया | ५७० | १४६ | ५६७ |
| संथरतो सट्ठाणं | ३२६ | ९० | ३२४ |
| संभिच्चेण व अच्छह | ५५१ | १४१ | ५४८ |
| संविग्गमसंविग्गा | ४२३ | ११३ | ४२१ |
| संविग्गो दव्व मिओ | ७३८ | १८७ | ७३५ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| संसत्तगगहणी पुण | ४६३ | १२२ | ४५८ |
| सागरियसंजयाणं | ५५२ | १४१ | ५४९ |
| सागारियअप्पाहण | २४० | ६३ | २३९ |
| साधारण आवलिया | ६७६ | १७२ | ६७३ |
| साभाविता तण्णीसा० | ५५८ | १४३ | ५५५ |
| सामण्ण विसेसेण य | ४५ | १५ | ४५ |
| सामण्णा जोगाणं | ७०४ | १७८ | ७०१ |
| सामाइयस्स अत्थं | २४० | ५६ | १९९ |
| सामित्तकरणअहिगर० | १५२ | ३८ | १५२ |
| सारिक्ख विवक्खेहि य | ५० | १६ | ५० |
| सावगभज्जा सत्तव० | १७२ | ४५ | १७२ |
| सिद्धत्थए वि गिण्हति | २३१ | ६१ | २३१ |
| सीसा पडिच्छगाणं | ३५७ | ९८ | ३५५ |
| सीसा वि य तूरंती | ३७७ | १०३ | ३७५ |
| सुणेतीति सुयं तेणं | १४७ | ३७ | १४७ |
| सुण्णं दट्ठुं बडुगा | ५५० | १४१ | ५४७ |
| सुत सुत्त गंथ सिद्धंत | १७४ | ४९ | १७४ |
| सुत्तं कुणति परिजितं | ४०९ | १०९ | ४०७ |
| सुत्तं तु सुत्तमेव उ | ३१२ | ८६ | ३१० |
| सुत्तं पदं पयत्थो | ३०४ | ८४ | ३०१ |
| सुत्तत्थतदुभयाइं | ७८९ | १९९ | ७८६ |
| सुत्तत्थे कधयंतो | २१५ | ५९ | २१४ |
| सुत्तत्थो खलु पढमो | २१० | ५८ | २०९ |
| सुत्तम्मि होइ भयणा | ७८१ | १९७ | ७७८ |
| सुत्तस्स कप्पितो खलु | ४०८ | १०९ | ४०६ |
| सुत्ते अत्थे तदुभय | ४०७ | १०९ | ४०५ |
| सुयखंधो अज्झयणा | २५३ | ६७ | २५२ |
| सुहसज्झो जत्तेणं | २२० | ६० | २१९ |
| सूइज्जति सुत्तेणं | ३१५ | ८७ | ३१३ |
| सूरमणी जलकंतो | ३१६ | ८७ | ३१४ |
| सेढीए दाहिणेणं | ६७७ | १७२ | ६७४ |
| सेलकुडछिद्दचालिणि | ३६४ | १०० | ३६२ |
| सेलघणकुडगचालिणि | ३३६ | ९३ | ३३४ |
| सेले य छिद्द चालिणि | ३४५ | ९५ | ३४३ |
| सेसे वि पुच्छिऊणं | ४९७ | १२९ | ४९४ |
| सेसेसु फासुएणं | ५८९ | १५१ | ५८६ |
| सो अधिकरणो जधियं | १८२ | ५१ | १८२ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सोउं अणभिगताणं | ७८७ | १९८ | ७८४ |
| सोच्चा पत्तिमपत्तिय | ५४८ | १४० | ५४५ |
| सोच्चा व अभिसमेच्च व | १३४ | ३४ | १३४ |
| सोतूणं अहिसमेच्च | ११२ | ३० | १११ |
| सो भविय सुलभबोही | ७१७ | १८१ | ७१४ |
| सो वि य सीसो दुविहो | ७७६ | १९६ | ७७३ |
| **ह** | | | |
| हत्थायामं चउरस | ४५४ | ११९ | ४४९ |
| हत्थोवघाय गंतूण | ४८६ | १२७ | ४८२ |
| हरिते बीए चले जुत्ते | ५०३ | १३० | ५०० |
| हरिते बीएसु तहा | ५०४ | १३१ | ५०१ |
| हायंते परिणामे | १२८ | ३३ | ११५ |
| हिंडतु गीयसहाओ | ७४४ | १८८ | ७४१ |
| हिंडाविंति ण वा णं | ७५१ | १९० | ७४८ |
| हेट्ठिल्ला उवरिल्ला० | ६०३ | १५४ | ६०० |
| हेट्ठिल्ला उवरिल्ले० | ६७३ | १७१ | ६७० |
| होति असीला णारी | ८७ | २५ | ८६ |
| होति पदत्थो चउद्धा | ३२८ | ९० | ३२६ |
| होहिइ व णियंसणियं | ६४९ | १६६ | ६४६ |
| होंति बिले दो दोसा | ४५६ | १२० | ४५१ |

# बृहत्कल्पचूर्णि

जैन संस्कृति में साधना का स्थान सर्वोच्च है। श्रमण साधना के प्रतिपादक छेदसूत्र एवं उन पर के व्याख्यासाहित्य का प्रत्येक पृष्ठ साधना के उज्ज्वल-समुज्ज्वल आलोक से आलोकित है। साधक अपने जीवन को त्याग, तप, स्वाध्याय और ध्यान रूप सरिता के निर्मल जल से आत्मा को विशुद्ध कर भव सागर को पार करता है। जैन साधना के दो पथ है। एक उत्सर्ग और दूसरा अपवाद। उत्सर्ग शब्द का अर्थ है मुख्य और अपवाद शब्द का अर्थ है गौण। उत्सर्ग मार्ग का अर्थ है आन्तरिक जीवन, चारित्र और सद्गुणों की रक्षा, शुद्धि और अभिवृद्धि के लिए प्रमुख नियमों का विधान और अपवाद का अर्थ है आन्तरिक जीवन की रक्षा के लिए उसकी शुद्धि-वृद्धि के लिए बाधक नियमों का विधान। उत्सर्ग और अपवाद दोनों का एक ही लक्ष्य है संयम की विशुद्धि। एकान्त उत्सर्ग मार्ग का विधान या अपवाद मार्ग का विधान कभी कभी संयमी के लिए घातक भी हो सकते है अतः ये सापेक्ष है। मानव की शारीरिक और मानसिक दुर्बलता को ध्यान में रखकर ही गीतार्थ आचार्यों ने उत्सर्ग और अपवार मार्ग का निरूपण किया है।